श्री राज श्यामाजी

॥ श्री कलश सार दर्शन ॥

श्री विजया अभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार
आखरूलजमां इमाम मेंहेंदी साहिब
पूर्णब्रह्म सच्चिदानंद अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी की
श्री मुख वाणी
श्री कुलजम सरूप
के
श्री कलश - तौरेत ग्रंथ का
संक्षिप्त एवं सरल सार तत्त्व

॥ Shri Kalash Saar Darshan ॥

The Essence of Shri Kalash Wani ~ *The New Torah*
Based on
The Holy Kuljam Swaroop
Divine Words of Aksharateet Lord Shri Prannathji

Combined Hindi and English Version

श्री निजानंद आश्रम वडोदरा, गुजरात ३९००१९
श्री निजानंद आश्रम रतनपुरी, उत्तर प्रदेश २५१ २०१
श्री निजानंद फाउन्ड़ेशन, ईन्ट., यु. एस. ए.

** *Dadicated in the Lotus Feet of* **

Our True Master
Shri Shyamaji Swaroop
Shri Nijanand Swami Dhani Shri Devchandraji

and

Jaagni Ratan Pujya Sarkar Shri Ji

**

॥ समर्पित ॥

**

हमारे प्यारे
जागनी रत्न पूज्य सरकार श्री जी के श्री चरणों में
उनके छठे स्मृति समारोह एवं उनकी ही प्रेरणा से निर्मित
श्री प्राणनाथ जी मन्दिर, शामलाजी, गुजरात
के सेवा पधरावणी महोत्सव पर
(नवम्बर 9 से 15, 2006)

खासी जान खेड़ी जिमी, जल सींचिया खसम ।
बोया बीज वतन का, सो ऊग्या वाही रसम ।।
Khaasi jaan khedi jimi, jal sinchya khasam |
Boya bij vatan ka, so ugya vahi rasam ||

When the Lord cultivates the land of our heart with the Holy Wani, He first plants the seed of Paramdham's most sacred and intimate relationship. Then He sprinkles over it the water of Divine Love. Consequently, the Seed Sprouts with infinitely abundant potency and Divine qualities. Then, He bestows Nij-Anand - Eternal Joy - to such a fortunate Soul.

Such a graceful is the farmer of our spirit and soul. He is our dearly beloved Shri Rajji, our Prannathji. Now, He is nourishing as well as harvesting the crop of Jaagni – our spiritual awakening. This is the central theme of the Holy Kalash Wani, the third volume of the Holy Kuljam Swaroop. Come; nourish your soul and experience the joy of Jaagni. Pranam Ji *Kalash (Hi.):9/9*

"O seekers of truth! O Sundersaathji! Show me a tree with its roots in the sky and branches hidden under the ground! Show me a rabbit with horns in his head! Show me a blood-son of an infertile woman! Show me a flower blooming from the sky! If I find any one of these in this worldly realm, I would believe that this world truly exists in the reality of the Parbrahmn!" Kalash Hi.: 2/31

Without Taartam Knowledge, people fail to realize the world's non-existent nature and endup in the deep and dark valley of 'Nirakaar'. Come, know the Ultimate Reality and receive the essence of the holy Kalash Wani. Begin your journey. Seek refuge in unparalleled self-less love and wifely-devotion. Surrender totally, feel the pangs of separation and purify yourself. Be vigilant for your false ego. Dedicate life for the cause of Jaagni. Get engaged in the acts of Prem-Seva. Become an instrument for peace and happiness. Pranam ji

संसार रुपि महाखेल एक मृगजल प्रपंच है। इसमें मनुष्य की जड़ कर्मकांडी वृत्तियाँ ही माया का स्वरूप बन गई हैं। धार्मिकता के अनेक भ्रमित रुप पाए जाते हैं। अगुए–गुरूजनों एवं धर्म स्थानों द्वारा अंहकार के प्रदर्शन हो रहे हैं। पंडितों द्वारा वेदों के ज्ञान को संस्कृत के वाद–विवाद का विषय बना दिया गया है। झूठी माया को सत्य दर्शा कर धर्मों में झूठ का व्यापार चल रहा है। देखा देखी की चाल में लोग पारब्रह्म को खो rahey हैं। धुन्ध समान वैराट और वेदों के ज्ञान की सीमा निराकार तक ही है। साधू ज्ञानीजन अपनी अटकल युक्त बुद्धि को लेकर पारब्रह्म को निराकार कह देते हैं। लेकिन वे shashtron mein darshayi gayi इस बात पर ध्यान ही नहीं देते हैं कि साकार और निराकार दोनों माया ही की उपाधियाँ हैं। जिसका कोई vastavik अस्तित्व ही नहीं है, उसे मोह कहते हैं, और मोहतत्व की पहुँच निराकार तक ही है।

बिना तारतम ज्ञान, arthaat, पराविद्या के, मोह माया की उलझनों से छुटकारा सम्भव नहीं है। सिर्फ एक बेहदी aatama, जो जाग्रत निज–बुद्धि युक्त है, वही शास्त्र और साधुओं की वाणी को स्पष्ट करने में सक्षम है। इस atthaisve kaliyug ke maha mangal mayi समय में असत्य जीव, जो मूलतः निराकार ही है, उसका अखण्ड evam suddha sakaar swaoop vaan सत्य आत्मा से मिलान हुआ है। इससे इस chaudah loko ke ब्रह्माँड की सम्पूर्ण जीव सृष्टि को अखण्डता मिलनी है। vaagh bakri eak saath khayenge, khelenge. Kisi ka kisi ke prati koi beir bhaav nahin rahega. Har eak praani apney parbrahmn dhani ke prem mein masta honge. Yahi Taartam gyaan ki vishwa ko anokhi den hei. Sri Kalash wani is akhandta ki aur ki hamari yatra ki pratham sidi hei….

अब जाग देख्यो सुख जागनी, ए सुख सोहागिन जोग ।
तीन लीला चौथी घर की, इन चारों को यामें भोग ।।

प्यारे सुन्दरसाथ जी, इस वाणी रूपी प्रसादी को आपके कर कमलों में रखते हुए अपार आनंद हो रहा है। श्री कुलजम सरूप की वाणी करीब 400 वर्ष पुरानी हिन्दुस्तान की बोल–चाल की भाषा में अवतरित हुई है। लेकिन समय के साथ–साथ भाषा में भी परिवर्तन आता रहता है। इससे आज आत्म–खोजी सुन्दरसाथ जी को इस वाणी की भाषा कठिन लगती है। भाषा के प्रश्न के उपरान्त दूसरा बड़ा प्रश्न इस वाणी की एक–एक चौपाई की सरल टीका का था, जो हमारे जीवन काल के हादी सतगुरू पूज्य जागनी रत्न सरकार श्री जी ने सुलझा दिया। सरल टीका हो जाने पर भी सुन्दरसाथ जी के सामने एक महत्वपूर्ण प्रश्न रह जाता है–वाणी के विविध विषयों की बहुत सारी कड़ियों को जोड़ने का। जब तक हम इन सब कड़ियों को आत्म–जागनी प्रक्रिया के बड़े चित्र में सही जगह फिट नहीं कर पाते हैं, तब तक हमारे भ्रम मिट नहीं सकते। इसे एक पझल (puzzle) की भांति ही समझो। इन कड़ियों को इस ग्रंथ में जोडने का प्रयास है।

ऐसा कार्य बिना धनी की मेहर, बिना सतगुरू जी के आर्शीवाद, बिना वाणी चर्चा श्रवण, बिना वाणी मंथन और बिना ज्ञानी सुन्दरसाथ जी से वार्तालाप किए सम्भव नहीं होता। सम्पूर्ण श्री मुख वाणी और बीतक को नजर समक्ष रखने से ही उपरोक्त प्रश्न को यथार्थ न्याय दिया जा सकता है। अतः पूज्य जागनी रत्न सरकार श्री जी से सुनी–समझी वाणी चर्चा और उनके ही अंग स्वरूप कई ज्ञानीजन सुन्दरसाथ और धर्मोपदेशकों की वाणी सेवा का यह फल आप सबके चरणों में रख पाये हैं। यह ग्रंथ मूल वाणी की गहराईयों तक पहुँचाने का सेतु मात्र है। सुन्दरसाथ जी इसे मूल वाणी का विकल्प या substitute समझने की गल्ती न करें। असल 'आनन्द' रस तो मूल वाणी को पढ़ने से ही मिलता है। इसलिए सुन्दरसाथ जी को वाणी की मूल भाषा का ज्ञान लेकर ही फिर वाणी में डूबना ही होगा।

श्री कुलजम सरूप की वाणी का अवतरण कोई क्रमबद्ध विषयों के क्रम और तर्क को ध्यान में रख कर नहीं हुआ है। धामधनी के हृदय से उतरने वाली बातें, जो रूहानी आनंद बरसाने वाली है, कोई खास क्रम हो भी कैसे सकती हैं? लेकिन फिर भी, जो सुन्दरसाथ जी श्री मुख वाणी

को सीधे पढ़ने वाले नहीं हैं, उनके लाभ हेतू यहाँ पर विषय क्रम में बांधने का प्रयास किया गया है। विषय के अनुसार सम्बन्धित चौपाईयों को एक साथ करने का प्रयास इसलिए किया गया है, ताकि सुन्दरसाथ जी एवं आत्म–खोजी जन वाणी की मूल बातों का सार तत्व आसानी से ग्रहन कर सके। ग्रंथ के अंत में 'कहाँ क्या पढ़ें? प्रकरण क्रम से'' दिया गया है, जो संशोधन वृत्ति वाले सुन्दरसाथ जी को बड़ा ही उपयोगी रहेगा। हमारे इस प्रयास में चौपाईयों के मूल भावों में अन्तर न आ जाये उसका घ्यान रखने का पूरा प्रयास किया गया है। फिर भी यदि ऐसी कोई त्रुटि सुन्दरसाथ जी के ध्यान में आये तो हमें अपना छोटा सा साथी समझ कर क्षमा करना, और इसके बारे में हमें सूचित करने की कृपा करें ताकि भविष्य में इसे सुधार लिया जा सके।

आज के इन्टरनेट internet के युग में विश्वभर में English अंग्रेजी भाषा ही एक सर्व साधारण माध्यम बन गई है। हिन्दी के साथ साथ अंग्रेजी English में भी इस पुस्तिका का भावानुवाद तैयार हो गया है। *सुन्दरसाथ जी से विनम्र प्रार्थॅना है कि वे इस कलश वाणी सार दर्शॅन की अंग्रेजी आवृति को अपने बच्चों एवं स्नेही जनों तक पहूंचाये, और नयी पीढ़ी की जागनी सेवा में सहभागी बनें। आपकी ओर से इनके चरणों में यही एक जीवन भर का अमूल्य तोहफा गिना जायेगा।*

कोई भी सेवा बिना श्री राज जी की मेहर, उनके हुक्म के सहयोग के सम्पन्न नहीं होती। प्रत्यक्ष रूप में, कोइॅ भी सेवा विविध सेवा–भावी सुन्दरसाथ जी के सहयोग से ही सम्पन्न होती है। पूज्य सरकार श्री जी ने जिन निर्मल दिल सुन्दरसाथ को हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बनाया है, उन सब ने छल वाली माया की आंखों में धूल डाल कर अपना अमूल्य समय दे कर हमें सेवा सहयोग दिया है। यह सभी सेवा–भावी सुन्दरसाथ जागनी लीला में 'कलश' के समान हैं। और ऐसे सुन्दरसाथ जी सिर्फ अपनी सेवा ही से इस संसार में चमकते रहेंगे। हमारे अमृतसर सुन्दरसाथ जी लवली भैया की हिन्दी फोन्ट टाइपींग सेवा करने की सच्ची लगन के बिना यह ग्रंथ आज आपके कर–कमलों में न होती।

इस ग्रंथ के कवर पेज का चित्र भी सभी सुन्दरसाथ जी की एक साथ मिलकर जागनी सेवा का 'कलश' चढ़ाने की भावना को प्रतिबिम्बित करता है। इसमें से हमारे धनी जी की पंच शक्तियों का जो प्रकाश हो

रहा है, इसी से जागनी हो रही है, और सुन्दरसाथ जी के हाथों में सौंपा जागनी कलश चढ़ाने का काम कितना कठिन है, यह भाव स्पष्ट रूप से प्रगट हो रहे हैं। इस पूजन विधि की अद्‌भूत घड़ियों के पवित्र भावों को हृदय में लेकर एवं इस चित्र से मिलने वाली सामूहिक रूप से जागनी सेवा में समर्पित होने की प्रेरणा लेते हुए इसे यहाँ लिया गया है। यह फोटो श्री 5 पद्‌मावती पुरी धाम पन्ना जी की इस 2006 के वर्ष की यात्रा दरम्यान हमारे U.S.A. सुन्दरसाथ जी श्री संजीव पटेल ने श्री गुम्मट जी मंदिर के कलश जी की पूजन विधि को अपने कैमरे में अंकित कर लिया था, वह है। प्राणप्रिय गुम्मट वाले के चरणों में प्राथॅना करते हुए आशा करते हैं कि समस्त प्यारे सुन्दरसाथ जी इसे सिफॅ जागनी के हकारात्मक द्रष्टिकोण से ही देखेंगे।

योगानुयोग, धनी जी के हुकम ही से तीस सितम्बर 2006 के श्री निजानंद आश्रम, रतनपुरी के वार्षिक भंडारे की समाप्ति के दिन ही इस ग्रंथ का संकलन कार्य New Jersey, U.S.A में सम्पूर्ण हुआ है। हमारे सतगुरू जी के चरणों में श्रध्धा–सुमन रखने का इससे सुन्दर और कौनसा दिन हो सकता है?

अंत में, यह 'कलश' वाणी का सार–तत्व सभी सुन्दरसाथ जी के दिलों में चूभ जाये, हम सभी के कौल, फैल और हाल एक रूपता की ओर बढें, और समस्त संसार में इस वाणी की खश्बू फैल जायें, इसी श्रध्धा–सुमन भावना के साथ धामधनी श्री प्राणनाथ जी के नूरी चरणारविंद में हार्दिक प्रणाम करते हुए, हम इस सेवा को आपके कर कमलों में रख रहे हैं।

सुन्दरसाथ चरण रज
बालूराज निजानंदी, धर्मोपदेशक, श्री निजानंद आश्रम, वडोदरा
रमण भाई के. पटेल, प्रमुख, श्री निजानंद जागनी अभियान

Forward

Because the Holy Wani is in almost four centuries old ordinary spoken Hidustani language, it also presents a unique translational problem for the new generation. Since 1994, that initial hurdle has already been resolved for the readers of Hindi and Gujarati when we received the historic gift of the first-ever simple Hindi translation of the complete Kuljam Wani due to the graceful leadership of Dharmavir Jaagni Ratan Pujya Sarkar Shri ji.

Despite this, Sundersathjis are unable to put all the Kuljamic concepts together and grasp the essence of the Wani. Moreover, there are only remote opportunities and resources for the systematic study of the Holy Wani. Today, there are only a few learned sundersathjis, who are exclusively devoted, and who are able to communicate the Kuljamic divine science in the English medium. We are glad to have Bhai Shri Anil Srivastava of Chandigadh, who is helping us fill this huge gap by devoting his valuable time to talk to sundersathjis in conjunction with the initiatives by our U.S.A sundersathjis.

In 1996, we published the first English book "*Nijanand: The Path to Eternal Bliss*" introducing Shri Nijanand Sampradaya. In 1998, we launched the website: *nijanand.org*, which now include audio files, essays on many topics and more than one hundred selected chapters of the Holy Wani translated in English. In 2001, we published '*Meher Sagar*' book, explaining major aspects of Shri Rajji's Grace. In 2005, we published a book of *Seva Pooja: A book of daily prayers and worship* for sundersathjis. This is the first comprehensive publication of this nature in the history of our Faith. It

covers the meanings of our prayers with focus on meditation, which we call 'chitwani', with a complete section introducing Shri Prannathji's Divine Wisdom and an easy to use manual "Sundersaath Jivan" that includes life principles of a sundersaath, ethics of behavior, values and a daily 'To Do' list.

This *Kalash Saar Darshan* book summarizes the essence of the Kalash Granth of the Holy Kuljam Swaroop (Wani). It clarifies the many important Kuljamic concepts. By understanding them, you can virtually dive into any of the remaining 16 volumes of the Holy Wani. In addition, it does reflect what we have learned through the exchange of ideas regarding the authentic and effective delivery of the Holy Wani and its application to real life situations. We urge to *all parents* to share the English version of Seva Pooja and this Kalash Saar Darshan. There is no gift greater than that of the Holy Wani.

As you may know, the Holy Wani did not descend in an organized chronological sequence. It descended simply as a flow of divine experiences with some apparent randomness at the Will of our Lord. Here, an attempt has been made to keep the sequence of the Wani chapters in tact as much as possible and to bring the common themes together without losing its original flavor. The essence of the 24 chapters of the Kalash Wani has been presented in 86 subject-oriented sub-titles for the sake of simplicity and clarity of thoughts.

The front cover design reflects our holiest Shri Ghummatji's blessings. It represents the urgent need for collective Jaagni initiatives, without which the Kalash of *five* divine powers of Aksharateet Lord cannot shine in this world. To reap the fruits of Kalash, we all

must climb high, take risks with pure intentions, and break the worldly barriers of our comfort zones.

The back cover portrays the non-existant nature of this Creation through the metaphors of an inverted tree, rabbit with horns and a flower blooming from the sky. However, people fail to realize this because they live a thoughtless life - exactly like those camels and the ants! It explains the life of a soul on her spiritual journey through the metaphors of the butterfly and the fish. It awakens the spirit of a carefree elephant for those preparing to dedicate their life for the divine cause while simultaneously alerting to be prepared to shrink ourselves so we can easily pass through the smallest needle-hole. Only such an awakened soul can become an instrument for establishing eternal peace and happiness.

We dedicate this *seva* in the lotus feet of our Satguruji on his 82nd birthday, the 5th of February, 2007.

May the Holy Words of Shri Rajji's Kalash Wani touch the cord of your hearts and dissolve all maaya-borne blemishes! May the Holy Wani awaken us in Kuljamic Kaul (beliefs), Feil (actions) and Haal (s
This *Kalash Saar Darshan* book summarizes the essence of the Kalash Granth of the Holy Kuljam Swaroop (Wani). It clarifies the many important Kuljamic concepts. By understanding them, you can virtually dive into any of the remaining 16 volumes of the Holy Wani. In addition, it does reflect what we have learned through the exchange of ideas regarding the authentic and effective delivery of the Holy Wani and its application to real life situations. We urge to *all parents* to share the English version of Seva Pooja and this Kalash Saar Darshan. There is no gift greater than that of the Holy Wani.

As you may know, the Holy Wani did not descend in an organized chronological sequence. It descended simply as a flow of divine experiences with some apparent randomness at the Will of our Lord. Here, an attempt has been made to keep the sequence of the Wani chapters in tact as much as possible and to bring the common themes together without losing its original flavor. The essence of the 24 chapters of the Kalash Wani has been presented in 86 subject-oriented sub-titles for the sake of simplicity and clarity of thoughts.

The front cover design reflects our holiest Shri Ghummatji's blessings. It represents the urgent need for collective Jaagni initiatives, without which the Kalash of *five* divine powers of Aksharateet Lord cannot shine in this world. To reap the fruits of Kalash, we all must climb high, take risks with pure intentions, and break the worldly barriers of our comfort zones.

The back cover portrays the non-existant nature of this Creation through the metaphors of an inverted tree, rabbit with horns and a flower blooming from the sky. However, people fail to realize this because they live a thoughtless life - exactly like those camels and the ants! It explains the life of a soul on her spiritual journey through the metaphors of the butterfly and the fish. It awakens the spirit of a carefree elephant for those preparing to dedicate their life for the divine cause while simultaneously alerting to be prepared to shrink ourselves so we can easily pass through the smallest needle-hole. Only such an awakened soul can become an instrument for establishing eternal peace and happiness.

We dedicate this *seva* in the lotus feet of our Satguruji on his 82nd birthday, the 5th of February, 2007.

May the Holy Words of Shri Rajji's Kalash Wani touch the cord of your hearts and dissolve all maaya-borne blemishes! May the Holy Wani awaken us in Kuljamic Kaul (beliefs), Feil (actions) and Haal (state of being in Nijanand)! May all these *three* move towards harmony each day! That is our journey for *this* life as a Sundersaath. This is the only Way to Peace and Happiness for this entire creation of the fourteen worlds. This is the Dream of our Lord Shri Prannathji: *Sukh shital karun sansaar*.

अब जाग देखो सुख जागनी, ए सुख सोहागिन जोग ।
तीन लीला चौथी घर की, इन चारों को यामें भोग ।।

Ab Jaag Dekho Sukh jaagni, Eah Sukh Sohagin Jog |
Teen Leela Chauthi Ghar ki, In Charon ko yamein Bhog | |

विषय सूचि

श्री कुलजम स्वरुप (कु. स्व.) संक्षिप्त परिचय 226

श्री कु. स्व. की विशेषताएँ: 227
श्री कु. स्व. के प्रमुख सर्व साधारण सिद्धान्त: 230
श्री कु. स्व. के पाँच प्रमुख विषय विभाग 231
श्री कुलजम सरुप साहिब के प्रणेता: स्वयं पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी 231
श्री कृष्ण जी, श्री राज जी, श्री प्राणनाथ जी और श्री जी साहेब जी 232
श्री तारतम 233
श्री निजानन्द स्वामी जी की आत्मखोज यात्रा 235
श्रीजी को जागनी भार सुपुर्द 236

श्री कलश वाणी: संक्षिप्त ग्रन्थ परिचय 236

कलश तौरेत 26
कलश (गु.), कलश (हि.) और सनंध के प्रकरणों की तालिका 47

जागनी: कलश ग्रंथ का केन्द्रिय विषय 260

विरह: जागनी प्रक्रिया का आवश्यक अंग 270
पारब्रह्म की दिव्य पाँच शक्तियों का संक्षिप्त परिचय **म्ततवत! ठववाउंता दवज कमपिदमकण**

श्री कलश सार दर्शन **म्ततवत! ठववाउंता दवज कमपिदमकण**

1 मूल प्रश्न: तू कौन? आई इत क्यों कर? 56
2 माया मनुष्य को कैसे भ्रमित करती है? 57
3 मोह किसे कहते हैं? मोहतत्व की पहूँच निराकार तक ही है। 58
4 मोह माया से छूटकारा कैसे पायें? 60
5 माया ही निराकार है और माया ही साकार है। 62
6 संसार के साधूजन पारब्रह्म प्रीतम को क्यों नहीं पा सकते? 63
7 पंडिताइँ और संस्कृत भाषा की उलझनों में गुमराह संसार 65
8 राजा जनक को न होने वाली पेहेचान इस समय तुम्हें हो सकती है। 67
9 पारब्रह्म को निराकार कहना: साधू ज्ञानियों की अटकल युक्त बुद्धि का कारण 68
10 शास्त्र और साधूओं की वाणी को स्पष्ट करने वाला: एक बेहदी **म्ततवत! ठववाउंता दवज कमपिदमकण**
11 पारब्रह्म पिया के दर्शन की अभिलाषा ही प्रेमीजनों की पेहेचान। 71
12 प्रेम का मार्ग विकट, पर उलझनों वाला नहीं। 73
13 पारब्रह्म प्राप्ति के रास्ते में आने वाले अवरोंधों को पेहेचानो 74
14 जाग्रत निज–बुद्धि युक्त ईमान में ही वास्तविक शान्ति की जड़। 76
15 मनुष्य की जड़ कर्मकांडी वृत्तियाँ: माया ही का स्वरूप। 78
16 धनी से अर्ज करें: एक यही बात हमारे हाथ में। 80
17 विरह: आत्मा के सभी जागनी मनोरथ पूर्ण कराने वाला। 81
18 विरहिन और मछली दोनों की तड़प एक जैसी। 84

19 विरहिन और पतंगे की चाल एक जैसी। 85
20 आत्म–पेहेचान हो जाना ही 'विरह का प्रकाश' है। 88
21 धनी के इश्क की कोई बराबरी नहीं। 89
22 आतम और संगी जीव के परस्पर सहयोग से धनी मिलन। 92
23 हमारे धनी जीः सवॅ श्रेष्ठ किसान। 95
24 धनी का हुक्म रुह से जागनी का काम बड़ी युक्ति से करवाता है। 96
25 आत्मा की बन्दगी और विरह सिर्फ अपने धनी के लिए। 98
26 पहले निज–सुख सुहागनियों को, बाद में संसार को अखण्डता। 99
27 प्रेम–सेवा में समर्पित रहना ही 'वाणी का प्रकाश' होने का प्रमाण।
म्ततवत! ठववाउंता दवज कमपिदमकण
28 सत्य घनी और असत्य माया की पेहेचान का सुख अब ही लेना है। 101
29 सब के दिलों से माया को हटाना ही सबसे बड़ी सेवा। 103
30 दुनिया में इस नूरी ज्ञान के एकदम जाहिर न होने के दो कारण। 104
31 सुहागिनी ब्रह्मसृष्टि की रेहेनी को देख कर अपने जीवन को देखें। 107
32 आलस्य छोड़ो, धनी का हुकुम सिर पर चढ़ाओ, हाँसी से बचो। 110
33 तुम इस छल रुपी माया के नहीं हो, अपनी हाँसी मत करवाओ। 113
34 साथ जी! तीन सृष्टि के तीनों सुखों को तोलो, फिर अपनी सोचो। 114
35 अगुए–गुरूजन एवं धमॅ स्थानों द्वारा अंहकार के प्रदर्शन। 116
36 जीवन एक खेल है, इसे सिफॅ देखो। 119
37 संसार रुपि महाखेल में धार्मिकता के अनेक भ्रमित रुप 120
38 झूठी माया को सत्य दशॉ कर धर्मों में झूठ का व्यापार। 123
39 देखा देखी की चाल में लोग पारब्रह्म को खो बैठते हैं। 126
40 वाद–विवाद का मूलः कच्ची धारणाओं को आधार मान कर चलना। 128
41 वेद और वैराट दोनों धुन्ध है। 131
42 ब्राह्मण कौन? चाण्डाल कौन? 133
43 वैराट का उल्टा चलनः इसके मृगजल प्रपंच से बच के रहो। 136
44 पंडितों द्वारा वेदों के ज्ञान को संस्कृत के वाद–विवाद का विषय बना देना। 137
45 वैराट और वेदों के ज्ञान की सीमाः निराकार तक। 139
46 जीव' असत्य निराकार है, और 'आत्मा' सदा ही अखण्ड है। 140
47 श्री मद्भागवतः संसारी जनों के लिए धुन्ध और बेहदी के समाचार। 144
48 बुद्धनिष्कलंक अवतारः जाग्रत बुद्धि और नूर तारतम का सामूहिक रुप। 146
49 जाग्रत बुद्धि और नूर तारतम के बल से ब्रज–रास लीलाओं के रहस्यों का उद्घाटन। 151
50 कालमाया और योगमाया–दोनों ब्रह्मसृष्टियों की आज्ञा के आधिन। 155
51 योगमाया अखण्ड, आनन्द–दायक, एकरस स्वरुप, एकदिली पूर्ण है। 156
52 रास लीला का सूत्र रूप धनी का आवेशः अर्न्तध्यान लीला रहस्य 158
53 ब्रज, रास और जागनी लीला रूहों ने धाम में बैठ कर ही देखी है। 161
54 जागनी का ब्रह्माँडः अन्य सभी ब्रह्माँडों में सर्वश्रेष्ठ। 163
55 धनी की दया से रुह का स्वरुप, शोभा–श्रृंगार दयामय हो जाता है। 164
56 विकारों की सफाईः तारतम ज्ञान रुपि साबुन और आवेश के सहयोग से 167

57 हाँसीः मन के उल्ट घुमाव से दिलों में बेईमानी आ जाने से। 170
58 हाँसीः ज्ञान की लेन–देन में मान–गुमान की भावना को लेकर। 172
60 वर्तमान जागनी लीला सर्वाधिक महिमापूर्ण है। 178
61 जागनी संकल्पः पिउ जगाई मुझे एकली, मैं जगाऊँ बांधे जुथ। 180
62 जागनी की विधिः प्यार एवं बड़ी युक्तिपूर्ण 181
63 जागनी की विधिः धनी का आवेश साथ के अंग में बिठा कर 182
64 जागनी की विधिः ज्ञान से समझा कर, प्रमाण–आत्म साक्षी दिलाकर 184
65 धनी के वचनों पर ईमान लाने से ही दुःख का सुख में परिवर्तन होगा 187
66 आवेश और तारतम दोनों के सहयोग से जागनी होनी है। 191
67 तारतम ही संसार के सभी ग्यान की बातों का सार है। 193
68 श्री इन्द्रावती जीः साक्षात् स्वरुप श्री राज जी के तारतम का अवतार 196
69 परमधाम की आत्मा की पेहेचान 197
70 परमधामः नया बनने के या पुराना होने के क्रम से परे। 198
71 आत्माओं के संग से जीव को अखण्ड मुक्ति का लाभ होगा। 199
72 अखण्ड प्रेम से रंग जाने के लिए इन्द्रावती जी की संगति आवश्यक 200
73 'तारतम का तारतम': परमधाम लीला का निज–बुद्धि युक्त विज्ञान। 201
74 धनी जी की कृपा के आधिक्य से रुहें अपने धाम को देख पायेगी। 203
75 स्वप्न के सुख और जाग्रति के सुख का भेद समझकर जागो। 204
76 स्वप्न में पड़ने वाली मार से जागनी होगी। कैसे? 205
77 ब्रह्माँड की आयु कितनी? सपने के समय जितनी! 207
78 निराकार के पार के पार की अखण्ड वाणी द्वारा वैराट बस होगा। 209
79 आगे चलकर इस अखण्ड वाणी का बड़ा विस्तार होगा। 210
80 अक्षर ब्रह्म की बड़ाई और ब्रह्मसृष्टि की नजर की पहुँच 211
81 जाग्रत निज–बुद्धि और नूर–तारतमः दो अखण्ड फल 213
82 पंच वासनाओं की जागनी होने पर अक्षर ब्रह्म की जागनी होगी। 216
83 आतम को धनी की शक्तियाँ मिलने से जागनी का बड़ा आनन्द 219
84 सुन्दरसाथ जी को मिला दिव्य खुर्दबीन 221
85 आखिरी दृश्यः खेल एक और बातें अलग–अलग 223
शब्द सूचि 280

Table of Contents

Forward
Table of Contents
Shri Kalash (Toret) Wani
Kalash as New Toret
The Five Divine Aspects of the Parbrahmn
Chapter Matching By Topic: Kalash and Sanandh

Shri Kalash Saar Darshan

1. The Ultimate Query……
2. This World: The Biggest Illusion of Maaya!
3. Moha is That Which Does Not Exist in Reality.
4. Who can Untie the Knots of Maaya?
5. To Know Maaya, One Must Go Beyond Maaya!
6. Why the Sadhus Cannot Meet the Parbrahmn?
7. Pundits Trick People Using Sanskrit Knowledge
8. Videhee Janak and the Mohtatwa!
9. Parbrahmn: Not in Every Atom, Not Formless!
10. Borderless Souls: The Only Empowered

11. Soul's Only Burning Desire
12. The Path of Love: Difficult, but not Impossible!
13. Let Go Your Orthodoxy and Ego, Now!
14. Finding the Roots of True Peace
15. The Mission of Jaagni is Challenging!
16. Arji is All a Soul Has Total Control Over.
17. Viraha: As Jaagni Catalyst
18. Viraha: The Fish metaphor
19. Viraha: The Butterfly Metaphor
20. Self-Realization is Enlightenment of Viraha

21. Beloved Lord's Ishak is Beyond Comparison!
22. Jaagni means Jiva's Alignment with Atman
23. Lord Shri Rajji: The Best Farmer
24. Lord's Hukum Empowers the Souls for Jaagni Seva
25. The Path of Exclusive Worship
26. Brahmn Srishti First!

27. Follow Your Heart and Act Upon Your Promises!
28. The Power of 'Now'
29. The Greatest of All Seva

30. Reasons for Slow Spread of the Holy Wani
31. The Qualities of a Suhagin Brahmnsrishti
32. Procrastinate Not! Avoid Suffering and Mockery!
33. Everything Other Than Shri Rajji is Maaya.
34. You are Not of This World! Avoid Mockery!
35. Know Thyself, and Act Accordingly!
36. Where are the Authentic Leaders and Gurus?
37. Life is a Game! Watch it With Awareness!
38. Many Forms of Religiosity in this Worldly Play
39. The Corrupt Business of Religions and Sects!

40. The Pigeons of the Magician
41. The Price for Pre-conceived Beliefs
42. The Foggy Way of the Vedas and the Veiraat
43. The Real Brahmin and the Real Butcher
44. Beware of the Reverse Walk of the Veiraat
45. The Pundits, Sanskrit and Speculations!
46. 'Nirakaar': The Limit of the Vedas and Veiraat
47. Jiva is False and Nirakaar, Aatman is Eternal
48. Bhagvatam: The Fog, the Priceless News!
49. Know the Buddha-Niskalanka Avataar
50. The Miracle of Awakened Intellect and Taartam

51. The Brahmnsrishti's Potential!
52. Yogmaaya: Eternal, Blissful, and Harmonious
53. Lord's Aavesh: The Catalyst for Raas Leela
54. The Best Theater: Mool Milawa
55. The One and Only Jaagni Drama!
56. Shri Rajji: The Slave of His Gracious Soul!
57. Jaagni: Cleansing through 'Taartam' Soap & Aavesh
58. The Cause for Faltered Faith & Mockery
59. Mockery in the Exchange of Spiritual Knowledge!
60. Expecting Fruits from a Root-less Tree!

61. The Unmatched Glory of the Jaagni Leela

62. Jaagni Resolve to Awaken All
63. Jaagni Through Love and Persuasion
64. Jaagni Through Impregnation of Aavesh
65. Jaagni by Knowledge-Sharing and Self-Witness
66. Transforming Sufferings into Happiness
67. Jaagni Through the Union of Aavesh and Taartam
68. Taartam: The Ultimate of All World knowledge
69. The Incarnation of Taartam Knowledge
70. The Qualities of the Residents of Paramdham
71. Paramdham is Beyond All Kaalmayic Processes
72. Aatmans are the Benefactors for All Jivas
73. Why Must We Seek Sri Indrawati's Company?
74. Taartam of Taartam: The Ultimate Science
75. The Work of Lord's Abundant Grace
76. The Joy of Dreaming Versus the Joy of Waking
77. Jaagni Through Taking Beatings in Dream!
78. The Age of Creation: Just As Long As a Dream!
79. Reclamation of Veiraat Through the Holy Wani
80. The Holy Wani Shall Spread Out Greatly
81. Brahmn Srishtis: The Real High- Tech People!
82. The Two Eternal Fruits: Nij-Budh and Taartam
83. The Instruments of Akshar Brahmn's Jaagni
84. The Joy of Jaagni Comes from the Source!
85. The Glory of Sundersathjis
86. The Last Scene: One Drama, Many Stories

Shri Kuljam Swaroop

Shri Kalash (Toret) Wani

Before we begin to listen to the Kalash Wani, let us familiarize ourselves with some basic philosophical concepts.

The Holy Kuljam Swaroop[1] is the word-form or the *Vangmay Swaroop* of the Parbrahmn Aksharateet who is Sachidanand, or the ultimate embodiment of Truth, Consciousness and Bliss. It descended from Vikram Samvat 1715 to 1748.

Because these Divine Words have directly emanated from the lips of Parbrahmn, it is also called '**Shri Mukh Wani**'. It is not the work of a poet, a pluralistic saint, a mahatma, a rishi, or an Avatāra or incarnation of Lord Vishnu. Rather, it is the work of Lord Aksharateet's graceful tongue, which has manifested in the Knowledge (खुदाई ईलम) form in this Jaagni Brahmaand, but releases only the pure Ishak in Paramdham. It is regarded as the principle sacred book of Shri Nijanand Sampradaya.

Because it is filled with the Aavesh or Exalted Power of the Lord Aksharateet, it is eternal and alike Him in the Knowledge form. Therefore, it qualifies as the '**Swasam Veda**.' It is regarded as an idol in the Divine (Noori) Knowledge-form - not just a sacred scripture for the sundersaath devotees. The knowledge and wisdom contained therin is called Taartam Knowledge, which is treasured in 18,758 chopais (a verse with four parts) in total 527 chapters and 17 sub-parts or volumes.

---

[1] See article "Introduction to Kuljam Swaroop" at the end of this book.

The Kalash Wani appears in two volumes in the Holy Kuljam Swaroop. It represents the crown of the Holy Kuljam Swaroop. 'Kalash' literally means an ornament on the top of a dome. Here, it signifies the best and the highest essence, the Kalash of Supreme Divine Knowledge. It is the Knowledge that reflects the Supreme Wisdom of Mahaamati. Therefore, it is shining with all its glory on the dome of the temple of knowledge of all world religions.

According to the Holy Kuljam Swaroop, S'rîmad Bhâgavatam is the essence of the Vedas. The essence of the entire S'rîmad Bhâgavatam is contained in the Tenth Canto (दशम् स्कन्ध). There are ninety chapters (अध्याय) in the Tenth Canto. Out of these ninety, thirty-five contains the essence of the entire Tenth Canto. Out of these thirty-five chapters, thirty describes Brij Leela and five describes Raas Leela. It was this Raas Leela, about which Emperor Parîkchit had asked for clarification from S'ukadeva ji. S'ukadeva ji, the son of Vyâsaji, failed to satisfy Parîkchit's query and as a result, he could not elaborate upon the Raas Leela in the Bhâgavatam.

While Raas Leela is the ultimate essence of the Bhâgavatam, it does not describe it with full clarity. Shri Raas Granth, the first volume of the Holy Kuljam Swaroop, has now filled that 'gap' and built the bridge to Paramdham. Further, the essence of this Raas Granth Wani is Taartam[2]. Moreover, 'Jaagni Vichaar' or 'thoughts concerning spiritual awakening' are the essence of Taartam. Only through 'Jaagni Vichaar' it will be possible to return to our highest Abode. *तारतम को*

[2] Refer to chapter 33 of the Prakaash Granth, the second volume of the Holy Kuljam Swaroop.

*जागनी भयो सार। This Kalash Wani, which has descended from Paramdham (*नूर बिलंद), explores this 'Jaagni fruit.'

The Kalash Wani is both in Gujarati and Hindustani languages. The Hindustani version descended in Anupsahar (near New Delhi) with additional clarifications. In Kalash (Guj.), there are 12 chapters 506 chopais, whereas Kalash (Hind.) contains 24 chapers and 771 chopais. Kalash (Guj.) descended over the period of Vikram Samvat 1715–1729. It first begen in Habsa, Jamnagar, and was concluded in Surat. Kalash (Hind.) descended after the Sanandh Wani in Anupsahar. Many chapters of Kalash (Guj) and Kalash (Hind) are different. As opposed, many chapters of Kalash (Hind) and Sanandh are very similar.

To help us attain the goal of Jaagni, Kalash lays a very strong foundation by clarifying the meaning and the purpose of religion, criteria for a true religion and spiritual practices, moral and religious ethics, awakening of the cultural spirit. All these constitute essential organs of our spiritual journey.

Kalash Wani contains the essence of the Vedas and the Shashtras, and the Leelas of the last three Avataars – Shri Krishna, Buddhavataar and Nish-kalanka Avataar. It clarifies the nature of this Creation of Kaalmaya and the eternal Yogmaaya and describes Kaalmaya as one big play with innumerable episodes being played in the name of religion and spirituality.

It shows how human beings are locked in the complex web of externalities, religious orthodoxy and barriers of social customs and rituals. It also shows how the world is lost in the speculative knowledge of the saints and the religious leaders, who are primarily confined within the

boundaries of 'Nirakaar.' Here, people of knowledge are lost in their ego of being the person of knowledge. The true lovers of the Lord do not mix with them.

Kalash Wani separates truth (parbrahmn) from false (maaya). It draws the real picture of how religions and sects fight to show their superiority and receive broad-based community approvals. It exposes the traditions of portraying truth as false or vice-versa. It distinguishes the attitudes of a true Brahmin and a Real Butcher. It shows how people lose their valuable human life in the show of false religiosity portrayed by blindly following like a line of camels marching into a deep and dark valley.

As regards spiritual awakening, it helps the soul realize the glory and the greatness of Parbrahmn Shri Rajji and His grace. It demonstrates that the soul's expression of pangs of separation from her Beloved Lord is the foundational brick on the path of Love. Only after this Viraha, the soul becomes free from all biases and shines in her original pure form like a 'Kalash.' It describes the characteristics of the Brahmnsrishtis, significance and the glory of Viraha and Ishak for the Lord. The Hindustani version of the Kalash Wani intensely sings Viraha. It enlightens the soul on all the aspects of Viraha.

While many of the teachings of the Kalash Wani are directed at the practicants of other world religions and sects, they do *first* apply to the current Sundersaath community who may be violating the fundamental universal principles of spirituality. Kalash Wani thoroughly explains the entire process of Spiritual Awakening or Jaagni Prakriya.

Kalash declares Shri indrawatiji as the Incarnation of Taartam and announces that expansion of 'Taartam of Taartam' through her. It describes the meaning of the title 'Mahaamati' and Buddha Nis-kalanka Avataar.

To teach different complex lessons effectively, Kalash Wani utilizes a number of metaphors or riddles. For example, it illustrates the non-existence of this Creation in this way:

In Kalash (Hindustani): 2/31, the Lord says: *"O the Seeker of Ultimate Truth! Show me a tree with its roots in the sky and branches hidden under the ground. Show me a rabbit with horns in his head. Show me a blood-son of an infertile woman. Show me a flower blooming from the sky. If I find any one of these in this phenomenal worldly realm, I would believe that this world truly exists in the reality of the Parbrahmn!"* The people of the world fail to realize the non-existant nature of this Creation because they thoughtlessly follow the track that leads into the deep dark valley of 'Nirakaar' – exactly like the lines of camels and ants!

It teaches one to be bold and carefree like an elephant while dedicating on the path of Jaagni. One has to engage in jaagni Seva with this spirit to overcome the distractions of the Maaya. However, it simultaneously alerts us to develop the inner capabilities to shrink ourselves to a level so we can easily pass through the smallest needle-hole. Through the examples of a butterfly and a fish, it teaches the true meanings of Viraha and total surrender.

Dear sundersaathji! One cannot properly understand the Holy Wani without the knowledge of Bitak Saheb. To be able to grasp the deeper essence of the Kalash

Wani, one must know the related Bitak event that produced the Sanandh and the Kalash (Hindustani) Wani. Here is the story:

Shri Ji had sent two sundersathjis (Laldasji and Govardhanbhai) to discuss the inner meanings of Qur'an with the Mullahs of Emperor Aurangzeb in the Red Fort in Delhi. After finishing their meeting with the Mullahs, an ideaological dispute grew between the two. To cover up this dispute, Goverdhanbhai hurriedly rushed to see Shri Ji, and painted a very different picture of what exactly had happened with the Mullahs, and between him and Laldasji. As he was sharing his dishonest story, Laldasji arrived. He overheard what Goverdhanbhai was sharing with Shri Ji. Laldasji could not tolerate this dishonest de-briefing and painfully told Shri Ji that he should not trust them any more. "Our faith is simply limited to when we are face-to-face with you," he said boldly.

When Shri Ji learned about this reality, he was hurt deeply and got very angry. Immediately, he discontinued the Jaagni work at hand in Delhi. He sent all sundersathjis to different places, and he himself went to Anupsahar. Here, his health deteriorated a lot. During this time of trial, the Sanandh Wani and thereafter the Kalash (Hindi) Wani descended in Anupsahar.

Three main lessons emerge out of this Bitak incident, which are very relevant in the present time:

1. Despite realizing the Swaroop of Parbrahmn Aksharateet, being a Hindu by birth, sundersathjis had a fear to engage in honest and open communication with the leaders of Islam. The fear

was primarily due to the Sariah dominated and extremist positions taken by those in power at that time. This fear reflects in Govardhanbhai.

2. A desire of sundersathjis to win the love of Aksharateet Lord while remaining only within the boundaries of the Hindu religion and culture. This attitude, which reflects in Govardhanbhai, is seen even today.
3. A firm commitment to open an honest and respectful dialogue with all religious communities without regard to just one religion, culture, region or caste. And, to do this according to our Lord's command, with the transparent feelings of selfless and love-centered services for the humanity. This reflects in Shri Laldasji.

In light of the above dilemma of the sundersathjis, Shri Ji experienced deep anguish. He went into the state of pure Viraha. Soon, he emerges out very boldly and announces that *true peace lies in Jaagni Seva*. In Sanandh Wani, he clarifies that Buddha Nish-kalanka is Imam Mehndi and the Brahmn Srishtis are the true Momins. Then, to remove all doubts of sundersathjis, Kalash (Hindi) Wani reiterates these facts from Hindu perspectives.

Thus, the Holy Wani teaches us to practice our Nijanandi faith by soaking ourselves in Lord's Love on one hand, while engaging in transparent and authentic communication with the diverse contemporary religions utilizing the Divine Wisdom.

कलश तौरेत

यहूदियों *(Jews)* के मूसा *(Moses)* पैगम्बर के तौरेत *(Torah)* धर्म ग्रन्थ की वाणी को कलश ग्रन्थ में नया भाव और नवीन रूप प्राप्त हुआ है। इसलिए श्री कुलजम स्वरुप के कलश ग्रन्थ में इसे 'नए तौरेत' के रुप में दर्शाया गया है।

तौरेत (पुराना करार, *Old Testament,* यहूदियों का प्रमुख धर्म ग्रन्थ है, जो मूसा पैगम्बर को परमात्मा (जिसे यहूदी लोग निराकार मानते हैं) ने पांच ग्रन्थों के रूप में माउंट सेनाई *Mount Sainai* के पर्वत पर दिया था। मूसा को प्राप्त येह पांच ग्रन्थ हैंः *Genesis, Exodus, Leviticus, Numbers,* और *Deuteronomy.* इसके अलावा मूसा के बाद के पैगम्बरों की आठ किताबें उतरीं हैं और ग्यारह किताबें यहूदी विद्वानों द्वारा लिखी गई है। इस तरह से इन 24 किताबों के समूह को भी तौरेत कहा जाता है। इतना ही नहीं, इनके अलावा बहुत से *oral teachings* भी हैं, जिसमें तोरेत में परमात्मा के दिए आदेशों और सिद्धान्तों का पालन वर्तमान बदलती हुई परिस्थितियों के बीच कैसे लागु करना है इसकी चर्चा है। यह ग्रन्थ भी आज तौरेत की व्याख्या में लिए जाते हैं।

जिस तरह से तौरेत की 24 किताबें मानी जाती हैं, उसी तरह से कलश वाणी में धर्म के वास्तविक स्वरूप को प्रगट करने वाले और आत्म जागृति की सर्वश्रेष्ठ ऊँचाईयों को छू लेने वाले 24 प्रकरणों का समावेश है।

तौरेत में यहूदियों की जीवन रहनी, वार्तालाप, व्यवहार, उनके धर्म प्रचारकों की रहनी, प्रमाणिकता, ईमान, आत्म–मंथन, एवं आध्यात्मिक उत्थान के नियम दर्शाये गए हैं। इसमें कुल मिला के 613 आदेशों का समावेश है। सृष्टि सर्जन, प्रथम 2000 वर्षों की प्रमुख बातों का इतिहास, यहूदियों की उत्पत्ति से लेकर आगे की बीतक बातों का समावेश है। उनके मन्दिर *(synagogue)* में सेवापूजा दरम्यान पालन करने के बहुत सारे कठिन कर्मकाण्डों का विवरण है। श्री प्राणनाथ जी के नये तौरेत ग्रन्थ (कलश) में भी ऐसी ही बहुत सारी

बातों पर प्रकाश डाला गया है। लेकिन निराकार की पूजा और कर्मकांड में घुसी हुई जड़ता के प्रति जागृति दिलाई गई है।

Deuteronomy, जो मूसा का अन्तिम ग्रन्थ है, इसमें यहूदियों के लिए परमात्मा के आखिरी आदेशों का वर्णन है। यह यहुदियों के ईजराईल *(Isreal)* में प्रवेश करने से पहले रण प्रदेश में बिताए कष्टदायक चालीसवें वर्ष में उतरा था। इसमें मूसा अपने शिष्यों को तौरेत के आदेशों का पालन करने के लिए अनेक तरीकों से समझाते हैं। इसमें मूसा सबसे अर्ज विनती करते हैं, उनको बहुत सी ताकिॅक बातें करते हुए विविध तरह से उपदेश देते हैं। यह बोध देते हैं कि हम मानवों का ईमान कितनी आसानी से कितना खोखला सा हो जा सकता है। ठीक उसी प्रकार, कलश वाणी (नए तौरेत) के भी अन्तिम दो प्रकरणों में आत्म–जागृति संबंधी बहुत ही गहन बातों का और पेहेचान युक्त, जागृत–निज बुद्धि से सुशोभित ईमान कायम रखने का बोध करवाया गया है।

कलश ग्रन्थ में जैसे भरतखण्ड की ओर नौतनपुरी की महिमा गाई है वैसे ही तौरेत के *Deutoronomy* ग्रन्थ में ईजराईल और जैरूसलेम *Jerusalem* की महिमा गाई है। जिस तरह से सनंध वाणी में बुद्धनिष्कलंक और ब्रह्ममुनियों को कुरान के ईमाम मेंहेंदी और मोमिन कहे हैं, उसी तरह से कलश वाणी के मसीहा *(Messiah, the anointed one)* और नये यहूदी और कोइॅ नहीं पर श्री जी साहेब जी और ब्रह्मसृष्टि सुन्दरसाथ ही है।

कलश नया तौरेत इसलिए है, क्योंकि इसमें तौरेत में दर्शाये गए लौकिक कर्मकांडों से छुड़वाने का मार्गदर्शन है, परमात्मा को निराकार से पार शुद्ध साकार स्वरूप वाला दर्शाया गया है। और रूह की रहनी, अनन्य प्रेम, विरहिन के मार्ग को प्राधान्य दिया गया है। नए तौरेत का परमात्मा अपनी आत्माओं पर क्रोधित नहीं होता, न ही वह उन्हें कोई सजा देता है। हाँ, हांसी की बात भले ही की है, लेकिन वह भी रूहों के सुखों के लिए ही है। वह कर्मों के बन्धनों को विरह और प्रेम की आग में जला देते हैं। नए तौरेत में सारी सृष्टि को 'सुख शीतल' करके आठ बहिश्तों में रखने की बात

है, जीवित तन में सोये हुए जीव को मुर्दा दर्शाकर उसे जगाने की बात पर महत्व दिया गया है।

मूसा को उतरी तौरेत उन्होंने पूर्ण जाग्रत अवस्था में परमात्मा से सुनी थी ऐसा कहा जाता है, लेकिन नए तौरेत की विशेषता यह है कि साक्षात पारब्रह्म ने अपनी रूह श्री इन्द्रावती के अन्दर ही बैठ कर कही है। तौरेत में जो मसीहा के किसी भी वक्त प्रगट होने की बात कही है, वह श्री प्राणनाथ जी बुद्ध–निष्कलंक के रूप में प्रगट हो गए हैं, जिसने यह नई तौरेत वाणी कही है।

आओ साथ जी! अब हम कलश, नई तौरेत वाणी का सार तत्व ग्रहण करें।

Kalash – The New Torah

Torah (Toret) is the book of the Jews, which Prophet Moses received on Mount Sainai directly from God, whom they believe to be formless (nirakaar). It is also called the Old Testament, which includes five books: Genesis, Exodus, Leviticus, Numbers, and Deuteronomy. The teachings of Toret received new higher spiritual meanings in the Kalash Wani, and therefore, it is the New Toret.

There are eight more books by other prophets and eleven by the Jewish literates after Moses. This makes the twenty-four books. Today, these twenty-four books and writings of oral teachings (for application in the present time) collectively represent Toret. Kalash wani also contains twenty-four chapters, which exposes the true religion and touches the climax of spiritual awakening.

It is said that Moses heard the God's Toret Wani in a fully awakened state. On the contrary, the God of New Toret (Kalash) made His beloved Soul Shri Indrawatiji's heart His Abode, and then spoke the Kalash Wani from there.

Both Toret and Kalash Wani address topics such as social and religious ethics, honesty, faith, introspection, standard of living for religious preachers, and principles of spiritual awakening. Toret includes 613 commands, creation, the history of the first 2000 years, origin of the Jews and their history, strict and very difficult rituals to be practiced in synagogue. Kalash Wani seeks to free the world from the worship of the formless and the rigidity of strict (rituals) karmakand.

The last book of Deuteronomy represents the record of the final will of Moses. It came during the Jews' fortieth year in the desert, just before their entered Israel. Here,

Moses pleads, reasons, and preaches, using every tool imaginable to convince the Jews. He repeatedly cautions them against the fragile nature of their loyalty towards God. Exactly, the same way, the last two chapters of the Kalash Wani contains the deepest essence of spiritual awakening, guiding the sundersathjis to stick to their faith that is rooted in Shri Rajji's awakened-self intellect (पेहेचान युक्त, जागृत–निज बुद्धि).

The Kalash Wani sings the glory of the Holy Land of Bharat Khand and nautan Puri. Similarly, the book of Deutoronomy sings the glory of Isreal and Jerusalem. Shri Ji Sahebji Shri Prannathji is the Messiah, the anointed one and the Brahmn Srishti sundersathjis are the true Jews according to the Kalash Wani. In the Sanandh Wani, they are called Imam mehndi and Momins respectively.

The Kalash Wani guides us to be free from the practices of worldly rituals. It shows us the One Supreme Truth God who is beyond all forms and formless, but still having the purest divine form (शुद्ध साकार स्वरूप). Kalash proclaims that only living by the standard of the Soul, i.e., practicing the path of unparalleled love and Viraha enables the Soul to meet her Lord face-to-face.

The God of New Toret never gets angry with His Souls, nor can He punish them. Yes, He does engage in the game of mockery, however, only to please His Souls. He burns all bondages of Karma in the fire of the pangs of separation and pure love. He promises to awaken the dead spirit, establish eternal peace and happiness in the entire world and bestow them eternity.

Dear sundersaathji! Let us now enjoy the essence of the Holy Kalash Wani. Pranam Ji

पारब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथ जी की पाँच दिव्य शक्तियों का संक्षिप्त परिचय

श्री मुख वाणी कहती है कि इस संसार में पारब्रह्म अक्षरातीत जागनी लीला करने के लिए अपनी रूहों के साथ अपने निजधाम की सर्व प्रकार की निधि लेकर पधारे हैं। साथ साथ बातूनी भाव लेकर श्री मुख वाणी यह भी समझाती है कि अखण्ड परमधाम से पारब्रह्म इस नश्वर संसार में अपने मूल स्वरूप से आ भी नहीं सकते हैं! उनको या उनके नूरी स्वरूपों को यहाँ पर आने की कोई आवश्यकता नहीं होती। इस तरह हमें यह हकीकत समझाई गई है कि पारब्रह्म का आना उनके आनन्द अंग ब्रह्मसृष्टियों को अपनी सर्व प्रकार की दिव्य शक्तियाँ प्रदान करके ही सम्भव हुआ है। उनके अनंत आयामों का प्रगटीकरण, जो हम इस संसार में अनुभव कर सकते हैं, पाँच प्रमुख तरह से, पाँच दिव्य शक्तियों के रूप में हुआ है। धामधनी श्री राजश्यामा जी की पाँच दिव्य शक्तियों के सामूहिक रूप को महामति कहा गया है।

श्री प्राणनाथ जी अपनी हरेक रूह और आत्म को इन पाँच शक्तियों से नवाजने का वचन दिया है। अपनी हरेक रूह को धनी अलग अलग मात्रा में इन शक्तियों को देते हैं। ऐसा करके वह अपनी दिल चाही जागनी लीला सजाते हैं। इस जागनी लीला में उन्होंने अपनी एक आत्म, जिसको इन्द्रावती नाम से पुकारा गया है, को अपनी इन पाँचों शक्तियों से सुशोभित किया है। ऐसी सौभाग्यशाली आत्म श्री इन्द्रावती जी की जागनी लीला श्री मेहेराज ठाकुर जी के तन से हुई और उनके अन्दर पारब्रह्म की दिव्य पाँच शक्तियों के प्रवेश होने से उन्हें 'महामति' की उपमा प्राप्त हुई।

पारब्रह्म की यह पाँच शक्तियाँ[3] हरेक ब्रह्मात्मा के सुखों के लिए 'पंच–न्यामतों'[4] के रुप में परमधाम से आयी हैं, जो इस प्रकार हैं:

1 जोश या आवेश की शक्ति *(Parbrahmn's Exalted power),*

2 आनन्द की शक्ति *(Supreme Bliss),*

3 नूर तारतम ज्ञान और इश्क की शक्ति *(Noori Taartam Knowledge, Ishak Si: 25/42),*

---

[3] प्रकास(हि.) प्रगटवाणी : 37/101; बीतक साहिबः छठा पहर, प्रः–69/54–62

[4] एह पांचो न्यामत इनों वास्ते, आई अरस से उतर। ब. वृ. 92/15

4 हुकम या आदेश की शक्ति *(Lord's Command or His Will)* और

5 मूलवतन की जाग्रत एवं निजबुद्धि *(Lord's Awakened Self-Intellect)*।

आओ चलो, पहले इन पांचों शक्तियों को संक्षिप्त में समझ लें ताकि हम श्री मुख वाणी का सही रूप में रस पान कर पायें।

1 *जोश या आवेश की शक्तिः* पारब्रह्म की वह सर्वश्रेष्ठ प्रतिष्ठित शक्ति है जो प्राथमिक रूप से दो तरह से प्रगट होती हैः एक श्री राज जी के हुकम से और दूसरी श्री राज जी के इश्क से प्रगट होती है। जोश को लोहचुम्बक *(magnet)* और *U-clip* के दृष्टांत से समझ सकते हैं। जिस तरह से लोह चुम्बक अपने क्षेत्र में आने वाली *U-clips (all-pins)* को अपनी ओर खींच लेता है और इतना ही नहीं वह उन न्चपदव को भी अपनी चुम्बकीय शक्ति प्रदान कर देता है। ठीक उसी प्रकार, श्री राज जी अपने जोश या आवेश से अक्षर, श्री श्यामा जी, ब्रह्मसृष्टि और सारे परमधाम को भर देते हैं। इस वर्तमान जागनी लीला में भी श्री राज जी का जोश ही है जो सुन्दरसाथ को प्रेम सेवा में सम्मिलित होने के लिए नए नए विविध उपाय करके प्रेरित करता है।

इश्क का जोश और हुकम का जोशः धनी का जोश जब उनके दिल के इश्क से निकलता है, तो वह श्री श्यामा जी और ब्रह्मसृष्टि की इश्क आनंद की लीला करते हैं, जो परमधाम और इसमें स्थित रंगमोहोल में होती रहती है। परमधाम में ब्रह्मसृष्टि, सखियाँ सदा ही इश्क के रस मे डूबी रहती हैं। इसलिए उन सबमें इश्क का जोश सदा ही भरा रहता है। इसी वजह से खिलवत वाणी कहती है कि ''रूहें कूदती हैं इश्क के बल पर''। ब्रह्मसृष्टियों का यह 'बल', शक्ति *(spirit या energy)* ही इश्क का जोश है। *हुकम का जोशः* धनी जी का जोश जब उनके हुकम (आदेश, सत्ता) के रूप में व्यक्त होता है तो उससे अक्षरब्रह्म की लीला होती रहती है। अक्षर की लीला अखण्ड योगमाया में और अक्षर के मन (अव्याकृत) की स्वप्न की लीला से क्षर जगत– कालमाया के ब्रह्माँड में होती रहती है। कालमाया और योगमाया में होने वाली सभी लीला पारब्रह्म के हुकम के जोश से ही सम्पन्न होती है। जब धनी जी हमें अपना हुकम देते हैं तो हमारे अन्दर उस हुकम का जोश भर जाता है।

श्री राज जी के हुकम के जोश की शक्ति ब्रह्मात्माओं की माया से रक्षा (निगेहबानी) करती है। पश्चिमी धर्मग्रन्थों में इस शक्ति के फरिश्ते को जबराईल *(Gabriel)* कहा गया है। श्री मुख वाणी में उसका 'ब्रह्मात्माओं के वकील' *(The best Lawyer for the Brahmnsrishtis)* के रुप में निरुपन है। इस माया खेल में यह जोश जीव के संग से भूली हुई आत्माओं को पाक–साफ–निर्मल रखने का काम भी करता है। *This Josh also serves as the ultimate Divine Detergent for the cleaning of the spirit and the soul.* सुन्दरसाथ ब्रह्मसृष्टि के तन से श्री राज जी की जाहिरी मेहर के प्रतीक रुप नए नए जागनी सम्बन्धी कार्य भी इसी जोश की शक्ति से होते हैं। जब पारब्रह्म श्री राज जी महाराज की मेहर बरसती है, या जब वह किसी रुह का हाथ पकड़ते हैं, तब जबराईल फरिश्ता रुहों की वकीली का काम करता है।[5] *First Rajji appoints Gabriel as Lawyer for a particular Brahmn Srishti soul; Only after receiving Sri Rajji's specific command, Gabriel begins to work as an attorney for that soul.* फिर वह इस माया में भी मोमिनों के घर की चौकीदारी करता रहता है। इस माया जगत से विपरित, परमधाम में उसकी उपस्थिति अनावश्यक है। इसलिए, यह वहाँ पर जा नहीं सकता। बड़ी वृत: 92/11, 97/6-8, 110/18-19 जबराईल का धाम योगमाया के सत्सरूप धाम में है और वह अक्षर धाम से आगे इश्क की लीला में नहीं जा सकता।

---

[5] दिया जोश इनों जबराईल, कर निगेहबानी हर मोमिन।
साफ रखे सब अंग, पल पल करे रोसन।। ब.वृ. 92/11
जिमी एक रस नूर में, बसत जबराईल जित।
तहां से ल्यावे नूर रोसनी, आए देत मोमिनों को इत।।
वकीली मोमिनों की, करत जबराईल जोर।
जहां मोमिन बसत हैं, देत प्रदक्षिणा तिन ठौर।।
मोमिनों को रोसन करे, जोश जबराईल आए।
संदेस हक सुभान के, मोमिनों को पहुंचाय।। ब.वृ. 97/6–8
जोस जबराईल इनको, दिया इनों को साथ।
वकीली इनों की करे, जाके धनीए पकड़े हाथ।।
गृद फिरे घर मोमिन, कहे अले कुम सलाम।
दश्तपोसी इनकी करे, जबराईल इसलाम।। ब.वृ. 110/18–19

इस संसार में भी हम जोश के कार्यों का दो तरह से अनुभव करते हैं। जब हमें कोई प्यार करता है, तब हमारा जीवन खुशी से भर जाता है, हम हकारात्मक वार्तालाप में जुड़ जाते हैं, हमारे उत्साह में बाढ़ आ जाती है। यह प्यार से पैदा होने वाला जोश है। दूसरी तरफ यदि हम अपने कार्यालय या धंधे में प्रवेश करते हैं तो हम हुकम से पैदा होने वाले जोश का अनुभव करते हैं। हाँ! हमारे दैनिक जीवन में अनुभव में आने वाले यह दोनों तरह के जोश अवश्य ही श्री राज जी के हुकम के जोश की शक्ति से कई करोड़ों गुणा कम हैं और परमधाम की इश्क की लीला का जोश तो इन सब से सर्वोपरी और बेहतर है।

2 *आनन्द (Bliss) की शक्तिः* यह पारब्रह्म श्री राज जी की वह शक्ति है जिससे सम्पूर्ण परमधाम में इश्क की लीला छलकती रहती है। आनन्द अंग श्री श्यामाजी की यह वह आत्म–शक्ति है, जहाँ से श्री श्राज जी के इश्क का ब्रह्मसृष्टियों में और सर्वत्र परमधाम में वितरण होता है। इस माया खेल में भी अर्श–अज़ीम से तारतम की कुंजी लाकर वह उसे हर एक ब्रह्मात्मा के हाथों में देते हैं और ऐसा करके वह सभी आत्माओं के लिए परमधाम के दरवाजे खोलकर उन्हें अपने धाम और धनी के दर्शन करवायेंगे।

पश्चिमी धर्मग्रन्थों में इस आनन्द की शक्ति श्री श्यामा जी को 'रुहअल्ला' या *Holy Ghost* करके कहा गया है, और वहां पर ऐसा भी कहा गया है, कि रुहअल्ला दो जामों में आयेंगे अर्थात्, श्री देवचन्द्र जी और श्री मेहराज जी–इन दोनों के दो तन ही यह दो जामें हैं और ये दोनों मिल कर माया खेल में भूली आत्माओं को ढूँढ निकालेंगे और उनको अपने अखण्ड घर वापस ले जायेंगे। बड़ी वृतः: 92 / 12

3 *नूरः* यह पारब्रह्म की वह अलौकिक दिव्य शक्ति है, जो इस संसार में तारतम ज्ञान और इश्क के रूप में आई है, जिसने ब्रह्मात्माओं के लिए खुदाई खज़ाना (गंज ईलाही - *ultimate divine treasure*) खोल दिया है। तारतम ज्ञान रुपि कुंजी (चाबी) ने सभी जीवों के लिए अखण्ड मुक्ति (क्यामत) के द्वार भी खोल दिये हैं। यह नूर तारतम की

शक्ति सत–सरुप अक्षरब्रह्म की आत्म शक्ति की बोधक भी मानी गई है। वर्तमान जागनी लीला में धनी के नूर की यह शक्ति तारतम ज्ञान - *Knowledge* और इश्क के रूप में आई है तो परमधाम की लीला में यह नूर की शक्ति पल–पल अनेक आयामों में और अनंत स्वरूपों में प्रगट होती रहती है। *Si: 25/42)*

'नूर' शब्द को शास्त्रों में प्रयुक्त सुक्र और भ्रगॅः आदि शब्दों का समानार्थी कह तो सकते हैं[6], लेकिन श्री मुखवाणी में परमधाम के नूर की शब्दातीत महिमा गाई गई है। सारा परमधाम श्री राज जी के नुर से अर्थात् उनकी आभा, कान्ति, चमक, आब और से और उनके नुर के करिश्मे, कारीगरी या हिकमत से परिपूर्ण है। नूर ही शाश्वत परम प्रेम और आनंद स्वरूप है, निजधाम का जीवन है। नूर में धामधनी के हृदय का हर्षोल्लास और प्रफुल्लता, उष्मा, चेतनता, सुगन्ध, आत्मीयता, कोमलता और हर तरह से आत्म को आकर्षित करने वाली सब विध की ऊर्जा भरी पड़ी है।

नूर शब्द धनी के अलौकिक सामर्थ्य, गौरव, यशश्विता, सत्ता, सत्यता (परम सत्यम्), परम चैतन्यता (परम शिवम्), ज्ञान की जाग्रति, चुम्बकीय कान्ति... आदि को प्रकाशित करता है।[7] नूर जब नीर सागर का रूप धारण कर लेता है तो वह परमधाम के शुद्धतम् सौंदर्य (परम सुन्दरम्) को, रूहों के दिलों की निर्मलता को प्रकाशित करता है। क्योंकि परमधाम

---

[6]सुक्र ज्योतिष्च चित्रा.....यर्जुवेद 17/80
तदैव सुक्रम् तदम् ब्रह्म् तदैव अमृतम् उच्यतेः उपनिष्द
गायत्री मंत्र में प्रयुक्त भ्रागहः औश्र नूर एकअर्थवाची है।
नूर त्रिगुणात्मक नहीं हैः कुरानः सूरे नुर 24/18/35

[7] *In English, NOOR tatwa of Paramdham can be understood in at least eight different ways: (1) glory, lucence, power, dignity, brightness, dignity, brilliance, radiance, existence, knowledge, pure consciousness, vitality, (2) beauty, transperancy, blooming, eyeful, (3) oneness, harmony, concert, unison, accord, attunement, (4) adornment, peace, calmness, (5) loveliness, zeal, passion, devotion, charm, liveliness, exuberance, energy, (6) wisdom, awareness, maturity, enlightenment, (7) eternal relationship, intimacy, divine alliance, connecteness, divinely networked, and (8) kindness, blessing, elegance, grace, benevolence, compassion, charitable, big-hearted, friendly, merciful, indulging etc.*

में नूर के ही तन, नूर के ही दिल, और नूर के ही वस्त्राभूषण और सब श्रृंगार है। यहाँ पर एक तनी का, एक दिली का, एक अकल का, एक कौल और एक फैल का, एकात्मता का और मधुर सम्वादिता का साम्राज्य है।

परमधाम में नूर सागर का ऐश्वर्य नूरी है तो नीर सागर की सुन्दरता और पारदर्शिता भी नूरी है। खीर सागर की एकदिली नूरी है तो दधि सागर का श्रृंगार और उससे मिलने वाली शान्ति भी नूरी है। इश्क के घृत सागर की प्रेम की खुशबू भी नूरी है तो ईलम के मधु सागर की मिठास भी नूरी है। निसबत के रस सागर की लज्ज़त भी नूरी है तो मेहर के सर्व रस सागर की समग्रता भी नूरी है। इस तरह से, लाक्ष्णीक दृष्टि से देखें तो परमधाम सब विध से नूरी है। परमधाम के नूरी पच्चीस पक्ष, नूरी पदार्थ और नूरी स्वरूपों के गुण–लक्षण तो बस चितवन से ही समझे जा सकते हैं। जब भी हम अपने हृदय के भीतर में अपने धनी के नूर का एहसास करते हैं, तो हम उसका असर सम्पूर्ण वातावरण में, जिसमें हम रहते हैं, पर भी देखते हैं।

श्री राज जी के नूरी चेहरे पर दिखने वाली अद्वितीय ऐश्वर्य और शोभा उनके हृदय के भावों को प्रतिबिम्बित करती है और धनी के दिल में एक इश्क के ईलावा और कोई भाव आ भी नहीं सकते। इसीलिए परमधाम में धनी का इश्क शुद्ध प्रेम से परिपूर्ण लीलाओं के रूप में प्रगट होता है। अखण्ड परमधाम का एक एक कण वैविद्यता पूर्ण और अपनी अनोखी विषेशता लिए हुए तो है लेकिन वहाँ का कण कण श्री राज जी को रिझाने के लक्ष्य से प्रति एक दिल है। परमधाम सर्वत्र नूर तत्व की उपस्थिति होने से इस प्रकार की एकदिली, वाहेदत, या *oneness* है।

सागर ग्रन्थ का प्रथम प्रकरण और परिकरमा ग्रन्थ के प्रकरण 35, 36, 37, 42 औश्र 43 में नूर तत्व की महिमा ही गाई गई है। परमधाम के सागर, श्री जमुनाजी, मोहलातें, बगीचे, आनंद क्रीड़ा की सम्पूर्ण व्यवस्था, जंगल, फूल, सुगन्धी, पशु–पक्षी, भूमि, बादल, आसमान, पर्वत या छोटे से छोटा तिनका –यह सब कुछ नूरी है। वहाँ के रंग, भाषायें, चित्रकारी, कला–कारिगरी, यह सब नूरी ही हैं। इसी कारण यह सब सदा चेतन, सब विध से पूर्ण, एक श्री राज जी के आशिक और सदा सुख और आनंद पैदा करने वाले हैं। सिर्फ वह ब्रह्मसृष्टि, जो धनी के हुकम से तारतम ज्ञान से जाग्रत हो गई है, वह श्री राज जी के नूर की महिमा

और उसके प्रकाश का एहसास कर पाती है। ऐसी आत्म पर धनी जी अपनी मेहर बरसाते हैं और उसे अखण्ड इश्क के प्याले भर भर के पिलाते हैं। इससे वह सदा ही अपने युगल धनी से निज–सुख लीला के सुख ले पाती है। परि.43 / 38

4 *हुकमः* चिद्घन सरुप श्री राज जी की आदेश शक्ति या आज्ञा शक्ति को हुकम कहते है। मूलतः हुकम रहता तो श्री राज जी में ही है, हमें तो बस थोड़े से ही निश्चित समय के लिए वह थोड़ा सा बख्शीश कर देते हैं। परमधाम में हुकम का काई अपना अलग से शुद्ध साकार स्वरूप(तन) नहीं होता, जैसा ब्रह्मसृष्टि रूहों का है, या जैसा इस खेल में वर्तमान जागनी लीला में हमारा है। ठीक उसी तरह, ब्रज और रास लीलाओं में हुकम का कोई अलग से तन नहीं था। अतः यहाँ पर यह हुकम हमेशां परमधाम के निस्बती मोमिनों के साथ ही रहता है। परआत्म में पुनः जाग्रत होने तक यह हुकम ही ब्रह्मसृष्टि सुन्दरसाथ का आनंद साथ निभाने वाला *(the best Companion)*, हम रूहों अर्श में बैठे–बैठे खेल दिखाने वाला *(the best Entertainer)* और सुन्दरसाथ की जागनी करने वाला *the best agent of spiritual awakening)*

श्री राज जी ने सबसे पहले अपना हुकम अक्षरब्रह्म को दिया, और इसके फलस्वरुप ब्रज और रास का खेल हुआ। आत्माओं की इच्छा अधूरी रह जाने से पुनः श्री राज जी का हुकम रसूल बनकर अरब में आया और परमधाम मूलमिलावे में हुई बातों की साक्षी दी। धनी के हुक्म ने ही इस खेल को अपनी नजर में लिया है। इस जागनी के ब्रह्माँड में हुकम विविध रुपों में आया है। हुकम ने ही श्री श्यामा जी, ईलम और ब्रह्मसृष्टि रूहों का भेख लिया है। बड़ी वृतः92 / 14

जिस तरह से किसी देश का बंधारण *(constitution) IAS* या *PCS* बने योग्य व्यक्ति को विशेष शक्ति देता है, और सारे देश के लोगों को भी अपने नागरिकत्व के अधिकार की शक्ति देता है; उसी तरह से श्री राज जी अपने हुकम की शक्ति सभी को अलग अलग मात्रा में लीला की आवश्यकता के अनुसार देते हैं। इस जागनी ब्रह्माँड में ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि और जीवसृष्टि इन सभी को श्री राज जी के हुकम की शक्ति एक निश्चित समय के लिए निश्चित मात्रामें दी गई

है। श्री राज जी के ईलावा और किसी को हुकम की मात्रा और समय का पता नहीं होता।

श्री राज जी महाराज का हुक्म तो सब में है। बिना हुक्म कोई नहीं है। *हक हुकम तो है सबमें, हुकम बिना कछु नाहें।* (श्रीमुख वाणी) अतः इस माया खेल में सभी की जीवन लीला बस उसी हुकम के अनुसार ही चलती है।

मूलतः इस सपने के ब्रह्माँड में सभी जीवसृष्टि ही है। फर्क सिर्फ हुकम की मात्रा और लीला *(quality/quantum)* का है, जिससे मनुष्य यहाँ पर ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि, या जीवसृष्टि के रूप में प्रतिबिम्बित होते हैं। एक IAS अफसर कोई साधारण व्यक्ति से यदि अलग पड़ता है तो वह सिर्फ बंधारण के द्वारा उसको दी गई विशेष शक्ति *(power)* से। ठीक उसी तरह हुकम ने तीनों सृष्टियों को अलग अलग शक्ति दे रखी है। जिस तरह, *IAS* अफसर की पदवी वाला व्यक्ति जब रिटायर हो जाता है या उसकी जब मृत्यु हो जाती है, तब उसकी पदवी (शक्ति) किसी ओर योग्य व्यक्ति को दे दी जाती है, ठीक इसी तरह से श्री राज जी का हुकम भी कार्य करता है।

5 *जाग्रत और निजबुधः* यह दोनों पारब्रह्म की मूलवतन की बुद्धियाँ हैं। इनमें से एक जाग्रत बुद्धि उनके सत्अंग अक्षर की और दूसरी निजबुध उनकी अपनी निज–आनन्द लीला से सम्बन्धित है। श्री महामति जी में जाग्रत बुद्धि के साथ साथ पारब्रह्म श्री राज जी की अपनी निज–बुध की शक्ति भी संलग्न हुई थी, जिससे परमधाम की इश्क–आनन्द की लीला के भेद यहाँ खुल रहे हैं। पश्चिमी धर्मग्रन्थों में जिसे असराफील करके कहा गया है, वह इसी जाग्रत बुद्धि का फरिश्ता है। असराफील फरिश्ता अपनी फौज तैयार करके प्रगट हुआ है और सारे विश्व में श्री कुलजम सरुप की जाग्रत बुध *Awakened Intellect* की वाणी का सूर फूंक रहा है।

जाग्रत बुद्धि क्षर, अक्षर और अक्षरातीत का ज्ञान देकर परमधाम का रास्ता खोल देती है, जबकि निजबुद्धि रूह आत्म को अपने अखण्ड निजसुख के सागर में डूबो देती है। इस जागनी लीला में यह दोनों

बुद्धियों का सह–अस्तित्व परस्पर सहयोगी रहता है और इन दोनों के अन्तःकरण में होना सफल सुन्दरसाथ के जीवन के लिए परम आवश्यक है। श्री महामति जी के अन्दर भी यह दोनों बुद्धियाँ थी। श्री मुख वाणी का ईलम बिना जाग्रत बुद्धि के और निजबुद्धि के सहयोग के निर्धारित फल नहीं दे सकता।

सुन्दरसाथ जी! धामधनी की इन पांचों शक्तियों का विस्तार तो अपार है! श्री मुख वाणी का सही रूप में मंथन एवं रस पान करने के लिए हम इन्हें समझें और अपने दिल में बिठायें यह परम आवश्यक है। तो आइॅए साथजी! अब कलश वाणी के सार का रस लें।

The Five Divine Aspects (Powers) of Aksharateet

The Holy Wani says that Parbrahmn Aksharateet has descended to this world to accomplish the Jaagni Leela. However, its deeper study clarifies the fact that Parbrahmn has not come, nor there is any need for Him to come in His Noori eternal body. In fact, His arrival is marked by His empowering of His Bliss-part Brahmatmas with all aspects of His Divinity. Manifestation of His infinite aspects, which we can experience in this world, is summed up in five major categories in the Holy Wani. The divine aspects may be called as Shri Rajji's Shaktis or Powers, as it is regarded traditionally.

Shri Prannathji has promised of this five-fold empowerment to all of His Souls. He bestows them with these powers in different proportions depending on how He wants to enact different Leelas. However, He has bestowed all of these in their full potential to one fortunate soul, who is identified as Indrawati, in the person of Meheraj Thakur. Due to this unique spiritual empowerment, Shri Indrawatiji's soul qualified for the title of Mahaamati.

The five divine aspects[8] or eternal gifts[9] from our Lord are: Josh or Aavesh (Exalted) power, Bliss, Noor Taartam Knowledge, Command (Will) and the Awakened Self-Intellect. Let us try to understand the meanings of each one of them so we may better enjoy the Holy Wani:

---

8 Prakaash (Hi.) Pragat wani:37/101(Bitak Saheb: The 6th prahar: ch. 69/54-62

9 Eah pancho nyamatey ino vastey, aayi aras se utar: B.V: 92/15

1. *Josh or Aavesh Shakti*: Josh is Lord Shri Rajji's exalted power, which manifests primarily through two pathways: through Shri Rajji's Hukum and through Shri Rajji's Ishak. Josh is like a magnet that attracts all metal U-clips (all-pins) into its field and even magnetizes all of them. Likewise, by bestowing His Josh, Shri Rajji energizes Akshar, Shri Shyamaji, the Brahmn Srishtis and the entire Paramdham. In the present Jaagni Leela, Josh inspires sundersathjis to get engaged in the Jaagni Seva in many new and innovative ways.

When Josh emanates from Shri Rajji's Ishak, it enacts the Leela of Shri Shyamaji and the Brahmn Srishtis. The domain of Blissful Leela of Shri Shyama Ji is Paramdham, including the Rang Mohol. These Leelas represent the work of *Josh of Ishak*. Since Brahmn Srishtis remain immersed in Ishak, they are always charged with the Josh of Ishak. It is for this reason that the Khilwat Wani says "roohen koodti hei ishak ke bal par." This 'bal,' spirit or energey of the Brahmn Srishtis is what we can call as *Josh of Ishak*.

When Josh emanates from Shri Rajji's Hukum, it enacts the Leela of Akshar Brahmn. Akshar's leela occurs in the eternal domain of Yogmaaya, while the Leela of Akshar's mind (Avyakrit) in the dreaming state occurs in the domain of perishable Kaalmaya. All these Leelas represent the work of *Josh of Hukum*. When Shri Rajji bestows His Hukum upon us, we are energized with *Josh of Hukum*.

Archangel Gabriel represents Shri Rajji's *Josh of Hukum*. The Holy Wani clarifies this distinction with regard to Gabriel's abode and his maximum potential. Gabriel'a abode is Sat Swaroop Dhaam in Yogmaaya, and he cannot venture beyond Akshar Dhaam, which is situated in Paramdham. The reason for this is that he cannot enter the domain of Ishak's Leela.

The Holy Wani recognizes Gabriel as the true ultimate lawyer (attorney) of the Brahmnsrishtis. It protects the Souls by guarding (निगेहबानी) them against the attacks of Maaya. It keeps the Souls clean and pure in every respect by acting as the ultimate divine Detergent. When Shri Rajji showers His Grace upon His Soul, Josh begins to serve as her attorney. Once appointed, it then guards the house of the soul even in this maaya. There is no need for this *Josh of Hukum* to be in Paramdham, and hence Gabriel does not have access to Paramdham's Leela of Ishak. Badi Vrut: 92/11, 97/6-8, 110/18-19

In this worldly realm also, we experience the work of josh through these two pathways. When someone loves us, our life turns cheerful; we engage ourselves in positive communication and our enthusiasm peaks. This is the *josh born of love*. On the other hand, in our office or business domain, we experience and display the *josh born of hukum*. Ofcourse, this experience of josh is of a level that is far lower than the incomparable Josh of Shri Rajji. But the ultimate essence of Josh is related to Paramdham's Leela.

2. *Bliss or Anand Shakti*: This is the power of Parbrahmn Lord Shri Rajji due to which the entire Paramdham is flooded with Ishak Leela. Shri Shyamaji is regarded as the Bliss-part of Shri Rajji. She

represents the distribution center for Shri Rajji's Ishak. Ishak is distributed among all Brahmn Srishti Souls through Shyamaji.

Here, in this worldly drama also, Shyamaji has brought the master key of Taartam (तारतम की कुंजी) from Paramdham, and is now handing it over to each one of the Brahmn Srishti. By doing this, Shyamaji shall open the gate of Paramdham for all Brahmn srishtis and shall enable them to be face-to-face (दर्शन) with Shri Rajji.

In western holy books, Shri Shyamaji has been identified as Rooh-Allah or the Holy Ghost. It is also indicated in those books that Rooh-Allah shall wear two garbs. Accordingly, Shri Devchandraji and Shri Meheraj ji represents these two garbs. Both of them shall work together to cause spiritual awakening of the Souls lost in this worldly play, and bring them back to their eternal Home Paramdham. Badi Vrut: 92/12

3. Noor or Taartam Knowledge: It is that power of Shri Rajji, which is instrumental in awakening the Jagrit Buddhi and the Nij-Buddhi within our hearts. It has come to this world and has opened up the ultimate divine treasure (खुदाई खज़ाना, गंज ईलाही) of Paramdham for the Brahmn srishtis. It has also announced Kayamat or the gift of Eternity for all the jivas.

While in Jaagni Leela, Noor shakti has come as Taartam Knowledge, in the Leela of Paramdham Noor displays its multiple aspects. There, Noor may mean grace, radiance, brilliance, lucence, beauty, elegance, kindness, blessing, adornment, dignity, loveliness, charm, liveliness, exuberance, energy, life, vigor, vitality and so on. In Paramdham, Shri Rajji's Noor manifests in innumerable forms, i.e., as noori places (twenty-five sectors), as noori objects and as noori qualities of the

noori beings. Noor envelops everything in Paramdham. In other words, entire Paramdham is filled with Shri Rajji's Noor (*abha, kanti, chamakm, aab, aura*) and His Noor's marvel (karishma, karigari, hikmat) with the greatest of perfection. When we feel the Noor of His Swaroop within the inner core of our heart, we also experience its effect in the environment we live in.

In Paramdham, the glory of noor sagar is noori, beauty and transparency of neer sagar is noori, harmony of khir sagar is noori, soothing adornments of dadhi sagar are noori, love (ishak) is noori, divine wisdom (Elam) is noori, divine relationship (nisbat) and intimacy is noori, and grace is noori. Thus, qualititatively, Paramdham is noori in its entirety.

Shri Rajji's noori face has unmatched beauty, which reflects what is in His heart. Moreover, there is nothing else but Ishak in His heart. For this very reason, the Leelas of Paramdham are charged with pure love. Therefore, they are Ishakmayi. Every particle of Paramdham is superficially diverse and unique, but is unified in Shri Rajji. This is the oneness (eakdili, wahedat), which is due to the omni-presence of Noor. Chapter #1 of Sagar Granth and Chapter # 35, 36, 37, 42 and 43 of Parikrama Granth illustrate the glory of Noor. The oceans of Paramdham, Jamunaji river, structures, gardens, amenities, forests, flowers, fragrance, pashu pakshi, earth, clouds, sky, mountain or a straw - everything is noori. Colors, languages, designs, architecture and technology are all noori. Therefore, they all are ever conscious, perfect in every respect, lovers (aashik) of Shri Rajji and always produce joy and happiness.

Only the Brahmn Srishtis, who are awakened by the Taartam Knowledge through Lord's Hukum, can realize the glory of Shri Rajji's Noor. Dhaniji showers His grace upon such a soul and presents in front of her full glasses of eternal wine (Ishak) so His soul may enjoy the blissful Leela with the Perfect Divine Couple. Parikarma: 43/38

4. Will or Hukum Shakti: It is the power that represents Chidghan Swaroop Shri Rajji's Will or आदेश शक्ति, which always stays in the care of Brahmn srishtis. Hukum is the best Companion of the Brahma Srishtis. Fundamentally, Hukum resides within Shri Rajji. As such, Hukum does not have its separate body (तन) like the pure-divine (suddha-sakaar) bodies of the Brahmnsrishtis in Paramdham, or our bodies in this worldly drama.

It is His Will, which is enabling us to experience this worldly drama, while sitting right in Paramdham. Thus, Hukum is the best Entertainer of the Brahmn srishtis. Hukum is the best agent of our spiritual awakening.

First, Shri Rajji bestowed His Hukum to Akshar Brahmn, and showed the Leelas of Brij and Raas. Again, to fulfill the unsatisfied wishes of the Brahmnsrishtis, Hukum came in the Middle East as Prophet Muhammad. He offered undeniable and 'one-and-only' witness for the Brahmn Srishti's conversations with Shri Rajji, which occurred in Mool Milawa. None else but His Hukum has enacted this drama. In the present Jaagni Brahmaand, Hukum has manifested in different forms. In other words, Shri Shyamaji, the Brahmnsrishtis and the Holy Wani are all manifestations of Hukum (Badi Vrut: 92/14). Shri Rajji bestows His Hukum to all exactly as much as it is necessary to enact the diverse drama.

For the sake of understanding the concept of Hukum, let us take this example: The constitution of a democratic country offers special powers to those individuals who are qualified as IAS or PCS. The same constitution also gives the rights of freedom to each of its citizen. Now, when an IAS officer retires or dies, the special powers given to him are automatically transferred to another qualified citizen. Exactly the same way, in this Jaagni Brahmaand, Shri Rajji has bestowed His Hukum power to the Brahmnsrishtis, the Ishwari srishtis and the Jivasrishtis.

Thus, Hukum pervades in all beings. Nothing exists beyond His Hukum. *हक हुकम तो है सबमें, हुकम बिना कछु नाहें।* (श्रीमुख वाणी) In other words, the life of every living being in this worldly drama is guided by Hukum. However, each individual receives it only in a pre-determined amount and for a pre-determined period. None knows the exact amount and period except for Shri Rajji.

Looking with the Hukum's eyes, we realize that essentially, all living beings are Jivasrishtis in this dream creation. The only difference is in Hukum's proportion and Leela (quality/quantum), which ultimately reflects the human being as either Brahmnsrishti, or Ishwarsrishti or Jivasrishti. Like that special powers or authority given by the constitution to an IAS officer and rights of citizenship to all others, the quality and quantum of Hukum determines who we are.

5. Awakened Intellect and Self-Intellect (जाग्रतबुध्धि और निजबुध्धि): Both of these intellects belong to Parbrahmn Aksharateet. However, the Awakened Intellect may be attributed to His Sat-part Akshar Brahmn, and the Self-Intellect may be attributed to Shri Rajji Himself. The

first causes general awareness regarding the domains of Kshar, Akshar and Aksharateet, and paves the path to Paramdham. While the later enables the Soul to dive into the Ocean of eternal Joy and Bliss.

Both are complementary to each other and must co-exist in one's consciousness as we live our life as a sundersaath. Therefore, within Mahamatiji too, both were present. The Holy Wani, therefore, reflects the Knowledge causing awakening of both the intellects.

In the Western holy books, Asrafeil is the archangel of Awakened Intellect. He and his spiritual army shall blow the trumpet of the Holy Wani to reward eternity to all.

Seekers and sundersathjis are encouraged to listen to two other introductory titles: (1) An introduction to the Holy Kuljam Swaroop and (2) Jaagni Prakriya: The Kuljamic Process of Spiritual Awakening. Pranam Ji.

कलश (गु.), कलश (हि.) और सनंध के प्रकरणों की तालिका

सुन्दरसाथजी को वाणी मंथन में सहायता रहे इसलिए कलश (गु.), कलश (हि.) और सनंध के प्रकरणों की एक तालिका टेबल के रुप में यहाँ दी गयी है।

विषय	कलश (हि.)	कलश (गु.)	सनंध
माया खेल का परिचय	1 सुनियो वाणी सुहागनी	1 रास नो प्रकाश थयो, मारा साथ सुनो एक वाटडी 2 आ रामत ना तमने	4 ईमाम के सवाल जवाबः सुनियो वाणी मोमिनो
खोज	2 पिया मैं बोहोत भांत तोको खोजिया	-	5. पिया मैं विध विध तोको ढूंढिया
विरह तामस	3 मैं चाहत न स्वांत 4 पिया मोहे स्वांत न आवहीं	-	6.मैं चाहत न स्वांत इन भांत
विरह इश्क वृद्धि	5 तलफे तारुणी रे	-	7. तलफे तारुणी रे

विरह	6.विरह गत रे जाने सोई	-	8. विरह गत रे जाने सोई
विरह	7 इस्क बड़ा रे सबन में	-	9. इस्क बड़ा र सबन में
विरह	8 सनमंध मूल को	-	10 सनमंध मूल को
विरह को प्रकाश	9 एह बात मैं तोहे कहूं	-	11 एह बात मैं तोहे कहूं
विरह के बाद क्या? उत्कंठा, ईमान, सेवा	10 सत असत पटंतरों	-	-
सोहागनियों के लक्षण	11 पार वतन जो सुहागनी	-	22 गुझ तो तुमको कहूंगी
सोहागनियों के लक्षण (continued)	12 भी कहूं मेरी सैंयन को	-	-
खेल के मोहरे	13 अब निरखो नीके कर	-	13 अब निरखो नीकेकर
खेल में खेल	14 अब दिखाऊं इन विध	3 एह रामत में जे रामतों	14 अब गुझ बातों
पंथ पैंडों की खैंचा खैंच	15 कोई कहे दान बड़ा	4 कोई कहे दान मोटो	15 अजूं देखूं नीके कर
विराट का कोहेड़ा	16 विराट का फेर उल्टा	5 अनेक किव इहॉ उपजे	16 एह खेल रच्यो हम
वेद का कोहेड़ा	17अब कहूं कोहेड़ा वेद का	6.वेद मोटो कोहेड़ो	-
अवतारों का रहस्य	18 ए ऐसा था छल अन्दर	7 ए छल तो एवो हतो	-
गोकुल लीला	19 जिन किनको धोखा रहे	8 आ जुओ रे आ जुओ	-
योगमाया	20 अब जोत पकड़ी न रहे	9 मारा सुन्दरसाथ आधार	-
दया	21अब तो मेरे पिया की	10 हो वालैया हवे ने	-
ळांसी	22 मेरे साथ सनमंधी चेतियो	11 मेरे साथ सनमंधी चेतियो	18.मोमिन यामें न रांच ही
जागनी	23 अब जाग देखो सुख जागनी	12 हवे जागी जुओ मारा साथजी	-
जागनी	24 निजबुध भेली नूर में	-	-
नोटः सनंध ग्रन्थ के कुल मिला के 28 प्रकरण इस कलश वाणी में नहीं हैं, जो इस प्रकार हैंः 1–3, 12, 17, 19–21, 23–42. इन प्रकरणों का सार सनंध वाणी सार दर्शन ग्रन्थ में दिया गया है। जो प्रकरण दोनों ग्रन्थों में हैं, उनका सार इस ग्रन्थ में दिया गया है।			

Kalash (Guj), Kalash (Hindustani) and Sanandh

Chapter Matching By Topic

Many chapters of these three books of the Holy Kuljam Swaroop are similar. The table below will help speed up your Wani Manthan (study) process. This book includes the essence of all chapters of the Kalash Wani only. Chapters that are common in both the Kalash and Sanandh books are therefore, automatically covered here. Twenty-eight chapters of the Sanandh Wani (Chapters: 1-3, 12, 17, 19-21, and 23-42) are unique to Sanandh Wani, and will be covered in "Sanandh Saar Darshan" Granth.

Main Subject of Chapter	Kalash (Hi.) Ch. #	Kalash (Guj.) Ch. #	Sanandh Ch. #
Inroduction to the Play of Maaya	1	1, 2	4
Search for Lord	2	-	5
Pangs of separation from the Lord:Viraha	3, 4	-	6
Evolution of Viraha and Ishak	5	-	7
Pangs of separation - Viraha	6	-	8
Viraha- Glory of Ishak	7	-	9
Viraha	8	-	10
Viraha-Enlightenment of	9	-	11
What happens after Viraha? Enthusiasm, faith expression, prem-seva	10	-	-
Qualities of Brahmn Srishti – Sohagin	11	-	22
Qualities of Brahmn Srishtis	12	-	-
Characters of the Play – Khel ke Mohore	13	-	13
Play within the play – Khel mein Khel	14	3	14
Fighting of sects – religions	15	4	15
Puzzles of the Creation – Veiraat Koheda	16	5	16
Puzzles of the Vedas	17	6	-
Incarnations - Avataar Essence	18	7	-
Gokul Leela	19	8	-
Eternal Domain – Yogmaaya	20	9	-
Grace – Daya	21	10	-
Mockery – Haansi	22	11	18
Jaagni – Ab jaag dekho sukh jaagni	23	12	-
Jaagni – Nij Budh Bheli noor mein	24	-	-

।। Shri Kalash Saar Darshan ।।

।। श्री कलश सार दर्शन।।

Generate Broader Classification of topics

1 मूल प्रश्नः तू कौन? आई इत क्यों कर? 56

2 माया मनुष्य को कैसे भ्रमित करती है? 57
3 मोह किसे कहते हैं? मोहतत्व की पहूँच निराकार तक ही है। 58
4 मोह माया से छूटकारा कैसे पायें? 60
5 माया ही निराकार है और माया ही साकार है। 62

6 संसार के साधूजन पारब्रह्म प्रीतम को क्यों नहीं पा सकते?63
7 पंडिताइॅ और संस्कृत भाषा की उलझनों में गुमराह संसार 65
8 राजा जनक को न होने वाली पेहेचान इस समय तुम्हें हो सकती है। 67
9 पारब्रह्म को निराकार कहनाः साधू ज्ञानियों की अटकल युक्त बुद्धि का कारण 68
10 शास्त्र और साधूओं की वाणी को स्पष्ट करने वालाः एक बेहदी म्ततवत! ठववाउंता दवज कमपिदमकण

11 पारब्रह्म पिया के दर्शन की अभिलाषा ही प्रेमीजनों की पेहेचान। 71
12 प्रेम का मार्ग विकट, पर उलझनों वाला नहीं। 73

13 पारब्रह्म प्राप्ति के रास्ते में आने वाले अवरोंधों को पेहेचानो 74
14 जाग्रत निज–बुद्धि युक्त ईमान में ही वास्तविक शान्ति की जड़। 76
15 मनुष्य की जड़ कर्मकांडी वृत्तियाँः माया ही का स्वरूप। 78

16 धनी से अर्ज करें: एक यही बात हमारे हाथ में। 80

17 विरहः आत्मा के सभी जागनी मनोरथ पूर्ण कराने वाला। 81
18 विरहिन और मछली दोनों की तड़प एक जैसी। 84
19 विरहिन और पतंगे की चाल एक जैसी। 85
20 आत्म–पेहेचान हो जाना ही 'विरह का प्रकाश' है। 88
21 धनी के इश्क की कोई बराबरी नहीं। 89

22 आतम और संगी जीव के परस्पर सहयोग से धनी मिलन। 92

23 हमारे धनी जीः सवॅ श्रेष्ठ किसान। 95
24 धनी का हुक्म रुह से जागनी का काम बड़ी युक्ति से करवाता है। 96
25 आत्मा की बन्दगी और विरह सिर्फ अपने धनी के लिए। 98

26 पहले निज–सुख सुहागनियों को, बाद में संसार को अखण्डता। 99

27 प्रेम–सेवा में समर्पित रहना ही 'वाणी का प्रकाश' होने का प्रमाण।
म्ततवत! ठववाउंता दवज कमपिदमकण्

28 सत्य घनी और असत्य माया की पेहेचान का सुख अब ही लेना है। 101

29 सब के दिलों से माया को हटाना ही सबसे बड़ी सेवा। 103
30 दुनिया में इस नूरी ज्ञान के एकदम जाहिर न होने के दो कारण। 104

31 सुहागिनी ब्रह्मसृष्टि की रेहेनी को देख कर अपने जीवन को देखें। 107

32 आलस्य छोड़ो, धनी का हुकुम सिर पर चढ़ाओ, हाँसी से बचो। 110
33 तुम इस छल रुपी माया के नहीं हो, अपनी हाँसी मत करवाओ। 113
34 साथ जी! तीन सृष्टि के तीनों सुखों को तोलो, फिर अपनी सोचो। 114

35 अगुए–गुरूजन एवं धमॅ स्थानों द्वारा अंहकार के प्रदर्शन। 116
36 जीवन एक खेल है, इसे सिफॅ देखो। 119
37 संसार रुपि महाखेल में धार्मिकता के अनेक भ्रमित रुप 120
38 झूठी माया को सत्य दशॉ कर धर्मों में झूठ का व्यापार। 123
39 देखा देखी की चाल में लोग पारब्रह्म को खो बैठते हैं। 126
40 वाद–विवाद का मूलः कच्ची धारणाओं को आधार मान कर चलना। 128
41 वेद और वैराट दोनों धुन्ध है। 131
42 ब्राह्मण कौन? चाण्डाल कौन? 133
43 वैराट का उल्टा चलनः इसके मृगजल प्रपंच से बच के रहो। 136
44 पंडितों द्वारा वेदों के ज्ञान को संस्कृत के वाद–विवाद का विषय बना देना। 137

45 वैराट और वेदों के ज्ञान की सीमाः निराकार तक। 139
46 जीव' असत्य निराकार है, और 'आत्मा' सदा ही अखण्ड है। 140
47 श्री मद्भागवतः संसारी जनों के लिए धुन्ध और बेहदी के समाचार। 144

48 बुद्धनिष्कलंक अवतारः जाग्रत बुद्धि और नूर तारतम का सामूहिक रुप। 146
49 जाग्रत बुद्धि और नूर तारतम के बल से ब्रज–रास लीलाओं के रहस्यों का उद्घाटन। 151
50 कालमाया और योगमाया–दोनों ब्रह्मसृष्टियों की आज्ञा के आधिन। 155
51 योगमाया अखण्ड, आनन्द–दायक, एकरस स्वरुप, एकदिली पूर्ण है। 156
52 रास लीला का सूत्र रूप धनी का आवेशः अर्न्तध्यान लीला रहस्य 158
53 ब्रज, रास और जागनी लीला रूहों ने धाम में बैठ कर ही देखी है। 161

54 जागनी का ब्रह्मॉंडः अन्य सभी ब्रह्मॉंडों में सर्वश्रेष्ठ। 163

55 धनी की दया से रुह का स्वरुप, शोभा–श्रृंगार दयामय हो जाता है। 164
56 विकारों की सफाईः तारतम ज्ञान रुपि साबुन और आवेश के सहयोग से 167

57 हॉंसीः मन के उल्ट घुमाव से दिलों में बेईमानी आ जाने से। 170
58 हॉंसीः ज्ञान की लेन–देन में मान–गुमान की भावना को लेकर। 172

60 वर्तमान जागनी लीला सर्वाधिक महिमापूर्ण है। 178
61 जागनी संकल्पः पिउ जगाई मुझे एकली, मैं जगाऊँ बांधे जुथ। 180

62 जागनी की विधिः प्यार एवं बड़ी युक्तिपूर्ण 181
63 जागनी की विधिः धनी का आवेश साथ के अंग में बिठा कर 182
64 जागनी की विधिः ज्ञान से समझा कर, प्रमाण–आत्म साक्षी दिलाकर 184

65 धनी के वचनों पर ईमान लाने से ही दुःख का सुख में परिवर्तन होगा 187
66 आवेश और तारतम दोनों के सहयोग से जागनी होनी है। 191
67 तारतम ही संसार के सभी ग्यान की बातों का सार है। 193
68 श्री इन्द्रावती जीः साक्षात् स्वरुप श्री राज जी के तारतम का अवतार 196

69 परमधाम की आत्मा की पेहेचान 197
70 परमधामः नया बनने के या पुराना होने के क्रम से परे। 198
71 आत्माओं के संग से जीव को अखण्ड मुक्ति का लाभ होगा। 199
72 अखण्ड प्रेम से रंग जाने के लिए इन्द्रावती जी की संगति आवश्यक 200
73 'तारतम का तारतम': परमधाम लीला का निज–बुद्धि युक्त विज्ञान। 201
74 धनी जी की कृपा के आधिक्य से रुहें अपने धाम को देख पायेगी। 203
75 स्वप्न के सुख और जाग्रति के सुख का भेद समझकर जागो। 204

76 स्वप्न में पड़ने वाली मार से जागनी होगी। कैसे? 205
77 ब्रह्माँड की आयु कितनी? सपने के समय जितनी! 207
78 निराकार के पार के पार की अखण्ड वाणी द्वारा वैराट बस होगा। 209
79 आगे चलकर इस अखण्ड वाणी का बड़ा विस्तार होगा। 210
80 अक्षर ब्रह्म की बड़ाई और ब्रह्मसृष्टि की नजर की पहुँच 211
81 जाग्रत निज–बुद्धि और नूर–तारतमः दो अखण्ड फल 213
82 पंच वासनाओं की जागनी होने पर अक्षर ब्रह्म की जागनी होगी। 216
83 आतम को धनी की शक्तियाँ मिलने से जागनी का बड़ा आनन्द 219
84 सुन्दरसाथ जी को मिला दिव्य खुर्दबीन221
85 आखिरी दृश्यः खेल एक और बातें अलग–अलग 223

।। श्री कलश सार दर्शन ।।

1. मूल प्रश्नः तू कौन? आई इत क्यों कर?

सुनियो बानी सोहागनी, हुती जो अकथ अगम ।
सो बीतक कहूँ तुमको, उड़ जासी सब भरम ।। क. हि. १/१
Suniyo baani sohagani, huti jo akath agam |
So bitak kahun tumko, ud jaasi sab bharam ||

तूं कौन आई इत क्योंकर, कहां है तेरा वतन ।
नार तूं कौन खसम की, दृढ़ कर कहो वचन ।। क. हि. १/६
Tu Kaun aayi it kyon kar, kahaan hei tera vatan |
Naar tu kaun khasam ki, dradh kar kaho vachan ||
K(h.):1/1, 6

सुन्दरसाथ जी! इस अकथ्य वाणी को सुनिये और समझिए। यह वाणी संसार के सभी ज्ञान के सार रुप एवं इससे भी विशेष, इन सब ज्ञान के आधार रूप मूल विज्ञान को प्रकाशित करने वाली है। स्वयं पारब्रह्म ने अपनी मेहर करके मेरे हृदयरूपी धाम के अन्दर बैठकर यह कहलवायी है। अब मैं उनकी ही आज्ञा से इसे कह रही हूँ। आप इस को अपने हृदय में बिठाओ। इससे अवश्य ही आपके सब माया जनित भ्रम मिट जायेंगे। साथ जी! हमारे पिया जी हमें प्रश्न पूछ रहे हैंः ''तुम कौन हो? यहाँ इस संसार में क्यों आए हो? तुम किस अखंड धनी की अंगना हो?'' आप इन मूल प्रश्नों के विषय में सोचिए और अपने दिलों के भ्रम मिटाइए।

1. The Ultimate Query

O Sundersaathji! Listen to this never-told-before Holy Wani. It is the essence and the ultimate science of all spiritual knowledge available in this world. The Lord Aksharateet Himself has showered His divine grace, His meher, upon me. He has made my heart His abode. Now, this Holy Wani, which I am telling you, is only due to His Will - His Hukum. Allow these divine Words to be absorbed in your heart so all your Maaya-borne doubts or misgivings may dissolve. First, ponder upon what our

Lord is asking: *"Who are you? Why have you come to this world? Where is your eternal abode? Who is your Lord? Give your firm reply, o my soul!"*

2. माया मनुष्य को कैसे भ्रमित करती है?

Suno piya ab mein kahun, toom puchhi sudh mandal |
Eah kahun mein kyon kar, chhal bal val akal ||
सुनो पिया अब मैं कहूं, तुम पूछी सुध मंडल ।
ए कहूं मैं क्यों कर, छल बल वल अकल ।।

Jab thein suraj dekhiye, leit andheri gher |
Jiv pashu pankhi aadmi, sab firey yaakey fer ||
जब थें सूरज देखिए, लेत अंधेरी घेर ।
जीव पसु पंखी आदमी, सब फिरें याके फेर ।।

Paamein jyon jyon khojiye, tyon tyon bandh padtey jaaye |
Kai udam jo kijiye, to bhi timar na chhodey taaye ||
यामें ज्यों ज्यों खोजिए, त्यों त्यों बंध पड़ते जाएं ।
कई उदम जो कीजिए, तो भी तिमर न छोड़े ताए ।।

Khel khaavand jo treigun, jaaney yaathen jaasi fer |
Eah nirkhey mein nikey kar, aju eah bhi miney andher ||
खेल खावंद जो त्रैगुन, जाने याथें जासी फेर ।
ए निरखे मैं नीके कर, अजूं ए भी मिने अंधेर ।। क.हि. १/९, १६, ३०, ३३

यह संसार ऐसा प्रचंड प्रपंच है कि सूरज का उजाला होते ही मनुष्य की सत्य वृत्तियों पर अन्धेरे का घना बादल छा जाता है। माया का बन्धन है ही ऐसा कि मनुष्य जितना उससे निकलने का प्रयास करता है, वह उतना ही उसमें बंधता जाता है। माया का यह खेल है तो एक पल भर का, लेकिन हरेक मनुष्य जीव यही समझता है कि यह तो अनादि और अखण्ड ही है।

2. This World is the Biggest Orchestrated Illusion of Maaya!

This world is the biggest orchestrated illusion of Maaya! As soon as the first ray of the sun falls on the earth, dark clouds of ignorance surround the truthful attitudes of human beings. The bondage of maaya (ignorance) is so powerful that the more one tries to come out of it, the more one sinks into it. The drama of maaya is momentary only, but every jiva, every human being thinks of it as 'eternal' and 'without beginning or end'.

3. मोह किसे कहते हैं? मोहतत्व की पहूँच निराकार तक ही है।

ए उपजे पांचो मोह थें, और मोह को तो नाहीं पार ।

नेत नेत कहे निगम फिरे, आगे सुध ना परी निराकार ।।

Eah upjey paancho moha thein, aur moha ko to naahin paar |

Net net kahey nigam firey, aagey sudh na pari niraakaar | |

मोह अग्यान भरमना, करम काल और सुंन ।

ए नाम सारे नींद के, निराकार निरगुन ।।

Moha agyaan bharamna, karam kaal aur sunn |

Eah naam saarey nind ke, nirakaar nirgun | |

मन पोहोंचे इतलों, बुध तुरिया वचन ।

उनमान आगे केहेके, फेर पड़े मांहे सुंन ।। क. हि. १/२७; २४/१९, २०

Man pohonchey itlaun, budh turiya vachan |

Unmaan aagey kehekey, fer padey maahein sunn | |

अब इन जुबां मैं क्यों कहूं, निज वतन विस्तार ।

सब्द ना कोई पोहोंचहीं, मोह मिने हुआ आकार ।।

Ab in juban mein kyo kahun, nij vatan vistaar |

Sabd na koi pohonch hin, moha miney huva aakaar | |

मोह सो जो ना कछू, इनसे असंग बेहद ।

सत को असत ना पोहोंचहीं, या बिध ना लगे सब्द ।।

Moha so jo na kachhu, insey asang behad |

Sat ko asat na pohonch hin, yaa bidh na lagey sabd ||

मैं अंगे रंगे अंगना संगे, करूं आप अपनी बात ।

अब बोलते सरमाऊं, ताथें कही न जाए निध साख्यात ।।

Mein angey rangey angna sangey, karun aap apni baat |
Ab boltey sharmaaun, taathey kahi na jaaye nidh saakhyaat ||

जहां नहीं तहां है कहे, ए दोऊ मोह के वचन ।

ताथें विस्तार अन्दर, बाहेर होत हूं मुंन ।। क. हि. २४/३९, ४०, ४३, ४५

Jahaan nahi tahaan hei kahey, eah dou moha ke vachan |
Taathein vistaar andar, baaher hot hun munn ||

मोह उसे कहते हैं जिसका कोई वास्तविक अस्तित्व ही नहीं होता। मोहतत्व, अज्ञान, भ्रम, कर्म, काल, शून्य, निराकार और निरगुन यह सभी नींद रुपि माया के ही विविध नाम हैं, जो अक्षर ब्रह्म के हुकम से उत्पन्न हुई है। जीव के मन, चित्त, बुद्धि और वचन इस मोहतत्व के कालमायिक ब्रह्मॉंड तक ही पहुँचते हैं। जीव अपनी अटकल से इसके आगे का ज्ञान कहता तो है, लेकिन पुनः निराकार में ही समा जाता है।

साथ जी! यहाँ जितने भी आकार नजर आते हैं, वे सब मोहतत्व की ही पैदाईश हैं। इससे परे और अलग बेहद भूमिका है, जो सत्य है, और जिसे योगमाया का ब्रह्मॉंड कहते हैं। सत्य योगमाया तक असत्य मोहतत्व कभी नहीं पहुँच सकता। इस तरह से वहाँ की महिमा को यहाँ के शब्द नहीं लग सकते। साथ जी! अपने परमधाम की बातें बोलने में मुझे शर्म भी इसलिए आ जाती है, क्योंकि यह अखण्ड की निधि साक्षात नूरी और शब्दातीत है। और यह मोह इतना प्रबल है कि इसके प्रभाव में आकर लोग जहाँ कुछ है ही नहीं, वहाँ ही सब कुछ बताते हैं और निराकार में ही सत को दर्शाते हैं। इनके झूठे और सत्य – दोनों प्रकार के वचन मोहजन्य है। श्री जी कहते हैं कि ऐसी स्थिति में कोई क्या समझेगा? दिल में यह बात उठती है कि धनी के सुखों का रस अपने अन्दर भरती रहूँ और बाहर से तो बस चुप ही रहूँ।

3. ‘Moha’ is That Which Does Not Exist in Reality.

‘Moha’ is that which does not exist in reality. Mohtatwa, agyaan, bhram, karma, kaal, sunya, nirakaar and nirgun are all different names for the same maaya born of Akshar Brahmn’s Will. The reach of the mind, the consciouness, the intellect and the speech is limited only upto the perishable universe of Kaalmaya. *Note: Moha, on an individual level, is one’s attachment to false materialism. Here, the Lord speaks of the Universal form of the moha.*

All visible objects are born of mohtatwa. Beyond this visible world is the eternal domain of behad or yogmaaya. False mohtatwa cannot reach the truth of yogmaaya, and therefore, worldly words cannot describe its glory. O Sundersaathji! Our paramdham is even beyond yogmaaya. Therefore, I am extremely hesitant to share the highest divine treasure which is shabdateet or beyond words!

Under the powerful influence of moha, people try to show everything here in this phenomenal world, where nothing really exists! They try to show the highest truth within this domain of nirakaar. Their words – both true and false- are all corrupted by moha.

How can anyone then realize the ultimate truth that I want to share? Often, I feel that I should just be concerned about myself and absorb the Lords’ divine nectar within my entire being! Maybe, it is a good idea for me to remain completely silent!

4 मोह माया से छूटकारा कैसे पायें?

ए जिन बांधे सो खोलहीं, तोलों ना छूटे बंध ।
या विध खेल खावंद की, तो औरों कहा सनंध ।।

Eah jin baandhey so kholhi, tolo na chhutey bandh |
Ya bidh khel khaavand ki, to auron kaha sanandh | |

निज बुध आवे अग्याएँ, तोलों ना छूटे मोह ।

आतम तो अंधेर में, सो बुध बिना बल ना होए ।। क. हि. १/३५, ३६

Nij budh aavey agyaayen, tolon na chhutey moha |
Aatam to andher mein, so budh bina bal na hoye ||

और सब्द भी हैं सही, पिया करसी परदा दूर ।

सब मिल कदमों आवसी, तब हम पिया हजूर ।।

Aur sabd bhi hei sahi, piya karsi parda dur |
Sab mil kadmon aavsi, tab hum piya hajoor ||

आगम की बानी कहे, पिया आवेंगे तेहेकीक ।

तिन आसा मेरी बंधी, पूरन आई परतीत ।।

Aagam ki baani kahey, piya aavengey tehekeek |
Tin aasha meri bandhi, puran aayi parteet ||

मन चित बुध दृढ़ किया, पिया न करें निरास ।

महामत नेहेंचें कहें, होसी दुलहे सों विलास ।। क. हि. २/५३, ५४, ५५

Man chitta budh dradh kiya, piya na karey niraash |
Mahaamat nehechein kahein, hoshi dulhey saun vilaas ||

बिना धनी की जाग्रत निज–बुद्धि और उनके हुकम के सहयोग के हम मोह से कभी भी छूटकारा नहीं पा सकते। और यह भी निश्चित है कि धनी के हुकम से ही हमें जाग्रत एवं निज–बुद्धि प्राप्त हो सकती है। साथ जी! जिसने माया के बन्ध बांधे हैं, सिर्फ वही हमें इससे छुड़ा सकता है। स्वयं पारब्रह्म ही सब के उपर से माया का पर्दा हटायेंगे। जब वे माया का पर्दा दूर करेंगे, तब सारे संसार के लोग उनके चरणों में आयेंगे, और हम सब ब्रह्मात्माएँ भी उनके चरणों में जागृत हो जायेंगी। इसतरह, हमारे पिया हमें कभी भी निराश नहीं करेंगे।

4. Only the One, Who has Tied the Knots of Maaya Can Set Us Free!

One cannot be free of moha without coordinated efforts of our Lords' Awakened Intellect and His Will. It is very true that only the Lords' Will can enable His Awakened Intellect to flow towards us. Only the one, who has tied these knots, can set us

free of maaya. When Shri Rajji shall remove the curtain of maaya, all shall come in His lotus feet. Our beloved Lord shall never leave us unsatisfied or abandon us.

5 माया ही निराकार है और माया ही साकार है।

वेदों कथ कथ यों कथ्या, सब मिथ्या चौदे लोक ।

बकते बकते यों बके, एक अनेक सब फोक ।।

Vedon kath kath yon kathya, sab mithya chaudey lok |
Baktey baktey yon bakey, eak anek sab fok | |

पेड़ काली किन न देखी, सब छाया में रहे उरझाए ।

गम छायाकी भी न पड़ी, तो पेड़ पार क्यों लखाए ।। क. हि. २/१२, २१

Ped kaali kin na dekhi, sab chhaaya mein rahey urzaaye |
Gam chhaaya ki bhi na padi, to ped paar kyon lakhaaye | |
Kalash (Hindu.): 2/12, 21

यह संसार द्वैत स्वरुप माया का ही विस्तार है, जो अपनी शक्ति से निराकार होते हुए भी आकार धर लेती है। अपने बल से वह जड़ को चेतन, और चेतन को जड़ बना देती है। माया रुपि काले पेड़ को पूर्णतः किसी ने भी नहीं देखा है। सब पेड़ की छाया में ही उलझ कर रह गए हैं। जब कोई छाया के बाहर कहीं दूर निकलेगा तभी तो वह पेड़ के पूर्ण स्वरुप को देख पाएगा।

5. Maaya Can be Known Only by Going Beyond Maaya!

This world of duality (dweit - two) is nothing but the spread of Maaya. Despite being formless, she (Maaya) constantly appears in countless forms. With her miraculous powers, she transforms conscious into unconscious and vice-e-versa. None has seen the entire black tree of maaya. All have remained puzzled in the domain of her shadow. How can one see the entire tree (maaya) without going far enough and outside of the domain of the tree's shadow?

6 संसार के साधूजन पारब्रह्म प्रीतम को क्यों नहीं पा सकते?

खेल खावंद जो त्रैगुन, जाने याथें जासी फेर ।

ए निरखे मैं नीके कर, अजूं ए भी मिने अंधेर ।।

Khel khaavand jo treigun, jaaney yaathein jaasi fer |
Eah nirkhey mein nikey kar, aju eah bhi miney andher ||

ए द्वार कोई खोल के, कबहूं ना निकस्या कोए ।

ए बुजरक जो छल के, बैठे देखे बेसुध होए ।। क. हि. १/३३, ३४

Eah dwaar koi khol ke, kab hun na niksya koi |
Eah bujrak jo chhal ke, beithey dekhey besudh hoi || Kalash (Hindu.): 1/33, 34

वेदों कथ कथ यों कथ्या, सब मिथ्या चौदे लोक ।

बकते बकते यों बके, एक अनेक सब फोक ।।

Vedon kath kath yon kathya, sab mithya chhudey lok |
Baktey baktey yon bakey, eak anek sab fok ||

पेड़ काली किन न देखी, सब छाया में रहे उरझाए ।

गम छायाकी भी न पड़ी, तो पेड़ पार क्यों लखाए ।। क. हि. २/१२, २१

Ped kaali kin na dekhi, sab chhaya mein rahey urzaaye |
Gam chhaya ki bhi na padi, to ped paar kyon lakhaaye || Kalash (Hindu.): 2/12, 21

साथ जी! पांच तत्वों का यह संसार, जो मोहतत्व से है, वह महाप्रलय वश है। स्वयं *त्रिदेवा,* जो इस खेल के मालिक हैं, वे भी इस माया से बच नहीं पाए हैं, और *निराकार* के पार के विषय में बेसुध हैं। यह निश्चित समझ लो कि *निराकार* का ज्ञान और *श्री मद्भागवत* का योगमाया का ज्ञान तो इस अखण्ड श्री मुख वाणी की तुलना में एक छोटे से दीपक के समान है।

वेद कहते है कि, ''संसार मिथ्या है और एक पारब्रह्म ही सत्य है, जिन्हें बुद्धि, वचन, नजर या कानों से कभी भी नहीं पाया जाता।'' *वेदान्ती* भी पारब्रह्म के विषय में ऐसा कहकर चुप रह गए हैं कि एक अद्वैत पारब्रह्म तो *षट् प्रमाण* – मन, चित, बुद्धि, द्वष्टि, श्रवण और शब्द से रहित है। वेद भी इस संसार का पार नहीं पा सके है, तो फिर इसमें चल रहे *अनेक धर्म पंथ* मोह सागर से कैसे पार करा सकते है? जब *वेदों* और *शास्त्रों* का ज्ञान ही पारब्रह्म के विषय में सीमित है, तो ऐसी स्थिति में उसका आधार लेकर चलने वाले *साधूजनों* के लिए तो आप पारब्रह्म प्रीतम को पाने का प्रश्न ही नहीं उठता! 2/12 – 24

6. Why the Sadhus Cannot Meet the Beloved Parbrahmn?

Sundersaathji! This world of moha, which is primarily made from the *five* gross elements – earth, water, fire, gas and space, is subject to dissolution. Even the three godheads – Brahma, Vishnu and Mahesh, who own and operate this universe, are lost, hence unable to escape from this. The Vedas speak of the falsehood of this creation and the truthfulness of parbrahmn who cannot be realized through instruments like intellect, speech, touch, sight or sound – our five senses.

On the subject of Parbrahmn, the Vedantins' mouth is shut just by describing the one non-dual (adweit) Parbrahmn beyond the *six* available *pramanas* such as thoughts (manas), memory (chit), intellect (buddhi), sight, sound and speech.

When the Vedas failed to fathom this creation, how can the different Veda-based religions free the seeker of the truth? Consequently, how can the sadhujans, the hermits or the great religious leaders realize the Aksharateet Parbrahmn? It is just out of question!

Sundersaathji! Taartam Knowledge within the Holy Kuljam Swaroop is like the light of the sun. Know for sure that the knowledge of nirakaar (in different world scriptures) and the

knowledge of yogmaaya (in Srimad Bhagvatam) are like numerous tiny lamps in front of the sun-like Taartam Knowledge!

7 पंडिताॅइ और संस्कृत भाषा की उलझनों में गुमराह संसार

अब कहूं कोहेड़ा वेद का, जाकी मिहीं गूंथी जाल ।
याकी भी नेक केहेके, देऊं सो आंकड़ी टाल ।।

Ab kahun koheda ved ka, jaaki mihi gunthi jaal |
Yaaki bhi nek keheke, deun so aankdi taal | |

वैराट आकार ख्वाब का, ब्रह्मा सो तिनकी बुध ।
मन नारद फिरे दसों दिसा, वेदें बांध किए बेसुध ।।

Veiraat aakaar khwaab ka, brahma so tinki budh |
Man naarad firey dason disha, vedein baandh kiye besudh | |

लगाए सब रब्दें, व्याकरण वाद अंधकार ।
या बुधें बेसुध हुए, विवेक खाली विचार ।। क. हि. १७/१, २, ३

Lagaaye sab rabdein, vyaakaran vaad andhkaar |
Ya budhein besudh huye, vivek khaali vichaar | | Kalash (Hindu.): 17/1, 2, 3

अर्थ आड़े कई छल किए, तिन अर्थों में कई छल ।
अखरा अर्थ भी ना होवहीं, किया भाव अर्थ अटकल ।।

Arth aadey kai chhal kiye, tin arthon mein kai chhal |
Akhara arth bhi na hovhi, kiya bhaav arth atkal | |

जाको नामै संस्कृत, सो तो संसे ही की कृत ।
सो अर्थ दृढ़ क्यों होवहीं, जो एती तरफ फिरत ।।

Jaako naamein sanskrut, so to sanshe hi ki krut |
So arth dradh kyon hovhi, jo eati taraf firat | |

ए छल पंडित पढ़हीं, ताए मान देवें मूढ़ ।
बड़े होए खोले माएने, एह चली छल रूढ़ ।।

Eah chhal pandit padh hin, taaye maan devey moodh |
Badey hoye khole maayene, eah chali chhal roodh | |

सीधी इन भाखा मिने, माएने पाइए जित ।

जो सब्द सब समझहीं, सो पकड़ें नहीं पंडित ॥ क. हि. १७/१०,११,१५,१६

Sidhi in bhaakha miney, maayene paaiye jit |

Jo sabd sab samjhin, so pakdein nahi pandit || Kalash (Hindu.): 17/10, 11, 15, 16

सुन्दरसाथ जी! यह ब्रह्माँड स्वप्निल है, जहाँ की सभी बुद्धियों के मालिक ब्रह्मा जी हैं, और दसों दिशाओं में भटकने वाले मन के मालिक नारद जी हैं। वेदों के ज्ञान को व्याकरण के वाद–विवाद का विषय बना देने से संसार के लोग विवेक और विचार से शून्य हो गए हैं।

यहाँ पंडित लोग अपनी अटकलों से वेदों के एक ही शब्द के बारह अर्थ करके उसके मूल अर्थ को ही उल्टा कर देते हैं। मूल हकीकतों को छिपाने के लिए वे बीच बीच में मन–घड़ंत कहानियाँ सुनाकर लोगों को गुमराह करते हैं। और फिर, संस्कृत भाषा के अर्थघटन में अनेक संशयों की सम्भावना होने से कोई एक अर्थ दृढ़ हो ही कैसे सकता है? इसलिए, संसार के साधूजनोंको यह संसार सत्य लग रहा है, और वे अपनी बुद्धि के अनुसार ही बोल देते हैं।

7. People are Tricked by Pundits due to Sanskrit Complications

Sundersaathji! This creation is one big dream of Lord Adinarayana. Here, Lord Brahmaji owns all intellect and sage Naradji controls every mind that wanders aimlessly in ten different directions.

The people of the world have become insensitive and thoughtless because the knowledge of the Vedas has been made the subject of grammatical and literal arguments! Based on their speculations, pundits come up with twelve different meanings of one Sanskrit word, and as a result, the real meaning of the Vedic sloka is lost! Then, to hide the original truth, they insert self-made stories in their explanations. Thus, they distract people from the ultimate truth or reality. Anyways, how can one possibly arrive at a firm

conclusive meaning when there is a possibility for many different meanings for each Sanskrit sloka?

8 राजा जनक को न होने वाली पेहेचान इस समय तुम्हें हो सकती है।

मैं देख्या दिल विचार के, चितसों अर्थ लगाए ।
इस मंडल में आतमा, चल्या ना कोई जगाए ।।
Mein dekhya dil vichaar ke, chit saun arth lagaaye |
Is mandal mein aatma, chalya na koi jagaaye | |
मेहेनत तो बोहोतों करी, अहनिस खोज विचार ।
तिन भी छल छूटा नहीं, गए हाथ पटक कई हार ।।
Mehenat to bohoton kari, eahnish khoj vichaar |
Tin bhi chhal chhuta nahi, gaye haath patak kai haar | |
आद मध और अबलों, सब बोले या विध ।
केवल विदेही हो गए, तिन भी ना कही सुध ।। क. हि. २/७, ८, ११
Aad madh aur ablaun, sab boley ya vidh |
Keval videhi ho gaye, tin bhi na kahi sudh | | Kalash (Hindu.): 2/7, 8, 11

सच्चाई से मेहेनत करने पर भी इस संसार में आज दिन तक कोई भी अपनी आतम को जगाकर भवसागर से पार नहीं जा पाया है! राजा जनक जैसे विदेही भी हो गए, लेकिन उन्हें भी निराकार के पार स्थित पारब्रह्म की पेहेचान नहीं हुई, जो इस वक्त आप सब को तारतम ग्यान से हो रही है।

8. Videhee Janak and the Unsurmountable Mohtatwa!
Despite all the truthful efforts, no one in this world has awakened his soul and taken an exit beyond this perishable world of mohtatwa. Even the one and only known videhee* king Janaka failed to realize the Parbrahmn that is beyond the nirakar or formless brahmn. Saathji! You are fortunate, because the Taartam Knowledge is now available to you to achieve the goal of Ultimate God-realization.

Note: Videhee dasha is the state in which despite having a body, one remains unaffected by the worldly experiences or responds as if he is body-less, like King Janaka.*

9 पारब्रह्म को निराकार कहनाः साधू ज्ञानियों की अटकल युक्त बुद्धि का कारण

घाट अवघाट सिलपाट अति सलवली, तहां हाथ ना टिके पपील पाए ।
वाओ वाए बढ़े आग फैलाए चढ़े, जले पर अनलें ना चले उड़ाए ।। क.हि. ३/५

Ghaat avghaat silpaat ati salvali, taha haath na tikey papil paaye |
Vaao vaaye badhey aag feilaaye chadhey, jaley par anlein na chaley udaaye | | Kalash (Hindu.): 3/5

या विध ग्यान जो चरचही, सो मैं देख्या चित ल्याए ।
ज्यों मनुआ सुपने मिने, बेसुध गोते खाए ।।

Ya vidh gyaan jo charach hi, so mein dekhya chit lyaaye |
Jyon manuva supney miney, besudh gotey khaye | |

खिन में कहे सब ब्रह्म है, खिन में बंझा पूत ।
मद माते मरकट ज्यों, करे सो अनेक रूप ।।

Khin mein kahey sab brahmn hei, khin mein banza poot |
Mad maatey markat jyon, karey so anek roop | |

जैसे बालक बावरा, खेले हंसता रोए ।
ऐसे साधू सास्त्र में, दृढ़ ना सब्दा कोए ।।

Jaisey baalak baavra, kheley hansta roye |
Aisey saadhu saastra mein, drudh na sabda koi | |

ए सब सींग ससिक, बंझा पूत वैराट ।
फूल गगन नाम धर के, उड़ाए देवें सब ठाट ।। क.हि.२/२५, २६, ३०, ३१

Eah sab sing sashik, banza poot veiraat |
Ful gagan naam dhar ke, udaaye deven sab thath | |
Kalash (Hindu.): 2/25, 26, 30, 31

जिनहूं जैसा खोजिया, सो बोले बुध माफक ।

मैं देखे सब्द सबन के, जो गए जाहेर मुख बक ।। क. हि. २/४०

Jinhun jeisa khojiya, so boley budh maafak |
Mein dekhey sabd saban ke, jo gaye jaaher mukh bak || Kalash (Hindu.): 2/40

सुन्दरसाथ जी! संसार के बड़े बड़े महन्त और धर्माचार्य भी माया के जटिल बन्धनों में फंसे पड़े हैं, और ज्ञानीजन अपने अटकल युक्त ज्ञान में भटके हुए हैं। **संसार के बाकी साधू एवं ज्ञानी जन तो बस ऐसे ही बातें करते हैं, जैसे सपने में भटकने वाला बेसुध मन, जैसे शराब के नशे में चूर हो कर इधर–उधर कूदने वाले बन्दर, जैसे एक साथ साथ हँसने और रोने वाला बाँवरा बालक!**

साथ जी! यहाँ साधूजन अपने गुमान में सत्य को टेढ़ा करते हैं और छल रुपि माया का शिकार बने हुए है। वे अपनी इस प्रकार की खोज से हुई प्राप्ति के अनुसार, अपनी बुद्धि से कहते हैं कि पारब्रह्म का कोई भी स्वरुप, धाम या लीला नहीं हो सकती, वह तो निराकार ही है। **जिस तरह से बांझ स्त्री को पुत्र नहीं हो सकता, खरगोश को सींग नहीं हो सकते और आकाश में फूल नहीं लग सकते, उसी तरह, यह संसार अस्तित्वहीन है। बताओ, ऐसे असत्य संसार के कण–कण में ब्रह्म कैसे हो सकता है?**

9. Parbrahmn: Not in Every Atom of this World, Not Formless!

Leaders of the world religions are under the powerful grip of maaya, and pundits are lost in the winds of ego of their knowledge. They talk like aimlessly wandering dreaming minds, act like heavily drunk monkeys who jump here and there without any reason, and behave like confused children who laugh at one moment and cry at the next!

Victimized by the corrupt maaya, in their ego, the sadhus twist the truth! Based on their individual limited realization and intellectual ability, they end up concluding that Parbrahmn cannot have any form, abode, or leela, and therefore, must be formless!

O Saathji! This world is essentially existence-less! It's existence can be believed only if there can be a blood-son of an infertile woman, only if a rabbit can be found with horns on his head, only if a flower can be found blooming from the sky! Just imagine. How can there be Parbrahmn in every atom of this existence-less world?

10 शास्त्र और साधूओं की वाणी को स्पष्ट करने वालाः एक बेहदी

सुन्दरसाथ जी! शास्त्र और साधूओं की वाणी तो सारी दुनिया पहले से ही सुनती आई है। लेकिन शास्त्रों के रहस्यों के छिपे भेदों को पाए बिना इन्हें कोई भी लाभ नहीं होता है। **जो शास्त्रों के ज्ञान में प्रवीण हो, और अपने पिया के प्रेम में भी पूर्णतः मग्न हो, वही बेहदी सब शास्त्रों के भेदों को स्पष्ट कर सकता है। वही दूसरों को एक पारब्रह्म और उनके अखण्ड परमधाम की पेहेचान एवं उनके दर्शन की शाक्षी देकर, आतम तथा परआतम को एक रुप करके दिखा सकता है।**

ऐसा तो कोई न मिल्या, जो दोनों पार प्रकास ।
मगन पिया के प्रेम में, उधर भी उजास ।।
Aisa to koi na milya, jo dono paar prakaash |
Magan piya ke prem mein, udhar bhi ujaash | |
आप ओलखावे आप में, आप पुरावे साख ।
आतम को परआतमा, नजरों आवे साख्यात ।। क. हि. २/४९, ५२
Aap olkhaavey aap mein, aap puraavey saakh |
Aatam ko par-aatma, najron aavey saakhyaat | | Kalash (Hindu.): 2/49, 52

10. The Borderless Soul: Only One, Empowered in Knowledge

Sundersaathji! The world has already been listening to the knowledge of the scriptures and to the words

of the wise sadhus from the beginning period of this creation. However, it is fruitless without realizing the meanings of the hidden secrets of these scriptures.

Only that behadi, the one without *border*, the one having realized the vision of rising beyond the domain of nirakaar, who is knowledgeable in all scriptures and is soaked in the love of his aksharateet darling Lord, can make a difference. He does so by clarifying the deeper meanings of the scriptures and by helping others realize the one parbrahmn and the divine leela in His eternal abode. By offering multitude of self-witnesses of divine experiences (*darshan*), he helps others in aligning (merging) their aatmans with their par-aatams.

11 एक पिया के दर्शन की अभिलाषा ही पारब्रह्म के प्रेमीजनों की पेहेचान।

पारब्रह्म को पाने वाले प्रेमीजन सदैव अपने पिया के प्रेम में मस्त और दुनिया से छिपे रहते हैं। वे कभी भी अपने मुख से ऊँचा नहीं बोलते। और कदाचित वे कुछ बोल भी देते हैं, तो संसार के ज्ञानी लोग उनकी बातों का मर्म समझ भी नहीं पाते हैं। उनकी विचार धारा दुनिया से न्यारी होने से उनकी बातों पर किसी का ध्यान ही नहीं जाता। 2/42–46 प्रेमी को अपने पिया के दर्शन की बस एक ही अभिलाषा रहती है।

हे रुह! तू अपने पिया की जुदायगी के दर्द को लेकर, तेरी अन्दर की नींद उड़ा दे। अब तू अपने दिल में बस एक ही तड़प रख कि मुझे मेरे पिऊ के मुखारविंद के, उनके इश्क भरे नैनों के दर्शन कब हों, और उनके मधुर वचनों को मैं कब सुन पाऊँ?

जिन जानो पाया नहीं, है पावनहार प्रवान ।
सो ए छिपे इन छल थें, वाकी मिले न कासों तान ।।
Jin jaano paaya nahi, hei paavanhaar pravaan |
So eah chhipey in chhal thein, vaaki miley na kaaso taan | |
प्रेमी तो नेहेचे छिपे, उन मुख बोल्यो न जाए ।
सब्द कदी जो निकसे, सो ग्यानी क्यों समझाए ।।
Premi to neheche chhipey, oon mukh bolyo na jaaye |
Sabd kadi jo niksey, so gyaani kyon samzaaye | |
उड़ी जो नींद अंदर की, पड़त न क्यों ही चैन ।
प्यारी पिउ के दरस की, कब देखूं मुख नैन ।। क. हि. २/४२, ४५; ४/५
Udi jo nind andar ki, padat na kyon hi chein |
Pyari piyu ke daras ki, kab dekhu mukh nein | | Kalash (Hindu.): 2/42, 45; 4/5

11. Soul's Only Burning Desire: To be Face-to-face with the Lord

The Lovers of Parbrahmn are always soaked in His love. They purposefully choose to remain hidden from the world and never want to raise their voice in making their argument. In addition, when they do speak up, their language remains largely incomprehensible by the wise pundits of this world! Due to their uniquely un-worldly thought process, nobody pays much attention to them! Their only desire is to meet their beloved Lord.

O Soul! Light up the fire of pangs of separation from your Lord and wake up. Lock into just one ultimate

desire: When will I get to see His divine face and loving eyes? When will I get to listen to His Words?

12 प्रेम का मार्ग विकट, पर उलझनों वाला नहीं।

हे रुह! जागनी कार्य में दूसरे सुन्दरसाथ के असहयोग से निराशावादी मत हो। प्रेम का मार्ग विकट है, और जागनी कार्य बिना धैर्य और साहसिक वृत्ति के नहीं होता। माया के विकराल रास्ते पर श्री राज जी की मेहर रूपी पाखर ओढ़ कर, इश्क और ईमान के घण्टे बजाते हुए, मस्त हाथी की बेफिक्री की चाल चलने के लिए कृतनिश्चयी हो जाओ।

और हाँ, ऐसा करते वक्त तूं अपने झूठे अहंकार को बिल्कुल दूर कर देना। आवश्यकतानुसार, हे रुह! तूं अपने हाथी जितने बड़े स्वरूप को इतना सिकोड़ लेना ताकि तूं अपने आपको सूई के नाके के छेद जितने मुश्किल द्वार में से भी बिना किसी अटकाव के पार निकाल पाये।

कठिन निपट विकट घाटी प्रेम की, त्रबंक बंको सूरो किनों न अगमाए ।
धार तरवार पर सचर सिनगार कर, सामी अंग सांगा रोम रोम भराए ।।
Kathin nipat vikat ghaati prem ki,
trabank banko suro kinon na agamaaye |
Dhaar tarvaar par sachar singaar kar,
saami ang saanga rom rom bharaaye | |
पेहेन पाखर गज घंट बजाए चल, पैठ सकोड़ सुई नाके समाए ।
डार आकार संभार जिन ओसरे, दौड़ चढ़ पहाड़ सिर झांप खाए ।। क.हि. ३/२, ६
Pehen paakhar gaj ghant bajaaye chal,
peith sakod sui nakey samaaye |
Daar aakaar sanbhaar jin osrey,
daud chadh pahaad sir zaanp khaaye | | Kalash (Hindu.): 3/2,6

घाटी टेढ़ी सकड़ी, तीखी खांडा धार ।

रोम रोम सांगा सामिया, तामें चढ़ूं कर सिनगार ।।
Ghaati tedhi sakadi, tikhi khanda dhaar |
Rom rom saanga saamiya, taamen chadhun kar singar | |

इत चल तूं हस्ती होए के, पेहेन पाखर गज घंट बजाए ।
पैठ सकोड़ सुई नाके मिने, जिन कहूं अंग अटकाए ।। क. हि. ४/७, १३
It chal tun hasti hoye ke, pehen paakhar gaj ghant bajaaye |
Peith sakod sui naake miney, jin kahun ang atkaaye | | Kalash (Hindu.): 4/7, 13

12 The Path of Love: Difficult, but not Impossible!

O Soul! As you dedicate yourself for the cause of jaagni (spiritual awakening), do not become disheartened by non-cooperation of others. The path of unparalleled love is difficult, and jaagni services cannot be performed without patience and a courageous attitude. On the treacherous path of maaya, guard yourself with the shield of Lord's grace. Keep ringing the bells of ishak (pure love) and emaan (faith) to neutralize maaya's distracting noise. Have firm determination and walk like a cheery elephant. Remember: The path of Unparallelled Love is difficult, but not impossible.

And, yes, in doing so, drop your false ego entirely. As necessary, shrink yourself to such a tiny size so that you may pass easily through the small needle-hole!

13 पारब्रह्म प्राप्ति के रास्ते में आने वाले अवरोंधों को पेहेचानो

साथ जी! पारब्रह्म घनी को पाने के लिये धार्मिक रुढ़िवादिता, जड़ कर्मकांड सांसारिक लोकलाज के बन्धनों को तोड़ना होगा, दुनियावी लोभ लालच के चिकनेपन से और निन्दा चुगली से अपने आप को सर्तक रखना होगा। अपने अहंकार – मैं खुदी को मिटाना होगा। कर लो आज यह संकल्प।

कठिन निपट विकट घाटी प्रेम की, त्रबंक बंको सूरो किनों न अगमाए ।
धार तरवार पर सचर सिनगार कर, सामी अंग सांगा रोम रोम भराए ।।
Kathin nipat vikat ghati prem ki,
trabank banko soor kinon na agmaaye |
Dhaar tarvaar par sachar singaar kar,
saami ang saanga rom rom bharaaye ||

सागर नीर खारे लेहेरां मार मारे फिरें, बेटो बीच बेसुध पछाड़ खावे ।
खेलें मछ मिले गलें ले उछाले, संधो संध बंधे अंधों यों जो भावे ।।
Saagar neer khaare leheran maar maarey firen,
beto bich besudh pachhaad khaavey |
Khelen machh miley galen ley uchhaale,
sandho sandh bandhey andhon yon jo bhaavey ||

घाट अवघाट सिलपाट अति सलवली, तहां हाथ ना टिके पपील पाए ।
वाओ वाए बढ़े आग फैलाए चढ़े, जले पर अनलें ना चले उड़ाए ।। क. हि. ३/२, ३, ५
Ghaat avaghaat silpaat ati salvali,
tahaan haath na tikey papil paaye |
Vaao vaaye badhey aag feilaaye chadhey,
jaley par analein na chale udaaye || Kalash (Hindu.): 3/2, 3,5

13 Commit Yourself to Abandon Orthodoxy and Ego, Now

Sundersaathji! To receive the company of our Lord Dhani Shri Rajji, relinquish your religious orthodoxy, become free from the

bondage of thoughtless worldly rituals or karmakand. Let go your desires for worldly fame. Be vigilant about the slippery nature of worldly greed, ego and acts of slander. Commit yourself to all this, today!

14 जाग्रत निज–बुद्धि युक्त ईमान में ही वास्तविक शान्ति की जड़।

जाग्रत निज–बुद्धि युक्त ईमान बाहरी परिस्थितियों में आने वाले परिर्वतन के आधिन नहीं है। ऐसा ईमान, जो धनी को मिलाने वाला है, उसी में ही वास्तविक शान्ति है।

साथ जी! इस नश्वर तन का भरोसा ही क्या? बाहरी परिस्थितियों में आने वाले परिर्वतन से अपने ईमान में कोई फर्क न पड़ने दो। सदा ही धनी के वचनों को सुन कर उनकी इशारतों के राज़ पा लेने की चाहत बनाये रखो। अपनी निस्बत का दावा कायम रखते हुए अपने शिर को श्रीफल और अपने शरीर को लकड़ी मान कर विरह की अग्नि जला कर होम करो, ताकि सोते, जागते, स्वप्न में बस 'पिया पिया' ही की रट चलती रहे।

मैं चाहत न स्वांत इन भांत,
अजूं आउध अंग चले, इन नैनों दोनों नेक न आवे नीर ।
दरद देहा जरद गरद रद करे, मैं क्यों धरूं धीर अस्थिर सरीर ।।
Mein chaahat na swaant in bhaant,
ajun aaudh ang chaley, in neinon donon nek na aavey neer |
Darad deha jarad garad rad karey,
mein kyon dharun dhir asthir sharir | |
पिया मोहे स्वांत न आवहीं, ना कछू नैनों नीर ।
पिया बिना पल जो जात है, अहनिस धखे सरीर ।। क. हि. ३/१; ४/१
Piya mohe swaant na aavhin, na kachhu neinon neer |
Piya bina pal jo jaat hei, eahnish dhakhey sharir | |
Kalash (Hindu.): 3/1;4/1

हाड़ हुए सब लकड़ी, सिर श्रीफल विरह अगिन ।

मांस मीज लोहू रगां, या विध होत हवन ।।

Haad huye sab lakdi, shir shrifal virah agin |
Maans mij lohoo ragaan, ya vidh hote havan | |

ए दरद जाने सोई, जिन लगे कलेजे घाव ।

ना दारू इन दरद का, फेर फेर करे फैलाव ।।

Eah darad jaane soi, jin laagey kalejey ghaav |
Na daaru in darad ka, fer fer karey feilaav | |

विरहा ना देवे बैठने, उठने भी ना दे ।

लोट पोट भी ना कर सके, हूक हूक स्वांस ले ।।

Viraha na devey baithney, uthaney bhi na dey |
Lot pot bhi na kar sakey, hook hook svaansh ley | |

आठों जाम विरहनी, स्वांस लिए हूक हूक ।

पत्थर काले ढिग हुते, सो भी हुए टूक टूक ।।

Aathon jaam virhni, swansh liye hook hook |
Patthar kaale dhig hutey, so bhi huye took took | |

एह विध मोहे तुम दई, अपनी अंगना जान ।

परदा बीच टालने, ताथें विरहा परवान ।। क. हि. ५/३, ५, १०, ११, १२

Eah vidh mohey toom dai, apni angna jaan |
Parda bich taalne, taathen viraha parvaan | | Kalash (Hindu.): 5/3, 5,10,11,12

14 True Peace Lies in Faith Rooted in Awakened Intellect

Faith (emaan, shraddha), which is colored with Shri Rajji's awakened intellect is not the slave of changes in external situations. Peace lies only in such an unflinching faith, which leads one closer to the Lord!

Sundersaathji! What is the guarantee of this false body? Never let your faith become tainted because of outside factors. Listen to

Shri Rajji's Words and always maintain an attitude of receiving the deepest joy by knowing the essence of His heart.

O Soul! Claim your eternal nisbat, your intimately divine relationship. Allow your head to be a sacrificial coconut fruit. Let your body serve as the fuel. Light up the sacred fire of viraha so an unceasing recitation of His name 'piya, piya' may continue while asleep, while awake or even while dreaming.

15 मनुष्य की जड़ कर्मकांडी वृत्तियाँः माया ही का स्वरूप।

साथ जी! इस पहाड़ जैसे बड़े जागनी के कार्य में अपने शरीर और अपनी कर्मकांडी वृत्तियों को बाधा रुप न बनने दो। जड़ कर्मकांड की दीवार जीव को इस भयानक भवसागर में फॅसाये रखती है। जीव हर पल मोह–ममता रुपि काई में फिसलता रहता है। इसलिए वह भवसागर से पार नहीं हो पाता। यह माया ऐसी चिकनी है कि छोटी सी चींटी भी इसके चिकनेपन से बच नहीं पाती। भले ही धनी को पाने का मार्ग तलवार की धार जैसा तेज (कठिन) क्यूँ न हो, फिर भी उस पर चलने को तत्पर रहने वाली मानसिकता हमेंशां बनाये रखो। साथ जी! यदि हम ऐसा कर सकते हैं, तो हमें हमारे धनी इसी तन से मिल सकते हैं। अभी तो लाखों मुसीबतें आयेंगी। और हमें पहुँचना है चौदह लोक, निराकार निरंजन से पार पिया जी के वतन। दिखने में कठिन लगने वाला जागनी का रास्ता धनी की पेहेचान हो जाने पर बहुत ही आसान लगेगा। आप बस हिम्मत रखिये।

दीजे न आल आकार को, पिउ मिलना अंग इन ।
दौड़ चढ़ पहाड़ झांप खा, कायर होवे जिन ।।
Dijey na aal aakaar ko, piyu milna ang in |
Daud chadh pahaad zaanp kha, kaayar hovey jin | |
बोहोत फंद बंध धंध कई, कई कोटान लाखों लाख ।
अंदर नजरों आवही, पर मुख न देवे भाख ।।

Bohot fand bandh dhandh kei, kei kotaan laakhon laakh |
Andar najaron aavhi, par mukh na devey bhaakh | |
पाँउ चले ना पर उड़े, बीच तो ऐसे पंथ ।
पर ए सब तोलों देखिए, जोलों ना दृष्टें कंथ ।। क. हि. ४/१४, १५, १७
Paun chaley na par udey, bich to aisey panth |
Par eah sab tolon dekhiye, jolon na drustein kanth | |
Kalash (Hindu.): 4/14,15,17

15 Mission of Jaagni: As Challenging as Climbing Mount Everest!

Dear Sundersaathji! The divine mission of Jaagni is as challenging as climbing the Mount Everest! Do not let your body or your externalities-centered attitudes become an obstacle in the divine cause of Jaagni. Many more hardships shall come in your journey. Nevertheless, you have to reach our Lord's Abode, which is beyond these fourteen worlds and even beyond nirakaar – that which is without material form and niranjana - that which cannot be seen by mortal eyes. This seemingly thorny path shall feel easy upon realizing our Swaroopvaan Lord Shri Rajji, the Lord having perfectly divine self and form. Have courage! If you dare to break through this barrier, guaranteed, you shall meet Shri Rajji face-to-face right in this life!

Dear Sundersaathji! The wall of thoughtless rituals keeps the jivas locked within the boundaries of this dangerous bhavsagar (mohtatwa). The jiva's attempts to exit from this quandary are foiled by the extremely slippery roads of bondage of moha-mamta

or false attachments. As a result, it is impossible for the jiva to cross the bhavsagar. Not even the smallest ant is capable of walking safely on this slippery path of maaya. O Saathji! Regardless of the razor-sharp and treacherous nature of this path, never let your spirit go down, as you journey closer to Shri Rajji!

16 धनी से अर्ज करें: एक यही बात हमारे हाथ में।

साथ जी! एक बात को हंमेशां याद रखना। बिना धनी के खुद के हुकम के उनसे कोई भी नहीं मिल सकता। हमें तो बस एक आतम भाव से धनी को अर्ज करनी है कि, ''हे धनी! आप मुझे अविधारो। मैं आपकी युवा अँगना आपके वियोग में तड़प रही हूँ। कृपा करके धाम की निस्बत जान कर, अपनी दुल्हिन आत्म को आपके इश्क की सेज्या पर बुलाओ। फिर आप हमें अपना प्यार दो, और हमारे दिल की तड़पन को मिटाओ।''

तलफे तारूनी रे, दुलही को दिल दे ।
सनमंध मूल जानके रे, सेज सुरंगी पर ले ।।
Talfey taaruni re, dulhi ko dil dey |
Sanmandh mool jaankey re, sej surangi par ley | |
आतम बंधी आस पिया, मन तन लगे वचन ।
कहे महामती कौन आवहीं, इत हुकम खसम के बिन ।। क. हि. ५/१; ४/१८
Aatam bandhi aash piya, man tan lagey vachan |
Kahey mahaamati kaun aavhin, it Hukum khasam ke bin | | Kalash (Hindu.): 5/1;4/18

16 Arji is All a Soul Has Total Control Over.

Dear Sundersaathji! Remember one thing for sure that no one can meet with Shri Rajji without His

Will. All we can do is a sincere prayer (arji) in the Lord's lotus feet, and simply ask: "O Rajji! Please take me in your loving lap. I am your young wife, shattered in the pain of your separation. Please bless your sweet-heart soul by inviting her to the bed of divine love, share your love and quench the longing of my heart."

17 विरहः आत्मा के सभी जागनी मनोरथ पूर्ण कराने वाला साथी

विरह आत्मा की जागनी के सभी मनोरथ पूर्ण कराने वाला, धनी से मिलन और लीला विहार का आनन्द दिलाने वाला परम साथी है। सिर्फ़ आत्म विरहिन ही पारब्रह्म श्री राज जी का विरह कर पाती है। लगातार फैलते रहने वाले विरह रुपि कठोर दर्द की कोई दवा ही नहीं है। आत्म को अपनी वाणी रुपि खुराक मिलना बन्द हो, तभी तो एक बार प्रगटी हुई विरह की चिंगारी के बुझने का प्रश्न होता है। अतः विरह की चिंगारी कभी नहीं बुझती।

विरहिन तो सदा ही वाणी मंथन, रहनी और चितवनी के उद्यम करती रहती है, जिससे उसके विरह की लौ सदैव बढ़ती ही जाती है। आत्मा जैसे जैसे इस प्रक्रिया में संलग्न होती जाती है, वैसे वैसे उसके कौल, फैल और हाल भी एक रुप होते जाते हैं। अब उसे धनी के जोश और उनके इश्क की लज्ज़त मिलने लगती है, और वह अपने आप को 'प्रेम–सेवा' में झोंक देती है।

विरहिन का ईमान उसके आस–पास के वातावरण पर निर्भर नहीं होता। वह माया के मोह से स्वतंत्र, और धनी के प्रेम से परतंत्र होती है। धनी का मिलन और उनसे लीला विहार का आनन्द ही विरहीन के विरह की फलश्रुति है।

दुल्हिन आत्म के विरह की अग्नि इतनी प्रबल होती है कि उससे कठोर से कठोर काले पत्थर समान दिल वाले लोग भी पिघल कर मोमिन जैसे नरम दिल हो जाते हैं, अर्थात् जाग्रत हो जाते हैं।

धनी अपनी अँगना को विरह इसलिए देते हैं, ताकि उसके और अपने बीच का जुदाई का पर्दा दूर हो पाए। इस तरह विरह आत्मा की जागनी के सभी मनोरथ पूर्ण कराता है। उसे कमजोर नहीं, बल्कि बलवान बनाता है। अतः रुह के लिये विरह से बड़ी कोई वस्तु नहीं है।

तलफे तारूनी रे, दुलही को दिल दे ।

सनमंध मूल जानके रे, सेज सुरंगी पर ले ।।

Talfey taaruni re, dulhi ko dil dey |
Sanmandh mool jaankey re, sej surangi par ley | |

हाड़ हुए सब लकड़ी, सिर श्रीफल विरह अगिन ।

मांस मीज लोहू रगां, या विध होत हवन ।।

Haad huye sab lakdi, shir shrifal virah agin |
Maans mij lohu ragaan, ya vidh hot havan | |

ए दरद जाने सोई, जिन लगे कलेजे घाव ।

ना दारू इन दरद का, फेर फेर करे फैलाव ।। क. हि. ५/१, ३, ५

Eah darad jaane soi, jin lagey kalejey ghaav |
Na daaru in darad ka, fer fer karey felaav | | Kalash (Hindu.): 5/1,3, 5

विरहा ना देवे बैठने, उठने भी ना दे ।

लोट पोट भी ना कर सके, हूक हूक स्वांस ले ।।

Viraha na devey beithney, uthaney bhi na dey |
Lot pot bhi na kar sakey, hook hook swaansh ley | |

आठों जाम विरहनी, स्वांस लिए हूक हूक ।

पत्थर काले ढिग हुते, सो भी हुए टूक टूक ।।

Aathon jaam virahni, swaansh liye hook hook |
Patthar kaaley dhig hutey, so bhi huye took took | |

एह विध मोहे तुम दई, अपनी अंगना जान ।

परदा बीच टालने, तातैं विरहा परवान ।। क. हि. ५/१०, ११, १२

Eah vidh mohey toom dai, apni angna jaan |

Parda bich taalne, tathen viraha parvaan ||Kalash (Hindu.): 5/10,11,12

17. Viraha: The Catalyst for Fulfilling the Soul's Jaagni Dreams

Viraha (longing for the beloved Lord) is one powerful instrument that helps the longing soul achieve all her Jaagni dreams, including meeting with the Lord and receiving the experience of eternal joy. Only a brahmnsrishti soul can long for Aksharateet Shri Rajji.

The spark of Viraha can be quenched only if a soul seizes to receive her spiritual food through the Holy Wani. Once infected, there is no cure – no antibiotic - to prevent the ever-spreading and stubborn disease of viraha.

However, the longing soul remains constantly engaged in a non-stop exercise of studying the Wani, living by the Wani and meditating the blissful sports (Leela) of Paramdham. This, in turn, sparks more longing in her heart. This process helps align her spiritual knowledge with her life actions and her entire state of being. Now, she begins to experience the flavor of Shri Rajji's Josh (spiritual power) and Ishak. This inspires her to get involved in the experiments of 'Prem-Seva', i.e., expressing love through selfless service.

The faith of a longing soul is not the slave of her surrounding environment. Such a soul is free from

maaya and is enslaved only by the Lord's Love. Receiving an opportunity to meet with the Lord and to experience eternal joy in His company, is the fruit of Viraha.

Viraha empowers the soul; it does not weaken her. The fire of viraha is so powerful that it can melt the hardest of all black stones. In other words, it awakens (softens the hearts of) stone-like people.

Dhaniji imparts viraha to His beloved Soul simply to remove the curtain of separation between them. This way, viraha fulfills all her dreams of spiritual awakening. Thus, to her, there is nothing greater than the viraha.

18 विरहिन और मछली दोनों की तड़प एक जैसी।

साथ जी! जो अपने प्राणों के प्रीतम से मिलकर अलग हुई हो, सिर्फ वही प्रियतमा विरह की हकीकत को जानती है। ठीक वैसे ही, जैसे सिर्फ जल से बिछुड़ी हुई मछली अपनी तड़प या दर्द को जान पाती है। जो पहले कभी भी अपने प्राण–स्वरूप से बिछुड़ी ही न हो, वह यह नहीं जान सकती। जब विरह खुद ही धनी की विरहिन का घर बन जाता है, तब उसके लिए चौदह लोकों की साहिबी शून्य समान हो जाती है।

विरहा गत रे जाने सोई, जो मिलके बिछुरी होए, मेरे दुलहा ।
ज्यों मीन बिछुरी जलथें, या गत जाने सोए, मेरे दुलहा ।
विरहनी विलखे तलफे तारूनी, तारूनी तलफे कलपे कामनी ।।
Viraha gat re janey soi, jo milkey bichhuri hoye, mere dulha |
Jyon min bichhuri jal then, ya gat jaaney soye, mere dulha |

Virahni vilkhey talfey taaruni, taaruni talfey kalpey kaamni ||

विरहनी विरहा बीच में, कियो सो अपनों घर ।

चौदे तबक की साहेबी, सो वारूं तेरे विरहा पर ।। क. हि. ६/१, ५

Virahni virha bich mein, kiyo so apnon ghar |
Chaudey tabak ki sahebi, so vaarun terey virha par || Kalash (Hindu.): 6/1,5

18 What is Common Between a Fish and a Soul?

Saath ji! The One, who has separated from her Beloved, only knows what it means to be in the state of Viraha. Exactly like a fish that has separated from water, only a virhin, can feel the pangs of separation from her Lord Aksharateet, who is the *life* of her *life*.

The one who has never experienced separation from her life-breath, can never know the degree of this suffering. When a virhin soul resides within the *house* of viraha itself, the happiness of the fourteen worlds holds no value to her.

19 विरहिन और पतंगे की चाल एक जैसी।

साथ जी! विरह कोई कहने की बात नहीं है। विरहानुभूति का वर्णन करने वाली विरहीन हो ही नहीं सकती। विरहिन आतम तो हंमेशां अपना अन्तःनिरीक्षण करती रहती है, और फिर अपने धनी के आदेशानुसार जागनी सेवा में समॅपित हो जाती है।

विरहिन और पतंगे की चाल एक जैसी होती है। दीपक को देखते ही जो अपने आपको उसमें झोंक दें, उसे ही पतंगा कहा जाता है। क्या एक पतंगा, जिसने जलता हुआ दीपक देख लिया हो, वह दूसरे

पतंगे को जाकर यह कह पाता है कि, ''ए पतंगे! चल मैं तुझे दीपक दिखाता हूँ? यदि वह ऐसा कर पाता है, तो फिर वह पतंगा ही नहीं है।

विरहावस्था में विरहिन आत्मा की बुद्धि विचार शून्य हो जाने से वह दूसरों के सामने अपने विरह की अभिव्यक्ति कर ही नहीं सकती, अथॉत, वह पिया के विरह में कुछ बोल ही नहीं पाती। हॉं, वह तब बोल पाती है, जब स्वयं पिया जी उसका हाथ पकड़ कर उसे उठाते हैं। उसके जीवन की डोर धनी के खुद के हाथ में होती है।

एह बात मैं तो कहूं, जो कहने की होए ।

पर ए खसमें रीझ के, दया करी अति मोहे ।।

Eah baat mein to kahun, jo kehne ki hoye |
Par eah khasmein riz ke, daya kari ati mohey ||

पतंग कहे पतंग को, कहां रह्या तूं सोए ।

मैं देख्या है दीपक, चल देखाऊं तोहे ।।

Patang kahey patang ko, kaha rahya tu soye |
Mein dekhya hei dipak, chal dekhaaun tohe ||

पंतग और पतंग को, जो सुध दीपक दे ।

तो होवे हांसी तिन पर, कहे नाहीं पतंग ए ।। क. हि. ९/१, १७, १९

Patang aur patang ko, jo sudh dipak dey |
To hovey haansi tin par, kahey nahi patang eah ||Kalash (Hindu.): 9/1, 17, 19

ए जो विरहा बीतक कही, पिया मिले जिन सूल ।

अब फेर कहूं प्रकास थें, जासों पाइए माएने मूल ।।

Eah jo virha bitak kahi, piya miley jin sul |
Ab fer kahun prakaash thein, jaason paaiye maayene mool ||

जब मैं हुती विरह में, तब क्यों मुख बोल्यो जाए ।

पर ए वचन तो तब कहे, जब लई पिया उठाए ।।

Jab mein huti viraha mein, tab kyon mukh bolyo jaaye |
Par eah vachan to tab kahey, jab lai piya uthaaye ||

ज्यों ए विरहा उपज्या, ए नहीं हमारा धरम ।
विरहिन कबहूं ना करे, यों विरहा अनूकरम ।। क. हि. ९/१३, २१, २२
Jyon eah virha upjya, eah nahi hamara dharam |
Virhin kab hu na karey, yon virha anukaram || Kalash (Hindu.): 9/13, 21, 22

19 What is Common between a Butterfly and a Soul?

Dear Sundersaathji! The feelings of viraha cannot be expressed to others in words! Such a soul is always engaged in introspection, discovers the Will of her Lord and then engages herself in the self-less services. Understand this with the example of the butterfly.

The walk of the virahain and the walk of the butterfly are not different as far as the willingness to sacrifice is concerned. A butterfly is one who jumps on a burning lamp once he sees it. Can it afford to waste time to go to the other butterfly and tell, "O my friend! Let me show you a burning lamp?" If yes, than it just cannot be classified as a butterfly!

In the state of viraha, the soul's intellect seizes to think. As a result, she cannot express the nature of viraha to others. If at all, she speaks something, it is only if she is empowered by her Lord. Dhaniji takes the steering wheel of a virahin's life in His hands.

20 आत्म–पेहेचान हो जाना ही 'विरह का प्रकाश' है।

तारतम ज्ञान के सभी पहलूओं की आत्मसाक्षी मिल जाना अर्थात्, सब अटकलों का समापन हो जाना, और धनी की मेहेर और मूल सनमंध या निसबत का ऐहेसास होना ही आत्म पेहेचान है। इस तरह की आत्म–पेहेचान हो जाना ही 'विरह का प्रकाश' होना कहा गया है।

साथ जी! विरह के लक्षणों को सिर्फ सुनने से या इन्हें सुनाया करने से विरह नहीं आ जाता। आत्मा में विरह का प्रकाश होने पर उसे यह दृढ़ हो जाता है, कि श्री राज जी की मेहेर ने अपना आवेश देकर सब तरह से उजाला कर दिया है, और निराकार के पार योगमाया और उस से भी पार परमधाम के दरवाजे खोल दिए हैं।

श्री इन्द्रावती जी के अंतर में धनी जी की पूर्ण पेहेचान अथॉत, विरह का प्रकाश हो जाने पर ही उन्हें 'महामति' का खिताब प्राप्त हुआ है।

सुनियो बानी सुहागनी, दीदार दिया पिउ जब ।
अंदर परदा उड़ गया, हुआ उजाला सब ।।
Suniyo baani suhagani, deedar diya piyu jab |
Andar parda ud gaya, huva ujaala sab ||
कर पकर बैठाए के, आवेस दियो मोहे अंग ।
ता दिन थें पसरी दया, पल पल चढ़ते रंग ।।
Kar pakar beithaaye ke, aavesh diyo mohey ang |
Ta din thein pasri daya, pal pal chadhtey rang ||
हुई पेहेचान पिउसों, तब कह्यो महामती नाम ।
अब मैं हुई जाहेर, देख्या वतन श्री धाम ।। क. हि. ९/२, ४, ५
Huyi pehechaan piyusaun, tab kahyo mahaamati naam |
Ab mein huyi jaaher, dekhya vatan shri dhaam ||Kalash (Hindu.): 9/2, 4, 5

20 Self-Realization is Enlightenment of Viraha

Self-realization means receiving self-witness with regard to all aspects of Taartam knowledge, dissolution of all doubts, and realization of one's exclusively intimate relationship with Shri Rajji and His grace. Such a self-realization is the outcome of viraha.

Saathji! The experience of viraha does not come just by listening to or preaching the different aspects and the qualities of viraha. Upon the enlightenment of viraha, the soul affirms the fact that Shri Rajji's meher (divine grace) has enlightened me in every respect by bestowing His Aavesh (exalted power). He has opened up the locked gates of nirakaar and yogmaaya leading to the highest Paramdham.

Only upon such a Kuljamically complete realization, Shri Indrawatiji qualified for the title of Mahaamati.

21 धनी के इश्क की कोई बराबरी नहीं।

'इश्क बड़ा रे सबन में, ना कोई इश्क समान।' धनी के हकीकी इश्क की कोई बराबरी नहीं। उनका इश्क ही एक ऐसा है, जो हमें विरह देता है, धनी के सिवा और कुछ भी नजर आने नहीं देता। यह इश्क आतम का मुख से बोलना बंद करवा देता है, उसके हाथ–पाँव भी हिलना बंद कर देते हैं। फिर भी धनी मिलन की आस में यह विरहा उसे बेसुध भी नहीं होने देता! इस तरह इश्क आतम

को 'जाहिर' में (दुनिया की तरफ से) मार कर फिर 'बातून' में (धनी की तरफ) जिन्दा कर देता है।

प्राणपिया जी के वियोग में होने वाले दुःख का अनुभव और उनसे साक्षात लीला विहार की अभिलाषा भी उनका इश्क ही देता है। वियोग के इस दुःख का अनुभव तो विरहिन को सर्वाधिक प्यारा है, क्योंकि इससे उसे अपने पिऊ जी से साक्षात लीला विहार करने का विशेष और अधिक सुख मिलना है।

साथ जी! धनी के इश्क के सामने सारी दुनिया कुछ भी नहीं। चौदह लोकों के ब्रह्माँड, शून्य और निरंजन (हद), एवं योगमाया (बेहद) का लेखा जोखा तो हो सकता है, लेकिन अक्षरातीत पिया जी के इश्क की महिमा तो बेहिसाब है। दुनिया के सारे शब्द तो शून्य में ही समा जाते हैं, जब कि धनी का इश्क तो इससे भी आगे अखण्ड में निकल जाता है।

साथ जी! अपने इश्क रूपी शस्त्र से हमारे अन्दर से माया को जड़ मूल से उखाड़ने वाले केवल एक अक्षरातीत धनी ही है, जिनसे हमारी अखण्ड निस्बत है।

21 Beloved Lord's Ishak is Beyond Comparison!

इस्क बड़ा रे सबन में, ना कोई इस्क समान ।
एक तेरे इस्क बिना, उड़ गई सब जहान ।।
Ishak bada re saban mein, na koi ishak samaan |
Eak terey ishak bina, ud gayi sab jahaan | |

Chaude tabak hisaab mein, hisaab niranjan sunn |
Nyara ishak hisaab the, jin dekhya piyu vatan | |
लोक अलोक हिसाब में, हिसाब जो हद बेहद ।
न्यारा इस्क जो पिउ का, जिन किया आद लों रद ।।
Lok alok hisaab mein, hisaab jo had behad |

Nyara ishak jo piyu ka, jin kiya aad lon rad ||

एक अनेक हिसाब में, और निराकार निरगुन ।

न्यारा इस्क हिसाब थें, जो कछू ना देखे तुम बिन ।।

Eak anek hisaab mein, aur nirakaar nirgun |
Nyaara ishak hisaab thein, jo kachhu na dekhey toom bin ||

और इस्क कोई जिन कथो, इस्कें ना पोहोंच्या कोए ।

इस्क तहां जाए पोहोंचिया, जहां सुन्य सब्द ना होए ।।

Aur ishak koi jin katho, ishkein na pohochya koi |
Ishak tahan jaye pohonchiya, jaha sunya sabd na hoye ||

नाहीं कथनी इस्क की, और कोई कथियो जिन ।

इस्क तो आगे चल गया, सब्द समाना सुंन ।। क. हि. ७/१, २, ३, ४, ५, ६

Naahi kathni ishak ki, aur koi kathiyo jin |
Ishak to aage chal gaya, sabd samaana sunn ||Kalash (Hindu.): 7/1-6

सनमंध मूल को, मैं तो पाव पल छोड़्यो न जाए ।

अब छल बल मोहे कहा करे, मोह आद थें दियो उड़ाए ।। क. हि. ८/१

Sanmandh mool ko, mein to paav pal chhodyo na jaaye |
Ab chhal bal mohey kaha karey, moha aad the diyo udaaye ||
Kalash (Hindu.): 8/1

There is no comparison for Shri Rajji's Ishak—His Divine Love. Ishak gives birth to viraha in the soul's heart, and does not let her see anything else but Shri Rajji. Ishak does not let her speak and even freezes her hands and feet. Despite this, in her hope to meet with the Lord, Ishak does not allow the soul to become unconscious. This way, Ishak kills the soul outwardly but revives her from within.

It is our Beloved Lord's Ishak, which offers two exactly opposite experiences - the pangs of

separation on one hand and the big hope to meet and play with the Lord on the other. The virhin soul loves this experience of pangs, the most. This is because viraha opens up the possibility for eternal joy with the Lord.

O Saathji! Nothing comes close to our Lord's Ishak. It might be possible for anyone to account for the glory and beauty of this creation of the fourteen worlds, the domain of nothingness (sunya) and niranjana. Even if someone fathoms the vastness and the greatness of the rarely explored eternal domain of yogmaaya; but the glory of the Lord's Ishak can never be accounted for!

All words of this world merge into the sunya (the zero domain), but the Lord's Ishak passes beyond the domain of Zero into the eternity.

Only our Lord, with whom we are eternally related, is capable of removing the deceitful maaya from our hearts through His Ishak.

22 आतम और संगी जीव के परस्पर सहयोग से धनी मिलन।

जब आतम और संगी जीव दोनों को एक ही धनी के मिलन की आशा बनी रहती है, तब इसी पंच–भौतिक तन के अंगों से धनी से मिलना सम्भव होता है।

अपने युगल धनी के चरणों में सर्वस्व समर्पण की स्थिति में आत्मा के अन्दर एक तरफ तो धनी के विरह में देह त्याग कर देने (जीव छोड़ देने) की भावना, तो दूसरी तरफ, इसी तन से धनी को मिलने

की अभिलाषा–यह दोनों विरोधाभासी विचारधाराओं की लड़ाई शुरु हो जाती है। ऐसी स्थिति में जीवन की ड़ोर धनी जी खुद अपने हाथ में ले लेते हैं। फिर धनी जी अपना काम करवाने के लिए रुह को अपना बल देकर खड़ा करते है, और इस तरह हमारे संगी जीव को कायम रखते हैं।

नोटः श्री कुलजम सरुप के अनुसार परमधाम की आत्माओं (सुरता) का जीवन के साथ दो तरह से संग हुआ है–एक तो एक ही तन में दोनों (एक आत्म और एक जीव) साथ मिलकर; और दूसरा इन दोनों का किसी और जीव या बहुत सारे जीवों से सम्पर्क में आने से (दोनों अलग अलग तन में रहते हुए)।

ब्रज लीला और इस समय की जागनी लीला दोनों कालमायिक लीलायें हैं, जो बिना जीव के सहयोग के, आत्मा अनुभव नहीं कर सकती। श्री इन्द्रावती जी की आत्मा का भी किसी जीव विशेष से संग हुआ है। जब तक यह कालमाया का सपना खड़ा है, और उससे परमधाम की सुरता जुड़ी हुई है, तब तक इस हकीकत को शिरोधार्य करना परम आवश्यक है।

कलश हि. ग्रन्थ के 8 वें और 23 वें जागनी के प्रकरण में इन दोनों अलग–अलग सम्भावनाओं का अनुमोदन किया गया है। इन दोनों सम्भावनाओं का और इन से जुड़े जीवों को मिलने वाली अलग अलग भिश्तों का भी स्पष्टीकरण श्री मुख वाणी और श्री बीतक साहिब में जगह जगह पर दिया गया है।

जैसे जैसे रूह कुलजमीय हकीकत और मारफत की स्थिति में पहूंचती है, वैसे वैसे उसके लिए कालमाया या जीव संबंधी बातों का प्राधान्य भी कम होता जाता है। इसलिए, मारफत का दावा लेकर आत्मा का किसी जीव विशेष से संग होने की उपरोक्त प्रथम सम्भावना को रद्द कर देना वाणी की द्रष्टि में उचित नहीं लगता है। अपने वाणी वचन में मारफत की सिर्फ बातें दोहराना और मारफत की स्थिति मे आना यह दोनों बातें अलग अलग हैं। और मारफत की स्थिति सभी रुहों के परमधाम में जागने से पहले सम्भव भी नहीं है।

विरहा न छोड़े जीव को, जीव आस भी पिउ मिलन ।

पिया संग इन अंगे करूं, तो मैं सुहागिन ।।

Virha na chhodey jiv ko, jiv aas bhi piyu milan |
Piya sang in angey karun, to mein suhaagin | |

लागी लड़ाई आप में, एक विरहा दूजी आस ।

ए भी विरहा पिउ का, आस भी पिउ विलास ।।

Laagi ladaai aap mein, eak virha duji aas |
Eah bhi virha piyu ka, aash bhi piyu vilaas | |

जब आह सूकी अंग में, स्वांस भी छोड़्यो संग ।

तब तुम परदा टालके, दियो मोहे अपनो अंग ।।

Jab aah suki ang mein, swaansh bhi chhodyo sang |
Tab toom parda taalke, diyo mohey apno ang | |

मैं तो अपना दे रही, पर तुम ही राख्यो जिउ ।

बल दे आप खड़ी करी, कारज अपने पिउ ।। क. हि. ८/३, ४, ८, ९

Mein to apna dey rahi, par toom hi rakhyo jiyu |
Bal dey aap khadi kari, kaaraj apney piyu || Kalash (Hindu.): 8/3, 4, 8, 9

22 Jiva's Alignment With Aatman: The Best Jaagni Outcome

When the dreams of the Atman and the accompanying Spirit, i.e., Jiva, are aligned, then it becomes possible to meet with the Lord even in *this* life, with *this* body of five gross elements!

In the state of total surrender in the lotus feet of the Perfect Divine Couple, the virhin or the Soul, who is in deep agony due to separation from her Lord, struggles for detachment from this physical body; however, she also wants to experience the Lord's joy

right in this life. Such an internal war of conflicting thoughts starts within the virhin's heart. During these critical moments, Shri Rajji controls the steering wheel of the virhin's life. Then, to get His Work done, Shri Rajji prepares her by giving His divine powers; and in this way, He does not permit the Jiva to abandon the physical body.

Note: These chopais also confirms the fact that in this Jaagni brahmaand, jiva and aatman have united in one body, exactly like Brij Leela. However, it is true only for a few qualified jivas.

23 हमारे धनी जीः सवॅ श्रेष्ठ किसान।

साथ जी! जब धनी हमारे हृदय रुपि खेत की खुदाई वाणी रुपी हल द्वारा करके, उसमें परमधाम की आतम होने की निस्बत का बीज बोकर, फिर इसमें प्रेम का जल सींचते हैं, तब उनकी जाग्रत एवं निज–बुद्धि के सहयोग से निस्बत का बोया हुआ बीज अपने निज धाम की शफकत, बरकत और बेशुमार नूर लेकर अंकुरित हो उठता है। फिर ऐसी भाग्यशाली आतम को वह अपने अंगों के सब सुख देते हैं। हृदय रुपि खेत की खुदाई, धाम के बीज की बुआई और प्रेम की सींचाइॅ ही जागनी की खेती है।

खासी जान खेड़ी जिमी, जल सींचिया खसम ।
बोया बीज वतन का, सो ऊग्या वाही रसम ।।
Khaasi jaan khedi jimi, jal sinchya khasam |
Boya bij vatan ka, so ugya vaahi rasam | |
बीज आतम संग निज बुध के, सो ले उठिया अंकूर ।
या जुबां इन अंकूर को, क्यों कर कहूं सो नूर ।। क. हि. ९/९, १०
Bij aatam sang nij budh ke, so ley uthiya ankoor |

Ya juban in ankoor ko, kyon kar kahun so noor ||Kalash (Hindu.): 9/9, 10

23 Our Lord Shri Rajji is The World-Best Farmer

Saath ji! When our Lord Dhani cultivates the land of our heart with the Holy Wani, plants the seed of Paramdham's most sacred and intimate relationship, and irrigates with the water of Divine Love, then the Seed sprouts, i.e., the Soul is awakened, with the infinitely abundant potency and divine (noori) qualities. Then, He bestows all the joys of His Divine Body to such a fortunate Soul. This is how our Lord Shri Rajji does spiritu*al farming and harvests the crop of Jaagni- Spiritual Awakening.*

24 धनी का हुक्म रुह से जागनी का काम बड़ी युक्ति से करवाता है।

सबसे पहले तो स्वयं धामधनी जी अपने हुकम से सुहागिन आत्मा को माया रुपी छल से छुड़ाते हैं। बाद में वह अपनी पूर्ण पेहेचान कराते हैं, फिर उसको विरह देते हैं।

रुह के अन्तःकरण में विरह कभी भी सिलसिले–बद्ध पैदा नहीं होता। विरह की असहनीय पीड़ा में जिस विरहीन को धनी जी अपना बल दे कर जीवित रखते हैं, वह आत्मा हमेंशां अपने घनी के हुकम को सिर पर चढ़ाकर चलती है। तब धनी जी उसे अपना अंग देकर उसका विरह छुड़वाते हैं, फिर उसके बाद उसे अपनी जाग्रत बुद्धि और आवेश देते हैं। फिर वह उसे हुकम करते है कि, ''हे रूह! अब तुम जाओ! सब सुन्दरसाथ को जगाओ, और उन को धाम के निज सुख पहुँचाओ।''

ज्यों ए विरहा उपज्या, ए नहीं हमारा धरम ।

विरहिन कबहूं ना करे, यों विरहा अनूकरम ।।

Jyon eah virha upjya, eah nahi hamara dharam |
Virhin kab hu na karey, yon virha anukaram | |

प्यारी पिया सोहागनी, सो जुबां कही न जाए ।

पर हुआ जो मुझे हुकम, सो कैसे कर ढंपाए ।।

Pyari piya sohaagani, so juba kahi na jaaye |
Par huva jo mujeh Hukum, so keise kar dhampaaye | |

छलथें मोहे छुड़ाए के, कछू दियो विरहा संग ।

सो भी विरहा छुड़ाइया, देकर अपनों अंग ।।

Chhalthein mohey chhudaaye ke, kachhu diyo virha sang |
So bhi virha chhudaaiya, dekar apno ang | |

अंग बुध आवेस देए के, कहे तूं प्यारी मुझ ।

देने सुख सबन को, हुकम करत हों तुझ ।। क. हि. ९/२२, २७, २९, ३०

Ang budh aavesh dey ke, kahey tu pyaari muz |
Deney sukh saban ko, hukum karat ho tuz | | Kalash (Hindu.): 9/22, 27, 29, 30

24 Shri Rajji's Hukum Empowers His Souls for Jaagni Seva.

Lord's Will, i.e., His Hukum, employs a very interesting tactic to enable the Soul to serve the cause of Jaagni. This is how Shri Rajji's Hukum works: First, it works on the Soul to free her from the bondage of maaya. After that, Hukum helps the Soul realize the greatness of Shri Rajji's Ishak, i.e., His Love, and Satta or His Power. After that, He gives her viraha or pangs of separation.

Realize that this experience of viraha does not come step-by-step or exactly in a logical sequence! In the climax of viraha, Dhaniji bestows His divine powers to the soul and keeps her alive bodily in this world. Such a soul, then walks her life with Shri Rajji's Hukum as her ultimate guide. Because of this sacrifice, the Lord gives her His divinity and frees her from the pangs of viraha. Then He bestows His Awakened Intellect and Aavesh power to her, and commands: "O my Soul! Wake up - now! Rise! Go and work to awaken all Sundersathjis. Share with them the eternal joy of our Paramdham."

25 आत्मा की बन्दगी और विरह सिर्फ अपने धनी के लिए।

साथ जी! संसार में बन्दगी और विरह करने वाले तो बहुत सारे लोग हैं। लेकिन, धनी के द्वारा दिए गए जागनी के सुख तो संसार के लोगों को कठिन से कठिन बन्दगी और विरह करने पर सपने में भी नहीं मिलते! धनी जी अपनी अंगनाओं के विरहा दुःख सहन नहीं कर सकते। इसलिए, वह आये है निजघर के सुखों को देने के लिए। अतः निजघर के सुखों के चाहने वालों की बन्दगी और विरह अक्षरातीत धनी के लिए ही हों, यह परम आवश्यक है।

अनेक करहीं बंदगी, अनेक विरहा लेत ।

पर ए सुख तिन सुपने नहीं, जो हमको जगाए के देत ।।

Anek karhi bandgi, anek virha let |

Par eah sukh tin supney nahin, jo hamko jagaaye ke det ||

दुख पावत हैं सोहागनी, सो हम सह्यो न जाए ।

हम भी होसी जाहेर, पर तूं सोहागनियां जगाए ।। क. हि. ९/२८, ३१

Dukh paavat hei sohaagani, so hum sahyo na jaaye |

Hum bhi hosi jaaher, par tu sohaagniya jagaaye || Kalash (Hindu.): 9/28, 31

25 Sundersaathji's Worship and Viraha: Exclusively for Shri Rajji

Dear Sundersaathji! Many people in this world are genuinely devoted in the worship of their personal deity or god. They even choose to undergo an extreme experience of viraha, or the pangs of separation, as they do this.

However, despite all the worships and viraha, they fail to attain the eternal joy of Jaagni even in their dreams! O Saathji! Our Lord is offering this unprecedented Joy to us now! The fact is that our Lord cannot tolerate the pangs of viraha experienced by His Souls. For this reason, He has come to deliver eternal joy. Therefore, it is imperative that the Souls, who desire Eternity and dreaming for the joy of Paramdham, reserve their worship and viraha exclusively for the Aksharateet Lord.

26 पहले निज–सुख सुहागनियों को, बाद में संसार को अखण्डता।

हमारे धाम धनी जी समस्त संसार को अखण्ड सुख तो अवश्य ही देंगे, लेकिन सबसे पहले निज घर का सुख हम सुहागनियों को मिलेगा।

साथ जी! यह बात पक्की जान लो कि दिव्य वाणी का प्रकाश श्री इन्द्रावती जी के माध्यम से ही होना है। और धनी जी के हुकम के प्रताप से, उन्हीं से ही, चौदह लोकों का संसार एक सूत्र में बन्ध जाएगा। इसतरह, संसार के हर एक प्राणी को अखंड सुख मिलेगा।

पेहेले सुख सोहागनी, पीछे सुख संसार ।

एक रस सब होएसी, घर घर सुख अपार ।। क. हि. ९/ ३९

Pehele sukh sohaagani, pichhey sukh sansaar |
Eak rus sab hoyesi, ghar ghar sukh apaar || Kalash (Hindu.): 9/39

26 Brahmn Srishti First!

Our Dhaam Dhaniji shall definitely bestow eternal joy to the entire world. However, we, the Suhagin Brahmnsrishti Souls, shall receive the eternal joy of Paramdham first.

Dear Saath ji! Know one thing for sure that the Holy Wani shall spread throughout the world only through Indrawati. Shri Rajji's Hukum shall work through her to unite all the fourteen worlds. This way, every living being shall receive eternal joy.

27 प्रेम–सेवा में समर्पित रहना ही 'वाणी का प्रकाश' होने का प्रमाण।

श्री मुख वाणी के प्रकाश से अन्धकार रुपि अज्ञान दूर हो जाएगा। निराकार का असत्य ज्ञान अवश्य ही हल्की सी रुई की फुई की भान्ति उड़ जाएगा।

सुन्दरसाथ जी! अगर आपकी आत्मा साक्षी देती है, तो अपने किए हुए वायदे को पूर्ण करने में, अथॉत, प्रेम–सेवा के प्रयोगों में दृढ़ता से समर्पित हो जाओ। यही सुन्दरसाथ जी का परम कर्तव्य है, जिसकी परिपूर्ति ही अंतर में 'वाणी का प्रकाश' होने का प्रमाण है।

तें कहे वचन मुख थें, होसी तिनथें प्रकास ।

असत उड़सी तूल ज्यों, जासी तिमर सब नास ।।
Tein kahey vachan mukh thein, hosi tinthein prakaash |
Asat udsi tool jyon, jaasi timar sab naash ||
तूं लीजे नीके माएने, तेरे मुख के बोल ।
जो साख देवे तुझे आतमा, तो लीजे सिर कौल ।। क. हि. ९/ ४२, ४३
Tu lijey nikey maayeney, tere mukh ke bol |
Jo saakh devey tuzey aatma, to lijey shir kaul || Kalash (Hindu.): 9/42, 43

27 Follow Your Sense of Self-witness and Fulfill Your Promises!

The darkness of ignorance shall disappear through the enlightenment of the Holy Wani. The false knowledge of Nirakaar shall be blown away like the lightest cotton fluff.

Dear sundersaath ji! If your inner-self gives witness to this fact, then engage yourself in fulfilling the promises made to Shri Rajji. In other words, dedicate whole-heartedly towards the cause of self-less love-filled services (prem-seva). This is the prime responsibility of a Sundersaath. **One's dedication in prem-seva is the only proof of enlightenment of the Holy Wani in one's heart.**

28 सत्य घनी और असत्य माया की पेहेचान का सुख अब ही लेना है।

साथ जी! सत्य धनी और असत्य माया में इतना अन्तर होता है, जितना दिन और रात में। अब श्री महामति जी से सत्य ज्ञान की

जो ज्योति प्रसरेगी, उससे सभी ब्रह्मसृष्टियाँ अपने मूल स्वरुप में जाग्रत होकर उठ बैठेंगी। उसके बाद पल भर में यह ज्ञान चौदह लोकों में सारी दुनिया के लोगों के बीच फैल जाएगा।

इसलिए, हे साथ जी! सत्य घनी और असत्य माया की पेहेचान का सुख लेने का सही समय तो अब ही है। बाद में तो हर किसी को वैसे भी सुख मिलना ही है।

सत असत पटंतरो, जैसे दिन और रात ।

सत सूरज सब देखहीं, जब प्रगट भयो प्रभात ।।

Sat asat patantaro, jeisey din aur raat |

Sat suraj sab dekh hi, jab pragat bhayo prabhaat | |

जोलों जाहिर ना हुते, तब इत उपज्या क्रोध ।

जब प्रगटे तब मिट गया, सब दुनियां को ब्रोध ।। क. हि. १०/१, ३९

Jolon jaahir na hutey, tab it upjya krodh |

Jab pragtey tab mit gaya, sab duniyan ko brodh | | Kalash (Hindu.): 10/1, 39

28 Now is the Time to Reap the Benefits of Both the Worlds.

Saathji! The difference between truth and false is exactly like the day and the night. Now, all Brahmn-srishti souls shall wake up in their original par-atman through the spread of light of true knowledge of Mahaamati ji. Thereafter, this Taartam knowledge shall spread among the entire humanity within a fraction of a moment with the speed of lightening!

Therefore, O sundersaath ji! This is the golden time for you to reap the benefits of eternal joy by recognizing the truthfulness of Shri Rajji and the

falsehood of the maaya. Afterwards, everyone is going to receive the eternal joy anyway through the grace of Mahaamati ji!

29 सब के दिलों से माया को हटाना ही सबसे बड़ी सेवा।

साथ जी! सब के दिलों से माया को मूल से हटाना और ब्रह्माँड को अखण्ड प्रकाश प्राप्त कराना ही सबसे बड़ी सेवा है। जब धनी के नूरी ज्ञान से दुनिया एक रस हो जाएगी, तब माया के सभी शस्त्र निर्रथक हो जायेंगे।

पिया की प्यारी अर्धांगिनी वही है जिसे सभी सुन्दरसाथ को जगाये बिना आराम नहीं मिलता। सुन्दरसाथ को धाम के सुख देने के लिए उसके अंग–अंग उमंग से भरे रहते हैं।

जोलों जाहिर ना हुते, तब इत उपज्या क्रोध ।
जब प्रगटे तब मिट गया, सब दुनियां को ब्रोध ।।
Jolo jaahir na hutey, tab it upjya krodh |
Jab pragtey tab mit gaya, sab duniya ko brodh | |
दुनियां टेढ़ी मूल की, सो पेड़ से निकालूं वल ।
पिया प्रकास जो खिन में, सीधा करूं मंडल ।।
Duniya tedhi mool ki, so ped se nikaalu val |
Piya prakaash jo khin mein, sidha karun mandal | |
सैयों को वतन देखावने, उलसत मेरे अंग ।
करने बात खसम की, मावत नहीं उमंग ।। क. हि. १०/३, ५, १६
Seiyon ko vatan dekhavney, ulsat merey ang |
Karney baat khasam ki, maavat nahi umang | | Kalash (Hindu.): 10/3, 5, 16

29 The Greatest of All Services: To Free All from the Grip of Maaya

Saath ji! To free all living beings from the influence of maaya and to work towards the goal of enlightening all through the Holy Wani is the greatest of all services. Through the Divine Wisdom gathered from the Holy Wani, the entire world shall be integrated and all the weapons of maaya shall become worthless.

The one who does not rest without awakening all sundersaath ji is the true beloved soul of Shri Rajji. Her every organ is filled with the excitement for awakening all and offering the joy of Paramdham to other Sundersathjis.

30 दुनिया में इस नूरी ज्ञान के एकदम जाहिर न होने के दो कारण।

साथ जी! धनी जी के द्वारा जाग्रत बुद्धि का यह नूरी ज्ञान दुनिया में एकदम जाहिर न होने के दो कारण है।

पहला कारण यह है कि आज दिन तक कई ब्रह्माँड हो गए, और कईं होंगें भी। लेकिन, इस प्रकार की जागनी लीला आगे किसी भी ब्रह्माँड में ना हुई है, ना कभी होगी। इसलिए, इस नूरी ज्ञान की न्यारी बातें किसी ने कभी भी अपने कानों से सुनी ही नहीं होती है। इनको पेहेली ही बार सुनने वाले संसार के जीव इन्हें असंभव मान कर ग्रहण नहीं कर पाते हैं, इन्हें सुनते ही वह उलझन या दुविधा में पड़ जाते है।

दूसरा कारण यह है कि सब सुन्दरसाथ इस खेल का पूरा–पूरा सुख ले पाए इसी वजह से श्री राज जी खुद ही इस ज्ञान को कुछ समय के लिए छिपा कर रखते हैं। इसलिए इस ज्ञान को संभल–संभल के ड़र ड़र के जाहिर किया जा रहा है। ऐसा श्री महामति जी कह रही है।

नोटः जागनी सेवा में समर्पित सुन्दरसाथ जी को वाणी प्रसार करते वक्त इन दोनों बातों को ध्यान में रखना है। लेकिन, वाणी के प्रचार प्रसार में आने वाली रुकावटों के लिये अपनी जिम्मेवारियों को ढाँपने के गुनाह से भी सतॅक रहना है।

ए प्रकास है अति बड़ा, सो राखत हों अजूं गोप ।

जिन कोई ना सहे सके, ताथें हलके करूं उद्दोत ।।

Eah prakaash hei ati bada, so raakhat ho aju gop |
Jin koi na sahey sakey, tathein halkey karun udyot ||

केतेक ठौरों सोहागनी, तिन सब ठौरों उजास ।

पर जब इत थें जोत पसरी, तब ओ ले उठसी प्रकास ।।

Ketek thauron sohaagani, tin sab thauron ujaash |
Par jab it thein jot pasri, tab o ley uthsi prakaash ||

कोई दिन राखत हों गुझ, सो भी सैयों के सुख काज ।

जब सैयां सबे मिलीं, तब रहे ना पकरयो अवाज ।। क. हि. १०/९, १२, १३

Koi din raakhat ho guz, so bhi seiyon ke sukh kaaj |
Jab saiyaan sabey milin, tab rahey na pakryo avaaj ||Kalash (Hindu.): 10/9, 12, 13

ए लीला है अति बड़ी, आई या इंड मांहें ।

कई हुए कई होएसी, पर किन ब्रह्मांडों नांहें ।।

Eah leela hei ati badi, aayi ya ind maahen |
Kai huye kai hoyesi, par kin brahmaando naahen ||

जो कबूं कानो ना सुनी, सो सुनते जीव उरझाए ।

ताथें डरती मैं कहूं, जानूं जिन कोई गोते खाए ।।

Jo kabhu kano na suni, so suntey jiv urzaaye |
Taathein darti mein kahu, jaanu jin koi gotey khaaye ||

नातो सब जाहेर करूं, नाहीं तुम सों अंतर ।

खेंच खेंच तो केहेती हूं, सो तुमारी खातिर ।। क. हि. २४/२, ४, ५

Na to sab jaaher karun, nahin toom saun antar |
Khench khench to keheti hun, so tumari khaatir ||Kalash (Hindu.): 24/2, 4, 5

30 The Two Main Reasons for the Slow Spread of the Holy Wani

Why is our Lord allowing the spread of the Holy Wani at a very slow pace? Saath ji! There are two main reasons for our Lord's such plan:

First, the fact is that an untold number of creations have come into being and many more shall be created in the future. However, the Jaagni Leela of this kind has never happened anytime before, in any creation; nor such a leela shall occur after this! The facts of this unique Taartam knowledge have never yet reached the ears and the hearts of the people of the world. As a result, they tend to regard this Wani as impossible to believe, and they fail to grasp its real essence. Consequently, as soon as they hear this Wani, their minds get puzzled and feel overwhelmed with dilemma.

The second reason is that Shri Rajji is holding back the Holy Wani for some time to ensure that all sundersathjis may reap the full benefit of this worldly drama! Therefore, Mahaamati ji says, O Saathji! This Wani is being exposed publically very carefully in a measured proportion, and with a fear of indigestion in people's mind!

Note: It is important for those preaching the Holy Wani to remember these two main reasons without getting into an attitude of blaming maaya or

escaping from the accountability for the obstacles that come in the path of Jaagni.

31 सुहागिनी ब्रह्मसृष्टि की रेहेनी को देख कर अपने जीवन को देखें।

सुहागिनी ब्रह्मसृष्टि निराकार के पार के पार योगमाया और, उससे भी पार जो अक्षरधाम है, उससे भी पार परमधाम रंगमहोल में रहने वाली हैं। सुन्दरसाथ जी! उनकी रेहेनी को देख कर फिर आप अपनी जीवन रेहेनी पर गौर करो।

इस संसार में रहते हुए भी इन सुहागिनीयों की सुरता तो हमेशां अपने निजस्वरुप, अपने निजघर, अपने प्रीतम, और आखिरत के दिन की खोज में सदा लगी रहती है। वह प्रीतम की जुदाईगी की तड़पन वाली, आने वाले विघ्नों से बे–परवाह, पक्के ईमान वाली, अपनी व्याकुलता को बाहर प्रकट न करने वाली होती है।

ये सुहागिनीयाँ सीधे सादगी पूर्ण खाने–पीने–पेहेनावे वाली, माधुर्यतापूर्ण व्यवहार वाली और सदा निर्मल दिल वाली, होती है।

सुहागिनी ब्रह्मसृष्टि अपनी निजी जागनी यात्रा में कभी भी न थकने वाली, हररोज जागनी के नए से नए सोपानों को पार करने वाली, जागनी सेवा के नए नए विचार करते रहने वाली, सभी धर्म शास्त्रों की साक्षियों को आधार मान कर खोज करने वाली होती है।

धनी के शब्द सुनते ही अपने तन की चिन्ता किये बिना उन पर कुर्बान हो जाने वाली, बाँवरे बालक की तरह पिया के विरह में उनकी बातों की यादों में एक पल खेलने, दूसरे पल हँसने, तीसरे पल रोने और चौथे पल गीत गा लेने वाली होती है। ऐसी है सुहागनी ब्रह्मसृष्टि की रेहेनी।

पार वतन जो सोहागनी, ताकी नेक कहूं पेहेचान ।
जो कदी भूली वतन, तो भी नजर तहां निदान ।।

Paar vatan jo sohaagani, taki nek kahun pehechaan |
Jo kadi bhuli vatan, to bhi najar tahaan nidaan ||

आसिक प्यारी पिउ की, कोई प्रेम कहो विरहिन ।

ताए कोई दरदन कहो, ए लछन सोहागिन ।।

Aashik pyaari piyu ki, koi prem kaho virhin |
Taaye koi dardan kaho, eah lachhan sohaagin ||

ओ खोजे अपने आप को, और खोजे अपनो घर ।

और खोजे अपने खसम को, और खोजे दिन आखिर ।।

O khoje apaney aap ko, aur khojey apno ghar |
Aur khojey apney khasam ko, aur khojey din aakhir ||

विचार विचार विचारहीं, बेधे सकल संधान ।

रोम रोम ताए भेदहीं, सत सब्द के बान ।। क. हि. ११/१, २, ७, १२

Vichaar vichaar vichaarhin, bedhein sakal sandhaan |
Rom rom taaye bhed hin, sat sabd ke baan || Kalash (Hindu.): 11/1, 2, 7, 12

खिन खेले खिन में हंसे, खिन में गावे गीत ।

खिन रोवे सुध ना रहे, ए सोहागिन की रीत ।।

Khin kheley khin mein hansey, khin mein gaavey geet |
Khin rovey sudh na rahey, eah sohaagin ki reet ||

जो होए सैयां सोहागनी, सो निरखो अपने निसान ।

वचन कहे मैं जाहेर, सोहागनियों पेहेचान ।।

Jo hoye seiyaan sohaagani, so nirkho apney nishaan |
Vachan kahey mein jaaher, sohaganiyo pehechaan ||

तुम हो सैयां सोहागनी, ए समझ लीजो दिल बूझ ।

जब सैयां भेली भई, तब होसी बड़ा गूझ ।। क. हि. ११/१४, १८, २०

Toom ho seiyaan sohaagani, eah samaz lijo dil booz |
Jab seiyaan bheli bhayi, tab hosi bada gooz || Kalash (Hindu.): 11/14, 18, 20

31 Suhagin Brahmnsrishti is the One Who…

Suhagin **Brahmnsrishtis are the Citizens of Aksharateet Paramdham**, which is beyond the perishable domain of Nirakaar (Kshar), eternal intermediate domain of Yogmaaya (Akshar) and even the Akshardham. O Sundersaathji! Know their reheni, i.e., their life style, their state of being or *haal*, and then look at your own life, your state of being.

A Suhagin **Brahmnsrishti** is the one who:

1) Is always immersed in the memories of their original par-atman, eternal Abode and their Darling Lord despite living in this world.
2) Is anxiously waiting for the Final Day of Return.
3) Feels the pangs of separation from her Lord.
4) Is carefree regarding the worldly problems in front of her.
5) Is holding an unwavering faith in all life-situations.
6) Does not expose her feelings of sadness due to separation from the Lord among others.
7) Lives a very simple life style, eats and dresses simply.
8) Is pleasant and harmonious in all her communications and interactions.
9) Is pure-hearted.
10) Never feels tired on the personal journey of spiritual awakening.
11) Continues climbing a new step each day on the ladder of Jaagni.
12) Constantly thinks of the new ideas to propagate the divine cause of Jaagni.

13) Is engaged in research based on the evidences from all religious scriptures.
14) Spontaneously responds and sacrifices her life upon hearing the first call for service (seva), and
15) Plays like a carefree - innocent child at one moment and sings at the other, laughs at one moment and cries at the other- all in the memories of her Darling Lord.

32 आलस्य छोड़ो, धनी का हुकुम सिर पर चढ़ाओ, हाँसी से बचो।

सुन्दरसाथ जी! सावधान हो जाओ। आलस्य करने से बडा दुःख और हाँसी होगी। अब हमारी परीक्षा का समय आया है। दिल देकर जागो, और संसार और परमधाम दोनों जगह का लाभ ले लो। जब सपने के झूठे जीव भी अक्षरातीत धनी की आवाज को सुन कर चैन से रह नहीं सकते है, तो फिर परमधाम की रुहें, जो हकीकत में परम सत्य और अखंड चेतन हैं, वह कैसे बैठी रह सकती है?

अब आप सब धनी का हुकुम सिर पर चढ़ा लो, और अपने आलस्य को एक तरफ फैंक कर उठो। जो सखी इस समय अपने इश्क को आगे रख कर चलेगी, वह दोनों जगह का अपार सुख ले पाएगी, और जो आलस्य का शिकार बनी रहेगी, वह बिना दर्द के ही अपार दुःख और हाँसी का अनुभव करेगी। साथ जी! हाँसी और शर्मिन्दगी का दुःख बहुत ही बुरा होगा। इससे बच के रहो

मैं तुमको चेतन करूं, एही कसौटी तुम ।
या विध सब सैयन का, तसीहा लेवें खसम ।।
Mein tumko chetan karun, eahi kasauti toom |
Ya vidh sab seiyan ka, tasiha levey khasam | |
जो सुनके दौड़ी नहीं, तो हांसी है तिन पर ।

जैसा इस्क जिन पे, सो अब होसी जाहिर ।।

Jo sunkey daudi nahi, to haansi hei tin par |
Jaisa ishak jin pe, so ab hosi jaahir | |

जो इस्क ले मिलसी, सो लेसी सुख अपार ।

दरद बिना दुख होएसी, सो जानों निरधार ।।

Jo ishak ley milsi, so lesi sukh apaar |
Darad bina dukh hoyesi, so jaano nirdhaar | |

जिन उपजे सैयन को, इन हांसी का भी दुख ।

ए दुख बुरा सोहागनी, जो याद आवे मिने सुख ।। क. हि. ११/२४, २६, २७, ३०

Jin upjey seiyan ko, in haansi ka bhi dukh |
Eah dukh bura sohaagani, jo yaad aavey miney sukh | |
Kalash (Hindu.): 11/24, 26, 27, 30

32 Procrastinate Not! Avoid Suffering and Mockery Both!

Dear Sundersaathji! Stay vigilant! Your procrastination shall cause you a lot of suffering and mockery. This is the time of your test! Wake up, and receive the benefit of both the worlds now! How can a true Brahmnsrishri remain non-responsive when the false jivas of this dream world are getting so excited by listening to the Words of Lord Aksharateet?

Now, you all be ready to act upon the Lord's Hukum (Will, Command). Throw away your laziness and stand up. Whosoev'er soul shall step forward with Shri Rajji's Ishak (divine love for Aksharateet) in mind, shall reap the joy of both the worlds. Moreover, those victimized by procrastination shall experience an immeasurable suffering without any actual pain and mockery by all.

Saath ji! The pain of mockery and the feelings of guilt shall be the worst of all. Just save yourself from that.

33 बिना एक पिया के सब माया का ही रुप है।

साथ जी! बिना एक पिया के सब माया का ही रुप है।

सुन्दरसाथ जी! हम सब एक ही वतन के, और एक ही श्यामा जी के अंग है। *पार पुरुष पिया एक है।* बिना एक पिया जी के जो कुछ भी है वह सब माया ही का रुप है।

धाम की निस्बत होने से श्री इन्द्रावती जी हमारे किसी भी प्रकार के दुःख सहन नहीं कर सकती, जो हमें जगा रही है। चलो, हम उनके दर्शाये मार्ग पर चलें।

भी कहूं मेरी सैयन को, जो हैं मूल अंकूर ।
सो निज वतनी सोहागनी, पिया अंग निज नूर ।।
Bhi kahun meri seiyan ko, jo hei mool ankur |
So nij vatani sohaagani, piya ang nij noor | |
पार पुरुख पिया एक है, दूसरा नाहीं कोए ।
और नार सब माया, यामें भी विध दोए ।। क. हि. १२/१, २
Paar purukh piya eak hei, dusra naahi koi |
Aur naar sab maaya, yamein bhi vidh doye | | Kalash (Hindu.): 12/1, 2

33 Everything Other Than Shri Rajji is Maaya.

Dear Sundersaathji! We all are from one Land, and we are all blissful parts of Shri Shyamaji. The Supreme Truth God is only one, who is our Shri Rajji. Everything other than our Lord Shri Rajji is the form of maaya.

Due to our eternal relationship, Shri Indrawati ji cannot tolerate any kind of our suffering. Therefore, she is awakening us. Now, let us walk in her footsteps.

34 तुम इस छल रुपी माया के नहीं हो, अपनी हाँसी मत करवाओ।

सुन्दरसाथ जी! तुम इस छल रुपी माया के नहीं हो। तुम तो सिर्फ छल को देखने आए हो। झूठी माया ने तुम्हें, और तुमने माया को पकड़ कर रखा है। जो झूठी है, वह तो उड़ जायेंगी, और जाते जाते आप सच्ची आत्माओं पर अपना झूठा दाग लगा देगी। यदि ऐसा होगा तो बड़ी ही हाँसी होगी।

अरे! आप इतने बेसुध क्यों हो गए हो? आप तो माया ही को सब कुछ समझ रहे हो। माया का छल स्वरुप समझ कर आप मेरी बात को समझ कर पकड़ लो, और हाँसी से बच जाओ।

जो दुख मेरी सैयन को, तब सुख कैसा मोहे ।

हम तुम एक वतन के, अपनी रूह नहीं दोए ।। क. हि. ११/३३

Jo dukh meri seiyan ko, tab sukh keisa mohe |

Hum toom eak vatan ke, apni rooh nahi doye || Kalash (Hindu.): 11/33

ए झूठी तुमको लग रही, तुम रहे झूठी लाग ।

ए झूठी अब उड़ जाएसी, दे जासी जूठा दाग ।।

Eah zuthi tumko lag rahi, toom rahey zuthi laag |

Eah zuthi ab ud jaayesi, dey jaasi zutha daag ||

हांसी होसी अति बड़ी, जिन मोहे देओ दोस ।

कमी कहे मैं ना करूं, पर तुमें छल हुआ सिरपोस ।। क. हि. १२/१२, १३

Haansi hosi ati badi, jin mohey deo dosh |

Kami kahey mein na karun, par toomey chhal hua sirpos ||Kalash (Hindu.): 12/12, 13

34 You are Not of This World! Avoid Mockery!

Sundersaathji! You do not belong to this world of corrupt maaya! You have come just to see this worldly drama. The false maaya is trying to fuse or blend with you, and on the other hand, you are also fiercely obsessed with maaya. The one, which is false, is destined to disappear soon. Nevertheless, for sure, she - the maaya - will leave her ugly marks on those who are holding on to it too tightly! This will be the cause for a big mockery.

O Saathji! Why have you become so indifferent? You have started believing that the maaya is true, real and is everything! Understand the maaya's treacherous nature and then ponder over my Words. Wake up and save yourself from the pain of mockery!

35 साथ जी! तीन सृष्टि के तीनों सुखों को तोलो, फिर अपनी सोचो।

सुन्दरसाथ जी! अक्षर की सुरता ईश्वरीसृष्टि है, और जीवसृष्टि इस संसार की है। इस वाणी से आप ब्रह्मसृष्टि सखियों को निजघर के सुख मिलने ही हैं, ईश्वरी सृष्टि को हमारे धनी और धाम की सुध का सुख, और जीवसृष्टि को मुक्ति।

साथ जी! जिस हिरस के खेल को देखने तुम आये हो, उसकी वास्तविकता को ध्यान से जानो और देखो। सारा संसार माया के मोह से भरा है। इसमें बस एक भरत खण्ड की भाग्यशाली भूमि और उसमें भी सबसे अच्छी नौतनपुरी की धरती है। यह इसलिए, क्यों

कि यहाँ पर यह अखण्ड तारतम वाणी आई है, और अखण्ड परमधाम की बातें जाहिर हुई हैं। *नोटः यहाँ पर नौतनपुरी को सबसे अच्छी धरती कहने से तात्पर्य उस समय की सभी पुरियों से है, जब मंगल पुरी और पद्मावती पुरी जाहिर नहीं हुअी थी।*

जो रूह असलू ईश्वरी, दूजी रूह सब जहान ।

पर रूह न्यारी सोहागनी, सो आगे कहूंगी पेहेचान ।।

Jo rooh aslu ishwari, dooji rooh sab jahaan |
Par rooh nyaari sohaagani, so aagey kahungi pehechaan ||

सैयां सुख निज वतनी, ईश्वरी को सुख और ।

दुनी भी सुख होसी सदा, आगे कहूंगी तीनों ठौर ।। क. हि. १२/३, ४

Seiyaan sukh nij vatani, ishwari ko sukh aur |
Duni bhi sukh hosi sada, aagey kahungi tino thaur ||
Kalash (Hindu.): 12/3, 4

अब निरखो नीके कर, ए जो देखन आइयां तुम ।

मांग्या खेल हिरस का, सो देखलावें खसम ।।

Ab nirkho nikey kar, eah jo dekhan aaiya toom |
Mangya khel hiras ka, so dekhlavey khasam ||

भोम भली भरतखंड की, जहां आई निध नेहेचल ।

और सारी जिमी खारी, खारे जल मोह जल ।।

Bhom bhali bharat khand ki, jaha aayi nidh nehechal |
Aur saari jimi khaari, khaarey jal moha jal ||

इत बोए बिरिख होत है, ताको फल पावे सब कोए ।

बीज जैसा फल तैसा, किया जो अपना सोए ।।

It boye birikh hot hei, taako fal paavey sab koi |
Bij jeisa fal teisa, kiya jo apna soi ||

इनमें जो ठौर अव्वल, जाको नाम नौतन ।

जहां आए उदय हुई, नेहेचल बात वतन ।। क. हि. १३/१ - ४

In mein jo thaur avval, jaako naam nautan |
Jahan aaye uday huyi, nehechal baat vatan || Kalash (Hindu.): 13/1-4

35 Know Thyself, and Act Accordingly!

Dear Sundersaath Ji! Ishwari srishtis are Akshar's souls and Jiv srishtis are of this world. Through the Holy Wani, all of you Brahmn Srishtis shall receive the ultimate joy of Paramdham, the Ishwari srishtis shall receive the joy of being aware of the blissful leela of Paramdham, and the Jiva srishtis shall receive eternal freedom from the cycle of birth and re-birth. Now just compare the level of joy that each one shall receive, and then think deeply about your choices.

Saath ji! Just watch this addictive drama of maaya with full awareness. Realize its reality. This entire creation is the work of moha (illusory affection). In this world, there is only one most fortunate land of Bharat Khand. In addition, in that, the land of Nautanpuri is the best because this eternal Taartam Wani has come here and the facts of Paramdham were disclosed first to the world. *Note: Mangal Puri and Padmavatipuri were not formally established at this time. Therefore, Sundersaathji should refrain from such an inappropriate comparision.*

36 अगुए–गुरूजन एवं धर्म स्थानों द्वारा अंहकार के प्रदर्शन।

साथ जी! खेल के अगुए–गुरूजन और धर्मों के बड़े–बड़े स्थानों का माया में फँसावा और लोगों की बेहाली की हकीकत तो देखिये। जो खेल के अगुए–गुरूजन हैं, वे अपने मन के भाव से, अपनी इच्छानुसार अपना ही राग अलापते रहते हैं। लेकिन जो अखण्ड धाम के हैं, वे सिर्फ पिया के दिल की बातें बताते हैं।

धर्मों के बड़े बड़े स्थान लोगों को ठगने के, अपने अंहकार का प्रदर्शन करने के, या अपना पेट पालने के साधन बन गये हैं। चारों वेद और चौदह विद्याओं के जानने वाले भी स्वयं माया में मस्त होकर बाकी के लागों को भी इसीमें मग्न रखने में व्यस्त हैं। इस प्रकार चारों वर्णों के सब लोग काम, क्रोध, लोभ आदि की अग्नि में जल रहे हैं।

मोहोरे सब जुदे जुदे, जुदी जुदी मुख बान ।
खेले मन के भाव तें, सब आप अपनी तान ।।
Mohorey sab judey judey, judi judi mukh baan |
Kheley man ke bhaav ten, sab aap apni taan | |
अनेक सेहेर बाजार चौहटे, चौक चौवटे अनेक ।
अनेक कसबी कसब करते, हाट पीठ वसेक ।।
Anek seher baazar chauhatey, chauk chaubatey anek |
Anek kasbi kasab kartey, haat pith vasek | |
बिध बिध के भेख काछे, सारे जान प्रवीन ।
वरन चारों खेलें चित दे, नाहीं न कोई मत हीन ।।
Bidh bidh ke bhek kaachhey, sarey jaan pravin |
Baran charo kheley chit dey, naahi na koi mat hin | |
वरन सारे पसरे, लोभें लिए करें उपाय ।
बिना अगनी पर जले, अंग काम क्रोध न माय ।। क. हि. १३/६, ८, १०, १२
Varan saare pasrey, lobhey liye karein upaay |
Bina agni par jaley, ang kaam krodh na maay | | Kalash (Hindu.): 13/6, 8, 10, 12

36 Where are the Authentic Leaders and Gurus?

Saath ji! Look at the situation of the different religious leaders and Gurus in this drama. These people and their big holy places operate under the maximum influence of maaya. And, the people of

the world live under their powerful grips. These religious leaders preach and sing according to their feelings disregarding the ultimate truth. However, the Brahmnsrishtis of eternal Paramdham, simply speak what is in Shri Rajji's heart. A Brahmnsrishti is able to do so because her heart is united with Shri Rajji's heart. **Hypocrites are those** who pretend to share the Wisdom of Shri Rajji's heart by superficially claiming to be a Brahmn Srishti, but have not really entered Shri Rajji's heart.

Major places of worship have either become the centers for cheating people, or instruments for the exhibition of false ego, or an excuse for supporting some select-few's living. The people with knowledge of the four Vedas and the Fourteen Vidyas* are themselves soaked in maaya and they keep other people in maaya by entertaining them through various tricks. This way, the people of all the four Vernas (castes) are burning in the fires of sexual addiction, anger, greed, material affections and ego.

Note: According to the Jnanasankalini Tantra, which includes discourses between Shiva and Shakti, the four vedas, the six limbs of veda, mimamsa, nyaya, dharma shastra and puranas are the fourteen Vidyas. Further, "for as long as these Vidyas are known, (true) knowledge is not! Upon knowing 'Brahma Jnana' one is strong in all other knowledge. None but the Taartam Jnana itself is this Brahmn Vidya.*

37 जीवन एक खेल है, इसे सिर्फ देखो।

प्यारे साथ जी! जीवन एक खेल है। जन्म और शादी की खुशी, मृत्यु का शोक, कीर्ति बढ़ाने के लिए धन का व्यय, कंजूसाई, दानवीरता या भिखारी वृत्ति का प्रदर्शन, सांसारिक व्यवहार के बोझ में ही चक्कर काटते रहना, एशो आराम में जीवन गँवा देना, सत्ता, सैन्या, धन और सम्पत्ति के मद में मस्त रहना, हार और जीत की चिंता एवं विविध प्रकार के रोग से ग्रसित रहना, अपने ही पेट के वास्ते दिन और रात दौड़ भाग करते रहना–ये सभी एक ही खेल के विविध रुप है। अब आप बस आत्म–पेहेचान कर के प्रेम–सेवा में समॅपित हो जाओ।

नाहीं जासों पेहेचान कबहूं, तासों करे सनमंध ।
सगे सहोदरे मिलके, ले देवें मन के बंध ।।
Naahi jaaso pehechaan kab hu, tason karey sanmandh |
Sagey sahodarey milke, ley devey man ke bandh ||
कोई बांध सीढ़ी आवे सामी, करे पोक पुकार ।
विरह वेदना अंग न माए, पीटे मांहें बाजार ।।
Koi baandh sidhi aavey saami, karey pok pukaar |
Viraha vedna ang na maaye, pitey maahen baazar ||
जनम होवे काहू के, काहू के होवे मरन ।
कोई हिरदे हँसे हरखे, कोई सोक रूदन ।।
Janam hovey kaahu ke, kaahu ke hovey maran |
Koi hirdey hansey harkhey, koi shok rudan ||
धन खरचें खाएँ गफलतें, आपे बुजरक होए ।
कीरत अपनी कराए के, खेल या बिध होए ।।
Dhan kharchey khaaye gaflatein, aapey bujrak hoye |
Kirat apni karaaye ke, khel ya bidh hoye ||
कोई जीते कोई हारे, काहू हरख काहू सोक ।
जो तरफ सारी जीत आवे, ताए कहें पृथीपत लोक ।।
Koi jitey koi haarey, kaahu harakh kaahu shok |

Jo taraf saari jit aavey, taaye kahey pruthipat lok ||
कई उदर कारने, फिरत होत फजीत ।
कई पवाड़े करें कोटल, ए होत खेल या रीत ।। क. हि. १३/१३, १६, १८, १९, २७, ३१
Kai udar kaarne, firat hot fajit |
Kai pavade karey kotal, eah hot khel ya reet || Kalash (Hindu.): 13/ 13, 16, 18, 19, 27, 31

37 Life is a Game! Watch it With Awareness!

Dear Sundersaathji! Life is a game. The happiness of birth and marriage, grief of death and divorce, spending of wealth to build social status, false exhibitions by people of being a miser, a doner or a beggar - are all different forms of this game!

Some are burdened by trafficking here and there, simply to fulfill their social obligations. Some others are simply wasting their valuable lifetime in material enjoyments.

Some others are addicted for the show of power, building a powerful army and collecting material wealth. These people also spend the enjoyable moments of their lives in the worries of losses and gains. Many others are seen constantly struggling hard to earn their bread, clothing and for basic shelter, while others have fallen in the deadly grips of hard-to-cure diseases. Saath ji! In *real* reality, these are all different forms of this worldly game.

38 संसार रुपि महाखेल में धार्मिकता के अनेक भ्रमित रुप

सुन्दरसाथ जी! यह संसार एक महाखेल है। इस में छोटे छोटे कई और खेल (episodes) भी चल रहे हैं। यहाँ धार्मिकता ने अनेक रुप ले लिए हैं। धर्म के नाम विशेष रूप से बाह्याडम्बर ही चल रहे हैं। अनेकों धर्म, पंथ और सम्प्रदाय आत्म कल्याण के लक्ष्य से विचलित हो कर सिर्फ विविध रस्मों–रिवाजों के आधार पर, एवं सत्य में असत्य की मिलावट करके चल रहे हैं। तारतम ज्ञान संसार में इकट्ठे हुए सत्य और असत्य को अलग करने वाला है।

साथ जी! यहाँ धर्मों की शुरुआत तो आत्म कल्याण के लक्ष्य से ही होती है, लेकिन बाद में धर्म के बहाने अनेक आडम्बर प्रारम्भ हो जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे कोई नाटक ही हो रहा हो। विविध रस्मों–रिवाजों को बढ़ावा देकर लोग ऐसा समझते हैं कि हम धर्म पालन कर रहे हैं। यह ना अपने आप को जानते हैं, और ना अखण्ड को।

विविध तरह की कसनी और बाह्याडम्बर कर के लोग महात्मा, मुल्ला, मीर, पीर, फकीर, जीव, हंस, परमहंस, ईलमी, आलम, और सूफी जैसी अनेक पदवियां धारण करके माया, अहंकार, छल में डूबे हुए मिलते हैं। यहाँ देव, अवतार और तीर्थंकर भी छल से मुक्त नहीं पाये जाते हैं। इस तरह अनेक पंथ–सम्प्रदायों और धर्मों के नाम पर संसार का खेल चलता है।

अब दिखाऊं इन विध, जासों समझ सब होए ।
भेले हैं सत असत, सो जुदे कर देऊं दोए ।।
Ab dikhaun in vidh, jaso samaz sab hoye |
Bheley hei sat asat, so jude kar deun doi | |
इन खेलमें जो खेल है, सो केहेत न आवे पार ।
इन भेखों में भेख सोभहीं, सो कहूं नेक विचार ।।
In khel mein jo khel hei, so kehet na aavey paar |
In bheko mein bhek sobh hi, so kahun nek vichaar | |
कई भेख जो साध कहावें, कई पंडित पुरान ।
कई भेख जो जालिम, कई मूरख अजान ।।
Kai bhekh jo sadh kahave, kai pandit puran |

Kai bhek jo jalim, kai murakh ajan ||
कई लूचे कई मूंड़े, कई बढ़ावें केस ।
कई काले कई उजले, कई धरें भगुए भेस ।।
Kai luche kai munde, kai badhave kesh |
Kai kale kai ujle, kai dhare bhaguye bhesh ||
कई सती सीलवंती, कई आरजा अरधांग ।
जती बरती पोसांगरी, ए अति सोभावे स्वांग ।।
Kai sati silvanti, kai aarja ardhang |
Jati barti posangri, eah ati sobhave swang ||
कई अवतार तीर्थंकर, कई देव दानव बड़े बल ।
बुजरक नाम धराइया, पर छोड़े न काहू छल ।। क. हि. १४/१, २, ४, ७, ११, १५
Kai avtaar tirthankar, kai dev danav badey bal |
Bujrak naam dharaiya, par chhode na kahu chhal ||
Kalash (Hindu.): 14/1, 2, 4, 7, 11, 15

38 The Many Forms of Religiosity in this Grand Worldly Play

Sundersaathji! The world is one grand play with innumerable small episodes being played one-after-the other. Here, religiosity has also taken innumerable forms! External display of being religious has become a norm to impress others. Religions and sects are distracted from the true goal of spiritual uplife. They operate chiefly based on their unique customs and traditions, and mix false with truth to compete. The Taartam Knowledge separates them for our convenience.

Saath ji! Here, religions do start with the high – noble - aim of spiritual evolution. But later, much propaganda begins to take place in the name of religion. By propagating and emphasizing different

customs and rituals, people think that they are obeying their religion or fulfilling their obligations! Nevertheless, they do not know their spiritual roots, nor do they know the eternity.

Here, people pick any one of the many varieties of penance techniques and master it. Then they wrap it over with impressive display of divinity and deliver to the audience. These people are recognized as mahatma, mullah, mir, pir, fakir, jiv, hansa, paramhansa, ilmi, aalam and sufi. The hidden ego of these titles eventually drags them in the deep valley of the corrupt maaya. Even the Devas, the avataras and the tirthankars are not free from this. O Saath ji! This is how the worldly drama is running.

Note: In Jainism, Tirthankar is regarded as the ultimate pure developed state of the soul (which is traditionally called as the God in human form). A Tirthankar is not regarded an incarnation, like an Avatar of Lord Vishnu. Rather, he is an ordinary soul that attains the state of a Tirthankar because of intense practices of penance, equanimity and meditation. Devtas are the celestial entities, also called as minor gods.*

39 झूठी माया को सत्य दर्शा कर धर्मों में झूठ का व्यापार।

साथ जी! यह हकीकत है कि लोग अपने हृदय में छल कपट और अज्ञान लेकर खुले आम संसार के सारे धर्मों और पंथों में झूठ का

व्यापार चलाते हैं। अपने आप को सच्चा और दूसरों को झूठा दर्शाकर आवागमन के उल्टे चक्कर काटते रहते हैं।

इस तरह से, ये सभी छल रुपि माया के ही स्वरुप बन बैठे है। लोग बिल्कुल ऐसा समझ कर ही खेलते हैं कि जैसे यह ब्रह्माँड अखण्ड ही ना हो!

इस संसार में अनेक प्रकार के कवि जगह जगह पैदा होते रहे हैं। ये सभी छल रुपि माया को ही सनातन सत्य मान कर खेल के मोहरे बने हुए हैं।

साथ जी! हकीकत यह है कि यह ब्रह्माँड स्वप्निल है, जहाँ सभी बुद्धियों के मालिक ब्रह्मा जी हैं, और नारद जी दसों दिशाओं में भटकाने वाले मन के मालिक हैं। इसमें संसार के साधूजन, जिनको यह संसार सत्य लग रहा है, वे अपनी बुद्धि के अनुसार ही बोले जा रहे हैं।

जाहिर झूठा खेलहीं, हिरदे अति अंधेर ।
कहें हम सांचे और झूठे, यों फिरें उलटे फेर ।।
Jahir jutha khelhi, hirde ati andher |
Kahey hum sanche aur juthe yon firey ulte fer ||
पंथ सारों की एह मजल, अनेक विध वैराट ।
ए जो विगत खेल की, सब रच्यो छल को ठाट ।।
Panth saro ki eah majal, anek vidh veiraat |
Eah jo vigat khel ki, sab rachyo chhal ko that ||
कोई हेम गले अगनी जले, कोई भैरव करवत ले ।
खसम को पावे नहीं, जो तिल तिल काटे देह ।।
Koi hem gale agni jale, koi bheirav karvat ley |
Khasam ko pave nahi, jo til til kate deh ||
भेख जुदे जुदे खेल हीं, जाने खेल अखंड ।
ए देत देखाई सब फना, मूल बिना ब्रह्मांड ।।
Bhek jude jude khel hi, jane khel akhand |
Eah det dekhayi sab fana, mool bina brahmaand ||

अनेक किव इत उपजे, वैराट सचराचर ।

ए छल मोहोरे छल को, खेलत हैं सत कर ।। क. हि. १५/१६-१९, २३

Anek kiv it upjey, veiraat sacharachar |
Eah chhal mohore chhal ko, khelat hei sat kar | |
Kalash (Hindu.): 15/16-19, 23

वैराट आकार ख्वाब का, ब्रह्मा सो तिनकी बुध ।

मन नारद फिरे दसों दिसा, वेदें बांध किए बेसुध ।।

Veiraat aakar, khwab ka, brahma so tinki budh |
Man narad firey dason disha, vede bandh kiye besudh | |

ए जो बोले साधू सास्त्र, जिनकी जैसी मत ।

ए मोहोरे उपजे मोहके, तिनको ए सब सत ।। क. हि. १७/२, २२

Eah jo bole sadhu shashtra, jinki jeisi mat |
Eah mohore upjey moha ke, tinko eah sab sat | | KH. 17/2, 22

39 The Corrupt Business of Religions and Sects!

Saathji! The fact is that due to their ignorance and corrupted mentality, people openly run the business of religions and sects. Their focus is always on proving themselves right and others wrong. Consequently, they keep on circling through the wheel of birth and re-birth. Then they also become an integral part of the maaya and play with the mis-belief about this creation as eternal.

In this world, many great poets are born here and there – in diverse cultures. Even they have become the collaborators of the worldly drama by regarding the corrupt maaya as an eternal truth.

This creation is a dream of Lord Adi Narayana. Here, Brahma ji is the owner of all intellects and Narad ji is the owner of the ever-wandering mind.

Here, the sadhus, who perceive this creation as real, go on speaking according to their individual intellect.

40 देखा देखी की चाल में लोग पारब्रह्म को खो बैठते हैं।

संसार के लोग बिना अपने आप की और संसार रुपि नाटक की पेहेचान किए, देखा देखी ही चींटियों की हार की तरह बिना सोच समझ के चलते जाते हैं। कोई अपने आप को, भवसागर या अपने घर को नहीं जानता।

खेल के कबूतरों को खेल बनाने वाले की पेहेचान नहीं होती, उसी तरह संसार रुपि नाटक को बनाने वाले की भी किसी को पेहेचान नहीं है। यहाँ के लोग जहाँ कुछ है ही नहीं, वहाँ ही सब कुछ बताते हैं। निराकार में ही सत दर्शाते हैं। इनके झूठे और सत्य दोनों वचन मोह जन्य हैं।

साथ जी! माया का खेल बेहिसाब है। इसे अपनी मूल अक्ल जाग्रत बुद्धि से देखो। पारब्रह्म तो सबका एक ही है, कोई दो नहीं है। जो अपने में ही सच्चा होगा वहीं इस बात पर विचार कर पाएगा।

साथ जी! कभी कभी अन्दर और बाहर का ज्ञान होने पर भी सामने योग्य पात्र न दिखने से मुझे चुप रहना पड़ता है। अपने धाम परमधाम की बातें कहने के लिए मैं यहाँ कहीं भी किसी दूसरे को इसके योग्य नहीं देखती हूँ। और हाँ! किसी को इस योग्य तो तब देखूं, जब आप सुन्दरसाथ के सिवा और कोई दूसरा योग्य हो भी।

खेलें सब देखा देखी, ज्यों चले चींटी हार ।
यों जो अंधे गफलती, बांधे जाएँ कतार ।।
Kheley sab dekha dekhi, jyon chale chinti haar |
Yon jo andhe gafalati, bandhe jaye katar | |
कोई ना चीन्हे आप को, ना चीन्हें अपनो घर ।

जिमी पैंड़ा ना सूझे काहूं, जात चले इन पर ।।

Koi na chinhe aap ko, na chinhe apno ghar |
Jimi peinda na sujeh kahu, jaat chale in par ||

बाजीगर न्यारा रह्या, ए खेलत कबूतर ।

तो कबूतर जो खेल के, सो क्यों पावें बाजीगर ।।

Bajigar nyara rahya, eah khelat kabutar |
To kabutar jo khel ke, so kyon pave bajigar ||

धरे नाम खसम के, जुदे जुदे आप अनेक ।

अनेक रंगे संगे ढंगे, बिध बिध खेलें विवेक ।। क. हि. १४/२९-३१, ३४

Dhare naam khasam ke, jude jude aap anek |
Anek range sange dhange, bidh bidh kheley vivek ||
Kalash (Hindu.): 14/29-31, 34

अब देखो ले माएने, खेल बिना हिसाब ।

आप अकलें देखिए, ए रच्यो खसमें ख्वाब ।।

Ab dekho ley mayene, khel bina hisab |
Aap aklen dekhiye, eah rachyo khasme khwab ||

खसम एक सबन का, नाहीं न दूसरा कोए ।

एह विचार तो करे, जो आप सांचे होए ।।

Khasam eak saban ka, nahi na dusra koi |
Eah vichaar to karey, jo aap sanche hoye ||

वतन बातें केहेवे को, मैं देखती नहीं कोई काहूं ।

देखां तो जो होए दूसरा, नहीं गांउं नांउं न ठांऊं ।।

Vatan bate keheve ko, mein dekhti nahi koi kahu |
Dekha to jo hoye dusra, nahi gau nau na thau ||

जहां नहीं तहां है कहे, ए दोऊ मोह के वचन ।

ताथें विस्तार अन्दर, बाहेर होत हूं मुंन ।। क. हि. १४/३२; १५/२०; २४/४४, ४५

Jaha nahi taha hei kahey, eah dou moha ke vachan |
Tathe vistar andar, baher hot hu moon ||
Kalash (Hindu.): 14/32;, 15/20; 24/44, 45

40 Pigeons of the Magician Do not Know Their Creator!

Saath ji! The people of the world go without knowing the Self and the reality of the worldly drama because they thoughtlessly follow the crowd – exactly like a never-ending line of the ants or that of the camels.

The pigeons of the magician cannot know their creator. Like wise, the worldly jivas do not know the creator of the worldly drama. This is the reason why people show everything here - right in this world, where there is nothing in reality! They work hard to show the truth hidden within the domain of Niraakaar. Thus, their truth and false - both kinds of words are born of moha.

Therefore, O Saath ji! Observe the unlimited play of maaya with your Original Awakened Intellect. Parbrahmn Lord, who is of all, is only one. The one, who is truthful in his heart, shall be able to think deeply about this.

Saathji! Sometimes, despite having all Spiritual Knowledge, I have to remain silence because of the absence of a qualified listener. I do not see anyone else around me, who is capable to absorb the highest secrets of Paramdham. Moreover, yes, how can there be any one else qualified but you?

साथ जी! इस संसार में लोग अपनी कच्ची धारणाओं का आधार लेकर एवं अटकल युक्त ज्ञान से, बिना अक्षरातीत पारब्रह्म की पेहेचान किए, अनन्य प्रेम लक्षणा भक्ति का मार्ग छोड़कर धर्म के नाम पर वाद–विवाद करते रहते हैं। दान, ज्ञान, और विज्ञान की अटकल युक्त बड़ाई करते हुए लोग धर्म के नाम पर लड़ते रहते हैं। **साथ जी! सुनिये! बड़ा कोई नहीं, बस एक अक्षरातीत पारब्रह्म ही बड़े है। बस इन्हें पेहेचानो।**

वैराट और पारब्रह्म की हकीकतों का भेद पाए बिना लोग कर्म, काल, सदाशिव, आदिनारायण, आद्या शक्ति, सर्वव्यापक, शून्य, निरंजन, निर्गुण, साकार, निराकार आदि को ही पारब्रह्म या पुरषोत्तम कहते हैं। कोई आतम को बड़ी कहता है तो कोई परआतम को, और कोई तो अहंकार को ही सबका मूल दर्शाता है। फिर लोग अटकल युक्त अंधकार में एक अपनी ही समझ की बड़ाई करते हुए वाद–विवाद करते रहते हैं।

कोई कहे दान बड़ा, कोई केहेवे ग्यान ।
कोई कहे विग्यान बड़ा, यों लरें सब उनमान ।।
Koi kahey daan bada, koi keheve gyaan |
Koi kahey vigyaan bada, yon larey sab unmaan | |
कोई कहे पारब्रह्म बड़ा, कोई कहे पुरसोतम ।
यों वेद के वाद अंधकारे, करें लड़ाई धरम ।।
Koi kahey parbrahm bada, koi kahey pursottam |
Yon ved ke vaad andhkare, karey ladai dharam | |
जाहिर झूठा खेलहीं, हिरदे अति अंधेर ।
कहें हम सांचे और झूठे, यों फिरें उलटे फेर ।। क. हि. १५/१, १५, १६
Jahir jutha khelhi, hirde ati andher |
Kahey hum sanche aur juteh, yon firey ulte fer | | Kalash (Hindu.): 15/1, 15, 16
कोई कहे सदा सिव बड़ा, कोई कहे आद नारायन ।
कोई कहे आदें आद माता, यों लरें तानों तान ।।
Koi kahey sada shiv bada, koi kahey aad narayan |

Koi kahey aade aad mata, yon larey tano tan ||
कोई कहे सकल व्यापी, देखी तां सब ब्रह्म ।
कोई कहे ए न लह्या, यों लरें भूले भरम ।।
Koi kahey sakal vyapi, dekhi ta sab brahmn |
Koi kahey eah na lahya, yon larey bhule bharam ||
कोई कहे सुन्य बड़ी, कोई कहे निरंजन ।
कोई कहे निरगुन बड़ा, यों लरें वेद वचन ।।
Koi kahey sunya badi, koi kahey niranjan |
Koi kahey nirgun bada, yon larey ved vachan ||
कोई कहे आकार बड़ा, कोई कहे निराकार ।
कोई केहेवे तेज बड़ा, यों लरें लिए विकार ।।
Koi kahey aakar bada, koi kahey nirakaar |
Koi keheve tej bada, yon larey liye vikaar ||
पंथ सारों की एह मजल, अनेक विध वैराट ।
ए जो विगत खेल की, सब रच्यो छल को ठाट ।। क. हि. १५/१०-१४, १७
Panth saron ki eah majal, anek vidh veiraat |
Eah jo vigat khel ki, sab rachyo chhal ko that || Kalash (Hindu.): 15/10-14, 17

41 Pre-conceived Beliefs: Root Cause for All Arguments &Disputes

Saath ji! *Use Your Wide-Angle Lens!* In this world, people rely excessively on false pre-conceived beliefs and incomplete knowledge. Discounting the knowledge of Aksharateet Parbrahmn, they ignore the path of Unparralled Lord (Ananya Prem Laxna) and waste their energy in unproductive arguments and disputes. They sing the glory of donation, knowledge and divine science according to their speculations and start to fight in the name of religion. **No one else but Lord Aksharateet is the greatest! Know Him.**

In the darkness of speculations, people attempt to prove superiority of their understanding and waste time in arguments and disputes. Without realizing the facts of Veiraat (Kshar Brahmaand) and the Parbrahmn, people label karma, kaal, Sada Shiva, Adi Narayana, Adya Shakti, Omni-present, Sunya, Niranjan, Nirgun, Saakaar and Nirakaar as Parbrahmn.

Some claim the superiority of aatam, while others for the Par-Aatman. Some others show 'ego' as the root cause for everything!

42 वेद और वैराट दोनों धुन्ध है।

माया छल में वेद और वैराट दोनों धुन्ध के समान है। वैराट की उत्पत्ति नारायण जी की नाभि से और वेदों की उनके मुख से हुअी है। सबने इसी वैराट में ही वास्तविक दुःख और सुख मान लिये हैं। ऐसे भ्रम में ही सब लोग अपने कर्मों की जाली को बुनते जाते हैं। इस संसार में सब को आतम तो झूठ लगती है, और देह सच्ची। यहाँ व्यक्ति को आत्म दृष्टि से न देखते हुए, सिर्फ देह की सगाई से देखा जाता है। लोग जानते हैं कि भौतिक देह के अलावा दूसरा चेतन तत्व भी उसके साथ जुड़ा हुआ है, फिर भी जानबूझ कर उसी देह से मोह करते हैं।

विध दोऊ देखिए, एक नाभ दूजा मुख ।
गूंथी जालें दोऊ जुगतें, मान लिए दुख सुख ।।
Vidh dou dekhiye, eak naabh duja mukh |
Gunthi jale dou jugte, maan liye dukh sukh | |
कोहेड़े दोऊ दो भांत के, एक वैराट दूजा वेद ।
जीव जालों जाली बांधे, कोई जाने न छल भेद ।।

Kohede dou do bhant ke, eak veiraat duja ved |
Jiv jalo jali baandhe, koi jane na chhal bhed ||

आंकड़ी एक इन भांत की, बांधी जोर सों ले ।

आतम झूठी देखहीं, सांची देखें देह ।।

Aankadi eak in bhant ki, baandhi jor so ley |
Aatam juthi dekh hi, sanchi dekhey deha ||

करें सगाई देह सों, नहीं आतमसों पेहेचान ।

सनमंध पालें इनसों, ए लई सबो मान ।।

Karey sagai deh saun, nahi aatam saun pehechaan |
Sanmandh paale in saun, eah lai sabo maan ||

जीव गया जब अंग थें, तब अंग हाथों जालें ।

सेवा जो करते सनेह सों, सो सनमंध ऐसा पालें ।।

Jiv gaya jab ang the, tab ang hathon jale |
Seva jo karte sneh saun, so sanmandh aisa pale ||

छोड़ सगाई आतम की, करें सगाई आकार ।

वैराट कोहेड़ा या बिध, उलटा सो कई प्रकार ।।

Chhod sagai aatam ki, karey sagai aakar |
Veiraat koheda ya bidh, ulta so kai prakar ||

कई बिध यों उलटा, वैराट नेत्रों अंध ।

चेतन बिना कहे छूत लागे, फेर तासों करे सनमंध ।। क. हि. १६/३, ४, ६, ७, ९, १३, १४

Kai bidh yon ulta, veiraat netro andh |
Chetan bina kahey chhut laagey, fer taso karey sanmandh || Kalash (Hindu.): 16/3, 4, 6, 7, 8, 13, 14

42 Foggy is the Way of the Vedas and Foggy is the Veiraat

In this drama of the corrupt maaya, both the Ways of the Vedas and the Veiraat, i.e., the creation of the Kshar Purusha, are foggy! Vairaat is born of the naval of Lord Narayana and the Vedas from the mouth of Lord Narayana.

Everyone has falsely assumed that the suffering and joy experienced by us in this world are real in nature! In reality, the ultimate suffering is the pain of separation form the Parbrahmn, and the ultimate joy does not exist in this Veiraat! Due to the lack of clarity, here, the truth appears as false and suffering appears as pleasure. Here, everyone is busy weaving his or her personal web of *karmas*. Being entangled in this complex web, the eternal aatman appears to be false and unimportant, while the perishable physical body appears to be more and more real.

Moreover, a person is seen, not with the eyes of spiritual relationship, but with the eyes of blood relationship. Despite knowing the existence of the higher consciousness (such as jiva spirit and/or aatman) residing within the physical body, people get overly attached to the later. In other words, their vision remains limited to outward world.

43 ब्राह्मण कौन? चाण्डाल कौन?

सुन्दरसाथ जी! सिर्फ खट्–कर्मों को पाल कर देह से पवित्र रहने वाला ब्राह्मण नही हो जाता। ब्राह्मण तो वह है जो सुपने में भी परमात्मा को याद करता हो, जो माया और ब्रह्म का भेद जानता हो, जो सिर्फ अपने पेट और परिवार को पालने के लिए उत्तमाई न दिखाता हो, जो व्याकरण के ज्ञान से लोगों के बीच एक ही श्लोक के अनेक मन इंछित अर्थ न करता हो।

इससे विपरित, चाण्डाल वह है जो दिल से निर्मल न हो, आतम भाव से अपने भगवद्–धर्म को पालता न हो। ऐसा नीच व्यक्ति ही वास्तवमें अपवित्र और अस्पृश्य है। अतः माया–ब्रह्म के भेद को

जानने वाला ही सच्चा ब्राह्मण है, और धर्म के नाम माया बटोरने वाला 'चाण्डाल' है।

एक भेख जो विप्र का, दूजा भेख चंडाल ।

जाके छुए छूत लागे, ताके संग कौन हवाल ।।

Eak bhek jo vipra ka, duja bhekh chandal |
Jake chhueah chhut lagey, take sang kaun haval | |

चंडाल हिरदे निरमल, खेले संग भगवान ।

देखलावे नहीं काहू को, गोप राखे नाम ।।

Chandal hirde nirmal, kheley sang bhagvan |
Dekhlavey nahi kahu ko, gope rakhe naam | |

अंतराए नहीं खिन की, सनेह सांचे रंग ।

अहनिस दृष्ट आतम की, नहीं देहसों संग ।।

Antraye nahi khin ki, saneh sanche rang |
Ehnis dhurst aatam ki, nahi deh saun sang | |

विप्र भेख बाहेर दृष्टी, खट कर्म पाले वेद ।

स्याम खिन सुपने नहीं, जाने नहीं ब्रह्म भेद ।।

Vipra bhek baher dhursti, khat karam paley ved |
Shyam khin supne nahi, jane nahi brahmn bhed | |

उदर कुटम कारने, उत्तमाई देखावे अंग ।

व्याकरण वाद विवाद के, अर्थ करें कई रंग ।।

Udar kutam kaarne, uttamai dekhave ang |
Vyakaran vaad vivaad ke, arth karey kai rang | |

अब कहो काके छुए, अंग लागे छोत ।

अधम तम विप्र अंगे, चंडाल अंग उद्दोत ।। क. हि. १६/१५-२०

Ab kaho kaake chhuye, ang laagey chhot |
Adham tam vipra angey, chandaal ang udhyot || Kalash (Hindu.): 16/15-20

43 O Saathji! Know The Real Brahmin and The Real Butcher

Sundersaathji! A true Brahmin is one who not only observes the six-karmas* from the external perspectives, but also remembers his Lord even in his dreams, and knows the distinction between the maaya and the Brahmn. He does not display his superiority just to earn bread and to support his family. Nor does he attempts to impress people by interpreting the Sanskrit *slokas* according to his liking. Such a pious person, who knows the One ParBrahmn, is a true Brahmin.

As opposed, a person is essentially of low caste, impious, a butcher or the untouchable, if his heart is corrupt and impure, and if he is not practicing his religion with the ultimate goal of spiritual uplift in his mind.

Note: Shat-Karma are the six purificatory exercises in Hatha Yoga. They are: Dhauti(internal and external cleaning of body), Basti (intestinal cleaning, e.g., enema,), Neti (purification of the nostrils), Nauli (stimulating the abdomin, the gastro-intestinal system), Tratak (steady gazing at a particular point or object without winking, mainly intended for developing concentration and mental focusing) and Kapalabhati (purification of skull and lungs). Here, Shri Prannathji alerts us about the fact that spirituality must never be overshadowed by overemphasizing physical wellbeing.*

44 वैराट का उल्टा चलनः इसके मृगजल प्रपंच से बच के रहो।

साथ जी! विराट का चलन उल्टा ही है। यहाँ पर सत्य को झूठ, आकार को निराकार, और निराकार को आकार माना जाता है। जो काल से ग्रसित हो, उसे आकार वाला नहीं कहा जाता। जो सदा अविनाशी होता है, सिर्फ उसे ही आकार वाला कहा जाता है। साथ जी! आप इस मृगजल के प्रपंच में मत फँसना। यह सब माया ही का छल है।

पेहेचान सबों को देह की, आतम की नहीं दृष्ट ।
वैराट का फेर उलटा, इन बिध सारी सृष्ट ।।
Pehechaan sabon ko deh ki, aatam ki nahi drust |
Veiraat ka fer ulta, in bidh sari shrust ||
सांचे को झूठा कहें, और झूठे को कहें सांच ।
सो भी देखाऊं जाहेर, सब रहे झूठे रांच ।।
Sanche ko jutha kahey, aur juthe ko kahey sanch |
So bhi dekhaun jaaher, sab rahe juthe ranch ||
आकार को निराकार कहें, निराकार को आकार ।
आप फिरे सब देखें फिरते, असत यों निरधार ।।
Aakaar ko nirakaar kahey, nirakaar ko aakaar |
Aap firey sab dekhey firte, asat yon nirdhaar ||
आकार न कहिए तिनको, काल को जो ग्रास ।
काल सो निराकार है, आकार सदा अविनास ।।
Aakaar na kahiye tinko, kaal ko jo graas |
Kaal so nirakaar hei, aakaar sada avinaash ||
जिन राचो मृग जल दृष्टे, जाको नाम प्रपंच ।
ए छल मायाऐं किया, ऐसे रचे उलटे संच ।। क. हि. १६/२१, २३, २४, २६, २७
Jin racho mrug jal drustey, jako naam prapanch |
Eah chhal maayaaeah kiya, aisey rache ulte sanch ||
Kalash (Hindu.): 16/21, 23, 24, 26, 27

44 Beware of the Reverse Walk of the World, the Veiraat

Saath ji! The Veiraat is walking in the reverse direction! Here, truth is labeled as false; the one having a form (saakaar) is called formless (nirakaar) and vice-versa. How can the one who is subject to kaal (time) be identified as Saakaar, i.e., having a form? The one who is ever-existent and eternal, only that qualifies to be regarded as Saakaar or the one having a form.

Saath ji! Please beware of the illusory water of the mirage. Entire Vairaat is the play of the corrupt maaya.

45 पंडितों द्वारा वेदों के ज्ञान को संस्कृत के वाद–विवाद का विषय बना देना।

साथ जी! पंडित लोगों ने वेदों के ज्ञान को संस्कृत के व्याकरण के वाद–विवाद का विषय बना दिया है, जिससे संसार के लोग विवेक और विचार–शून्य हो गए हैं। ये लोग अपनी अटकलों से वेदों के एक ही शब्द के बारह अर्थ करके उसके मूल अर्थ को ही उल्टा कर देते हैं। मूल हकीकतों को छुपाने के लिए वे बीच–बीच में मन–घड़ंत कहानियाँ सुनाकर लोगों को गुमराह करते रहते हैं। संस्कृत भाषा के अर्थघटन में अनेक संशयों की सम्भावना होने से कोई एक अर्थ दृढ़ हो ही कैसे सकता है?

लगाए सब रब्दें, व्याकरण वाद अंधकार ।
या बुधें बेसुध हुए, विवेक खाली विचार ।।
Lagaye sab rabde, vyakaran vaad andhkaar |
Ya budhe besudh huye, vivek khali vichaar | |
अर्थ आड़े कई छल किए, तिन अर्थों में कई छल ।
अखरा अर्थ भी ना होवहीं, किया भाव अर्थ अटकल ।।

Arth aade kai chhal kiye, tin artho mein kai chhal |
Akhara arth bhi na hovhi, kiya bhav arth atkal | |

जाको नामै संस्कृत, सो तो संसे ही की कृत ।

सो अर्थ दृढ़ क्यों होवहीं, जो एती तरफ फिरत ।।

Jako namei sanskrut, so to sanse hi ki krut |
So arth drudh kyo hovhi, jo eati taraf firat | |

ए छल पंडित पढ़हीं, ताए मान देवें मूढ़ ।

बड़े होए खोले माएने, एह चली छल रूढ़ ।।

Eah chhal pandit padh hi, taye maan deve moodh |
Bade hoye khole mayene, eah chali chhal roodh | |

सीधी इन भाखा मिने, माएने पाइए जित ।

जो सब्द सब समझहीं, सो पकड़ें नहीं पंडित ।। क. हि. १७/३, १०, ११, १५, १६

Sidhi in bhakha miney, mayene paiye jit |
Jo sabd sab samzhi, so pakde nahi pandit | |
Kalash (Hindu.): 17/3, 10, 11, 15, 16

45 The Pundits, Sanskrit and Dangers of Speculations!

The pundits have made their literal knowledge of the Sanskrit* language and grammar a tool for making false arguments and creating disputes. Under their influence, the people of the world have become thoughtless and have lost a sense of what is right and what is wrong. Through their speculations, they come up with twelve different meanings of one Sanskrit word. Consequently, the original meaning of a sloka is lost.

In addition, to hide the original facts, the pundits interject self-made stories in their explanations! This is how they distract people from their true path. Due to numerous possibilities in

the interpretation of the Sanskrit language, how can one arrive at one firm meaning?

**This same argument also applies to the experts of any other scriptural language, who try to distract the seekers of truth when the inner meanings of the scriptural terms are unclear to them.*

46 वैराट और वेदों के ज्ञान की सीमाः निराकार तक।

साथ जी! यह वैराट, जो आदि नारायण की नाभि से निकला है, और चारों वेद, जो उनके मुख से निकले हैं, ये दोनों आदि नारायण जी के मन के स्वप्न की रचना है, इसमें खेलने वाले जीवों को इनकी पेहेचान नहीं है।

वेदों ने भी चौदह लोकों के ब्रह्माँड में खोजा, लेकिन पारब्रह्म के विषय में निराकार से आगे कोई भी दृढ़ बात नहीं बोल सके। इन्हों ने निराकार से आगे की बातें अटकल से कही भी, लेकिन अन्ततः वे निराकार ही में समा गए। 17/19–23

ए जो बोले साधू सास्त्र, जिनकी जैसी मत ।
ए मोहोरे उपजे मोहके, तिनको ए सब सत ।।
Eah jo bole sadhu shastra, jinki jeisi mat |
Eah mohore upjey moha ke, tinko eah sab sat ||
तबक चौदे देखे वेदों, निराकार लों वचन ।
उनमान आगे केहेके, फेर पड़े मांहें सुंन ।। क. हि. १७/२२, २३
Tabak chaude dekhey vedo, nirakaar laun vachan |
Unmaan aage keheke, fer pade mahen sunn || Kalash (Hindu.): 17/22, 23

46 'Nirakaar' is the Limit of the Knowledge of the Vedas and the Veiraat

Saath ji! This Veiraat is born of the lotus naval of Lord Adi Narayana and the Vedas are born from His mouth. Both of them are products of Lord Adi Narayana's dream*. The jivas who play in this drama do not realize this fact.

The Vedas searched within the entire creation of the fourteen worlds, but could not speak definitive beyond the formless brahmn (nirakaar). Whatever the Vedas spoke regarding the Parbrahmn beyond Nirakaar, is speculative or exploratory. Consequently, they found refuge in Nirakaar or Sunya (the domain of nothingness)!

* *This entire creation of the fourteen worlds, and other innumerable similar creations are born are dissolved in Lord's Adi Narayan's dream. This dream is unique in its cause, nature and duration. It is different from the dreams that we humans experience.*

47 जीव' असत्य निराकार है, और 'आत्मा' सदा ही अखण्ड है।

सुन्दरसाथ जी! इस संसार के जीव उसी आदि नारायण के मन की पैदाईश है, जो पाँच तत्वों से बने ब्रह्माँड में खेलते रहते हैं। इस सृष्टि में व्याप्त जीव चेतना के अतिरिक्त भी कोई और पारब्रह्म स्वरूप है, तो इसको सिर्फ ब्रह्मसृष्टि जानती है।

अपने कर्मों के अनुसार जीव वैकुण्ठ, यमपुरी, स्वर्ग, पाताल आदि स्थानों में खेलते रहते हैं। जो इसी वैकुण्ठ को ही सतलोक मानते हैं, वे अंततः निराकार में ही समाप्त हो जाते हैं। पाँच तत्वों से परे छठा तत्व आत्मा है, जो सत्य है। लेकिन यहाँ तो बिना जीव और आत्मा के भेद पाए, स्वप्निल जीव को ही सत्य आत्मा दर्शाया जाता है।

ब्रह्मात्मा सदा ही अखण्ड है और जीव असत्य निराकार है। जो स्वप्न में पैदा होकर उसी में रहने वाले हैं, वे जीव शून्य की सीमा पार नहीं कर सकते। जो अखण्ड धाम की आत्माएँ हैं, वे इसे उलंघ कर अपने वतन पहुँचती हैं। साथ जी! झूठा जीव माया को पार नहीं कर सकता। केवल सत्य आत्मायें ही निराकार के पार जा सकती हैं।

इस सपने की पंचभौतिक नगरी में सर्वत्र त्रिगुणी माया का प्रभाव है। यहाँ सब के तनों में एक महा–जीव 'आदि नारायण' ही का अंश है। एक जैसे ही दिखने वाले इन पंचतत्वों के तन भी दो प्रकार के हैं–एक में अखण्ड की आत्मा है, और दूसरे में केवल झूठा जीव। *नोटः आत्मा के संग से जीव का होने वाले अखण्ड मुक्ति के लाभ और श्री इन्द्रावती जी की महिमा और उनकी संगति से जीव को होने वाले लाभ की बात कलश हि. प्रकरण 23/64, 72 में समझाई गई है।*

ए देखो तुम जाहेर, पांचों उपजे तत्व ।
ए मोह मिने मन खेलहीं, सब मन की उतपत ।।
Eah dekho toom jaaher, pancho upjey tatwa |
Eah moha miney man khelhi, sab man ki utpat ||
ए सारों में व्यापक, थावर और जंगम ।
सबन थें एक है न्यारा, याको जाने सृष्टब्रह्म ।।
Eah saron mein vyapak, thavar aur jangam |
Saban the eak hei nyara, yako jane srust brahmn ||
कोई बैकुंठ कोई जमपुरी, कोई स्वर्ग पाताल ।
सब खेलें ख्वाबी पुतले, आड़ी मोह सागर पाल ।।
Koi baikunth koi jampuri, koi swarg patal |
Sab kheley khwabi putle, aadi moha sagar paal ||
जो बनजारे खेल के, तिन सिर जम को डंड ।
कोइक दिन स्वर्ग मिने, पीछे नरक के कुंड ।।
Jo banjare khel ke, tin shir jam ko dand |
Koik din swarg miney, pichhe narak ke kund ||
पांच तत्व छठी आतमा, सास्त्र सबों ए मत ।

यों निरमान बांध के, ले सुपन किया सत ।। क. हि. १७/२४, २५, ३०, ३१, ३५

Panch tatwa chhati aatma, shashtra sabon eah mat |
Yon nirman bandh ke, le supan kiya sat || Kalash (Hindu.): 17/24, 25, 30, 31, 35

वासनाओं की पेहेचान, बानी करसी तिन ताल ।

निसंक निद्रा उड़ जासी, सुनते ही तत्काल ।।

Vasnaon ki pehechaan, baani karsi tin taal |
Nishank nindra ud jaasi, sunte hi tatkal ||

वासना जीव का बेवरा एता, ज्यों सूरज दृष्टें रात ।

जीव का अंग सुपनका, वासना अंग साख्यात ।।

Vaasna jiv ka bevra eta, jyon suraj druste raat |
Jiv ka ang supan ka, vaasna ang saakhyaat ||

जो किन जीवे संग किया, ताको करूं ना मेलो भंग ।

सो रंगे भेलूं वासना, वासना सत को अंग ।।

Jo kin jive sang kiya, tako karun na melo bhang |
So range bhelu vaasna, vaasna sat ko ang ||

तारतम का जो तारतम, अंग इन्द्रावती विस्तार ।

पैए देखावे पार के, तिन पार के भी पार ।। क. हि. २३/५८, ६१, ६४, ७२

Taartam ka jo taartam, ang indrawati vistar |

Paiye dekhave paar ke, tin paar ke bhi paar || Kalash (Hindu.): 23/58, 61, 64, 72

उतपन देखी इंड की, न अंतर रत्ती रेख ।

सत वासना असत जीव, सब विध कही विवेक ।।

Utpanna dekhi ind ki, na antar ratti rekh |
Sat vaasna asat jiv, sab vidh kahi vivek ||

जो जीव होसी सुपन के, सो क्यों उलंघे सुंन ।

वासना सुन्य उलंघ के, जाए पोहोंचे अछर वतन ।।

Jo jiv hosi supan ke, so kyo ulanghey sunn |
Vaasna sunya ulangh ke, jaye pohonche akshar vatan ||

ए सबे तुम समझियो, वासना जीव विगत ।

झूठा जीव नींद न उलंघे, नींद उलंघे वासना सत ।।
Eah sabe toom samjiyo, vaasna jiv vigat |
Jutha jiv nind na ulanghey, nind ulanghey vaasna sat ||
सुपने नगरी देखिए, तिन सब में एक रस ।
आपै होवे सब में, पांचों तत्व दसो दिस ।।
Supne nagri dekhiye, tin sab mein eak rus |
Aapei hovey sab mein, pancho tatwa daso dish ||
तिनमें भी दोए भांत है, एक वासना दूजे जीव ।
संसा न राखूं किनका, मैं सब जाहेर कीव ।। क. हि. २४/१७, २१-२४
Tinme bhi doye bhant hei, eak vaasna duje jiv |
Sansha na rakhu kinka, mein sab jaaher kiv || Kalash (Hindu.): 24/17, 21-24

47 Jiva is False and Nirakaar, Whereas Aatman is Eternal

O Sundersaathji! The worldly jivas are born of Lord Adi Narayana's mind. They play in this creation, which is primarily made from the five gross elements – earth, water, fire, gas and space. Here, only Brahmn Srishti souls know that the Parbrahmn is beyond the jiva consciousness, which pervades throughout this Universe.

These jivas play either in Veikunth or Yampuri, or Swarga or Pataal according to their karmas until this worldly drama is finally dissolved. The shashtras regard this dream world as real misunderstanding that the jiva consciousness is the same as Aatam consciousness (in ignorance)! This is because of their creator's state of dream (ignorance). Without knowing the distinction between the jiva and the aatman, they have

concluded both the jiva and this phenomenal world as real!

Brahmatma is ever eternal and untouched by the Mahapralaya, while Jiva, being subject to Final Dissolution, is false and therefore, formless. Obviously, the jivas that are born of Lord AdiNarayan's dream, and those who choose to live within the dream, cannot cross the boundaries of the Sunya domain or Kaalmaya. On the other hand, Aatmans of eternal Paramdham can easily cross this domain.

This physical dreamland is under complete influence of maaya, which primarily operates under the influence of the three Gunas – sat, rajas and tamas. In every body (jiva), there is a particle consciousness of Maha-Jiva Lord Adi Narayana. However, the atamans of Paramdham have chosen the company of only a select number of individual Jivas. Some other Jivas are accompanied by Ishwari srishtis, the Sutras of Akshar Brahmn. Remaining Jivas are simply associated with the Nirakaar consciousness!

Note: Kalash chapter 23/64, 72 speaks of the benefit of eternity to those jivas who have been fortunate to be in the company of the Aatmans.

सुन्दरसाथ जी! दिलों को बेशक करने वाली यह अखण्ड वाणी सिर्फ तुम्हारे ही वास्ते आई है। अब आपका कोई संशय बाकि नहीं रहेगा। श्री राज जी ने हमारे ही लिये मोहसागर के ब्रह्माँड के सारे ज्ञान के मंथन से पंचरत्न ढूँढ निकाले हैंः सुकदेव जी, कबीरजी, सनकादिक, विष्णु (नारायण और लक्ष्मी जी) और शिवजी। इनमें से सुकदेव जी की सभी वाणियों का सार रुप एक श्री मद्भागवत ग्रन्थ ऐसा है, जो संसारी जनों के लिए तो धुन्ध के समान है, लेकिन आप बेहद के साथियों के लिए तो वह एक अनमोल समाचार है।

ए ऐसा था छल अंधेर, काहूं हाथ ना सूझे हाथ ।
बंध पड़े दृष्ट देखते, तामें आया सारा साथ ।।
Eah aisa tha chhal andher, kahu hath na suzeh hath |
Bandh pade drust dekhte, taame aaya sara saath ||
तो पिया मिने आए के, सब छुड़ाई सोहागिन ।
बोए के नूर प्रकासिया, बीज ल्याए मूल वतन ।।
To piya miney aaye ke, sab chhudayi sohagin |
Boye ke noor prakasiya, bij lyaye mool vatan ||
ए खेल किया तुम खातिर, तुम देखन आइयां जेह ।
खेल देख के चलसी, घर बातां करसी एह ।।
Eah khel kiya toom khatir, toom dekhan aaiya jeh |
Khel dekh ke chalsi, ghar bata karsi eah ||
तुम खेल देखन कारने, किया मनोरथ एह ।
ए माप्या तुम वास्ते, कोई राखूं नहीं संदेह ।।
Toom khel dekhan kaarney, kiya manorath eah |
Eah mapya toom vaste, koi rakhu nahi sandeh ||
पेहेले कहे मैं साथ को, इन पांचों के नाम ।
सुकदेव और सनकादिक, कबीर सिव भगवान ।।
Pehele kahey mein saath ko, in pancho ke naam |
Sukdev aur sankadik, kabir shiv bhagvan ||
नारायन विष्णु एक अंग, लखमी यार्थें उतपन ।
एह समावे याही में, ए नहीं वासना अन ।।

Narayan Vishnu eak ang, lakhmi yathe utpan |
Eah samavey yahi mein, eah nahi vaasna an ||
और एक कागद काढ़िया, सुकदेवजी का सार ।
हदियों का कोहेड़ा, बेहदी समाचार ।। क. हि. १८/१-४, ७-९
Aur eak kagad kadhiya, sukdevji ka saar |
Hadiyo ka koheda, behdi samachar ||Kalash (Hindu.): 18/1-4, 7-9

48 Shrimad Bhagvatam: Fog for One, But Priceless News for Others!

Sundersaathji! The eternal Wani has come just to dissolve all your doubts. Shri Rajji has extracted five jewels out of the unprecendented churning of the Mohsagar*. They are: Sukdev Muni, Kabir ji, Sankadik – the four sons of Lord Brahma, Lord Vishnu (Narayana and Laxmi ji) and Lord Shiva. Shrimad Bhagvatam is the essence of all the scriptures written by Sukdev ji. While it is like a fog for the worldly jivas, it is invaluable divine message for the friends without border (Behadi).

* *Samudra Manthan or the churning of the ocean of milk is one of the most famous episodes in the Puranas and is celebrated in a major way every twelve years in the festival known as Kumbha Mela. Among the best fruits of Samudra Manthan was Amrut, which symbolizes the* nectar of immortality. *Attaining Amrut means ultimate achievement of the goal of self-realisation. Sriji's "Mohsagar Manthan" produced five jewels, whose words confirm the knowledge concerning the Swaroop, Leela and Dhaam of Parbrahmn and Brahmatma.*

49 बुद्धनिष्कलंक अवतारः जाग्रत बुद्धि और नूर तारतम का सामूहिक रुप।

अक्षरातीत की जाग्रत बुद्धि के बुद्धावतार और अति बलवन्त नूर तारतम युक्त निष्कलंक का सामूहिक रुप 'बुद्धनिष्कलंक अवतार' है। यह सम्वत् 1735 में हरिद्वार में प्रगट हुआ और ब्रह्माँड के कलियुगी अज्ञान रुपि अन्धकार को हटाकर सबको आवागमन के चक्कर से मुक्त किया।

साथ जी! इस संसार में विष्णु भगवान के चौबीस अवतार वैकुण्ठ से आते जाते रहते हैं। इनमें इक्कीस अवतार हो जाने के बाद ब्रह्माँड का प्रलय हो गया था। बाकि के तीन अवतार इस प्रकार हैंः मथुरा में कंस के काराग्रह में वसुदेव और देवकी को दर्शन देने वाला विष्णु स्वरुप जो वापिस वैकुण्ठ लौट गया, यह बाईसवां अवतार हैं। तेईसवां और चौबीसवां अवतार जो आज दिन तक छिपा था, वह जाग्रत बुद्धि के बुद्धावतार और अति बलवन्त नूर तारतम युक्त निष्कलंक का सामूहिक रुप है।

साथ जी! कलियुगी अज्ञानता रुपि राक्षस संसार के जीवों को काम, क्रोध, और अहंकार जैसे शस्त्रों से सब के अन्दर बैठकर सबको भ्रमित करता है। अब यह बुद्धनिष्कलंक अवतार अपने ज्ञान के एक सत्य शब्द ही से, ऐसे एक नहीं, करोड़ों राक्षसों का संहार करेगा। बुद्धावतार की तारतम ज्ञान की शक्ति से सारी दुनिया की राह एक हो जाएगी, सबको निराकार के पार का ज्ञान हो जाएगा। फिर अक्षरब्रह्म भी इस ज्ञान को एक पल भर के लिए भी नहीं छोड़ेंगे।

साथ जी! आखिरी अवतार से होने वाले विश्व के माया के विकार हटाने के सभी कार्य तो इस *बुद्धनिष्कलंक* से बातून में सम्पन्न हो गए हैं। इसलिए, अब कोई और अवतार नहीं होने वाला। श्री महामति जी में ही इनका आना हुआ है।

साथ जी! आप में से किसी को संशय न होवे इसलिए मैंने अवतारों के भेदों को स्पष्ट किया है। अब यह सोचो कि वह किसकी जाग्रत बुद्धि हो सकती है, जो भगवान विष्णु को भी जाग्रत करके भवसागर से पार अखण्ड करेगी? सुकदेव जी ने तो सभी अवतारों का स्पष्ट वर्णन किया, पर बुद्धावतार के विषय में वह भी उलझ गए और कुछ भी कह नहीं पाये। तो फिर औरों की तो बात ही क्या करें? यह

तो हमारे अक्षरातीत धनी की लीला है, जो सिर्फ उस घर वाले ही जानते हैं।

गोप हुता दिन एते, बड़ी बुध का अवतार ।

नेक अब याकी कहूं, ए होसी बड़ो विस्तार ।।

Gop huta din etey, badi budh ka avtaar |
Nek ab yaki kahu, eah hosi bado vistaar | |

कोइक काल बुध रास की, लई ध्यान में सकल ।

अब आए बसी मेरे उदर, वृध भई पल पल ।।

Koik kaal budh raas ki, lai dhyan mein sakal |
Ab aaye basi mere udar, vrudh bhayi pal pal | |

अंग मेरे संग पाई, मैं दिया तारतम बल ।

सो बल ले वैराट पसरी, ब्रह्मांड कियो निरमल ।। क. हि. १६/२४-२६

Ang mere sang payi, mein diya taartam bal |
So bal ley veiraat pasri, brhmand kiyo nirmal | | Kalash (Hindu.): 16/24-26

दैत कालिंगा मार के, सब सीधा होसी तत्काल ।

लीला हमारी देखाए के, टालसी जम की जाल ।। क. हि. १६/२७

Dait kalinga maar ke, sab sidha hosi tatkal |
Leela hamari dekhaye ke, taalsi jam ki jaal | | Kalash (Hindu.): 16/27

अवतार या बुध के पीछे, अब दूसरा क्यों कर होए ।

विकार काढ़े विश्व के, सब किए अवतार से सोए ।।

Avataar ya budh ke pichhe, ab dusra kyo kar hoye |
Vicar kadhe vishva ke, sab kiye avataar se soi | |

अवतार से उत्तम हुए, तहां अवतार का क्या काम ।

जहां जमे हुआ सब का, दूजा नेक न राख्या नाम ।।

Avataar se uttam huye, tahan avataar ka kya kaam |
Jahan jamey huva sab ka, duja nek na rakhya naam | |

जहां पैए पाए पार के, हुआ नेहेचल नूर प्रकास ।

तित अगिए अवतार में, क्या रह्या उजास ।।

Jaha paiye paye par ke, hua nehechal noor prakaash |

Tit agiye avataar mein, kahya rahya ujas ||

समझियो तुम या बिध, अवतार ना होवे अन ।

पुरुख तो पेहेले ना कह्यो, विचार देखो वचन ।। क. हि. १८/३७-४०

Samjiye toom ya bidh, avataar na hove an |

Purukh to pehele na kahyo, vichaar dekho vachan || Kalash (Hindu.): 18/37-40

जिन किनको धोखा रहे, जुदे कहे अवतार ।

तो ए किनकी बुधें विष्णु को, जगाए पोहोंचाए पार ।।

Jin kinko dhokha rahe, jude kahey avataar |

To eah kinki budhe Vishnu ko, jagaye pohonchaye paar ||

सुकें अवतार सब कहे, पर बुध में रह्या उरझाए ।

ए भी सीधा न कहे सक्या, तो क्यों इन कही जाए ।।

Suke avataar sab kahey, par budh mein rahya urzaye |

Eah bhi sidha na kahey sakya, to kyo in kahi jaye ||

ए तो अछरातीत की, लीला हमारी जेह ।

पेहेले संसा सबका भान के, पीछे भी नेक कहूं बिध एह ।।

Eah to aksharateet ki, leela hamari jeh |

Pehele sansha sabka bhan ke, pichhe bhi nek kahu bidh eah ||

वैराट की बिध कही तुमको, जिन कछू राखों संदेह ।

अखंड गोकुल और प्रतिबिंब, ए भी समझाऊं दोए ।। क. हि. १९/१, २, ३, ४

Veiraat ki bidh kahi tumko, jin kachhu rakho sandeh |

Akhand gokul aur pratibimb, eah bhi samzaun doi || Kalash (Hindu.): 19/1-4

49 Buddha-Niskalanka Avataar (BNA): Know Him

Saath ji! Buddha-Niskalanka Avataar (BNA) collectively represents the incarnation of Awakened Intellect (Buddhavtaar) and the incarnation of spotless (Niskalanki) divine wisdom, i.e., Noor Taartam. Both the Awakened Intellect and the Noor Taartam united when Sri Prannathji was pronounced as Buddha-Nis-kalanka Avatar in

Haridwar Kumbh Mela in Samvat 1735 (1678 C.E.). This has opened the gate for all worldly jivas to free them from the cycle of birth and re-birth by dissolving their ignorance.

Saath ji! The twenty-four avatars of Lord Vishnu come to this world and return to Veikuntha once they have completed their pre-determined work. After the twenty-first avatar, the worldly creation was dissolved. The remaining three avatars are: 22nd avatar- Vishnu swaroop who appeared before Vasudev and Devki in the prison of Kansa in the town of Mathura. The 23rd and the 24th avatars, which were hidden so far, have arrived as one Buddha Nis-kalanka Avataar, who is the collective manifestation of Shri Rajji's Awakened Intellect and His Noor Taartam.

Saath ji! The demon of ignorance is deceiving everyone by sitting in their hearts using weapons like addictive sexuality, anger and false ego. Now, a single True Word of Knowledge from the BNA, billions of demons shall be destroyed. Through the power of Taartam knowledge, he shall bring all on One universal path. All shall realize the Ultimate Reality which is beyond the domain of Nirakaar.

Once the world has realized the ultimate truth, Akshar Brahmn shall not be able to survive without this Knowledge even for a moment. Saath ji! The enormous work of dissolving all the blemishes of the world has already been accomplished through this Last Avtaar, who is the BNA, as prophesized.

Therefore, there shall be no more Avataars. The spotless divine knowledge and wisdom has already been delivered through Shri Mahamatiji, who is the one with the Intelligence of the Parbrahmn's heart.

Saath ji! To dissolve all your doubts, I have clarified the secrets of the twenty-four avatars. Now, please think deeply: Who is the real owner of this Awakened Intellect which is going to cause the awakening of Lord Vishnu and bestow him the first time ever eternity? Sukdev Muni has clarified the leelas of all of the first twenty-two avatars of Lord Vishnu, but he remained confused rearding the Buddhavataar. As a result, he failed to speak clearly about them! Saathji! If Sukdev ji, upon whose knowledge, the people of the world are relying, is unclear, then what more can be expected from others? This is the divine Leela of our Aksharateet Lord, about which none else but the Brahmn Srishtis have complete knowledge.

50 जाग्रत बुद्धि और नूर तारतम के बल से ब्रज – रास लीलाओं के रहस्यों का उद्घाटन।

साथजी! बुद्धनिष्कलंक अवतार ने ब्रज और रास लीलाओं के रहस्यों का उद्घाटन इस प्रकार कर दिया है।

एक दिन पिया जी गऊएँ चराने के लिए वृन्दावन गए। संध्या समय होने से पूर्व उन्होंने ग्वालबालों को गऊएँ लेकर वापिस गाँव में भेज दिया। इसके पीछे उन्होंने योगमाया को अपने समक्ष प्रगट किया, और अक्षर के बुध्धि–पाद केवलब्रह्म में नया वृन्दावन बनाने के लिए आदेश दिया। ब्रह्मात्माओं के व्रज मंडल छोडने के बाद कालमायिक ब्रह्माँड का प्रलय हो गया। रास लीला के पश्चात इसके कँइ सुख अक्षर ब्रह्म के हिरदे में अखण्ड हो गये। साथ साथ पारब्रह्म धनी

और उनकी आत्माओं की ब्रज गोकुल लीला भी अक्षर के चित्त–पाद सबलिक ब्रह्म में अखण्ड हो गईं। यह ब्रज गोकुल लीला, जो कालमाया के प्रथम ब्रह्माँड में ग्यारह बरस और बावन दिन जितने समय में हुई थी, जिसका नाटक या पुनरावर्तन भी योगमायिक रास लीला के बीच हुअी अंतर्ध्यान लीला में हुआ था। देखियेः प्रगट वाणी, प्रकाश हि. 37/38, 43, 48

साथ जी! अब *जाग्रत बुद्धि और नूर तारतम* के बल से यह पता चल गया है कि ब्रज और रास में जो श्री कृष्ण जी और गोपियाँ थीं, वे सब आज भी अक्षर के सबलिक पाद में (ब्रज लीला की दिन और रात की, तथा रास लीला केवल रात्रि की) अखण्ड लीला कर रहे हैं।

हे सुन्दरसाथ जी! अब मैं तुम्हें इस तारतम वाणी से जाग्रत कर दूँगी। इसके प्रकाश ने हमारी नजर को उस अखण्ड रात्रि वाली रासलीला में पहुँचा दिया है।

साथ जी! योगमाया में रास लीला करने वाले हम ही तो थे और अब इस जागनी ब्रह्माँड में बैठ कर हम उस आनन्द विनोद की लीला को देख भी पा रहे हैं। जागनी की ज्योति के प्रकाश ने ब्रज और रास के दोनों अखण्ड ब्रह्माँडों के सुख जाहिर कर दिए हैं। योगमाया के इन दोनों मंडलों की शोभा का वर्णन जाग्रत बुद्धि और तारतम ज्ञान रुपि नूर की बरकत से हुआ है।

साथ जी! श्री मद्भागवत में रास लीला का ही वर्णन नहीं हो पाया तो फिर अक्षर ब्रह्म और उसके धाम के विषय में वर्णन हो ही कैसे सकता है?

एक दिन गौ चारने, पिउ पोहोंचे वृन्दावन ।
गोवाल गौ सब ले वले, पीछे जोग माया उतपन ।।
Eak din gau charne, piyu pohonche vrundavan |
Goval gau sab ley valey pichhe jogmaya utpann||
ए लीला यामें एते दिन, कालमाया को ब्रह्मांड ।
एह कल्पांत करके, फेर उपज्यो अखंड ।। क. हि. १९/६२, ६३

Eah leela yame etey din, kaalmaaya ko brahmaand |
Eah kalpant karke, fer upjyo akhand || Kalash (Hindu.): 19/62, 63

इंड अखंड भी जाहेर, किए जागनी जोत ।

अब सुन्य फोड़ आगे चली, जहां थें इंड पैदा होत ।।

Ind akhand bhi jaaher, kiye jaagni jot |
Ab sunya fod aage chali, jaha the ind peida hote ||

सोभा इन मंडल की, क्यों कर कहूं वचन ।

सो बुध नूर जाहेर करी, जो कबूं सुनी न कही किन ।।

Sobha in mandl ki, kyon kar kahun vachan |
So budh noor jaaher kari, jo kabu suni na kahi kin ||

रास बरनन भी ना हुआ, तो अछर बरनन क्यों होए ।

कही न जाए हद में, पर तो भी कहूं नेक सोए ।। क. हि. २४/८, ९, १०

Raas barnan bhi na hua, to akshar barnan kyon hoi |
Kahi na jaye had mein, par toh bhi kahun nek soi || Kalash (Hindu.): 24/8-10

50 The Miracle of the Lord's Awakened Intellect and Noor Taartam

One day, the Lord went to Brindavan for grazing the cows. Just before the twilight, He directed the cowherd boys to return to the Gokul village with their cows. Later, He commanded Yogmaaya to appear before Him and create a beautiful Brindavan. Here, the Kaalmayic creation was dissolved as the Aatmans ascended to Yogmaaya to meet their Lord.

Raas Leela was enacted in Brindavan. This Brindavan is located in the intellectual aspect (buddhi-paad) of Akshar Brahmn, who is also identified as the Keval Brahmn. Innumerable

eternal joyful memories of the Raas Leela were eventually embedded in Akshar Brahmn's heart. Thereafter, Akshar Brahmn remembered and attached His consciousness to the leelas that were enacted in Brij and Gokul. Consequently, this leela of 11 years and 52 days was now embedded in Akshar's memory (chitta). Saathji! the Brij and Gokul Leela took place in the first Creation of Kaalmaya. This leela was later re-played (mocked) in the middle of the Raas Leela. Now this is also embedded in Akshar Brahmn's memory. Additional clarification on this subject can be found in Pragat Wani: Prakaash (Hi.): 37/38, 43, 48.

Saath ji! Now, through the power of Awakened Intellect and Noor Taartam, it becomes very clear that Brij and Raas Leelas of the Gopies and Shri Krsihan ji are all embedded in the memory or the chitta-pada of Akshar Brahamn, who is also known as Sablik Brahmn.

O Sundersaathji! Now I shall awaken you through this Holy Wani. In light of Taartam knowledge, we can visualize the eternal night of the Raas Leela. Now we know that we were the one who played Raas Leela in Nitya Brindavan. Now, in this Jaagni Brahmaand, we are able to experience that eternal joyful play. This is the miracle of the Taartam Wani. Experience the light of Spiritual Awakening.

Saathji! Just think! Sukdevji couldnot fully describe the eternal Raas Leela in Shrimad Bhagvatam. In this situation, how can any one even receive the

clear knowledge concerning Akshar Brahmn and His Abode? It is only due to the Lord's Awakened Intellect and the Taartam Knowledge, it has become possible to describe the glory and the beauty of both these Leelas.

51 कालमाया और योगमाया–दोनों ब्रह्मसृष्टियों की आज्ञा के आधिन।

साथ जी! कालमाया और योगमाया यह दोनों ही हम ब्रह्मसृष्टियों की आज्ञा के आधिन हैं, और इनकी पूर्ण जानकारी भी सिर्फ हमारे ही पास है। बाकि सारा संसार तो पैदा ही इन्हीं से हुआ है।

भले ही अक्षर की पंचवासना बड़ी चतुर सुजान है, लेकिन हमारे ईलावा योगमाया की इस हकीकत की पहचान किसी के पास नहीं है।

काहूं न पाइए जोगमाया की, हम बिना पेहेचान ।
वासना पांचों अछर की, भले कहावें आप सुजान ।।
Kaahu na paaiye jogmaya ki, hum bina pehechaan |
Vaasna pancho akshar ki, bhale kahave aap sujan |
ए माया हमारियां, याके हमपे विचार ।
और उपजे सब इनथें, ए हमारी आग्या-कार ।। क. हि. २०/८, ९
Eah maaya hamariya, yake ham pey vichaar |
Aur upjeh sab in the, eah hamari agya-kaar | | Kalash (Hindu.): 20/8, 9

51 Kaalmaya and Yogmaaya - Both, Within Brahmnsrishti's Control!

Saath ji! Kaalmaya and Yogmaaya both are in our control. They actually are ready to follow our commands. Only we, the Brahmnsrishtis, know the complete facts about them, and the rest of the world is just born of them (therefore, they cannot!).

The five great souls, the Panch Vasnas of Akshar Brahmn, may be the most knowledgeable, but no one except the Brahmnsrishtis have the total factual realization of the Yogmaaya.

52 योगमाया अखण्ड, आनन्द–दायक, एकरस स्वरुप, एकदिली पूर्ण है।

साथ जी! योगमायिक सामग्री से परिपूर्ण वृन्दावन में इस दुनिया के शब्द पहुँच ही नहीं सकते । इसमें अंगना स्वरुप सखियाँ अपने प्रीतम से ओत–प्रोत हैं। सभी की आत्मा एकरुप है। परमधाम के मूल धनी की आवेश शक्ति योगमाया में रास लीला में आरोपित हुअी थी। इस समय हमारे घनी का आवेश रास में भले ही नहीं है, फिर भी वहाँ अखण्ड आनन्द का सुख तो आज भी मिल रहा है। साथजी! इस समय हमारे मूल घनी का आवेश तो वर्तमान जागनी लीला में कार्य कर रहा है।

योगमाया में जल, जमीन, हवा, अग्नि, चल–अचल, पशु–पक्षी, तथा सभी तत्व जाग्रत एवं चेतन होते है। वहाँ की हर चीज की रोशनी यहाँ के करोड़ों सूर्यों की रोशनी से ज्यादा है, अर्थात् शब्दातीत है। वन और जमीन से उठ रही नूरी किरनें चन्द्रमा की किरनों से टकरा रही हैं। वे भी हमारी तरह पिया जी से प्रेमपूर्वक रास लीला खेल रही हैं।

साथ जी! जब यहाँ के वस्त्र आभूषण का भी वर्णन नहीं हो सकता, तो फिर वहाँ खेल रहे स्वरुपों की शोभा का ब्यान कैसे करें? और यह तो सिर्फ अखण्ड रास की बात है। साथजी! परमधाम तो इससे कई तरह से और कँई गुना ज्यादा और कँई तरह से विशेष है।

जोगमाया की जुगत जुई, एक रस एक रंग ।
एक संगे सदा रेहेना, अंगना एकै अंग ।।
Jogmaya ki jugat jui, eah rus eak rang |
Eak sange sada rehena, angna eakai ang | |

आतम सदीवे एक है, वासना एकै अंग ।

मूल आवेस जोगमाया पर, सुख अखंड के रंग ।। क. हि. २०/११, १२

Aatam sadive eak hei, vaasna eakai ang |
Mool aavesh jogmaya par, sukh akhand ke rang || Kalash (Hindu.): 20/11, 12

जोगमाया तो माया कही, पर नेक न माया इत ।

ख्वाबी दम सत होवहीं, सो अछर की बरकत ।।

Jogmaya to maaya kahi, par nek na maaya it |
Khwabi dam sat hovhi, so akshar ki barkat ||

ताथें कालमाया जोगमाया, दोऊ पल में कई उपजत ।

नास करे कई पल में, या चित्त थिर थापत ।। क. हि. २४/११, १२

Tathe kaalmaaya jogmaya, dou pal mein kai upjat |
Naas karey kai pal mein, ya chitt thir thapat || Kalash (Hindu.): 24/11, 12

जोगमायाए जाग्रत होए, जल जिमी वाए अगिन ।

थिर चर सब पसु पंखी, तत्व सबे चेतन ।।

Jogmayaeh jagrat hoye, jal jimi vaaye agin |
Thir char sab pashu pankhi, tatwa sabe chetan ||

किरना बन जिमीय की, सामी किरना ससि प्रकास ।

नूर हम पे खेले नूर में, प्रेमें पियासों रास ।।

Kirna ban jimiy ki, saami kirna sashi prakaash |
Noor hum pe kheley noor mein, preme piya saun raas ||

वस्तर भूखन इन जिमी के, सो मुख कहे न जाए ।

तो सुख इन सरूप के, क्यों कर इत बोलाए ।। क. हि. २०/१७, २२, २३

Vastar bhukhan in jimi ke, so mukh kahey na jaye |
To sukh in saroop ke, kyon kar it bolaye || Kalash (Hindu.): 20/17, 22, 23

52 Yogmaaya: Eternal, Blissful, and Harmonious

Saath ji! The words of this world cannot reach the Brindavan, which is fully equipped with the

Yogmayic objects. The Sakhis (souls) are one with their Beloved Lord in Brindavan. Each soul is in mutual harmony too. Because of the super-imposition of Shri Rajji's Aavesh power, Raas Leela could be enacted. While mool Aavesh is not there at this time in Raas Leela, its joy is eternal and can be experienced even today. At this time, our Dhaniji's Aavesh power is working in the present Jaagni Leela.

The water, the land, the air, the fire, the stationary and the moving things, birds and animals, and all elements of Yogmaaya are awake, alert and fully conscious. The brightness and luster of just one particle of Yogmaaya easily exceeds crores of suns of this world. In other words, Yogmaaya is beyond all words. The noori (divine) rays shooting out of the forest and the land of Brindavan are colliding with those coming down from the full moon in the sky. Even these noori rays are playing the Raas Leela with our Lord!

Saath ji! When the beauty and glory of the clothings and the ornaments of this world cannot be described in words, how can one adequately describe the beauty of the yogmayik divine souls and the Lord? I am talking like this only for the eternal Raas Leela! Know that our Paramdham is billion times superior and unique!

सुन्दरसाथ जी! बिना तारतम ज्ञान के अर्न्तध्यान लीला के रहस्य नहीं समझे जा सकते। जब श्री राज जी ने हम सखियों और अक्षरब्रह्म को रास के आनन्द में मग्न हुए देखा, तो दोनों को ऐसा ही लगने लगा कि हम परमधाम में ही रास खेल रहे हैं। तब श्री राज जी ने अपने असल स्वरुप और ठिकाने की याद दिला कर, अपनी पेहेचान कराने की बात दिल में ली। इसलिए उन्होंने रास लीला के सूत्र रूप अपने आवेश को वापिस खींच लिया।

अक्षरातीत के आवेश रहित हो जाने से सखियाँ और अक्षरब्रह्म की आतम युक्त श्री कृष्ण जी दोनों एक दूसरे के पास होने पर भी एक दूसरे से अदृश्य हो गये, अतः दोनों चौंक उठे। सखियों को धनी का विरह और श्री कृष्ण जी में स्थित अक्षर की आतम को परमधाम का सुख चले जाने का दुःख सताने लगा।

इस तरह, सूत्र रूप आवेश के रास लीला में से हट जाने से अखण्ड आनन्ददायक, एकरस और एकदिली पूर्ण योगमाया में श्री कृष्ण जी सखियों से अर्न्तध्यान हो गये। इस तरह श्री राज जी ने अक्षरब्रह्म और सखियाँ दोनों को आनन्द और विरह की लीला का परिचय और अपने असल घर की याद दिलवाई।

साथ जी! रास लीला करके तो हम और हमारे धनी की सभी शक्तियाँ अपने घर परमधाम वापिस आ गये। रास लीला की समाप्ति के बाद वह अक्षर के दिल स्वरुप सबलिक ब्रह्म में अखण्ड हो गयी। हम और अक्षर अपने असल स्वरुप में जाग्रत हो गए।

साथ जी! अब इस रास लीला में न हम, न श्री श्यामा जी और न हमारे धनी खेल रहे हैं।

एक अंगे रंगे संगे, तो क्यों हुई अंतराए ।
इन सब्द में है आंकड़ी, बिना तारतम समझी ना जाए ।।
Eak ange range sange, to kyon huyi antaraye |
In sabd mein hei ankadi, bina taartam samzi na jaye ||
आंकड़ी अंतरध्यान की, सो ए कहूं सनंध ।
कोई न जाने हम बिना, इन तारतम के बंध ।।

Aankadi antardhyan ki, so eah kahu sanandh |
Koi na jane hum bina, in taartam ke bandh ||

जगाए आवेस लेयके, तब इत भए अंतरध्यान ।

विलास विरह चित चौकस करने, याद देने घर धाम ।। क. हि. २०/१३-१५

Jagaaye aavesh leyke, tab it bhaye antardhyaan |
Vilaas virah chitt chaukas karney, yaad deney ghar dhaam || Kalash (Hindu.): 20/13-15

या ठौर लीला करके, हम घर आए सब मिल ।

या इंड कल्पांत करके, फेर अखंड किए मिने दिल ।।

Ya thaur leela karke, hum ghar aaye sab mil |
Ya ind kalpaant karke, fer akhand kiye miney dil ||

हम तो सब धाम आए, अछर आपने घर ।

अखंड रजनी रास लीला, खेल होत या पर ।। क. हि. २०/२५, २६

Hum to sab dhaam aaye, akshar apney ghar |
Akhand rajni raas leela, khel hot ya par || Kalash (Hindu.): 20/25, 26

53 Lord's Aavesh Power: The Catalyst for Raas Leela

Sundersaathji! The secret of the Anterdhyaan Leela (the sport of disappering from the soul's sight) cannot be realized without Taartam Knoweldge. When Shri Rajji saw all of us and Akshar Brahmn submerged in the joy of Raas, He thought to remind both of their true identity and abode. Both were thinking as if they were playing Raas Leela in Paramdham. At that point, Shri Rajji decided in His heart to make both of them realize their true identity and abode. Immediately He withdrew His Aavesh power, which was the one and only binding agent in the Raas Leela.

Despite being in front of each other, because of the absence of Shri Rajji's Aavesh, they couldnot see each other. Both were shocked. Akshar asked: Where am I? Where is Raas Leela? Sakhiyan asked: Where is our Lord, the enactor of Raas Leela? Thus, anterdhyaan (disappearance) leela was possible in the eternally blissful, the one and harmonious yogmaaya only because of the withdrawal of Shri Rajji's Aavesh power. By enacting this Leela, the Lord awakened both the Akshar Brahmn and the Brahmn Srishti Souls of their ultimate reality.

Saath ji! Just recall. We returned to our Paramdham immediately after this Raas Leela. Shri Rajji took an exit from that Leela by withdrawing His Aavesh power, and allowed it to be stored (saved) in Akshar Brahmn's memory (Sablik). Both Akshar and all of us woke up in our original Swaroops. Saath ji! Neither we, nor Shyamaji, nor our Dhaniji is in Raas Leela at the present time.

54 ब्रज, रास और जागनी लीला रूहों ने धाम में बैठ कर ही देखी है।

सुन्दरसाथ जी! ब्रज और रास लीला हमनें अपने घर परमधाम मूल मिलावे में बैठ कर ही देखी है। वर्तमान जागनी लीला भी हम वहॉ बैठे ही देख रहे हैं।

ब्रज और रास लीला के माध्यम से हमने दुःख और सुख दोनों का अनुभव तो किया, फिर भी हमारी कुछ चाहना बनी रहने पर, उसकी पूर्ति करने के लिए, श्री धनी जी के सत–अंग अक्षरब्रह्म ने इस खेल की रचना की है।

हमें इस सपने के खेल से अलग परमधाम में बैठा कर धनी जी सपने में ही सब कुछ दिखा रहे हैं। संसार के जीव इस खास बात को समझ नहीं पा रहे हैं।

हमही खेले बृज रास में, हमही आए इत ।
घरों बैठे हम देखहीं, एही तमासा तित ।।
Hamhi kheley braj raas mein, hamhi aaye it |
Gharon beithey hum dekh hi, eahi tamaasa tit ||
खेल रचे सुपन के, देखाए मिने सुपन ।
ए देखे हम न्यारे रहे, कोई और न देखे जन ।। क. हि. २०/२७, ३१
Khel rachey supan ke, dekhaaye miney supan |
Eah dekhey hum nyaare rahe, koi aur na dekhey jan || Kalash (Hindu.): 20/27, 31

54 Mool Milawa: The Best Theater!

Sundersaathji! We have watched the three leelas - Brij, Raas and the present leela of Jaagni – sitting right from our Mool Milawa in our Original Abode Paramdham.

Through Brij and Raas leelas, we experienced both the happiness and suffering. However, there remained a desire among us to see more of the suffering. To fulfill our wishes, Akshar Brahmn, who is our Dhaniji's sat-part (the form of power, knowledge), has specially created this worldly play.

Our Lord has made us sit in Paramdham quite separate from the dream play. But, still we are able to fully experience these dramas from there. The jivas of this world are unable to grasp this highest truth.

55 जागनी का ब्रह्माँडः अन्य सभी ब्रह्माँडों में सर्वश्रेष्ठ।

हे साथ जी! धनी जी ने यह खेल अपनी सखियों को बहुत ही अच्छी तरह से दिखाया भी, और तारतम ज्ञान और जाग्रत बुद्धि के प्रकाश द्वारा हमारी सभी इच्छाएँ पूरी भी की है। हमारा देखा हुआ खेल अब अखण्ड होगा, और यह ब्रह्माँड अन्य सभी ब्रह्माँडों में सर्वश्रेष्ठ बना रहेगा। अक्षर ब्रह्म भी हमारे साथ जागने के लिए उत्सुक होकर आए हैं। वह भी हम सब ब्रह्मसृष्टियों के साथ ही अपने घर में जाग्रत होंगे।

साथ जी! इस तरह अखण्ड रास लीला की सार रुप बात मैंने तुम्हें बताई है। अब मैं पिया जी की दया का विस्तार बताती हूँ।

ए खेल सोहागनियों को, देखाया भली भांत ।
तारतम बुध प्रकास के, पूरी सबों की खांत ।।
Eah khel sohaganiyo ko, dekhaaya bhali bhaant |
Taartam budh prakaash ke, puri sabon ki khaant ||
खेल देख्या जो हम, सो थिर होसी निरधार ।
सारों मिने सिरोमन, होसी अखंड ए संसार ।।
Khel dekhya jo hum, so thir hosi nirdhaar |
Saron miney siroman, hosi akhand eah sansaar ||
भगवान जी आए इत, जागवे को तत्पर ।
हम उठसी भेले सबे, जब जासीं हमारे घर ।।
Bhagvan ji aaye it, jaagvey ko tatpar |
Hum uthsi bheley sabey, jab jaasi hamarey ghar ||
प्रकास कह्यो मैं रास को, एह सुन्यो तुम सार ।
अब महामती कहें सो सुनो, दया को विस्तार ।। क. हि. २०/३२-३५
Prakaash kahyo mein raas ko, eah sunyo toom saar |
Ab mahaamati kahey so suno, daya ko vistaar || Kalash (Hindu.): 20/32-35

55 The Present Jaagni Drama: The One and Only!

O Saath ji! Our Dhaniji has very well shown this drama to His souls. Also, by enlightening us through the Tratam Knowledge and Awakened Intellect, He has fulfilled all our wishes. Now, the drama, which we have seen, shall become permanent. This Jaagni drama shall be the best among all others in every respect. Look! Akshar Brahmn has also come very eagerly to wake up. He shall also wake up together with all of us in His Abode.

Thus, I have briefly explained you the facts about the Raas Leela. Next, let me explain you the glory of our Piya ji's grace.

56 धनी की दया से रुह का स्वरुप, शोभा–श्रृंगार दयामय हो जाता है।

साथ जी! पिया जी की दया इतनी बड़ी अनन्त सीमा वाले सागर के समान है, कि इस ब्रह्माँड में भी वह समा नहीं पा रही। उनकी दया हर पल चारों और फैलती ही जाती है, इसका कोई पारावार नहीं है। हमारे हाथों से ही उन्होंने सारे ब्रह्माँड को अखण्ड करवाना है!

इतने दिन तक तो सत्य तारतम वाणी सिर्फ थोड़े से सुन्दरसाथ तक ही सीमित रही। लेकिन अब जाग्रत बुद्धि के बल से यह समग्र ब्रह्माँड में जाहिर हो रही है। इस संसार में कहीं कहीं सत्य वाणी प्रवाहित हुई तो है। लेकिन, बिना तारतम वाणी के ज्ञान के, वे भी असत्य में मिल गई हैं।

सत्य और असत्य ऐसे हिल मिल गए हैं, कि किसी को भी माया और ब्रह्म की वास्तविक सुध नहीं रही। अब धनी की दया से सबको यह सुध आ जाएगी।

पिया जी की अखण्ड दया (क्षीर) के सागर में डूबने पर रुह के तन पर माया (नीर) की एक भी बूंद नहीं रह जाती। रुह का सम्पूर्ण स्वरुप एवं शोभा श्रृंगार दयामय हो जाता है। फिर धनी और रुह के बीच कोई भी अन्तर नहीं रह जाता, और वे उसको अपनी अंगना के रुप में अंगीकार कर लेते हैं। धनी अपने आवेश का हिस्सा अपने सुन्दरसाथ को देते हैं, और उन्हें कभी भी अकेले नहीं छोडते। ठीक वैसे ही सुन्दरसाथ जी भी उनको नहीं छोड़ते, अथॉत् उनका कहा कभी नहीं टालते। फिर खुद धनी अवश्य ही ऐसे दयामयी शोभा श्रृंगार धारी सुन्दरसाथ के आदेश का पालन करते हैं।

अब तो मेरे पिया की, दया न समावे इंड ।

ए गुन मुझे क्यों विसरे, मोसों हुए सब अखंड ।।

सोहागनियों पिया दया गुन कैसे कहूँ ।।टेक।। क. हि. २१/१

Ab to merey piya ki, daya na samaavey ind |
Eah gun mujeh kyon visrey, mo saun huye sab akhand ||
Sohaganiyon piya daya gun keisey kahun || Kalash (Hindu.):21/1

अब गली मैं दया मिने, सागर सरूपी खीर ।

दया सागर भर पूरन, एक बूंद नहीं मिने नीर ।।

Ab gali mein daya miney, sasgar saroopi khir |
Daya sasgar bhar puran, eak bund nahin miney neer ||

अब दया गुन मैं तो कहूं, जो कछू अंतर होए ।

अंगीकार करी अंगना, सो देखे साथ सब कोए ।।

Ab daya gun mein to kahun, jo kachhu antar hoye |
Angikaar kari angna, so dekhey saath sab koi ||

एते दिन हम घर मिने, गोप राखी सत जोत ।

अब बुध खेंचे तरफ अपनी, तो जाहेर सत होत ।।

Eatey din hum ghar miney, gop raakhi sat jot |
Ab budh khenchey taraf apni, to jaaher sat hote ||

अब दूर करूं असत को, जाहेर करूं सत जोत ।

गोप रही थी एते दिन, सो अब होत उद्दोत ।।

Ab dur karun asat ko, jaaher karun sat jot |

Gop rahi thi eteh din, so ab hot udyot ||
हिस्सा देऊं आवेस का, सैंयन को सब पर ।
होसी मनोरथ पूरन, मिल हरखे जागसी घर ।।
Hissa deun aavesh ka, seiyan ko sab par |
Hosi manorath puran, mil harkhe jaagsi ghar ||
अब साथ न छोडूं एकला, साथ मुझे छोड़े क्यों ।
कह्या मेरा साथ न लोपे, साथ कहे करूं मैं त्यों ।। क. हि. २१/२, ४, ६, ८, १६, १७
Ab saath na chhodu eakla, saath mujeh chhodey kyon |
Kahya mera saath na lopey, saath kahey karun mein tyon || Kalash (Hindu.): 21/2, 4, 6, 8, 16, 17

56 Shri Rajji is Ready to Obey the Commands of His Gracious Soul!

Saath ji! Our Piya ji's grace is like an infinite boundaryless ocean. Despite all attempts, it cannot be contained in this entire creation. It is overflowing everywhere! Each moment, it is expanding in all four directions. There is no way to measure its expansiveness. This grace shall bestow eternity to this entire creation through all of us!

Until now the supremely truthful Taartam Wani remained known only among a few sundersaath jis. Now, through the power of the Awakened Intellect, it is being broadcast all over the world. Of course, there are words of truth are scattered here and there in this world. However, without the knowledge of Taartam Wani, they all have been mixed up with falsehood. The truth and the false have become so well mixed up that no one seems to have a sense of the reality of the Maaya and the

Brahmn. Now, this shall become possible through our Dhaniji's grace.

Not a single drop of Maaya (neer) can stay on the body of a Soul, who has soaked herself in the ocean of our Lord's grace (Kshir). Her complete appearance, beauty and garlands also become graceful. There remains no distance between Dhaniji and His Soul. Then He accepts her as His eternal Bride and never leaves her alone without His Aavesh power. Such a soul also reciprocates the spirit of this divine relationship. She never leaves the company of her Dhaniji, nor does she disobeys His Words. Consequently, Dhaniji Himself obeys all commands of such a gracefully ornamented and beautified Sundersaath Soul.

57 विकारों की सफाईः तारतम ज्ञान रुपि साबुन और आवेश के सहयोग से

सब के दिलों से माया के विकारों की सफाई होने पर ही इस संसार में सुख–शीतलता होगी। तारतम ज्ञान रुपि साबुन और धनी जी की मेहर की ताकत से ही सब के दिल र्निभ्रम होंगे। जैसे जैसे दिल के भ्रम हटते जायेंगे, वैसे वैसे धनी का आवेश भी सब के बीच बँटता जायेगा। इसतरह से सबके दिल निर्मल होते जाएँगें।

साथ जी! इस प्रकार की प्रक्रिया में से गुजरे बिना आत्मा जाग्रत नहीं होती। और इसके बिना जागनी रास का सुख भी नहीं लिया जाता। इस तरह की जागनी से सभी ब्रह्मसृष्टियाँ इकट्ठी होगी और सब को अपने निज–सुख वापिस मिलेंगे।

अन्त में जब साकुण्डल और सकुमार की आतम जाग्रत हो जायेंगी, तब खूब आनन्द मंगल हो जाएगा। क्योंकि इन दो के जागने पर सभी ब्रह्मसृष्टियाँ जाग्रत होकर अखण्ड सुख का आनन्द पा लेंगी।

साथ जी! हमारे गुन, पक्ष, अंग, इन्द्रियाँ, मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार, एवं शारीरिक प्रकृति आदि, जो माया में लीन हो गए हैं, उनका धनी के रास्ते पर आना ही विकारों के हटने का प्रमाण है। इन सभी चोरों को सत्य ग्रहण करवा कर उन्हें साहूकार बना कर ही सारे संसार को सुख और शीतलता प्राप्त होगी।

इस तरह झूठे ब्रह्माँड के जीव खीर–नीर की हकीकत समझकर, अपने दिलों से संशय और अज्ञान का अन्धेरा हटा कर, जाग्रत–निजबुद्धि के प्रकाश से अखण्ड होंगे।

आवेस मुझपे पिया को, तिन भेली करूं सोहागिन ।

सब सोहागिन मिल के, सुख लेसी मूल वतन ।।

Aavesh muz pe piya ko, tin bheli karun sohagin ।
Sab sohagin mil ke, sukh lesi mool vatan ।।

आए रहेसी सब सोहागनी, तब लेसी सुख अखंड ।

पीछे तो जाहेर होएसी, तब उलटसी ब्रह्मांड ।।

Aaye rahesi sab sohaagani, tab lesi sukh akhand ।
Pichhey to jaaher hoyesi, tab ulatsi brahmaand ।।

जोलों न काढ़ूं विकार, तोलों क्यों करके जगाए ।

जागे बिना इन रास के, किन निज सुख लिए न जाए ।। क. हि. २१/१३, १५, २२

Jolo na kaadhu vikaar, tolo kyon karke jagaaye ।
Jaage bina in raas ke, kin nij sukh liye na jaaye ।।
Kalash (Hindu.): 21/13, 15, 22

गुन पख अंग इन्द्री उलटे, करत हैं सब जोर ।

सो सब टेढ़े टाल के, कर देऊं सीधे दोर ।।

Gun pakh ang indri ultey, karat hei sab jor ।
So sab tedhey taal ke, kar deun sidhey dor ।।

चोर फेर करूं बोलावे, सुख सीतल करूं संसार ।

अंग में सबों आनन्द, होसी हरख तुमे अपार ।।

Chor fer karun bolaavey, sukh shital karun sansaar ।
Ang mein sabon anand, hosi harakh tumeyaa apaar ।।

कोईक दिन साथ मोह के जल में, लेहेर बिना पछटाने ।

कहे महामती प्यारी मोहे वासना, ना सहूं मुख करमाने ।। क. हि. २१/२४, २७, २८
Koik din saath moha ke jal mein, leher bina pachhtaaney |
Kahey mahaamati pyaari mohey vaasna, na sahun mukh karmaaney || Kalash (Hindu.): 21/ 24, 27, 28

57 The Jaagni Process: Cleansing through 'Taartam' Soap & Aavesh

Only after the cleansing of Maaya-born blemishes from everyone's heart, the world shall attain true happiness and peace. Everyone's heart shall become doubtless through the application of 'Taartam' soap with Shri Rajji's Aavesh power. With the disappearance of doubts (faramosi) of each Soul, the process of distribution of the Aavesh power shall also follow.

This way, each Soul's heart shall be purified. A Soul cannot be awakened without passing through this Jaagni process. Moreover, what is the use of this Jaagni drama when awakening is not to be realized?

This way, all Brahmn Srishtis shall be re-united and all shall re-claim their Original Joy. Those will be the most joyous moments of Jaagni when Sakundal and Sakumar, the last two Souls, shall wake up. Because, only thereafter, all Brahmn Srishtis shall receive their eternally blissful joy.

Saath Ji! Our attributes, life style, organs, mind, consciousness, intellect, ego and physical nature – they all have become in-tuned with Maaya. The

only proof of removal of Maaya-born blemishes is - all of them walking in unison on the Path of Dhaniji. The world shall receive true joy and peace only upon bringing all these thieves in aggrement with the Kuljamic Truth and transforming them into the Leaders of Truth.

This way, the jivas of this false world shall realize the facts about Maaya (neer) and Brahmn (khir). All their doubts and ignorance shall be dissolved. They shall then attain eternity through the enlightenment of Dhaniji's Awakened Intellect.

58 हाँसीः मन के उल्ट घुमाव से दिलों में बेईमानी आ जाने से।

साथ जी! सावधान हो जाओ। यह हाँसी का ठिकाना है। अपने धनी, अपने वतन, और आपने आप को भूलकर आप माया में इधर उधर क्या देख रहे हो? आप बिना मूल वाली इस माया के बन्धन में बन्ध गए हो। यहाँ तुम्हारे मन को ऐसा उल्टा घुमा दिया गया है। इस से आप को परमधाम की सब मूल बातें बिल्कुल ही भूल गईं हैं।

अरे! आप तो बिना धागे के ही जाली गूंथ रहे हो। और फिर अपने अंगों को खुद ही इससे बांधते हो। और हाँ, आपके मूल तन तो यहाँ है भी नहीं। साथ जी! फिर भी आप सब इस झूठे बंधन के दर्द में तड़प रहे हो।

देखिये साथ जी! माया की लालच में आकर आप अपने ईमान से भी गिर रहे हो। बिना पूर के ही माया की चाहना और मोह ममता रुपि लहरों में बहे जा रहे हो। साथ जी! इसकी तुलना में और कोई हाँसी नहीं आ सकती।

मेरे साथ सनमंधी चेतियो, ए हांसी का है ठौर ।

पिउ वतन आप भूल के, कहा देखत हो और ।।

Merey saath sanmandhi chetiyo, eah haansi ka hei thaur |
Piyu vatan aap bhul ke, kaha dekhat ho aur | |

साथ जी तुमको उपज्या, खेल देखन का ख्याल ।

जाको मूल नहीं बांधे तिन, ए हांसी का हवाल ।।

Saath ji tumko upjya, khel dekhan ka khyaal |
Jaako mool nahi baandhey tin, eah haansi ka havaal | |

मांग्या खेल विनोद का, तिन फेरे तुमारे मन ।

सो सब तुमको विसरे, जो कहे मूल वचन ।।

Maangya khel vinod ka, tin ferey tumaarey man |
So sab tumko visrey, jo kahey mool vachan | |

गूंथो जाली दोरी बिना, आप बांधत हो अंग ।

अंग बिना तलफत हो, ए ऐसे खेल के रंग ।।

Guntho jaali dori bina, aap baandhat ho ang |
Ang bina talfat ho, eah aisey khel ke rang | |

हांसी होसी साथ में, इन खेल के रस रंग ।

पूर बिना बहे जात हैं, कोई आड़ी होत अभंग ।।

Haansi hosi saath mein, in khel ke rus rang |
Poor bina bahey jaat hei, koi aadi hot abhang | |

हरखे हांसी हेत में, करसी साथ कलोल ।

मांगी माया सो देखी नीके, कोई ना हांसी या तोल ।। क. हि. २२/१-४, १४, १५

Harkhey haansi het mein, karsi saath kalol |
Maangi maaya so dekhi nikey, koi na haansi ya taul | | Kalash (Hindu.): 22/1-4, 14, 15

58 Mockery: Faltered Faith due to Maaya-born Distractions of the Mind

Saath ji! Be alert! This is the land of mockery! Why are you wandering here and there? In this Maaya, you have forgotten your Dhaniji, your

Original Abode and even your true self! Don't you realize that Maaya has no roots? I am surprised to see you trapped in this web on your own! Your mind has been so distracted that you have forgotten all of the sweet memories of your Paramdham.

O Saath Ji! You are weaving the net without actually using any threads! Then you are tying your organs yourself with these imaginary net. By now, don't you know that your original bodies are not here? Then, why are you still suffering from these false attachments?

Look! Lured by Maaya, you are even letting down your faith! Realize that there is no real flood out there! Still you are being washed away in the tide and the imaginary waves of false attachment and affections. Saath Ji! For sure, no mockery can come even close to this one!

59 हाँसीः ज्ञान की लेन–देन में मान–गुमान की भावना को लेकर।

साथ जी! इस संसार में ज्ञान की लेन–देन में भी बड़ी हाँसी हो रही है। ज्ञान देने वाले को अपने ज्ञान का गुमान होता है, तो ज्ञान लेने वाले को अपनी किसी भी प्रकार की खण्डनी स्वीकायॅ नहीं होती है। ऐसी माया–जनित मानसिकता से दोनों की शक्तियाँ वाद–विवाद में ही खत्म होती रहती हैं।

साथ जी! होता क्या है, यह सुनिए। कोई एक नया व्यक्ति अजान अज्ञानी बन कर सत्संग में आता है, और दूसरे से ज्ञान प्राप्त कर लेता है। फिर उसी ज्ञान को लेकर वह अपने आप को बडा और पुराना ज्ञानी होने का दिखावा करता है। ऐसा करके लोग यहाँ एक दूसरे को समझाते फिरते हैं।

अब जब इसमें से कोई ज्ञानीजन किसी श्रोता का खण्डन करके उसके अवगुन बताते हैं, तो किसी से भी ऐसी खण्डनी सही नहीं जाती। फिर माया के नशे में ही वाद–विवाद करते हुए दोनों लड़ झगड़ कर रोते पीटते रह जाते हैं। इस तरह कठिन खण्डनी के वचन कहने वाला, तथा ऐसे वचनों को सुनने वाला–ये दोनों दुःखी होते हैं।

अंततः होश आने पर दोनों यह पाते हैं कि किसी में भी कोई कमी होने का प्रश्न नहीं है। यह तो बस एक हांसी ही का खेल है।

एक नई कोई आए मिले, सो कहावे आप अजान ।

बड़ी होए दूजी मिने, समझावत सुजान ।।

Eak nayi koi aaye miley, so kahaave aap ajaan |
Badi hoye duji miney, samzaavat sujaan | |

कोई वचन करड़े कहे, किन खण्डनी न खमाए ।

सो कलपे दोऊ कलकले, वाको अमल यों ले जाए ।।

Koi vachan kardey kahey, kin khandni na khamaaye |
So kalpey dou kalkaley, vaako amal yon ley jaaye | |

खंडी खांड़ी रोए रोलाए, दुख देखे दोऊ जन ।

जागे पीछे जो देखिए, तो कमी न मांहें किन ।। क. हि. २२/११, १२, १३

Khandi khaandi roye rolaaye, dukh dekhey dou jan |
Jaage pichhey jo dekhiye, to kami na maahen kin | |
Kalash (Hindu.): 22/11, 12, 13

59 Mockery: In the Exchange of Spiritual Knowledge!

Saath Ji! A great deal of mockery is happening in the exchange of religious and spiritual knowledge in this world. The presenter of the knowledge has his or her ego for knowing it all! And, the listener is generally unprepared to absorb any plain truth.

Due to this mentality on both the sides, their energies are wasted in futile discussions and arguments.

Saath Ji! Just listen to what actually happens. One person comes to listen to the discourses in satsung. First, he acts like an ignorant novice and acquires knowledge from others. Soon, he forgets to apply this knowledge to change his own life, and begins to uses the same knowledge to claim his greatness among others. Next, this person proclaims his superiority. This way, people go on and on pursuing eachother.

Now, if any person of knowledge attempts to convey a straightforward truth, no one is prepared to tolerate any criticism. Under the influence of Maaya, they argue, fight and even cry in pain. As a result, both the speaker of the harsh truth and the listener of those words suffer. Moreover, when both come to their senses, they realize how everyone is being deceived by eachother in this drama of mockery.

60 हाँसीः निराकार का आधार लेने में और कर्मकांडी धर्म पालन में।

साथ जी! इस हाँसी के खेल में आत्म–जाग्रति के लिए लोग धर्म, ज्ञान, योग आदि के सहारे एक दूसरे की मदद करते हैं। अंततः दोनों ही अपरा के ज्ञान के अहंकार में और निराकार के भवसागर में उल्ट कर गिर जाते हैं।

और हाँ, जिस कर्मकांडी धर्म से भवसागर पार हो ही नहीं सकता, ऐसी स्वप्निल बुद्धि के सहारे यहाँ सब अखण्ड सुख लेना चाहते हैं।

बिना पाँव के प्रयोग किये ही लोग अपने मन की गति से, इधर उधर भटकते रहते हैं। वे बिना पानी के भवसागर में गोते खा रहे हैं, अर्थात् जन्म–मरण के चक्कर काट रहे हैं।

साथ जी! इस तरह से, जागते हुए भी लोग माया की नींद से ग्रसित हैं।
साथ जी! वैकुण्ठ से पाताल लग हमने यह छल से भरे माया रुपि विराट वृक्ष को देखा, जिसको न फल है न फूल, न डाली है न पत्ते, न लकड़ी है न छाल न मूल। कितने ही प्रयत्न करने पर भी यहाँ मोह के बन्धन, जो हकीकत में किसी ने बांधे ही नहीं है, खुल नहीं पाते।

भला बिना मूल वाला वृक्ष थोड़ा ही फल देता है? फिर भी इस विराट के निराकार के ज्ञान को लेकर, सभी लोग धर्म पालन करके मोक्ष रुपि अखण्ड फल की चाहना रखते हैं। बार बार प्रयत्न करने पर भी बिना तारतम ज्ञान के वे अपने काम, क्रोध और अहंकार जैसे विकारों की वजह से, मोक्ष प्राप्त नहीं कर पाते। इस तरह सबकी हाँसी हो रही है।

साथ जी! धाम के धनी हमें तारतम ज्ञान ग्रहण करवा कर, अपनी पहचान करा कर, हमारे सभी संशयों को मिटाने आए हैं। अब आप सब बस अपनी माया की चाहना रुपि विकारों को त्याग दो, और इस हाँसी की भूमि को देखकर सावचेत हो जाओ।

अमल चढ़्या क्यों जानिए, कोई फिसले कोई गिरे ।
कोई मिने जाग के, कर पकर सीढ़ी चढ़े ।।
Amal chadhya kyon jaaniye, koi fisley koi girey |
Koi miney jaag ke, kar pakar sidhi chadhey ||
एक गिरे पगथी बिना, वाको दूजी पकरे कर ।
सो खाए दोनों गड़थले, ए हांसी है या पर ।।
Eak girey pagthi bina, vako duji pakrey kar |
So khaaye dono gadthaley, eah haansi hei ya par ||
एक पड़ी जिमी जान के, वाको दूजी उठावन जात ।

उलट पड़ी सो उलटी, ए खेल है या भांत ।।

Eak padi jimi jaan ke, vaako duji uthaavan jaat |
Ulat padi so ulti, eah khel hei ya bhaant ||

ओठा लेवे जिमी बिना, पांव बिना दोड़ी जाए ।

जल बिना भवसागर, यामें गलचुए खाए ।।

Otha levey jimi bina, paun bina dodi jaaye |
Jal bina bhavsaagar, yaame galchuye khaaye ||

देखो अंत्रीख खड़ियां, हाथ बिना हथियार ।

नींद बड़ी है जागते, पिंड बिना आकार ।। क. हि. २२/६-१०

Dekho antrikh khadiyaan, hath bina hathiyaar |
Nind badi hei jaagtey, pind bina aakaar || Kalash (Hindu.): 22/ 6-10

मूल बिना ए बिरिख खड़ा, ताको फल चाहे सब कोए ।

फेर फेर लेने दौड़ही, ए हांसी इन बिध होए ।।

Mool bina eah birikh khada, tako fal chaahe sab koi |
Fer Fer lene daud hin, eah haansi in bidh hoye ||

जागो जगाऊं जुगत सों, छोड़ो नींद विकार ।

पेहेचान कराऊं पिउ सों, सुफल करूं अवतार ।।

Jaago jagaaun jugat saun, chhodo nind vikaar |
pehechaan karaaun piyu saun, sufal karun avataar ||

वतन देखाऊँ पिउ का, और अपनी मूल पेहेचान ।

एह उजाला करके, धोखा देऊं सब भान ।।

Vatan dekhaaun piyu ka, aur apni mool pehechaan |
Eah ujaala karkey, dhoka deun sab bhaan ||

ए भोम हांसी देख के, आप होत सावचेत ।

मूल सुख कहे महामती, तुमको जगाए के देत ।। क. हि. २२/१६, १९, २०, २१

Eah bhom haansi dekh ke, aap hot saavchet |
Mool sukh kahey mahaamati, tumko jagaaye ke det || Kalash (Hindu.): 22/16, 19-21

60 Mockery: Can a Root-less Tree Produce any Fruit?

Saath Ji! In this drama of mockery, people try to help each other by seeking guidance from religions, books of knowledge, yogik practices and many other resources. However, due to the influence of ego from the knowledge of Nirakaar (Apara), they fall back in the ocean of Maaya.

People seek eternal happiness using their dream-intellect. But, no one can cross the invisible Ocean of Maaya through the practice of sole-karmakand based religion. They wander here and there with the speed of their minds and no need for actual legs to walk! They are drawning in the Ocean of Maaya, which has no real water in it! In other words, they are constantly circling the wheel of birth and re-birth. Despite being awake, these people are engrossed in deep slumber of Maaya.

Saath Ji! I saw this most corrupt Maaya-tree of Veiraat (Kshar Purusha). It has no fruits, no flowers, no branches, no leaves, no wood, no skin and no roots! Despite all sincere efforts, none can unfold the ties of false attachments, which no body has actually tied.

Dear Saath Ji! Can a root-less tree produce any fruit? Still, people practice religions based on the knowledge of Nirakaar as ultimate in the hope to produce the fruit of eternal freedom! Despite their repeated efforts, due to Maaya-born blemishes such as addictive sexuality, anger and ego, the jivas fail

to attain eternal freedom. This way, they have become an instrument for mockery.

Saath Ji! Dhani Ji has come to dissolve all our doubts by helping us realize His True Identity through the Taartam knowledge. Now, all of you: please drop your worldly desires. Be vigilant after seeing this Land of Mockery!

61 वर्तमान जागनी लीला सर्वाधिक महिमापूर्ण है।

हे सुन्दरसाथ जी! अब आप जागो, और इस जागनी लीला के सुखों को देखो। येह सुख केवल आप ब्रह्मसृष्टियों के योग्य हैं।

ब्रज लीला, रास लीला, धनी श्री देवचन्द्र जी की लीला और परमधाम की लीला – इन चारों लीलाओं का इस वर्तमान जागनी लीला में सुख मिल सकता है। ज्ञान के प्रकाश की उत्तरोत्तर वृद्धि दशॉने वाली प्रथम तीन लीलाओं से श्री जी साहिब जी की वर्तमान जागनी लीला सबसे विशेष महिमा वाली है। यह इसलिए कि तारतम ज्ञान के पूर्ण प्रकाश में प्रथम तीन लीलाओं के साथ–साथ परमधाम की लीलाओं का भी ज्ञान और अपने मूल स्वरुप में पुनः जाग्रत होने का मार्ग इस में स्पष्ट हो गया है।

साथ जी! आत्म–जाग्रति की दृष्टि से देखा जाए तो रास लीला के सुख और परमधाम की लीला के सुखों में जितना अन्तर है, उतना ही बड़ा अन्तर जागनी ब्रह्मॉंड में धनी श्री देवचन्द्र जी की लीला के सुख और श्री जी की लीला के सुखों में है। अर्थात् रास और श्री देवचन्द्र जी की लीलाओं से श्री जी की जागनी लीला सर्वाधिक महिमापूर्ण है। जागनी लीला का प्रकाश, जो श्री जी साहिब जी से हुआ है, यह तो सनंधः 41/16 से जाहिर है हीः

साथ जी! आज दिन तक कँईं ब्रह्मॉंड हो गए, और कँईं होंगे भी। लेकिन, इस प्रकार की लीला किसी भी ब्रह्मॉंड में ना हुई है, न आगे होगी।

अब जाग देखो सुख जागनी, ए सुख सोहागिन जोग ।

तीन लीला चौथी घर की, इन चारों को यामें भोग ।। क. हि. २३/१

Ab jaag dekho sukh jaagni, eah sukh sohagin jog |
Tin leela chauthi ghar ki, in charon ko yaamein bhog ||
Kalash (Hindu.): 23/1

ए लीला है अति बड़ी, आई या इंड मांहें ।

कई हुए कई होएसी, पर किन ब्रह्मांडों नांहें ।। क. हि. २४/२

Eah leela hei ati badi, aayi ya ind maahen |
Kai huye kai hoyesi, par kin brahmaando naahen || Kalash (Hindu.): 24/2

आवेस जाको मैं देखे पूरे, जोगमाया की नींद होए ।

पर जो सुख दीसे जागनी, हम बिना न जाने कोए ।। क. हि. २३/४६

Avesh jaako mein dekhey purey, jogmaaya ki nind hoye |

Par jo sukh disey jaagni, hum bina na janey koi || Kalash (Hindu.): 23/46

61 The Unmatched Glory of This Present Jaagni Leela

O Sundersaath Ji! Now please wake up, and experience the joy of the present Jaagni Leela. No one else but you Brahmn Srishtis qualify for this joy. Now, you can receive the joy of Brij, Raas, Dhani Shri Devchandraji's (Aadika) Leela and the most secret Leela of our Paramdham. The level of awareness reflected from each one of the first three leelas is incremental. However, the present Jaagni leela of Shri Ji Saheb Ji is the most glorious of all because the Taartam Knowledge has brought the joy of the Paramdham Leela. It has lighted the path to awakening in our original divine swaroop.

Saath Ji! From the spiritual awakening point of view, the difference between the joy of Dhani Shri Devchandraji's (Aadika) Leela and the Jaagni leela of Shri Ji Saheb Ji is as big as that of the Raas leela and the Paramdham leela. (Sanandh 41/16)

The light of Jaagni leela, which has occurred in this world, has spread all over. It is the most glorious of all. Many creations have come into existence until today and many more shall be coming forth. However, such an awareness-filled leela has never occurred before, nor shall there be in the future.

62 जागनी संकल्पः पिउ जगाई मुझे एकली, मैं जगाऊँ बांधे जुथ।

सब आत्माओं की जागनी करने का श्री इन्द्रावती जी का संकल्प ही उसकी खुद की जागनी का प्रमाण है।

श्री इन्द्रावती जी कहती हैं, "पिया जी ने मुझे अकेले को जगाया, अब मैं बहुत सारी आत्माओं के जूत्थों को अपने परमधाम की मूल बातें, धाम के पच्चीस पक्षों की शोभा और वहाँ के अखण्ड सुखों की लज्ज़त देकर, जगाऊँगी। ऐसा करके इस दुःख रुपि भूमि को सत्य सुख की भूमि में परिवर्तित कर दूँगी। जब मैं सब सुन्दरसाथ को अपने समान जाग्रत कर दूँगी, तभी हकीकत में जाग्रत केहेलाऊँगी।"

पिउ जगाई मुझे एकली, मैं जगाऊं बांधे जुथ ।
ए जिमी झूठी दुख की, सो कर देऊं सत सुख ।।
Piyu jagayi muje eakli, mein jagavu bandhe juth ।
Eah jimi juthi dukh ki, so kar deu sat sukh ।।
सब साथ करूं आपसा, तो मैं जागी प्रमान ।

जगाए सुख देऊं धाम के, मिलाए मूल निसान ।। क. हि. २३/४४, ४५
Sab saath karun aapsa, to mein jaagi pramaan |
Jagaaye sukh deun dhaam ke, milaaye mool nisaan | | Kalash (Hindu.): 23/ 44, 45

62 Jaagni Resolve: Piyuji Awakened Me Alone, Now I Shall Awaken All.

Shri Indrawati Ji's resolve for the spiritual awakening of all Souls is the proof of her own Jaagni.

In her bold Jaagni spirit, she says, "Piyuji awakened me alone, and now I shall awaken all. To cause their awakening, I shall share the original stories of Paramdham, the beauty of the twenty-five sectors of Paramdham and all the joys therein. This way, I shall transform this land of sufferings into the Land of True Joy. When I shall cause awakening that equate to my level, only then shall I be known as factually awakened."

63 जागनी की विधिः प्यार एवं बड़ी युक्तिपूर्ण

साथ जी! अब मैं बड़ी युक्ति से, आपको बिना कोई दुःख दिए, प्यार भरी ठंडी नजर से, मीठे वचनों को सुना कर, तुम्हारे माया के सभी विकारों को दूर करके, आपको कंचन जैसा निखार कर, निर्मल कर के जगाऊँगी। आपको जागनी के पक्के रंग में रंग कर, इस संसार और परमधाम–इन दोनों जगह पर धन्य धन्य कर दूँगी। इस तरह आपका इस संसार में आना सफल कर दूँगी।

अब जगाऊं जुगत सों, उड़ाऊं सब विकार ।
रंगे रास रमाए के, सुफल करूं अवतार ।।
Ab jagaaun jugat saun, udaaun sab vikaar |
Rangey raas ramaaye ke, sufal karun avataar | |

अब दुख ना देऊं फूल पांखड़ी, देखूं सीतल नैन ।

उपजाऊं सुख सब अंगों, बोलाऊं मीठे बैन ।।

Ab dukh na deun ful paankhadi, dekhun shital nein |
Upjaaun sukh sab angon, bolaavun mithey bein ||

सो ए वचन मोहे सालहीं, कठिन तुमको जो कहे ।

सोहागनियों को निद्रा मिने, मूल घर विसर गए ।।

So eah vachan mohe saalhi, kathin tumko jo kahey |
Sohaaganiyo ko nindra miney, mool ghar visar gaye ||

अब गालूं ताओ दिए बिना, करूं सो रस कंचन ।

कस चढ़ाऊं अति रंगे, दोऊ पेर करूं धंन धंन ।। क. हि. २३/३, ४, ६, ७

Ab gaalu taao diye bina, karun so rus kanchan |
Kas chadhaaun ati rangey, dou per karun dhan dhan || Kalash (Hindu.): 23/3, 4, 6, 7

63 Jaagni Process: Through Love and Pursuation

Saath ji! Now I shall employ great techniques and strategies to awaken you. I shall not let you feel any pain in the process. Through my loving sight and sweet words, I shall cleanse all your blemishes and purify you like the 24 carret gold. By painting you with the permanent colors of Spiritual Awakening, I shall make you shine in both the worlds. This way, your coming to this world shall be worth.

64 जागनी की विधिः धनी का आवेश साथ के अंग में बिठा कर

साथ जी! मैं जानती हूँ कि आप माया संसार रुपि विदेश में आए हो। और यहाँ पर आपने कई भाँत के दुःख देखें हैं। लेकिन जब तक आप सब यहाँ बैठे ही अखण्ड सुख प्राप्त नहीं कर लेते, तब तक मुझे शान्ति नहीं होने वाली। पिया जी ने अपने अंग स्वरुप

आवेश को देकर मुझे जगाया, अपने चरणों में साक्षात बिठाया और मेरे अन्दर परमधाम का स्वाभिमान जाग्रत कर दिया है।

साथ जी! तभी तो हम एक साथ मिल कर अपने घर जा सकते हैं, जब किसी भी सुन्दरसाथ का अंग माया में न अटका हो। अर्थात् जब सभी को मेरा आवेश मिल गया हो। यदि इस सच्ची बात का असर तुम्हारे दिल में चुभ गया हो, तो तुम्हारी जागनी के द्वार खुल गए हैं, ऐसा समझ लो।

जानूं साथजी विदेस आए, दुख देखे कई भांत ।

जो लों ना इत सुख पावहीं, तो लों ना मोहे स्वांत ।।

Janu saathji videsh aaye, dukh dekhey kai bhant |
Jo lo na it sukh pavhi, to lo na mohe swant | |

आगे आवेस मोपे पिया को, दे अंग लई जगाए ।

निसंक निद्रा उड़ाए के, साख्यात लई बैठाए ।।

Aagey aavesh mopey piya ko, dey ang lai jagaaye |
Nisank nindra udaaye ke, saakhyaat lai beithaye | |

अब रह्यो न जाए नेक न्यारे, यों किए जागनी ले ।

अहंमेव जाग्या धाम का, हम मिने आया जे ।। क. हि. २३/८, १२, १३

Ab rahyo na jaaye nek nyaarey, yon kiye jaagni ley |
Ahamev jaagya dhaam ka, hum miney aaya je | | Kalash (Hindu.): 23/8, 12, 13

अब भेले तो सब चलिए, जो अंग न काहूं अटकाए ।

तो तुमें होवे जागनी, जो सांचवटी बटाए ।। क. हि. २३/३८

Ab bheley to sab chaliye, jo ang na kahu atkaaye |

To tumey hovey jaagni, jo saanchvati bataaye | | Kalash (Hindu.): 23/38

64 Jaagni Process: Through Impregnation of Aavesh Within the Souls

Saath Ji! I know that you have come to this foreign Land of Maaya, and you have experienced many different kinds of sufferings. But, I cannot rest in peace until all of you receive the joy of eternity right here. Piya Ji has awakened me by impregnating His Aavesh power in my organs. He called me and asked to sit in His lotus feet. He awakened my true self-esteem of Paramdham.

Saath ji! We all can return to our Original Abode together, only when there is not a single Sundersaathji attached to Maaya. This shall be possible only when each Soul has received my Aavesh power. If this hard fact has pierced through your heart, then know that the doors of Jaagni are wide open for you.

65 जागनी की विधिः ज्ञान से समझा कर, प्रमाण–आत्म साक्षी दिलाकर

सुन्दरसाथ जी की जागनी जबरदस्ती से नहीं होती। यदि उनको मूल घर के सुखों की पेहेचान करवाई जाए तो फिर कोई थोड़े ही माया में रहना पसन्द करेगा? सुन्दरसाथ को आत्म–पेहेचान करवा कर ही साक्षात स्वरुप के विषय में आत्म–साक्षी दिलवाई जा सकती है।

अब सुन्दरसाथ जी मेरे से एक क्षण के लिए भी जुदा रहें, यह मुझसे सहा नहीं जाता। इसलिए, मैं इनको माया की एक भी लहर स्पर्श होने नहीं दूँगा। धनी जी कहते हैं कि हे साथ जी! मैं आपको इस माया के बीच में भी आत्म–जाग्रति द्वारा अपार सुख दूँगा। इससे तुम सब अवश्य ही प्रफुल्लित हो कर नाचोगे।

साथ जी! अब आप इस संसार में बैठ कर उस परमधाम के सुखों का अनुभव करो। आपने जो दुःख देखें हैं, वे मुझसे सहन नहीं

होते। अब मैं तुम्हें इस मोह सागर की लहरों से बचा कर, आपके हर तरह के माया रोग और विकारों को मिटा दूंगा। फिर, तुम्हें पूर्ण पेहेचान करा कर, आपके अंगों से अखण्ड प्रेम के विविध रस उपजाऊँगा। फिर आप सब को सुख पूर्वक ईलम, इश्क और ईमान से सजे हुए निस्बत के नूरी सुखपाल में बिठा कर निश्चित रुप से अपने घर परमधाम ले जाऊँगा।

नैन चढ़ाए साथ न जागे, यों न जागनी होए ।

मूल घर देखाइए, तब क्यों कर रेहेवे सोए ।।

Nein chadhaaye saath na jaagey, yon na jaagni hoi ।
Mool ghar dekhaaiye, tab kyon kar rehevey soi ।।

खंडनी कर खीजिए, जागे नहीं इन भांत ।

दीजे आप ओलखाए के, यों साख देवाए साख्यात ।।

Khandni kar khijiye, jaagey nahi in bhaant ।
Dijey aap olkhaaye ke, yon saakh devaaye saakhyaat ।।

अब विछोहा खिन एक साथ को, सो मैं सह्यो न जाए ।

अब नेक वाओ इन माया की, जानों जिन आवे ताए ।।

Ab bichhoha khin eak saath ko, so mein sahyo na jaaye ।
Ab nek vaao in maaya ki, jaano jin aavey taaye ।।

साथजी इन जिमी के, सुख देऊं अति अपार ।

हँस हँस हेते हरख में, तुम नाचसी निरधार ।। क. हि. २३/९, १०, १५, १६

Saathji in jimi ke, sukh deun ati apaar ।
Hans hans hetey harakh mein, toom naachsi nirdhaar ।। Kalash (Hindu.): 23/9, 10, 15, 16

अब ल्योरे मेरे साथ जी, इन जिमी ए सुख ।

मैं तुमारे न सेहे सकों, जो देखे तुम दुख ।।

Ab lyorey merey saath ji, in jimi eah sukh ।
Mein tumarey na sehey sakon, jo dekhey toom dukh ।।

अब तारूं तुमें या बिध, ज्यों लगे न लेहेर लगार ।

सुखपाल में बैठाए सुखें, घर पोहोंचाऊं निरधार ।।

Ab taarun tumey ya bidh, jyon lagey na leher lagaar ।

Sukhpaal mein baithaaye sukhein, ghar pohonchaavun nirdhaar ।।

उपजाए देऊं अंग थें, रस प्रेम के प्रकार ।

प्रकास पूरन करके, सब टालूं रोग विकार ।। क. हि. २३/३२, ३५, ३६

Upjaaye deun ang thein, rus prem ke prakaar |

Prakaash puran karke, sab taalun rog vikaar || Kalash (Hindu.): 23/ 32, 35, 36

65 Jaagni Process: Through Knowledge Sharing and Self-Witness

Jaagni of Sundersaathji is not to be done forcibaly. Why would anyone choose to stay with false Maaya after realizing the happiness of Paramdham? Only after helping Sundersaathji to self-realize, it would be possible for them to find self-witnesses for the original Par-aatman swaroop.

Now, I cannot tolerate the separation from my Sundersaathji even for a moment. Therefore, now on, I shall not let even one wave of Maaya hurt them.

O Saath ji! I promise: I shall bestow upon you the infinite happiness through your Spiritual Awakening. I am sure, with that all of you shall dance with exuberance. Now, I invite you to experience all the joys of Paramdham right in this world. I cannot tolerate your sufferings. Now I shall protect you from the powerful waves of the ocean of Maaya. I shall cure all your Maaya-born disease and blemishes. I shall lead you to the perfect realization or the Ultimate Reality. I shall enable you to produce a variety of juices of eternal love.

Finally, I shall take all of you back to our Paramdham by giving you a happy ride in the Noori Sukhpaal (divine spaceship) of eternal intimate relationship (Nisbat), which shall be powered by my Wisdom (Elam), Love (Ishak) and unparralled Faith (Emaan).

66 धनी के वचनों पर ईमान लाने से ही दुःख का सुख में परिवर्तन होगा

साथ जी! धनी के वचनों पर ईमान लाकर, अखण्ड सुखों को याद करके, जगत के दुःखों की क्षणभंगुरता की पेहेचान करके ही दुःख से सुख की ओर प्रस्थान किया जा सकता है।

धनी जी कहते हैंः ''हे साथ जी! तुम मेरे प्राणों के प्रीतम हो, और मेरे नूरी अंग भी हो। तुम्हारे मन, जो खेल देखकर दुःखी हो रहे हैं, उन सभी दुःखों को मैं अब दूर कर दूँगा। तुम्हारा मुरझाये हुए मुख और उदासीन मन को मैं नहीं देख सकता।''

साथ जी! यह निश्चित है कि दुःख का यह अनुभव तुम्हें अखण्ड सुख का स्वाद करवाएगा। फिर भी मैं तुम्हें दुःख नहीं पहुंचाऊँगा। इस नश्वर भूमि के दुःखों की याद सत्य, अखण्ड परमधाम में सुख ही का अनुभव करवाएगी, और ये सब बातें बड़ी ही रसप्रद लगेंगी।

साथ जी! यह खेल तो मैंने आप ही के माँगने पर, और आप ही के सुख के लिए उपजाया है। अन्यथा आपको दुःख देकर अपने वतन वापिस बुलायें, यह हमारे घर की रीत ही नहीं है। परमधाम में तो सदा ही सहज सुख है; असुख, यानि कि दुःख, का तो नामोनिशान नहीं है। सुख का एक नया स्वाद लेने के लिए ही तुमने दुःख का खेल माँगा है।

साथ जी! यदि आप अपनी सुरता को वापिस परमधाम में लगा कर देखोगे तो हकीकत में दुःख का कोई अस्तित्व ही नहीं है। यदि आप मेरे वचन जाग्रत होकर आत्म–दृष्टि से देखोगे तो तुम्हें कोई भी कष्ट नहीं होगा। यदि आप इस माया के दुःखों की ओर ज्यादा

ध्यान दोगे, तो ये दुःख तुमको चिपटें ही रहेंगें। और यदि अपने निज–सुख को याद करके उसकी मस्ती में डूब जाओगे, तो दुःख तुमसे कहीं दूर भाग जाएंगे। इसके बाद जब आप ध्यान से विचारोगे तो दुःख को अपने से अलग है, ऐसा पाओगे। अंततः आप इस खेल में भी बड़े आनन्दित होकर हँसी खुशी करोगे।

साथ जी! अब जब भी तुम्हें कोई दुःख आएगा, तो वहाँ पर मैं तुम्हारा दुःख अपने ऊपर ले लूँगा, ताकि आपको बहुत ही ढंग से और बिना किसी रुकावट के अखण्ड सुख मिल पाए।

प्रीतम मेरे प्राण के, अंगना आतम नूर ।

मन कलपे खेल देखते, सो ए दुख करूं सब दूर ।।

Preetam merey praan ke, angna aatam noor |
Man kalpey khel dekhtey, so eah dukh karun sab dur ||

मुख करमाने मन के, सो तुमारे मैं ना सहूं ।

ए दुख सुख को स्वाद देसी, तो भी दुख मैं ना देऊं ।।

Mukh karmaaney man ke, so tumarey mein na sahun |
Eah dukh sukh ko swaad desi, to bhi dukh mein na deun ||

सत सुख में सुख देयसी, इन जिमी के दुख जेह ।

तुम हंसोगे हरख में, रस देसी दुखड़ा एह ।। क. हि. २३/१७, १८, १९

Sat sukh mein sukh deysi, in jimi ke dukh jeh |
Toom hansogey harakh mein, rus desi dukhda eah ||
Kalash (Hindu.): 23/17-19

हम उपाया सुख कारने, ए जो मांग्या खेल तुम ।

दुख दे वतन बोलावहीं, ए इन घर नहीं रसम ।।

Hum upaaya sukh kaarney, eah jo maangya khel toom |
Dukh dey vatan bolaavhi, eah in ghar nahin rasam ||

सेहेजल सुख तुमें है सदा, अलप नहीं असुख ।

तुम सुख को स्वाद लेने, खेल मांग्या ए दुख ।। क. हि. २३/२०, २१

Sehejal sukh tumey hei sada, alap nahi asukh |
Toom sukh ko swaad leney, khel maangya eah dukh || Kalash (Hindu.): 23/20, 21

वस्तोगते दुख ना कछू, जो पीछे फेरो दृष्ट ।

जो देखो वचन जागके, तो नाहीं कछुए कष्ट ।।

Vastogatey dukh na kachhu, jo pichhey fero drust |
Jo dekho vachan jaagke, to nahin kachhuye kast | |

लगोगे जो दुख को, तो दुख तुमको लागसी ।

याद करो जो निज सुख, तो दुख तुमथें भागसी ।।

Lagogey jo dukh ko, to dukh tumko laagsi |
Yaad karo jo nij sukh, to dukh tum thein bhaagsi | |

फेर देखो जो नजरों, तो रेहेसी न्यारे दुख ।

करोगे इत खेल रंगे, विनोद बातें मुख ।।

Fer dekho jo najron, to rehesi nyaarey dukh |
Karogey it khel rangey, vinod baaten mukh | |

अब दुख आवे तुमको, तहां आड़ा देऊं मेरा अंग ।

सुख देऊं भली भांतसों, ज्यों होए न बीच में भंग ।। क. हि. २३/२५, २६, २७, ३९

Ab dukh aavey tumko, tahan aada deun mera ang |
Sukh deun bhali bhaantso, jyon hoye na bich mein bhang | |
Kalash (Hindu.): 23/ 25-27, 39

66 Transform Sufferings into Happiness Through Emaan

Saath Ji! The only way to move from suffering to joy is to live faithfully in the Words of our Dhani Ji, remember our eternally blissful leela and realize the bubble-like short-lived nature of this world.

"O Saath Ji! You are my most Dearly Beloved. You are my divine bliss-part. I shall remove all your sufferings caused by this worldly experience. I cannot see your sad face or your low-spirited minds"says Dhaniji.

Saath Ji! I assure you that this experience of suffering shall offer the taste of eternal joy. Despite

that fact, I shall not let any suffering touch you. Know that, upon returning to our eternal and truthful Paramdham, the memories of this false Land's sufferings shall feel very interesting and shall bring the true joy.

Saath ji! I have created this drama upon your repeated demands. I have made it this way simply to make you happy. Otherwise, it is not the tradition of our Home to bring you back by causing sufferings.

Saath ji! There exists a state of natural happiness in Paramdham. Even the slightest feeling of unhappiness or suffering is absent over there. You have asked for this drama of suffering only to receive a totally different taste of joy.

Saath ji! If you can refocus your consciousness in Paramdham, then suffering shall have no real existence for you. If you ponder about my Words with your awakened spiritual insight, then you shall not feel any pain what so ever. However, if you shall overly focus on your worldly pains and sufferings, then they shall stick to you like the permanent glue. Moreover, if you shall immerse yourself in the true joy of Paramdham, then all the worldly sufferings shall run far away from you. After that, if you carefully observe and think deeply, you shall find that suffering is naturally separate from your reality. Ultimately, you shall experience the great joy of awakening even in this drama.

Saath Ji! Whenever you shall experience any pain, I shall not let you suffer by transferring all the burden of your sufferings on my back. I shall do this so you may receive the eternal joy without any kind of disruption.

67 आवेश और तारतम दोनों के सहयोग से जागनी होनी है।

साथ जी! दिल में प्रेम का अंकूर तभी फूटता है जब धनी का आवेश मिलता है। सुनिये, जो धनी जी कह रहे हैंः

''साथ जी! तुम्हारे अंग में मेरा आवेश दिए बिना आपके दिल में प्रेम का अकूंर नहीं फूट सकता। मैं अपनी अंगनाओं को अपने अंग का आवेश देकर, उनके अंगों को अपने में मिला कर जगाऊँगा। ताकि उनको अखण्ड घर के पूर्ण प्रेम का रंग लग जाए।

इसतरह से असत संसार से आपकी सुरता घुमा कर उसका संग सत से करवाऊँगा। आपकी आतम का परआतम से ऐसा बन्ध बांध दूँगा कि वह कभी भी छूट न पाए। अथॉत, आतम को परआतम में मिला दूँगा।

धनी का आवेश मिल जाने पर, अथॉत, तारतम ज्ञान के पूर्ण प्रकाश से रूह संशय या अटकलों से रहित हो सकती है, साथ साथ हमारी रूह को परमधाम के सब विध के सुख भी मिल जाते हैं। लेकिन साथ जी! जागनी का काम तो इससे भी भारी, विशेष और कठिन है।

अंग दिए बिना आवेस, नाहीं प्रेम उपाए ।
आवेस दे करूं जागनी, लेऊं अंग में मिलाए ।।
Ang diye bina aavesh, nahi prem upaaye |
Aavesh dey karun jaagni, leun ang mein milaaye | |
अंगना को अंग दीजिए, अंगना लीजे अंग ।
पास देऊं पूरा प्रेम का, नेहेचल का जो रंग ।।

Angana ko ang dijiye, angna lijey ang |
Paas deun pura prem ka, nehechal ka jo rang ||

असतसों उलटाए के, सतसों कराऊं संग ।

परआतम सों बंध बांधूं, ज्यों होए ना कबहूं भंग ।। क. हि. २३/३७, ४२, ४३

Asat saun ultaaye ke, sat saun karun sang |
Par-aatam so band baandhu, jyon hoye na kab hun bhang ||
Kalash (Hindu.): 23/37, 42, 43

जो जाग बैठे धाम में, ताए आवेस को क्या कहिए ।

तारतम तेज प्रकास पूरन, तिनथें सकल बिध सुख लहिए ।।

Jo jaag beithey dhaam mein, taaye aavesh ko kya kahiye |
Taartam tej prakaash puran, tinthein sakal bidh sukh lahiye ||

आवेस को नहीं अटकल, पर जागनी अति भारी ।

आवेस जागनी तारतमें, जो देखो जाग विचारी ।। क. हि. २३/४७, ४८

Aavesh ko nahi atkal, par jaagni ati bhaari |
Aavesh jaagni taartamey, jo dekho jaag vichaari || Kalash (Hindu.): 23/47, 48

67 Jaagni: Through the Union of Aavesh and Taartam

Saath Ji! The seed of Love sprouts in one's heart only when one receives my Aavesh power. Unless I impregnate my Aavesh in each one of your organ, the seed of Love cannot sprout. Only through this sharing of my Aavesh, I shall wake you up. This is how I shall enable your meeting with your par-aatman.

No doubt, the Soul can become doubtless by receiving Dhaniji's Aavesh and receive the joy of Paramdham through the total enlightenment of

Taartam Knowledge. However, the work of Jaagni is far more challenging than this.

68 तारतम ही संसार के सभी ग्यान की बातों का सार है।

तारतम ज्ञान से ही आवेश का आना और जागनी होना सम्भव है, अन्यथा नहीं। वैसे तो तारतम ज्ञान ऐसा संशय रहित है, जो निराकार के पार के पार का रास्ता प्रकाशित कर देता है। लेकिन आवेश का आना और जागनी होना, यह दोनों ही बातें सिर्फ पिया जी के हाथ में हैं। साथ जी! यहाँ पर हम रूहों का बल तो बस एक तारतम ज्ञान ही है।

साथ जी! हमारे पिया धन्य है। तारतम ज्ञान धन्य है। और जो सखी इस ज्ञान को लाई है, वह सुन्दरबाई भी धन्य है। मैं इन्द्रावती सखी भी धन्य–धन्य हो गई, क्योंकि मुझमें भी इस तारतम की सब न्यामतें आ गई और मैं अपने धनी की सोहागिन बन गई। मैंने तारतम की न्यामतों को अपने दिल में बसाया, फिर अपने पिया से विलास करने का सुख लिया। साथ साथ सब सुन्दरसाथ को भी इस तारतम ज्ञान और पिया जी के सुखों का यर्थाथ परिचय करवाया।

तारतम ही सभी बातों का सार है। धनी जी अपने धाम से अपना जोश या आवेश, निस्बत, तारतम ईलम, और जाग्रत निजबुद्ध आदि विविध प्रकार के बहुत से सुख लाए हैं।

साथ जी! इन सब न्यामतों का मैंने दुनिया के धर्मों के साथ मूल्यांकन किया तो मैंने यह पाया कि तारतम ही सभी बातों का सार है। तारतम ज्ञान का बल एक मूल स्वरुप श्री राज जी के बिना और कोई नहीं जानता। इस तारतम ज्ञान में मूल स्वरुप के चित्त की सभी बातें कॅई रुप में छिपी हुई है।

आवेस को नहीं अटकल, पर जागनी अति भारी ।

आवेस जागनी तारतमें, जो देखो जाग विचारी ।।

Aavesh ko nahin atkal, par jaagni ati bhaari |
Aavesh jaagni taartamein, jo dekho jaag vichaari | |

ए पैए बतावे पार के, नहीं तारतम को अटकल ।

आवेस जागनी हाथ पिया के, एह हमारा बल ।। क. हि. २३/४८, ४९

Eah peiye bataavey paar ke, nahin taartam ko atkal |
Aavesh jaagni hath piya ke, eah hamaara bal | | Kalash (Hindu.): 23/48, 49

धंन पिया धंन तारतम, धंन धंन सखी जो ल्याई ।

धंन धंन सखी मैं सोहागनी, जो मो में ए निध आई ।।

Dhan piya dhan taartam, dhan dhan sakhi jo lyaayi |
Dhan dhan sakhi mein sohaagani, jo mo mein eah nidh aayi | |

पिया ल्याए मुझ कारने, और हुआ न काहूं जान ।

मैं लिया पिया विलसिया, विस्तारिया प्रमान ।। क. हि. २३/५१, ५२

Piya lyaaye muz kaarney, aur hua na kaahun jaan |
Mein liya piya vilsiya, vistaariya pramaan | | Kalash (Hindu.): 23/51, 52

बोहोत धन ल्याए धनी धामथें, बिध बिध के प्रकार ।

सो ए सब मैं तोलिया, तारतम सबमें सार ।।

Bohot dhan lyaaye dhani dhamthein, bidh bidh ke prakaar |
So eah sab mein toliya, taartam sab mein saar | |

तारतम का बल कोई न जाने, एक जाने मूल सरूप ।

मूल सरूप के चित्त की बातें, तारतम में कई रूप ।। क. हि. २३/५४, ५५

Taartam ka bal koi na jaaney, eak jaaney mool saroop |
Mool saroop ke chitt ki baatein, taartam mein kai roop | | Kalash (Hindu.): 23/54, 55

68 Taartam is the Ultimate Essence of All World knowledge

Only through Taartam Knowledge, it is possible to receive Aavesh and cause spiritual

awakening. No doubt, Taartam Knowledge enlightens the Soul's path beyond Nirakaar. However, the coming of the Aavesh and the implementation of Jaagni initiatives are solely in the hands of Piyaji. Here, the only power we, the Souls, have is Taartam Knowledge.

Saath ji! Great is our Piyaji. Great is the Taartam Knowledge. Great is Shri Sunderbai, who brought it. I, the Soul of Indrawati, also feels gratified because I received all the divine gifts that Taartam has brought. As a result, I have become the Sohagin of Aksharateet Dhanji. O Saathji! I secured all these gifts very well in my heart and therefore, received the eternal joy of playing with my Lord Piyaji. Moreover, I have become instrumental in introducing the factual Taartam Knowledge and the joys of being in the company of Piyaji.

Taartam is the essence of all world knowledge. Dhaniji has brought a variety of happiness, including that of Josh (Aavesh), Nisbat, Taartam and Awakened Intellect.

Saath Ji! I weighed them all against the knowledge of the world religions. I concluded that Taartam is the essence of everything. No one else but Mool Swaroop Shri Rajji knows the power of Taartam. The treasure hidden within the Mool Swaroop's heart is reflected in many different ways in Taartam Wani.

69 श्री इन्द्रावती जीः साक्षात स्वरुप श्री राज जी के तारतम का अवतार

श्री इन्द्रावती जी साक्षात स्वरुप श्री राज जी के तारतम का अवतार है। इस तारतम वाणी में श्री राज जी और श्री सुन्दरसाथ के मूल स्वरुप की पेहेचान का प्रकाश है। जो भी परमधाम की आत्मा होगी, वह इन सत्य वचनों का गम्भीरता पूर्वक विचार करके इनको दृढ़ता पूर्वक ग्रहण करेगी। वही आत्मा दौडती आ कर इन्द्रावती से मिल पायेगी। ऐसी आत्मा की माया की अज्ञानता रुपि निंद्रा तो इस वाणी के सुनते ही तत्काल उड़ जाएगी। उसके सभी अंग अपने धनी के प्रेम में भीग जायेंगे। फिर वह प्रेम–सेवा में समर्पित होकर अपने धनी के प्रेम की पात्रता सबको दिखाएगी।

साख्यात सरूप इंद्रावती, तारतम को अवतार ।

वासना होसी सो बलगसी, इन वचन के विचार ।।

Skhyaat saroop indrawati taartam ko avataar |
Vaasna hosi so valagsi, in vachan ke vichaar | |

वासनाओं की पेहेचान, बानी करसी तिन ताल ।

निसंक निद्रा उड़ जासी, सुनते ही तत्काल ।।

Vaasnaon ki pehechaan, baani karsi tin taal |
Nisank nindra ud jaasi, suntey hi tatkaal | |

एक लवा सुने जो वासना, सो संग न छोड़े खिन मात्र ।

होसी सब अंगों गलित गात्र, प्रगट देखाए प्रेम पात्र ।। क. हि. २३/५६, ५८, ५९

Eak lava suney jo vaasna, so sang na chhodey khin maatra |
Hosi sab angon galit gaatra, pragat dekhaaye prem paatra | | Kalash (Hindu.): 23/ 56, 58, 59

69 Shri Indrawatiji: Incarnation of Shri Rajji's Taartam Knowledge

Shri Indrawatiji is the incarnation of Mool Swaroop Shri Rajji's Taartam Knowledge. This

Taartam Wani enlightens the path of realization of the Mool Swaroops of Shri Rajji and Shri Sundersaathji. Whoever is the Soul of Paramdham, she shall ponder upon these true Words of the Wani seriously and live by these Holy Words. The one, who shall do this, shall be the only one to qualify to meet with Indrawati. Maaya-born ignorance of such a Soul shall sublimate instantly upon listening to this Wani. All her organs shall be soaked with Dhaniji's Love. Then, by practicing the experiments of Prem-Seva, she shall prove to be eligible for her Dhaniji's Love.

70 परमधाम की आत्मा की पेहेचान

इस वाणी को सुन कर जिस किसी का भी अंग धनी के आवेश से भर न जाए, वह अवश्य ही परमधाम की आत्मा नहीं है। ऐसे व्यक्ति को तो मैं जीवसृष्टि के समान ही गिनूंगी। परमधाम की आत्मा और जीव में इतना अन्तर है, जितना दिन और रात में। जीव का अंग स्वप्न का है, और आत्मा का अंग तो अखण्ड साक्षात स्वरुप है, जो परमधाम में बैठा है। जीव का घर निंद्रा स्वरुप निराकार का ब्रह्माँड है, तो आत्मा का घर पूर्ण जाग्रति वाला दिव्य परमधाम।

ए बानी सुनते जिनको, आवेस न आया अंग ।
सो नहीं नेहेचे वासना, ताको करूं जीव भेलो संग ।।
Eah baani suntey jinko, aavesh na aaya ang |
So nahin nehechey vaasna, taako karun jiv bhelo sang ||
वासना जीव का बेवरा एता, ज्यों सूरज दृष्टें रात ।
जीव का अंग सुपनका, वासना अंग साख्यात ।।
Vaasna jiv ka bevra eta, jyon suraj drustey raat |
Jiv ka ang supan ka, vaasna ang sakhyaat ||
भी बेवरा वासना जीवका, याके जुदे जुदे हैं ठाम ।

जीव का घर है नींद में, वासना घर श्री धाम ।। क. हि. २३/६०-६२

Bhi bevra vaasna jiv ka, yaake judey judey hein thaam |
Jiv ka ghar hei nind mein, vaasna ghar shri dhaam | | Kalash (Hindu.): 23/ 60-62

70 Characteristics of the Aatman of Paramdham

Those whose organs do not reflect with Shri Rajji's Aavesh power upon listening to this Holy Wani, that person shall not qualify as the Soul Aatman of Paramdham. I shall consider that person as a mere Jiva srishti.

The difference between an Aatman and a Jiva is as much as between the brightest day and the darkest night. Jiva's organs are of dream, while those of an Aatman are eternal, and are seated in Paramdham in their true body (par-aatman). The jiva's house is this creation of Nirakaar, which is in fact a kind of Slumber. On the other hand, the Aatman's abode is eternal Paramdham, which is in fully awakened state and is the highest among all heavens.

71 परमधामः नया बनने के या पुराना होने के क्रम से परे।

अक्षरातीत के परमधाम में कालमाया की तरह किसी भी चीज का नया बनने का और पुराना होने का क्रम नहीं है। वहाँ, यहाँ की तरह वृक्षों के पत्तों का बढ़ने का और फिर गिर जाने का क्रम नहीं है। परमधाम का तो एक–एक कण सत्य और नूरी है, जिसमें कालमायिक प्रक्रियाओं का सर्वथा अभाव है।

ना होए नया न पुराना, श्री धाम इन प्रकार ।

घटे बढ़े नहीं पत्र एक, सत सदा सर्वदा सार ।। क. हि. २३/६३

Na hoye naya na puraana, shri dhaam in prakaar |
Ghatey badhey nahi patra eak, sat sada sarvada saar | | Kalash (Hindu.): 23/ 63

71 Paramdham: Beyond All Kaalmayic Processes

Aksharateet Paramdham, unlike Kaalmaya, is beyond all Kaalmayic phenomenons. Nothing is born new or nothing dies. Nothing is subject to aging process. Even the leaves do not grow or fall from the trees. Every particle of Paramdham is divine and conscious in every respect, where there is a total absence of Kaalmayic processes.

72 आत्माओं के संग से जीव को अखण्ड मुक्ति का लाभ होगा।

जिस किसी भी जीव ने आत्माओं का संग किया है, उसकी संगति को मैं खंडित नहीं होने दूँगा। उस जीव को भी सत्य अंग स्वरुप आत्मा के रंगों में रंग दूँगा।

जो किन जीवे संग किया, ताको करूं ना मेलो भंग ।
सो रंगे भेलूं वासना, वासना सत को अंग ।। क. हि. २३/६४

Jo kin jivey sang kiya, taako karun na melo bhang |
So rangey bhelun vaasna, vaasna sat ko ang | | Kalash (Hindu.): 23/ 64

72 Aatmans: The Benefactors for All Jivas

I shall not allow going in vain, the company of those jivas, who have chosen to be with the Atmans. I shall color those Jivas with the colors of eternal truth.

73 अखण्ड प्रेम से रंग जाने के लिए इन्द्रावती जी की संगति आवश्यक

साथ जी! इन्द्रावती के अंग से तारतम का प्रकाश जो पूर्ण रुप से प्रगट हुआ है, वह तो मेरा ही दिया हुआ है। और आगे भी मैं ही उसे इन्द्रावती के द्वारा औरों को दिलवाऊँगा, क्योंकि मैं सदा ही इन्द्रावती के साथ हूँ। मैं इन्द्रावती के अंग संग हूँ। इन्द्रावती मेरा ही अंग है। जो भी अपना अंग इन्द्रावती को सौंपेगा, उसको मैं अखण्ड प्रेम के रंगों में रंग दूँगा।

तारतम तेज प्रकास पूरन, इंद्रावती के अंग ।
ए मेरा दिया मैं देवाए, मैं इंद्रावती के संग ।।
Taartam tej prakaash puran, indrawati ke ang |
Eah mera diya mein devaaye, mein indrawati ke sung ||
इंद्रावती के मैं अंगे संगे, इंद्रावती मेरा अंग ।
जो अंग सौंपे इंद्रावती को, ताए प्रेमें खेलाऊं रंग ।। क. हि. २३/६६
Indrawati ke mein angey sangey, indrawati mera ang |
Jo ang saunpen indrawati ko, taaye premey khelaaun rang ||Kalash (Hindu.):23/66

73 Indrawati's Company: A Must to Receive the Colors of Truth!

The light of Taartam, which has emanated with full glory from the organs of Indrawati, that has been bestowed by me only. Also, in times to come, I shall distribute this among others but only through Indrawati. This is because of the fact that I am always with Indrawti in totality. She is the part of my being. Whoever soul dedicates her organ to Indrawati, I shall color her with the joys of eternal Love.

74 'तारतम का तारतम': परमधाम लीला का निज–बुद्धि युक्त विज्ञान।

जहाँ भी तारतम ज्ञान और जाग्रत बुद्धि साथ में होते हैं, वहाँ पर मेरा आवेश पहले से ही हाजिर होता है। यह बात आप पक्की जान लो। इनके साथ–साथ मेरी पूर्ण आज्ञा (हुकम) और कृपा शक्ति (मेहर) का भी इन्द्रावती के अंग में प्रवेश हुआ है।

मैं सुन्दरसाथ को सब विध के सुख देना चाहता हूँ, और ऐसा करके मैं भी सुख लेना चाहता हूँ। मैं सुन्दरसाथ को केवल सुख देकर ही जगाऊँगा। सिर्फ इसीलिए तो मैंने अपने हाथों इन्द्रावती को 'महामति' और मेरा अपना 'नाम' देकर इतनी सारी बड़ाई दी है।

प्यारे सुन्दरसाथ जी! तारतम का भी जो तारतम है, उसका विस्तार इन्द्रावती के अंग से होना है। तारतम ज्ञान निराकार के पार के पार योगमाया, योगमाया के पार अक्षर धाम, और उससे भी पार परमधाम को दर्शाने वाला जाग्रत बुद्धि युक्त ज्ञान है। तारतम का तारतम परमधाम पच्चीस पक्षों में होने वाली वाहेदत और खिलवत की लीला को प्रकाशित करने वाला निज–बुद्धि युक्त विज्ञान है।

नोटः श्री कुलजम स्वरुप के खिलवत, परिकरमा, सागर, और सिनगार ग्रन्थों में यह 'तारतम का तारतम' छिपा हुआ है। 'तारतम का तारतम' हिरदे में बैठ जाने से तात्पर्य यह है कि रूह को श्री राज जी के हकीकत और मारफत स्वरुप के विज्ञान का ज्ञान हो जाना, एवं धाम, स्वरुप और लीला का प्रत्यक्ष हो जाना। सम्पूर्ण श्री कुलजम स्वरुप की वाणी ही 'अनेक विध का तारतम' है, जो छः चौपाईयों वाले 'व्यष्टि' तारतम का ही 'समष्टि' स्वरुप हैं।

बुध तारतम जित भेले, तित पेहेले जानो आवेस ।
अग्या दया सब पूरन, अंग इंद्रावती प्रवेस ।। क. हि. २३/६७

Budh taartam jit bheley, tit peheley jaano aavesh |
Agya daya sab pooran, ang indrawati pravesh || Kalash (Hindu.): 23/67

तारतम का जो तारतम, अंग इन्द्रावती विस्तार ।
पैए देखावे पार के, तिन पार के भी पार ।। क. हि. २३/७२

Taartam ka jo taartam, ang indrawati vistaar |
Peiye dekhaavey paar ke, tin paar ke bhi paar | | Kalash (Hindu.): 23/72

74 Taartam of Taartam: The Ultimate Science from Shri Rajji's Heart

Aavesh is always present where Taartam Knowledge and Awakened Intellect are together. Moreover, my Hukum (Will) and Grace have also entered within Indrawati.

I want to offer all kinds of happiness to my Sundersaathji. That way, I too want to reap the taste of all those happiness. I shall awaken Sundersaathji only by giving them happiness. Just for that reason, I have bestowed the title of 'Mahaamati' and even my 'Name – Supreme Status' to Indrawati.

Dear Sundersaath Ji! The expanse of 'Taartam of Taartam', i.e., the Elam of Nij-Buddhi, shall occur only through Indrawati. Taartam Knowledge is charged with that Awakened Intellect, which enables one to experience Paramdham, which is beyond the domains of Nirakaar (formless brahmn), eternal yogmaaya and even Akshardham.

Taartam of Taartam is that ultimate science which has emerged from the Self-Intellect (Nij-Buddhi) of Shri Rajji, and which enlightens the

Leelas of Vahedat and Khilwat being played in the twenty-five sectors of Paramdham.

Note:'Taartam of Taartam' is hidden in these four books of Shri Kuljam Swaroop: Khilwat, Parikarma, Sagar and Singaar. Receiving 'Taartam of Taartam' in one's heart means realization of the science of Shri Rajji's most secret swaroop of Hakikat and Marfat, and being in-tune with Paramdham Leela. The entire Shri Kuljam Swaroop Wani is 'Anek Vidh ka Taartam', which means Taartam of different kinds. The Wani is, thus an expanded version (samasti) of the seed (vyasti) Taartam, which is of six chopais.

75 धनी जी की कृपा के आधिक्य से रुहें अपने धाम को देख पायेगी।

हे सुन्दरसाथ जी! यदि आप अपने अन्तर–चक्षु खोल कर देखोगे, तब मैंने आप सब पर जो कृपा की है, उसकी पेहेचान हो जाएगी। और हाँ, यदि आप जानबूझ कर के भी अपने अन्तर–चक्षु नहीं खोलोगे, तो भी मेरी कृपा के आधिक्य से आपको इसकी पेहेचान होकर ही रहेगी। क्योंकि इस कृपा की रोशनी तो इस कालमाया के ब्रह्माँड को फोड़कर अखण्ड में पहुंच गई है।

यह निश्चित जानो कि मेरे हुकम मात्र से आप सब की नजर अपने ही घर परमधाम में बैठ कर इस खेल को देख रही है। और आपके अन्तर–चक्षु खुलने पर, अथॉत फरामोशी का पर्दा हटने पर, आपकी नजर पुनः अपने उसी घर को ही देखेगी।

मैं दया तुमको करी, जो देखो नैना खोल ।

ना खोलो तो भी देखोगे, छाया निकसी ब्रह्मांड फोड़ ।।

Mein daya tumko kari, jo dekho neina khol |

Na kholo to bhi dekhogey, chhaya niksi brahmaand fod ||

ए खेल देख्या बैठे घर, अग्याऐं सैयों नजर ।

जब अंतर आंखां खुली, तब दृष्ट घर की घर ।। क. हि. २३/६९, ७०
Eah khel dekhya beithey ghar, agyaaen seiyon najar |
Jab antar aankha khuli, tab drusht ghar ki ghar | | Kalash (Hindu.): 23/69, 70

75 The Work of Dhaniji's Infinite Abundant Grace

O Sundersaathji! If you open your spiritual eyes, then you shall realize the value of the grace that I have showered upon all of you.

Moreover, even if you neglect my Words knowingly, you shall end up realizing it any way simply because of the infinite abundance of my grace. The light of His grace has already overwhelmed this creation of Kaalmaya and has reached into the eternal domains.

Know for sure that you are enjoying this drama while sitting in Paramdham only through my Hukum. Upon opening up of your spiritual eyes, i.e., upon removal of the veil of ignorance, you shall find your very same Home.

76 स्वप्न के सुख और जाग्रति के सुख का भेद समझकर जागो।

साथ जी! एक सुख जो स्वप्न में लिया जाता है, वह वास्तविक नहीं होता। दूसरा सुख जो जागते हुए लिया जाता है, वह साक्षात होता है। जितना फर्क स्वप्न के सुख में और जागते हुए लिए गए सुख में होता है, उतना ही फर्क ब्रज, रास और श्री देवचन्द्र जी की लीलाओं में और इस जागनी लीला में है। अब इस समय धनी श्री देवचन्द्र जी के तन की लीला भी ब्रज की लीला की तरह स्वप्न की ही है।

और इन्द्रावती के तन से हुई लीला जाग्रति पूर्ण और परमधाम के सुखों वाली है।

एक सुख सुपनके, दूजे जागते ज्यों होए ।
तीन लीला पेहेले ए चौथी, फरक एता इन दोए ।। क. हि. २३/७५
Eak sukh supanke, dujey jaagtey jyon hoye |
Tin leela pehele eah chauthi, farak eta in doi ||Kalash (Hindu.): 23/75

76 Compare the Joy in Dreaming State With the Joy in Waking

Saath ji! Realize the difference between the joy in dreaming state and the joy in waking state, and then wake up to your ultimate reality. The joy experienced in dreaming state is unreal, whereas the joy experienced in waking state is real and face-to-face.

There is exactly the same difference between the joy of Brij, Raas and Dhani Shri Devchandraji's leelas and the joy of the present Jaagni leela. In other words, the first three leelas are comparable with the experiences of dream, whereas Shri Indrawati's Jaagni leela is full of awakened joy of Paramdham.

77 स्वप्न में पड़ने वाली मार से जागनी होगी। कैसे?

जिस तरह से स्वप्न में हम देखते हैं कि लोग आपस में लड़कर मर रहे हैं, तब हमें उसका दुःख नहीं होता। लेकिन जैसे ही स्वप्न में हम देखते हैं कि कोई हमें मार रहा है, तो डर के मारे हम तुरन्त ही चौंक उठते हैं।

साथ जी देखिये, स्वप्न में मार तो पड़ रही है हमारे स्वप्न के तन को, लेकिन चौंक उठता है हमारा असल तन! ठीक उसी तरह से इस झूठे तन में जीव का संग करके बिराजमान आत्मा को तारतम वाणी की मार से माया और घर की पेहेचान हो जाने पर आत्मा का मूल परआत्म तन चौंक उठेगा।

लेकिन जिस जीव का घर ही माया है, उसको अखण्ड या परमधाम की वाणी का घाव लग ही नहीं सकता। उसे इस वाणी का दर्द नहीं होता। इसलिए वह जाग नहीं पाता। आत्माओं का मूल उनकी परआत्म है, और जीव का मूल स्वप्निल माया। कोई भी अपना मूल घर नहीं छोड़ता।

देखो सुपनमें कई लड़ मरें, सबे आपे पर ना दुखात ।
जब देखें मारते आपको, तब उठे अंग धुजात ।।
Dekho supan mein, kai lad marein, sabey aapey par na dukhaat |
Jab dekhein maartey aapko, tab uthey ang dhujaat ||
वासना उतपन अंग थें, जीव नींद की उतपत ।
कोई ना छोड़े घर अपना, या बिध सत असत ।। क. हि. २४/२५, २६
Vaasna utpan aang thein, jiv nind ki utpan |
Koi na chhodey ghar apna, ya bidh sat asat || Kalash (Hindu.): 24/25, 26

77 Jaagni Through Taking Beatings in the Dream!

Saath ji! Imagine yourself in a dream in which people are fighting with each other. Mostly we do not experience much pain unless we see someone who we know. However, as soon as we see that someone is attacking us, then at the peak of our fear, we jump from our bed!

Saath ji! Just think. In dream, the body that was being attacked was unreal. But still, the real body reacted and jumped from the bed. Exactly the same way, Atman, which has joined the company of

a Jiva in this false body, shall wake up in her true divine form (mool par-atman swaroop) upon realizing the realities of the Maaya and the Brahmn through the Taartam Wani.

But, Maaya is Jivas's house. Therefore, the Wani of Paramdham does not pierce through his heart. He does not feel the pain of Wani. Therefore, he refuses to wake up. The roots of atmans are in Par-atmans, whereas the roots of the Jivas are in dream-like Maaya. No one lets go his original home!

78 ब्रह्माँड की आयु कितनी? सपने के समय जितनी!

यह चौदह लोकों का सम्पूर्ण ब्रह्माँड अक्षर ब्रह्म के मन स्वरुप अव्याकृत का सपना है। आप कहोगे कि सत–सरुप अक्षर ब्रह्म को स्वप्न कैसे आ सकता है? तो साथजी! इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार हैः

अनगिनत पत्तों की थापी में एक तीर को खींच कर छोड़ने से वे सभी पत्ते एक पल की चौथाई वाले भाग में ही छिद जाते हैं। लेकिन सोचिए, जितनी देर पहले पत्ते को छेद कर तीर को दूसरे पत्ते में जाते हुए लग सकती है, इतने से कम समय के अन्दर तो चौदह लोकों वाले अनगिनत स्वप्निल ब्रह्माँड पैदा हो जाते हैं।

साथ जी! हकीकत में तो आत्माओं को इस खेल में आए हुए इतनी सी भी देर हुई हो, ऐसा कहा नहीं जा सकता। तो फिर एक ब्रह्माँड के समय की बारिकी के बारे में क्या कहूँ? अरे! 'स्वप्न हुआ' ऐसा भी कैसे कहा जा सकता है? लेकिन करुँ तो भी क्या करुँ? इस असत्य झूठे संसार में सत्य अखण्ड धाम की बात समझाने के लिए मेरे पास और कोई दृष्टांत ही नहीं है।

सुपन सत सरूप को, तुम कहोगे क्यों कर होए ।
ए बिध सब जाहेर करूं, ज्यों रहे न धोखा कोए ।।

Supan sat saroop ko, toom kahogey kyon kar hoi |
Eah bidh sab jaaher karun, jyon rahey na dhokha koi ||

एक तीर खेंच के छोड़िए, तिन बेधाए कई पात ।

सो पात सब एक चोटें, पाव पल में बेधात ।।

Eak teer khench ke chhodiye, tin bedhaaye kai paat|
So paat sab eak chotein, paaun pal mein bedhaat ||

पर पेहेले पात एक बेध के, तो दूजा बेधाए ।

यामें सुपन कई उपजें, बेर एती भी कही न जाए ।। क. हि. २४/२८-३०

Par pehele paat eak bedh ke, to dooja bedhaaye |
Yaamein supan kai upjein, ber eati bhi kahi na jaaye || Kalash (Hindu.): 24/28-30

78 Age of this Creation: Just As Long As the Length of a Dream!

This entire creation of the fourteen worlds is the dream of Avyakrit, the mind of Akshar Brahmn. You may argue: How can the eternal Akshar Brahmn have a false dream? Saath Ji! Here is the clarification:

Consider a thick pile of leaves stacked one on the top of the other. Now secure them firmly together at the two ends and shoot an arrow from the bow. You will see that the arrow passes through the entire stack in less than one-fourth of a moment. Now imagine, how much time would have elapsed for an arrow to pass from the first leaf to the next in that pile? Saath Ji! Innumerable creations of forteen worlds are created in such an insignificant time!

Saath Ji! In reality, it would be inappropriate to tell that even that much small time has elapsed since the Souls of Paramdham have arrived in this drama! Then what can I say about the life span of

one creation? Oh! It even sounds completely inappropriate for me to say that 'a dream had occurred.' But what else would I have done? To explain the reality of Paramdham, I had no other choice but to use the example of this world!

79 निराकार के पार के पार की अखण्ड वाणी द्वारा वैराट बस होगा।

मैं यह वाणी इसलिए जाहिर कर रही हूँ, क्योंकि सबको एक रस करना है। अर्थात् , सबको एक पारब्रह्म का ज्ञान करवाना है। पार का ज्ञान और अखण्ड सुखों की महिमा दर्शाये बिना यह ब्रह्माँड बस में आने वाला नहीं है, अर्थात् एक रस नहीं होने वाला। ब्रह्माँड को इस ज्ञान से बस किए बिना यह अखण्ड होगा ही कैसे?

हम जाहेर होए के चलसी, सब भेले निज घर ।
वैराट होसी सनमुख, एक रस सचराचर ।।
Hum jaaher hoye ke chalsi, sab bheley nij ghar |
Veiraat hosi sanmukh, eak rus sachraachar ||
ए बानी तो करूं जाहेर, जो करना सबों एक रस ।
वस्त देखाए बिना, वैराट न होवे बस ।।
Eah baani to karun jaaher, jo karna sabon eak rus |
Vast dekhaaye bina, veiraat na hovey bas ||
वैराट बस किए बिना, क्यों कर होए अखंड ।
हम खेल देख्या इछाए कर, सो भंग ना होए ब्रह्मांड ।। क. हि. २३/७८, ८३, ८४
Veiraat bas kiye bina, kyon kar hoye akhand |
Hum khel dekhya itchhaaye kar, so bhang na hoye brahmaand || Kalash (Hindu.): 23/78, 83,84

79 The Veiraat Shall be Reclaimed Through the Wani of the Beyond.

I am disclosing this Wani because I want to unify the entire humanity by bestowing the Taartam knowledge of One ParBrahmn to all. Unless I share this Knowledge of the Beyond and the glory of the Blissful Leela of Paramdham, this world is not going to be convinced to come on One Path. And yes, how is the Universe going to receive eternity without this Knowledge?

80 आगे चलकर इस अखण्ड वाणी का बड़ा विस्तार होगा।

यह अति गुझ वाणी मैंने आप सुन्दरसाथ के समझने के वास्ते ही संक्षिप्त में कही है। लेकिन उसमें तो और भी बहुत सारी बातें हैं। इस का आगे चलकर बहुत बड़ा सुव्यवस्थित रुप से विस्तार होगा, जिस के माध्यम से सारे संसार के तनों में मेरी जाग्रत बुद्धि का प्रवेश करवाऊँगी। इस के बाद सारा झूठा ब्रह्माँड मेरे नूर के आवेश से अखण्ड हो जाएगा।

अनेक आगे होएसी, इन बानी को विस्तार ।
ए नेक कह्या मैं करने, अखंड ए संसार ।।
Anek aagey hoyesi, in baani ko vistaar |
Eah nek kahya mein karney, akhand eah sansaar ||
ए बानी कही मैं जाहेर, सो विस्तरसी विवेक ।
मैं गुझ कही है साथ को, पर सो है अति विसेक ।।
Eah baani kahi mein jaaher, so vistarsi vivek |
Mein guz kahi hei saath ko, par so hei ati visek ||
संसार सब के अंग में, मेरी बुध को करूं प्रवेस ।
असत सब होसी सत, मेरे नूर के आवेस ।। क. हि. २३/८५, ८६, ८७

Sansaar sab ke aang mein, meri budh ko karun pravesh |

Asat sab hosi sat, merey noor ke aavesh ||Kalash (Hindu.): 23/85, 86,87

80 In the Future, This Eternal Wani Shall Expand Largely.

O Sundersaath Ji! I have told this esoteric Wani very briefly only so you may understand its essence quickly. There are many more untold details to it. In the future, there shall be systematic expansion of this Wani. As a result, the Awakened Intellect shall enter within the hearts of all the worldly Jivas. Then, through the Aavesh power of my Noor (divinity), the entire false world shall receive eternity.

81 अक्षर ब्रह्म की बड़ाई और ब्रह्मसृष्टि की नजर की पहुँच

अक्षर ब्रह्म की इच्छा शक्ति अखण्ड है, जिससे यह नित्य प्रति नये नये खेल खेलते रहते हैं। इस अक्षर ब्रह्म द्वारा एक पल भर में कालमाया और योगमाया के कँई ब्रह्माँड उपजते हैं। उतने ही समय में कालमाया के कँई ब्रह्माँड खत्म हो जाते हैं, या उनके चित्त सबलिक में अखण्ड हो जाते हैं। अक्षर के उस धाम में एक पल भी व्यतित नहीं होता, और यहाँ कँई कल्पांत जितना समय बीत जाता है। इसलिए ऐसा कहा जा सकता है कि अक्षर द्वारा एक पल में कँई ब्रह्माँड बन कर मिट जाते हैं।

अब इस जागनी के ब्रह्माँड में जाग्रत होकर हम विविध प्रकार के अनेक ब्रह्माँड, जो अक्षर के एक पल के चौथाई वाले हिस्से में बन जाते हैं, इनको देख सकते हैं, और ब्रह्माँडों की उत्पत्ति की विधि देख पाते हैं।

ए लीला है अति बड़ी, दृष्टें उपजे ब्रह्मांड ।

ए खेल खेले नित नए, याकी इछा है अखंड ।।

Eah leela hei ati badi, drustein upjey brahmaand |

Eah khel kheley nit naye, yaaki itchha hei akhand | |

ताथें कालमाया जोगमाया, दोऊ पल में कई उपजत ।

नास करे कई पल में, या चित्त थिर थापत ।।

Tathein kaalmaaya jogmaaya, dou pal mein kai upjat |
Naash karey kai pal mein, ya chitt thir thaapat | |

तहां एक पलक न होवहीं, इत कई कल्प वितीत ।

कई इंड उपजे होए फना, ऐसे पल में इन रीत ।।

Tahaan eak palak na hovhin, it kai kalp viteet |
Kai ind upjey hoye fana, aisey pal mein in reet | |

जागते ब्रह्मांड उपजे, पाव पल में अनेक ।

सो देखे सब इत थें, बिध बिध के विवेक ।। क. हि. २४/१५, १२-१४

Jaagtey brahmaand upjey, paav pal mein anek |

So dekhey sab it thein, bidh bidh ke vivek | | Kalash (Hindu.): 24/15, 12-14

81 Brahmn Srishtis: The Real High- Tech People!

Akshar Brahmn's power of desire is eternal in nature. Therefore, He always keeps on playing new dramas. In His single moment, innumerable Brahmands of Yogmaaya and Kaalmaya are created. Countless universes of Kaalmaya are dissolved in that insignificant period or are made permanent in His memory (Sablik). Not even a moment passes in His Abode, but here, time equivalent to countless Kalpantas (one Kalpant is four YugasX1000) elapses in Akshar's one moment!

Therefore, it is said that countless universes are created and dissolved in Akshar's one moment.

Now, in this Jaagni Leela, we, the Brahmn Srishtis can see the entire process of creation and dissolution that goes on in Akshar's heart due to Dhaniji's Awakened Intellect and Taartam.

Shri Rajji has installed a slow-motion technology within the Brahmn srishti's hearts that allows them to see the process of creation and dissolution of many brahmands! Thus, such realized Sundersathjis are the true high-tech people!

82 जाग्रत निज–बुद्धि और नूर–तारतमः दो अखण्ड फल

अक्षर की मूल जाग्रत बुद्धि अब मेरे पास आ गई है। पहले वह अक्षर के हृदय स्वरुप योगमाया के ब्रह्माँड में रास लीला में मग्न रहती थी। इससे पहले वह हमारे धनी जी के चरणों में छिपी हुई थी। ब्रज और रास में जब हम खेले थे, तब अक्षर की बुद्धि रास लीला की मस्ती में डूबी थी। अब इस जागनी ब्रह्माँड में वह मेरे उदर में आ बैठी है और जाहिर हो गई है।

साथ जी! अपने पिया का संग होने से मुझ इन्द्रावती के उदर से दो फल पैदा हुएः एक तो जाग्रत निज–बुद्धि और दूसरा नूर तारतम। यह दोनों ही स्वरुप – नूर तारतम और जाग्रत–निजबुद्धि – यह एक दूसरे से कभी भी अलग नहीं हो सकते हैं। इसलिए अब सुन्दरसाथ भी इन दोनों को अपनी आत्म–चक्षु से अपने सन्मुख देखेंगे।

अब हम 'जाग्रत निज–बुद्धि' और 'नूर–तारतम' दोनों को प्रकाशित करके हमारे घर परमधाम जाएँगे। उसके बाद यह जाग्रत बुद्धि वैकुण्ठ में जाकर विष्णु भगवान को बहुत ही अच्छी तरह से तारतम से ज्ञात करवाएगी, जिससे वे तत्काल जाग्रत हो जाएँगे।

तब इस दृश्य–जगत के जीवों की जाहिरी आँखें बंद हो जाएँगी और पल भर में महाप्रलय हो जाएगी।

बुध मूल अछर की, आई हमारे पास ।

जोगमाया को ब्रह्मांड, तिन हिरदे था रास ।।

Budh mool akshar ki, aayi hamaarey paas |
Jogmaaya ko brahmaand, tin hirdey tha raas ||

ए हुती पिया चरने, दिन एते गोप ।

वचन कोई कोई सत उठे, सोए करूं क्यों लोप ।।

Eah huti piya charney, din etey gop |
Vachan koi koi sat uthey, soeah karun kyon lop ||

बृज रास में हम रमे, बुध हती रास में रंग ।

अब आए जाहेर हुई, इत उदर मेरे संग ।। क. हि. २३/८८, ८९, ९०

Brij raas mein hum ramey, budh hati raas mein rang |

Ab aaye jaaher huyi, it udar mere sang || Kalash (Hindu.): 23/88, 89,90

इंद्रावती पिया संगे, उदर फल उतपन ।

एक निज बुध अवतरी, दूजा नूर तारतम ।।

Indrawati piya sangey, udar fal utpan |
Eak nij budh avatari, duja noor taartam ||

दोऊ सरूप प्रगटे, लई मिनों मिने बाथ ।

एक तारतम दूजी बुध, देखसी सनमुख साथ ।। क. हि. २३/९१, ९२

Dou saroop pragtey, lai minon miney baath |

Eak taartam dooji budh, dekhsi sanmukh saath || Kalash (Hindu.): 23/91, 92

हम बुध नूर प्रकास के, जासी हमारे घर ।

बैकुंठ विष्णु जगावसी, बुध देसी सारी खबर ।।

Hum budh noor prakaash ke, jaasi hamaarey ghar |
Baikunth Vishnu jagaavsi, budh desi saari khabar ||

खबर देसी भली भांतें, विष्णु जागसी तत्काल ।

तव आवसी नींद इन नैनों, प्रलेय होसी पंपाल ।। क. हि. २३/९७, ९८

Khabar desi bhali bhaanten, Vishnu jaagsi tatkaal |

Tab aavsi nind in neinon, praley hosi panpaal ||Kalash (Hindu.): 23/97,98

82 Two Eternal Fruits: Awakened-Self Intellect and Noor Taartam

O Saath Ji! Now, the original Awakened Intellect of Akshar has come in our hands. Last, she was fully engaged in the play of Raas Leela, which took place in Keval Brahmn in Akshar's heart. Originally, she was hidden in the lotus feet of our Lord Piyuji. When we actually played Brij and Raas Leela, Akshar's intellect was immersed in those leelas. Now, in this Jaagni Leela, Akshar's intellect entered in my womb and has already been born.

Saath Ji! Due to the company of my Darling Lord, Indrawati's soul has delivered two eternal twins - Awakened – self –Intellect and Noor Taartam. Both of them are inseparable. Now, all Sundersathjis shall also be able to see them face-to-face with their inner-eyes.

Now, we all Brahmn Srishtis shall return to our Abode Paramdham after enlightening both the Awakened – self –Intellect and the Noor Taartam in this world. The Awakened Intellect shall cause the waking of Lord Vishnu in Veikuntha through Taartam knowledge. He shall wake up instantly upon listening to Taartam. At that point, the material vision of the worldly Jivas shall be shut close and there shall be Final Dissolution.

83 पंच वासनाओं की जागनी होने पर अक्षर ब्रह्म की जागनी होगी।

साथ जी! अक्षर ब्रह्म अपनी इच्छा से क्षर ब्रह्माँड में चौदह लोंकों वाले अनेकों खेल की रचना करके फिर उसका प्रलय कर देने की लीला करते रहते हैं। अक्षरब्रह्म की वासना, जो पाँच रत्नों के रुप में कही गई है, वे निराकार के पार बेहद का अखण्ड ज्ञान लेकर इस संसार में आई है। इन पाँच रत्नों में हैः

1. श्रीमद्भागवत का ज्ञान लाने वाले सुकदेव,
2. चौदह लोकों का खेल चला कर पाताल से वैकुण्ठ तक चौकी करने वाले महाविष्णु भगवान,
3. ज्ञान के चार स्तम्भ स्वरुप सनकादिक,
4. अखण्ड ब्रज लीला को अपने हृदय में ग्रहण करने वाले महादेव जी, और
5. निराकार के पार के विशाल वचन लाने वाले कबीर जी।

इनके सिवा दूसरा कोई भी इस मोह सागर की पाल को पार नहीं कर पाया है। इन पांचों की पहूंच अखण्ड योगमाया के इस ब्रह्माँड तक है, जहाँ से क्षर जगत के बनने मिटने की लीला होती है।

अक्षरब्रह्म की पांचों वासनायें जब 'जाग्रत बुद्धि' को लेकर वापिस अपने घर लौटेंगी, तब इनकी बुद्धि 'नूर–तारतम' के विशेष विचार से युक्त होगी। इससे अक्षर ब्रह्म की फरामोशी उड़ जाएगी और उसे अपार आनन्द होगा। इस तरह से अक्षर की बुद्धि में आ जाने से ब्रज, रास और जागनी यह तीनों लीलाएँ अखण्ड हो जाएँगी। फिर ऐसी उच्च बुद्धि को प्राप्त कर लेने वाले अक्षर के दिल से येह सार रुप लीलाएं एक पल के लिए भी नहीं भूलेंगी। अब उसे हमारे घर परमधाम के अन्दर होने वाली इश्क आनंद की लीला की पूर्ण सुध इस 'नूर–तारतम' से हो जायेंगी।

अछर केरी वासना, कहे जो पांच रतन ।

कागद ल्याया बेहद का, सुकदेव मुनी धंन धंन ।।

Akshar keri vaasna, kahey jo paanch ratan |
Kaagad lyaaya behad ka, sukdev muni dhan dhan ||

कबीर साख जो पूरने, ल्याया सो वचन विसाल ।

प्रगट पांचो ए भए, दूजे सागर आड़ी पाल ।।

Kabir saakh jo poorney, lyaaya so vachan vishaal |
Pragat paancho eah bhaye, doojey saagar aadi paal ||

खबर देसी भली भांतें, विष्णु जागसी तत्काल ।

तब आवसी नींद इन नैनों, प्रलेय होसी पंपाल ।।

Khabar desi bhali bhaanten, Vishnu jaagsi tatkaal |
Tab aavsi nind in neinon, praley hosi panpaal ||

अछर खेल इछाए कर, छर रच के उड़ात ।

वासना पांचों पोहोंचे इत, ए सत मंडल साख्यात ।।

Akshar khel itchhaye kar, chhar rach ke udaat |
Vaasna paanchon pohonchey it, eah sat mandal saakhyaat ||

पांचो बुध ले वले पीछे, तामें बुध विसेक विचार ।

अछर आंखां खोलसी, होसी हरख अपार ।।

Paancho budh ley valey pichhey, taamein budh vishek vichaar |
Akshar aankhaan kholsi, hoshi harakh apaar ||

लीला तीनों थिर होएसी, अखंड इन प्रकार ।

निमख एक ना विसरसी, रेहेसी दिल में सार ।।

Leela tinon thir hoyesi, akhand in prakaar |
Nimakh eak na visarsi, reheshi dil mein saar ||

मेरी संगते ऐसी सुधरी, बुध बड़ी हुई अछर ।

तारतमें सब सुध परी, लीला अंदर की घर ।। क. हि. २३/९३, ९६, ९८-१०१, १०३

Meri sangatey aisi sudhri, budh badi huyi akshar |
Taartamein sab sudh pari, leela andar ki ghar || Kalash (Hindu.): 23/93, 96,18-101,103

83 Jaagni of Akshar Brahmn Through His Five Jewels

Saath Ji! According to His desire, Akshar Brahmn creates and dissolves the play of fourteen worlds in this Kshar Brahmaand. The five jewels of Akshar have come to this world with the knowledge of eternity that lies in the Behad domain beyond Nirakaar. Among them are:

1. Sukdevji, who brought the knowledge of Shri Mad Bhagvatam;
2. Lord Maha Vishnu, who is the operator of this play and who is providing security to all the fourteen worlds from Veikuntha to Pataal;
3. Sankadik, the four pillars of Vedic knowledge;
4. Mahadevji, who has absorbed the eternal Brij leela in his heart; and
5. Kabirji, who brought the great knowledge of the Behad domain that lies beyond Nirakaar.

Except these five, none has crossed the boundaries of this Ocean of Moha (Ignorance). Their vision reaches upto the domain of Behad Yogmaaya, from where the process of creation and dissolution of Kshar Brahmaand takes place.

When these five jewels of Akshar shall return to their abode with Dhaniji's Awakened Intellect, their intellect shall be empowered with 'Noor Taartam.' Seeing this, Akshar Brahmn's ignorance shall disappear and he shall experience an abundant of joy. This way, simply by the virtue of

Akshar becoming aware of the leelas of Brij, Raas and Jaagni, all these leelas shall attain permanency. Because of this acquired higher intellenge, Akshar shall never forget these leelas even for a moment. Now, He shall even know the Paramdham's Leela of Ishak through this Noor Taartam.

84 आतम को धनी की शक्तियाँ मिलने से जागनी का बड़ा आनन्द

जब रूह के अंदर 'जाग्रत निज–बुद्धि' का 'नूर–तारतम' से मिलान होता है, और धनी का हुकम भी उनके साथ जूड़ जाता है, तब उनके जोश युक्त मेहर के सागर का प्रबल प्रवाह किसी के भी रोकने से रुकता नहीं।

यह 'नूर–तारतम' तो अक्षर के धाम के भी पार से आया है। जिसने अपने मूल घर परमधाम से आकर वहाँ की सारी हकीकत जाहिर की है। इसने हमको यहाँ पर बैठे–बैठे ही परमधाम दिखाया है, जिसके सुखों का कोई पारावार है ही नहीं। यहाँ आकर पिया जी ने अपनी सुन्दरी श्री श्यामा जी के तन में बैठ कर विस्तार से पर–आत्म के विलास की लीला दिखाई है। पिया जी ने तारतम ज्ञान रुपि बीज के दो–एक वचन मेरे अन्तःकरण रुपि खेत में बो कर मुझे जगाया। इससे ऐसा सम्बल अंकूर निकला है कि इसे देख कर सब कोई आनन्द में झूम रहे हैं।

निज बुध भेली नूर में, अग्या मिने अंकूर ।
दया सागर जोस का, किन रहे न पकर्‌यो पूर ।।
Nij budh bheli noor main, agya miney ankoor |
Daya saagar josh ka, kin rahey na pakryo poor| |
ए नूर आगे थें आइया, अछर ठौर के पार ।
ए सब जाहेर कर चल्या, आया निज दरबार ।।

Eah noor aagey then aaiya, akshar thaur ke paar |
Eah sab jaaher kar chalya, aaya nij darbaar ||

वतन देखाया इत थें, सो केते कहूं प्रकार ।

नूर अखंड ऐसा हुआ, जाको वार न काहूं पार ।।

Vatan dekhaaya it thein, so ketey kahoon prakaar |
Noor aakhand aisa huaa, jaako vaar na kahoon paar ||

किए विलास अंकूर थें, घर के अनेक प्रकार ।

पिया सुंदरबाई अंग में, आए कियो विस्तार ।।

Kiye vilaas ankur thein, ghar ke anek prakaar |
Piya sunderbaai ang mein, aaye kiyo vistaar ||

ए बीज वचन दो एक, पिया बोए कियो प्रकास ।

अंकूर ऐसा उठिया, सब किए हाँस विलास ।। क ह्रि. २४/१, ३४-३७

Eah bij vachan do eak, piya boye kiyo prakaash |
Ankur aisa uthiya, sab kiye haansh vilaas || Kalash (Hindu.): 24/1, 34-37

84 The Joy of Jaagni Coming from the Source!

When Awakened-Self-Intellect meets with the Divine Taartam knowledge and Hukum joins them, then the powerful flow of Dhaniji's Josh-filled Ocean of Grace cannot be stopped by anyone.

This 'Noor Taartam' has come from Paramdham that is beyond Akshardham. It has disclosed all facts regarding those Abodes and shown us our Home right from here. It has brought limitless joy to us. Our Piyuji has made His Bride Shri Shyamaji's heart His abode and has shown the Blissful leela of Par-atmans. He has planted one or two seed Words of Taartam Knowledge in the **farm** of my heart and has awakened me. Now, everyone is dancing with immense joy upon seeing the powerful **sprouts** that have emergeded as a result.

85 रूह की बड़ाई : सुन्दरसाथ जी को मिला दिव्य खुर्दबीन

सुन्दरसाथ जी की महिमा तो अति भारी है। धनी की जाग्रत बुद्धि और तारतम ज्ञान से सुसज्जित सुन्दरसाथ जी यहाँ बैठे–बैठे ही ब्रह्माँडों की उत्पत्ति की विधि, अक्षर का धाम और इसके अन्दर की हकीकत भी देख पाते है। परमधाम के सभी सुखों को धनी उनके हाथों में दे कर उन्हीं के हाथों से सारे संसार के जीवों को अखण्ड मुक्ति दिलायेंगे।

दुल्हिन आत्मा के साथ श्री राज जी का जोश, नूर तारतम ज्ञान, हुकम, जाग्रत–बुद्धि और मेहर इकट्ठे हो जाने से वह अक्षर ब्रह्म को भी परमधाम के अखण्ड सुखों का साक्षात अनुभव करवाने में सक्षम बन गइँ है।

श्री महामति जी कहती हैं कि हे सुन्दरसाथ जी! परमधाम के सभी सुखों को अब मैं तुम्हारे हाथ में देती हूँ। अब चौदह लोकों के जीवों को तुम्हारे ही हाथों से अखण्ड मुक्ति मिलनी है।

तुम दुख पाया मुझे सालहीं, अब सुख सब तुम हस्तक ।
दिया तुमारा पावहीं, दुनियां चौदे तबक ।।
Toom dukh paaya muzey saalhin, ab sukh sab toom hastak |
Diya tumaara paavhin, duniyaan chaudey tabak | |
ए मंडल है सदा, जाए कहिए अछर ।
जाहेर इत थें देखिए, मिने बाहेर थें अंतर ।।
Eah mandal hei sada, jaaye kahiye akshar |
Jaaher it thein dekhiye, miney baaher thein antar | |
इत भेले रूह नूर बुध, और अग्या दया प्रकास ।
पूरों आस अछर की, मेरा सुख देखाए साख्यात ।। क. हि. २४/६, १६, ३२
It bheley rooh noor budh, aur agya daya prakaash |
Pooron aash akshar ki, mera sukh dekhaaye saakhyaat | | Kalash (Hindu.): 24/6, 16,32

85 The Glory of Sundersathjis

The glory of Sundersaath Ji is beyond limit. The Sundersaath Ji who are equipped with Dhaniji's Awakened Intellect and Taartam Knowledge are capable of visualizing the process of creation of billions of universes, the Abode of Akshar and its inner facts while sitting in this world. (Shri Rajji has installed the 'Noori Telescope' that is extra-ordinarily superior to the world's best telescope, within the Brahmn srishti's hearts!)

Now, Dhaniji shall besow all the happiness of Paramdham in their hands and empower them to share among all so the worldly Jivas may receive the fruits of eternal freedom.

Upon the joining of Shri Rajji's Josh, Noor Taartam Knowledge, Hukum (Will), Awakened Intellect and Grace together, His Bride (Brahmn Srishti Sundersaathji) has been empowered even to enable Akshar Brahmn to receive the eternal joy of Paramdham.

Shri Mahaamati ji says, "O Sundersaath Ji! Now, I am ready to handover all the keys to eternal happiness to you. Only through your hands, the Jivas of these fourteen worlds shall receive eternal freedom."

साथ जी! सुख के सागर परमधाम में आप सब एक साथ फरामोशी का खेल देखने बैठे हैं। और अब सभी सुन्दरसाथ एक साथ मिल करके ही जाग्रत होंगे। आप सभी ने एक ही खेल तो देखा है। लेकिन तुम में से हर एक की बातें अलग–अलग और वैविघ्यता पूर्ण होगी। अब आप सब जागनी रास के रंग में खेल कर एक साथ जाग्रत हो जाईए।

साथ जी! अन्ततः हम और तुम इस संसार में जाहिर होकर, एक साथ मिलकर अपने निज घर चलेंगे। सबसे पहले सब सुहागिनी अपने मूल मिलावे में अपने धनी के चरणों में जाग्रत होंगी। जागनी की ज्योति के बेहिसाब नूरी प्रकाश से संसार रुपि स्वप्न उड़ जाएगा। अक्षर ब्रह्म भी अपने धाम में जाग जाएगा। तब सम्पूर्ण क्षर ब्रह्माँड अक्षर में एक रस होकर अखण्ड होगा। हमारे दर्शन के लिए सब कोई दौड़ते हुए आएँगे।

साथ जी! मेरे गुन, अंग, इन्द्रियों का अखण्ड आकार प्रथम बहिश्त में होगा। मेरे उस नूरी स्वरुप की पूजा बाकी की सातों बहिश्तों वाले जीव करेंगे। मेरी 'जाग्रत बुद्धि' अक्षर ब्रह्म की पंचवासनाओं को जगाएगी, तो उनको भी इस संसार की जागनी लीला की याद बनी रहेगी। सारे वैराट के अंग स्वरुप जीवों के अन्दर 'जाग्रत बुद्धि' और 'नूर–तारतम' फैल जाएँगे। इस तरह से अक्षर ब्रह्म के हृदय में और भी अधिक आनन्द बढ़ेगा।

पौढ़े भेले जागसी भेले, खेल देख्या सबों एक ।
बातां करसी जुदी जुदी, बिध बिध की विसेक ।।
Paudhey bheley jaagsi bheley, khel dekhya sabon eak |
Bataan karsi judi judi, bidh bidh ki bisek | |
साथ को इन जिमी के, सुख देने को हरख अपार ।
रासमें रंग खेल के, भेले जागिए निरधार ।। क. हि. २३/२९, ३१
Saath ko in jimi ke, sukh dene ko harakh apaar |

Raas mein rang khel ke, bheley jaagiye nirdhaar || Kalash (Hindu.): 23/29, 31

हम जाहेर होए के चलसी, सब भेले निज घर ।

वैराट होसी सनमुख, एक रस सचराचर ।।

Hum jaaher hoye ke chalsi, sab bheley nij ghar |
Veiraat hosi sanmukh, eak rus sacharaachar ||

जब हम जाहेर हुए, सुध होसी संसार ।

दुनियां सारी दौड़सी, करने को दीदार ।।

Jab hum jaaher huye, sudh hosi sansaar |
Duniyaan saari doudsi, karney ko didaar ||

अव्वल सब सोहागनी, एक ठौर पिया पास ।

सबों सुख होसी सोहागनी, रंग रस प्रेम विलास ।।

Avval sab sohaagani, eak thaur piya paas |
Sabon sukh hosi sohaagani, rang rus prem vilaas ||

जो जोत होसी जागनी, ए नूर बिना हिसाब ।

लोक चौदे पसरसी, तब उड़ जासी ए ख्वाब ।। क. हि. २३/७८, ७९, ८१, ८२

Jo jot hosi jaagni, eah noor bina hisaab |

Lok chaudey pasarsi, tab ood jaasi eah khwaab || Kalash (Hindu.): 23/78, 79,81,82

मेरे गुन अंग सब खड़े होसी, अरचासी आकार ।

बुध वासना जगावसी, तिन याद होसी संसार ।।

Merey gun ang sab khadey hosi, archaasi aakaar |
Budh vaasna jagaavsi, tin yaad hosi sansaar ||

बुध तारतम लेयके, पसरसी वैराट के अंग ।

अछर हिरदे या बिध, अधिक चढ़सी रंग ।। क. हि. २३/१०४, १०५

Budh taartam leyke, pasarsi veiraat ke ang |
Akshar hirdey ya bidh, adhik chadhsi rang || Kalash (Hindu.): 23/104,105

Saath ji! All of you are seated in Paramdham, which is the ocean of eternal happiness, to see the drama of faramosi (distraction from the reality). Moreover, all of you shall return to your fully awakened state only together (not one by one). All of you have seen only one drama. However, upon waking, each one of you shall tell a very different and diverse story depending on the episode you have experienced. Now, all of you, please play the colorful sport of Jaagni Raas and wake up.

Saath Ji! Ultimately, you all and I shall be known to all in this world. Thereafter, we shall return to our Original Abode. First of all, all Brides shall wake up in Mool Milawa in their Lord Dhani's lotus feet. The dream world shall disappear in the floods of light emanating from the flame of Jaagni. Akshar Brahmn shall also wake up in His Abode. Then, this entire creation of Kshar Purusha shall merge in Akshar and attain eternity. All shall come rushing for our Darshan.

Saath Ji! My noori (eternal) body with noori (divine) attributes, and work and sense organs shall be in the first Bhihist. The Jivas in the seven Bhihists (Mukti-Sthan) shall worship that noori body. My Awakened Intellect shall cause awakening of Akshar Brahmn's Panch-Vasnas (the five great souls). Then, the memories of Jaagni Leela shall become permanent in their mind. The Lord's Awakened Intellect and Noor Taartam shall

spread within all Jivas, which are like organs of the entire Veiraat (Kshar Creation). This way, Akshar Brahm shall experience even more joy.

श्री कुलजम स्वरूप के अंग रूप श्री कलश *सार दर्शन ग्रंथ सम्पूर्ण ।।*

||*Shri Kalash Saar Darshan Granth Sampurna*||

श्री कुलजम स्वरुप (कु. स्व.) संक्षिप्त परिचय

श्री कुलजम स्वरुप (कु. स्व.) साक्षात पारब्रह्म अक्षरातीत, जो सच्चिदानन्द हैं, जो समस्त सृष्टि के जीवों के एक मालिक हैं, उनका वाडंग्मय (वाणी) स्वरुप है। क्योंकि यह दिव्य वाणी उन्हीं पारब्रह्म के मुखारबिन्द से अवतरित हुई है, इसे 'श्री मुखवाणी' भी कहते हैं, जो उनके आवेश या जोश की शक्ति से युक्त है। यह 'अखण्ड वाणी' स्वयं पारब्रह्म के ही समान होने से इस ज्ञानमय स्वरुप को 'स्वसम् वेद' भी कहते हैं। इस में कुल सत्तरह रत्न रुप उपग्रन्थ हैं, जिसकी कुल 18758 चौपाईयां और 527 प्रकरण है। इन में से दो का नाम कलश है, जो गुजराती और हिंदी भाषा में है।

एक और तो श्री कुलजम सरुप इश्के हकीकी और इश्के मारफत का अति उत्तम गौरवगान है, तो दूसरी और यह विश्व के विविध धर्म ग्रन्थों में छिपे आध्यात्मिक गुझ भेदों रुपी मोतियों को एक 'तारतम' के धागे में पिरो कर बनाई हुई अनुपम सुन्दर माला है।

तारतम– तार अर्थात्, तारने वाला + तम अर्थात् अन्धेरा, अज्ञान। आवागमन का बन्धन ही अन्धेरा है। पारब्रह्म के स्वरुप, धाम और लीला की पेहेचान ही तारतम है। तारतम ज्ञान स्व–कल्याण का निज–आनन्द धर्म प्रकाशित करने वाला एवं मोह से उत्पन्न अज्ञान रुपी अन्धकार से परम विज्ञानमयी आनन्द रुपि चैतन्य प्रकाश की ओर ले जाने वाला है।

यह सृष्टि के जीवों के आवागमन के दुःख और आत्माओं के निज–स्वरूप की विस्मृति के दुःख को हरने वाली सर्व–कल्याणी ब्रह्मविद्या रुपि देवी है, जो पारब्रह्म की पाँच शक्तियों से सुशोभित है।

यह उस विजयाभिनन्द बुद्धनिष्कलंक अवतार या आखरुल ज़मा ईमाम महेंदी, जिनके आगमन एवं उनकी पेहेचान सम्बन्धी अनेक सांकेतिक निशान विश्व के विविध धर्मशास्त्र–पुराण, कुरान, बाईबल आदि में मिलते हैं, की दिव्य देन है। शास्त्रों में दर्शाये गए कल्की और बुद्धावतार विजयाभिनन्द बुद्ध–निष्कलंक स्वरुप श्री प्राणनाथ जी स्वरुप में आ गए हैं।

'श्री कुलजम सरुप' नाम[10] पारब्रह्म धनी का खुद का दिया हुआ है। पारब्रह्म से बड़ा कोई साहिब नहीं, और साहिब के दिव्य चरणकमल इस वाणी में विराजमान होने से सुन्दरसाथ अनुयायी जन इसे 'श्री कुलजम सरुप साहिब' कह कर बुलाते हैं।

श्री कु. स्व. की विशेषताएँः

श्री कु. स्व. के श्रवण, मनन, चिन्तन से आत्मखोजी मानव को अपने निजआत्म स्वरुप की पेहेचान एवं पारब्रह्म के चिन्मय स्वरुप, धाम और लीला का निश्चयात्मक ज्ञान होता है। श्री कु. स्व. आध्यात्मिक जगत की अनमोल निधि इसलिए है, क्योंकि इसमें निहित ब्रह्मज्ञान आत्मखोजी को साकार निराकार[11] की धारणाओं से परे अखण्ड

---

[10] 'दई तुमको मैं कुलजम, इनको किया गरक। पढ़ो मेरे कलाम को, भागे सारी सक।।' श्री बीतक साहिबः 54/87, श्री निजानन्द सम्प्रदाय का पूज्य प्रामाणित ऐतिहासिक ग्रन्थ। नोटः आज भावनात्मक रुप से श्री कु. स्व. ग्रन्थ को तारतम सागर, तारतम वाणी, निजानन्द सागर, श्री प्राणनाथ वचनामृत आदि नामों से भी सम्बोधित किया जाता है, जो अनुचित है। श्री कृष्ण प्रियाचार्य जी, भरोडा, अपनी श्री रास ग्रन्थ गु. टीका, 1980 में इस की स्पष्टता करते है कि ''किसी व्यक्ति द्वारा रचित वाणी को कदाचित तारतम सागर, तारतम वचनामृत या धाम की वाणी आदि नाम से सम्बोधन कर सकते हैं। लेकिन उसका नाम 'श्री मुखवाणी' कदापि नहीं रख सकते। 'श्री मुखवाणी' तो केवल साक्षात पारब्रह्म के हृदय स्वरुप वाणी को ही कह सकते हैं।''

[11] साकार या सगुण और निराकार या निरगुण ये दोनों परस्पर सम्बन्धित आयाम उपाधियुक्त माया के ही स्वरुप हैं। पारब्रह्म के नहीं – श्री मद्भागवतः 2/10/33, 34

योगमाया और सर्वोपरि नूर और इश्क की लीलाओं से परिपूर्ण परमधाम की उपलब्धि अनन्य प्रेम लक्षणा भक्ति युक्त पतिव्रता धर्म पालन के माध्यम से करवाता है। अध्यात्म मार्ग में प्रेम की महिमा तो कई धर्मग्रन्थों, एवं सन्तों की वाणियों में गाई गई है। लेकिन प्रेम की हकीकत[12] (वास्तविकता) एवं मारफतिय (वैज्ञानिक) स्वरुप की पेहेचान केवल श्री कु. स्व. ही करवाता है।

श्री कु. स्व. स्व–कल्याण के निज–आनन्द धर्म को प्रकाशित करने वाला एवं मोह से उत्पन्न अज्ञान रुपी अन्धकार से परम विज्ञानमयी आनन्द रुपि चैतन्य प्रकाश की ओर ले जाने वाला दिव्य महासागर है। श्री कु. स्व. मोहसागर में हिचकोले खाने वाली आत्मा को माया जनित भ्रम एवं संशय आदि से मुक्त करते हुए अनन्य प्रेम–इश्क द्वारा अपने पारब्रह्म धनी–मालिक से मिलन का राज–मार्ग (highway) प्रदर्शित कराता है।

श्री कु. स्व. मनुष्य की अनादि आध्यात्मिक जिज्ञासाओं का यथार्थ बोध करवाता है कि मै कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? यह दृश्य जगत क्या है? इसे किसने और कैसे बनाया है? मेरा इस जगत में आने का क्या प्रयोजन है? मृत्यु उपरान्त मेरी स्थिति क्या होगी? माया, ईश्वर, जीव क्या है? आत्मा, ब्रह्म और पारब्रह्म कौन, कहाँ, कैसे हैं? संसार रुपि मोहसागर से पार होने का साधन क्या हैं? ऐसी अपार आध्यात्मिक जिज्ञासाओं का यर्थाथ बोध बड़े ही वैज्ञानिक ढंग से करवाने का श्री कु. स्व. का परम लक्ष्य है। इन सभी जिज्ञासाओं के यर्थाथ बोध होने का नाम ही जागनी अर्थात आत्म–जाग्रति है।

श्री कु. स्व. की यह घोषणा है कि पूर्वी और पाश्चात्य धर्म ग्रन्थों की मूलभूत बातों में मात्र भाषा भेद एवं सांस्कृतिक अन्तर हो सकता है पर केवल प्रेम ही का मार्ग आत्म जाग्रति यात्रा के करोड़ों मार्गों के होने पर भी, मनुष्य आत्मा को अपने निर्धारित परम लक्ष्य तक एक पल में पहुँचाने में सक्षम है। इस तारतम ज्ञान का प्रकाश ही समस्त संसार को अखण्ड सुख की अनुभूति करवा कर शान्ति प्रदान करेगा। यह वाणी हर एक आत्मखोजी सुन्दरसाथ के हृदय को

---

[12]हकीकत में पारब्रह्म सत्, चिद्, और आनन्द–इन विविध रुपों में होते हैं,पर मारफत में वे केवल एक ही हैं।

बेशक ज्ञान से ऐसा प्रकाशित कर देने के लिए वचनबद्ध है कि जिसमें ज्ञान या जाग्रति की दृष्टि से कोई भी भेद नहीं रह जाता।

यह श्री मुखवाणी कोई कवि, सर्वधर्म समन्वयकारी संत विभूति ऋषि, अवतार महापुरुष या महात्मा की नहीं, बल्कि सर्व अवतारो से परे, और अक्षरब्रह्म से भी परे स्थित अक्षरातीत का विज्ञानमय स्वरुप है। यह वाणी पारब्रह्म धनी की वही रसना (जिह्वा) की अनुकम्पा है, जो परमधाम में इश्क के रुप में और वर्तमान जागनी ब्रह्माँड में इस–खुदाई ईलम के रुप में प्रगट हुई हैं।

श्री कु. स्व. वैदिक परम्परा या शास्त्र पक्ष के सार तत्व को प्रकाशित करके, फिर कतेब पक्ष या सामी परम्परा के धर्मग्रन्थों जैसे जंबूर, तौरेत, अंजील और कुरान की गुत्थियों को सुलझा कर, इन दोनों का मिलान करके एक परमात्मा, अल्लाह या God और उनके परमधाम और वहाँ की दिव्य लीलाओं के दर्शन करवाता है। वेद–कतेब के क्षर–अक्षर–अक्षरातीत सम्बन्धी जटिल एवं अटकल युक्त सांकेतिक ज्ञान को दृढ़ीभूत करने वाला यह बेशक ईलम है।

श्री कु. स्व. की दृष्टि में अर्श परमधाम के मोमिन (ब्रह्मात्माएं) ही हकीकत में सच्चे मुसलमान और सच्चे हिन्दु हैं, क्योंकि उनका खाना–पीना एक पारब्रह्म श्री राज जी के दर्शन ही है, वे केवल हक श्री राज जी की दोस्ती जानते हैं, संसार को पीठ देना ही उनका कलमा पढ़ना है, नूरी स्वरुप का ध्यान या चितवन ही उनकी निमाज़ है, विषय विकारों से पूर्णतः मुक्त होने के लक्ष्य के प्रति जागरुक रहना ही उनका रोज़ा है, और इसलिए रमज़ान तो उनकी हर रोज ही होती है। श्री कु. स्व. की घोषणा है कि किसी और को दुःख पहुँचाने वाला मुसलमान मुसलमान नहीं, और ऐसा करके अपने आप को हिन्दु कहलाने वाला हिन्दु नहीं है।

इस तरह श्री कु. स्व. के हरेक उपग्रन्थ का परम लक्ष्य तो एक ही है – 'जागनी', लेकिन हरेक ग्रन्थ जागनी के किसी एक या एक से अधिक पहलूओं पर सविशेष प्रकाश डालता है। इस में निहित ब्रह्म विज्ञान की निष्कलंकता और पूर्णता से ही श्री मेहेराज जी के तन में शास्त्र वर्णित विजयाभिनन्द निष्कलंक बुद्धावतार, तौरेत वर्णित मसीहा, और बाईबल वर्णित ख्रिस्त का पुनःआगमन स्वतः सिद्ध हो

जाता है। इसलिए अब कोई और अवतार के आने की सम्भावना ही नहीं रह जाती हैं। अब तो इस वाणी की बरकत से समस्त सृष्टि के जीवों, अवतारों और त्रिदेवाओं को भी अखण्डता प्रदान होनी हैं।

श्री कु. स्व. के प्रमुख सर्व साधारण सिद्धान्तः

हमें हमारे आत्म–जाग्रति के परम लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए श्री कु. स्व. की ब्रह्मवाणी इन प्रमुख सर्व साधारण सिद्धान्तों (universal principles) को हमारे हृदय में ग्रहण करवाती हैः

1. पारब्रह्म तो पूर्ण एक है। God is one and only one.
2. सोई खुदा सोई ब्रह्म। God, Allah and Brahma are all one.
3. प्रेम ब्रह्म दोऊ एक हैं। God is love and love is God.
4. जो कछू कहया वेद[13] ने, सोई कहया कतेब[14]। The scriptures of the East (Vedas) and the West (Katebs) speak of one Ultimate Reality.
5. पंथ होए कोट कलप , प्रेम पहुँचावे मिने पलक। The path of exclusive, selfness and unparalled love brings God-realisation within one moment.
6. सुख शीतल करुँ संसार। Every life on this creation shall receive eternal peace and happiness through the Divine Wisdom.
7. सब साथ करुँ आपसा, तो मैं जागी प्रमाण। True Awakening is like lighting one lamp with another of equal power.
8. मानखें देह अखण्ड फल पाईए – The opportunity for eternal liberation is only available in this human life.

---

[13] पूर्वी शास्त्र (Eastern Holy Books) जैसे कि वेद, उपनिषद् ।

[14]पश्चिमी शास्त्र (Western Holy Books) जैसे कि कुरान, बाईबल, तौरेत, जंबूर।

श्री कु. स्व. के पाँच प्रमुख विषय विभाग

यद्यपि श्री कु. स्व. के इन ग्रन्थों का संकलन विषय की दृष्टि से न रखकर इनके अवतरण काल की दृष्टि से किया गया है, जो अपना एक विशेष ही महत्व रखता है। फिर भी, प्राथमिक ज्ञान के हिसाब से, विषय की दृष्टि से श्री कु. स्व. को इन पाँच प्रमुख विभागों में विभाजित किया जा सकता है।

1 आत्म–बोधक ज्ञान, जो मुख्यतः श्री रास एवं प्रकाश ग्रन्थ में है।
2 ब्रह्म–बोधक ज्ञान, जो मुख्यतः खटरुति एवं कलश ग्रन्थ में निहित है।
3 शास्त्रीय, पौराणिक तथा वेदान्त तत्व समीक्षात्मक ज्ञान, जो मुख्यतः कलश एवं किरंतन ग्रन्थ में निहित है।
4 ब्रह्मैश्चर्य लीला एवं ब्रह्मधाम विज्ञान, जो मुख्यतः खिलवत, परिकरमा, सागर, सिनगार, एवं सिंधी इन ग्रन्थों में है।
5 तत्कालिन धर्म समन्वयात्मक ज्ञान, जो मुख्यतः सनंध, खुलासा, मारफत सागर और कयामतनामा ग्रन्थ में निहित है।

इन चौदह उपग्रन्थों को पारब्रह्म धनी के दिव्य वाङंग्मय शरीर के चौदह दिव्य अंगों के रुप में माना जाता है। प्रथम रास ग्रन्थ को पारब्रह्म के चरणकमल, प्रकाश ग्रन्थ को पिंडी, खटरुति को घुटना, कलश को जंघा, सनंध को कमर, किरंतन को कर, खुलासा को नाभि, खिलवत को उदर, परिकरमा को हृदय, सागर को कंठ, सिनगार को मुख, सिंधी को नासिका, मारफत सागर को श्रवण, कयामतनामा को श्री राज जी का नयन अंग माना जाता है। हर एक ग्रन्थ उतरोत्तर जागनी के एक नये सोपान की अनुभूति करवाने वाला है। अन्तिम ग्रन्थों में जागनी की सर्वोच्च पराकाष्ठा के दर्शन होते हैं। इस तरह से श्री कु. स्व. में धामधनी का विज्ञानमयी स्वरुप विराजमान है। अतः 'आरती अंग चर्तुदश केरी, पाँचो सरुप मिल एक भए री' यह भाव संध्या आरती में गाए जाते हैं।

श्री कुलजम सरुप साहिब के प्रणेताः स्वयं पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी

श्री कु. स्व. के प्रणेता के लिए मेहराज, इन्द्रावती, महामत, महामति और प्राणनाथ शब्द प्रयोग हुए हैं, जो वस्तुतः एक ही तन में

विराजमान विविध व्यक्तित्वों के लिए प्रयुक्त किए गए हैं। वास्तव में 'इन्द्रावती' श्री मेहराज ठाकुर (ई 1618–1694) के तन में विराजमान परमधाम की आत्म शक्ति का नाम है।

श्री कु. स्व. के श्री प्राणनाथ कोई व्यक्ति विशेष नहीं, बल्कि मूल नूरानी स्वरुप श्री अक्षरातीत हैं, जो आत्माओं के प्रियतम है। जो 'महामति' के भी प्रियतम हैं। अक्षरातीत पारब्रह्म की विविध लीलाओं के संदर्भ में श्री कुलजम सरुप साहिब में श्री कृष्ण जी और श्री देवचन्द्र जी (श्री निजानन्द स्वामी) को भी 'प्राणनाथ' कहा गया है। लेकिन श्री मेहराज जी के तन से होने वाली महिमावान जागनी लीला की वजह से वे 'श्री प्राणनाथ जी' के नाम से केवल इस बार ही जाहिर हुए हैं। देह दृष्टि से देखें तो मेहराज ठाकुर, आत्म दृष्टि से देखें तो श्री इन्द्रावती जी, और अन्दर विराजमान अक्षरातीत की पाँच शक्तियों के आर्विभाव से देखें तो वे स्वयं पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी हैं।

श्री कृष्ण जी, श्री राज जी, श्री प्राणनाथ जी और श्री जी साहेब जी

सम्पूर्ण श्री कु. स्व. तारतम रुपि बीज से फलित वृक्ष के समान है। तारतम मंत्र के 'निजनाम श्री कृष्ण जी' इन शब्दों को लेकर प्रायः अक्षरातीत का नाम 'श्री कृष्ण' होने की साधारण मान्यता ने सुन्दरसाथ समाज में आसानी से स्वीकृति प्राप्त कर ली है। लेकिन यह भ्रमणा श्री कु. स्व. के मन्थन से दूर हो जाती है। मथुरा में विष्णु भगवान ने ही बालक का रुप धारण किया था, जिसमें गोलोकी शक्ति के विराजमान हो जाने के पश्चात् वासुदेव जी उस बालक को नंद के घर ले गए। वहाँ पर ही अक्षरब्रह्म की आत्म के साथ अक्षरातीत पारब्रह्म का आवेश उनमें विराजमान हुआ और तब से लेकर 11 वर्ष 52 दिन तक ब्रह्म लीला हुई।

अपने आवेश से ब्रज एवं रास की लीला करने वाले अक्षरातीत ही इस ब्रह्माँड में 'श्री प्राणनाथ जी' एवं 'श्री जी साहेब जी' के रुप में जाहिर हुए हैं।

अपनी इश्क और साहिबी का परिचय अपनी आत्माओं को करवाने हेतु एवं अक्षरब्रह्म को परमधाम के आनन्द की अनुभूति करवाने हेतु

ही अक्षरातीत श्री राज जी महाराज ने ब्रज–रास में श्री कृष्ण नाम से और वर्तमान जागनी ब्रह्माँड में श्री महम्मद साहिब कुरान का ज्ञान लाने वाले, श्री निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्र जी और श्री मेहेराज जी जैसे लौकिक नामों से लीला की है।

'श्री राज जी' भी कोई नाम नही है। 'श्री' शब्द द्वारा यश, शोभा, सौन्दर्य, मंगल, लक्ष्मी, सुन्दरी, श्यामा आदि दोनों ग्रहण होते हैं। जो सर्वोपरी हो, स्वयं प्रकाशवान हो, सत्तावान हो, ऐश्वर्यवान हो, राजा हो, सर्वश्रेष्ठ हो, उसे 'श्री राज' कहते हैं। – भगवद् गोमंडल कोश, गोंडल 1954। सर्वाधिष्ठतृत्व और नित्यत्व के साथ साथ श्री राज जी सभी ऐश्वर्यों के मालिक हैं, जो कालमाया और योगमाया से अनेकों तरह से विशेष हैं। 'जी' मान वचक है। इस तरह 'श्री प्राणनाथ जी' कोई साधारण नाम नही है, बल्कि आत्मा के मालिक (धनी) को ही प्राणनाथ कहा गया है।

श्री कु. स्व. का परम लक्ष्य इन सब लीलाओं के भेद को समझा कर आत्म को पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी, श्री राज जी के मूल नूरी स्वरुप में लगाना हैं। सार यही है कि श्री निजानन्द सम्प्रदाय में केवल नूरोपासना का प्राधान्य है।

श्री तारतम

सम्पूर्ण श्री कुलजम सरुप साहिब का मूल आधार श्री तारतम ज्ञान हैं, जो सर्वप्रथम श्री निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्र जी (1581–1654 ई.) को जामनगर गुजरात में (1621 ई.) अक्षरातीत के आवेश स्वरुप ने दर्शन देकर प्रदान किया था। यह तारतम ज्ञान श्री देवचन्द्र जी के तन में विराजमान आत्मस्वरुप श्री श्यामा जी का अपने पारब्रह्म धनी से हुए वार्तालाप के रुप में श्री बीतक साहिब में वर्णित है। आज सम्पूर्ण तारतम ज्ञान को छः चौपाईयों के रुप में, सम्प्रदाय में तारतम मंत्र के रुप में भी माना जाता है। हवसा में तारतम की कोई भी चौपाई अवतरित होने का प्रमाण नहीं मिलता। श्री निजानन्द सम्प्रदाय में इनका अवतरण जामनगर (सं 1715) से लेकर मेरता या हरिद्वार (सः 1735) में माना जाता है, जिसका सार इस प्रकार हैः–

आवेश स्वरुपः ''मैं क्षर[15] एवं अक्षर[16] से परे रहने वाला वह अनादि अक्षरातीत हूँ, जिसने श्री कृष्ण रुप में ब्रज और रास लीला की थी। आज दिन तक श्री कृष्ण के तन द्वारा हुई ब्रह्म लीला के भेद किसी ने जाने नहीं। सो अब मैं स्वंय अपने स्वरुप, धाम और लीला के विज्ञान सहित जाहिर हो रहा हूँ।''

आत्मः ''हे श्यामा जी के वर आप सत्य हो, और सदा सत सुख के दातार हो। हे वल्लभा! अपनी आत्म अंगना को अपने चरणों में स्थान दीजिए। आपकी श्री मुखवाणी इस संसार के सभी ज्ञान से न्यारी इसलिए है, क्योंकि यह हमें साकार और निराकार[17] की उपाधियों से अर्थात्, असत–जड़–दुःख रुपि कालमाया के ब्रह्माँड से पार अखण्ड चैतन्यमयी योगमाया, एवं उससे भी पार अक्षरब्रह्म का जो अक्षरधाम है, उससे भी पार जो सर्वोच्च अक्षरातीत परमधाम है, वहां ले जाने वाली है। यही वाणी हमारी आत्म (सुरता) को इश्क एवं आनन्द से परिपूर्ण मूल नूरी स्वरुप में जागृत करने वाली है।'' देखिये विराट पट दर्शन चार्ट।

''हे धनी! आपकी इस वाणी के श्रवण से अब मेरे रोम–रोम में एक यही उत्कंठा उपजती है, कि मेरी आत्म को बस इस वाणी पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना है, एवं उसका मनोमन्थन करके सार ग्रहण करना है। क्योंकि हे धनी! आपके मिलने से मुझे यह दृढ़

---

[15] 'क्षर' का अर्थ है क्षरित यानि नाश होने वाला। यह पंचभौतिक, तीन गुण और चौदह लोक का काल के आधिन सम्पूर्ण ब्रह्माँड और इनमें रहने वाले जीव से लेकर अवतारों और आदिनारायण तक की सभी शक्तियाँ महाप्रलय वश होने से 'क्षर' की व्याख्या में आती हैं।

[16] 'अक्षर' अखण्ड को कहते हैं। अक्षरब्रह्म पारब्रह्म अक्षरातीत का सतअंग है, जिसकी लीला के नूरी अखण्ड ब्रह्माँड को 'योगमाया' का ब्रह्माँड कहते हैं।

[17] सगुण या साकार एवं निर्गुण या निराकार, यह दोनों परस्पर सम्बन्धित उपाधियाँ संयुक्त माया ही के स्वरुप हैं, पारब्रह्म के नहीं और यह दोनों अग्राहय भी हैं। श्री मद्भागवत 2/10/33,34। जिसका आकार या रुप होता है, वह साकार है, जिसका रुप नहीं होता, वह निराकार है। महाप्रलय पर्यंत यहाँ की सभी शक्तियाँ, अवतारों और आदिनारायण तक का आकार या स्वरुप नहीं रहता। इसीलिए यर्जुवेद 40/19 में कहा है कि अव्यक्त कारण अथवा निर्गुण की उपासना करने वाला घोर अन्धकार में और कार्य ब्रह्म हिरण्य गर्भ की उपासना करने वाला उससे भी अधिक घोर अन्धकार में जाता है।

निश्चय हो गया है कि इस वाणी की बरकत से सत्य सुख ही मिलने वाले हैं। अब इन सभी सुखों को यदि मैं सभी ब्रह्मसृष्टि आत्माओं के बीच में बाटूँ, तभी तो मैं आपकी सच्ची अंगना नार कहला सकूँगी। यह मैं निश्चित समझती हूँ। हे पिया ! जब यह अखण्ड सुख–स्वयं जागने का और अन्य को जगाने का मेरे हर एक अंग मे भर जायेगा, तो मेरे माया के विकार अवश्य ही छूट जायेंगे। अखण्ड घर परमधाम का निज–आनन्द भी आ जाएगा। हे धनी! आप ही मेरे सच्चे भरतार हो।''

श्री निजानन्द स्वामी जी की आत्मखोज यात्रा

अपनी आध्यात्मिक जिज्ञासाओं के समाधान हेतु श्री देवचन्द्र जी (संवत् 1654–1712) ने चालीस वर्ष की आयु तक वेद, शास्त्र का, उपनिषद, पुराण आदि ग्रन्थों का मंथन किया, तीर्थों का भ्रमण किया, विविध धर्म एवं सम्प्रदायों की प्रचलित प्रणालियों का गहन चिन्तन किया, मूर्तिपूजा एवं गुरू सेवा की, अष्टांग योग सिद्धि भी कर ली और चौदह वर्ष तक निष्ठापूर्वक श्री मद्भागवत कथा श्रवण भी किया। फिर भी उन्हें आत्म–शान्ति प्राप्त न हुई।

आखिर, परमधाम की मूल निसबत होने से धाम धनी स्वयं अक्षरातीत अपने आवेश स्वरूप से सम्वत् 1621 में उनके सन्मुख प्रगट हुए, और उसी रूप में दर्शन दिये जिस रूप का, अर्थात वृन्दावन रास बिहारी का, वो चितवन किया करते थे। आवेश स्वरूप से श्री देवचन्द्र जी का जो वार्तालाप हुआ, उसे 'तारतम ज्ञान' कहते है। यह ज्ञान कसनी या उत्तम कर्मों से नहीं, बल्कि मूल निसबत होने से, पारब्रह्म के हुकम एवं उनकी मेहर से प्राप्त होता है।

दर्शन के पश्चात् पारब्रह्म की शक्तियाँ श्री देवचन्द्र जी में विराजमान हो गयीं। वे श्री निजानन्द स्वामी सतगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी कहलाये। उनको अपने मूल आनन्द श्री श्यामा जी स्वरूप की पेहेचान हो गयी और अन्दर बैठे धनी ने आदेश दिया कि, ''हे श्यामाजी! तुम अपने निजघर और निजवतन से विस्मृत आत्म–सखियों को जगाओ।

श्री जी को जागनी भार सुपुर्द

आपके (श्री देवचन्द्र के) तन के छूटने के बाद, मैं दूसरे तन से जागनी अभियान का दौर चलाऊँगा।'' यह दूसरे तन का नाम ही मेहेराज है, जिनमें परमधाम की इन्द्रावती की आत्मशक्ति और धनी जी की पाँच शक्तियाँ विराजमान हो कर यह श्री कुलजम स्वरुप साहिब की वाणी उन्हीं से अवतरित हुई है। इस वाणी का अवतरण श्री जी की जागनी यात्रा के दरम्यान समय–समय पर होता रहा है। 1657 ई.(संवत् 1715) से लेकर 1691 ई. (संवत् 1748) तक यह अवतरण चला।

श्री कलश वाणीः संक्षिप्त ग्रन्थ परिचय

श्री कुलजम सरुप साहिब में श्री कलश वाणी समस्त शास्त्रों के ज्ञान रुपी मन्दिर पर 'कलश' के रूप में प्रतिष्ठित है। कलश नाम का तात्पर्य उसकी सर्वोच्चता या सर्वश्रेष्ठता से है।

वेदों का सार भागवत है, भागवत का सार दशम् स्कन्ध है, दशम् के नब्बे अध्यायों में से पैंतिस अध्याय सार रुप हैं। इन पैंतिस में से तीस में तो ब्रजलीला का वर्णन है और पाँच में रास लीला का, जिसके बारे में शुकदेव जी स्वयं राजा परीक्षित के प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाए थे। अब जो रास भागवत का सार है, उसका वर्णन श्री इन्द्रावती जी से श्री रास ग्रन्थ में हुआ है। इस रास वाणी का भी सार हमारे तारतम वचन हैं, जिसकी विवेचना प्रकाश ग्रन्थ प्र 33 में की गई है। वहाँ पर यह भी समझाया गया है कि तारतम का सार है 'जागनी विचार'। 'जागनी विचार' करके ही निज घर पहुँचा जा सकता है। *तारतम को जागनी भयो सार।* इस 'नूर बिलंद' अर्थात् परमधाम से अवतरित, कलश (तौरेत) वाणी में 'जागनी' फल का निरुपण किया गया है। यथाः श्री राज जी कहते हैं कि

साथ के सुख कारने, इंद्रावती को मैं कह्या ।
ताथें मुख इंद्रावती के, कलस सबन का भया ।। क. हि. २४/४७

कलश ग्रन्थ गुजराती और हिन्दुस्तानी दोनों भाषाओं में है। हिन्दुस्तानी ग्रन्थ अनूपशहर में इन्हीं विषयों के विस्तार रूप से पूर्ण

रूप में अवतरित हुआ है। कलश (गु.) में 12 प्रकरण और 506 चौपाईयाँ है। यह वाणी सम्वत् 1715–1729 में जामनगर हब्सा में प्रारम्भ हुई और सूरत में सम्पूर्ण हुई। कलश (हि.) में 24 प्रकरण और 771 चौपाईयाँ है और यह वाणी सम्वत् 1735 में अनूप शहर में 'सनंध' वाणी के बाद में अवतरित हुई है।

यहूदियों (Jews) के मूसा पैगम्बर के तौरेत धर्म ग्रन्थ की वाणी को कलश ग्रन्थ में नया भाव और नवीन रूप प्राप्त हुआ है। इसलिए श्री कुलजम स्वरुप में इसे नए तौरेत के रुप में दर्शाया गया है। कलश (हि.) के बहुत से प्रकरण कलश (गु.) के प्रकरणों से अलग है। 'सनंध' और कलश (हि.) ग्रन्थ के कई प्रकरण लगभग एक जैसे ही हैं।

जागनी के लक्ष्य को हांसिल करने के लिए इस ग्रन्थ में अध्यात्म सम्बन्धी मूल बातों का स्पष्टीकरण, संशयों का निवारण एवं धर्म के वास्तविक स्वरुप का बोध करवा कर मौलिक संवेदना और सांस्कृतिक चेतना को जाग्रत किया गया है, जो आत्म–जाग्रति यात्रा का आवश्यक अंग है।

इस में वेद शास्त्रों का सार रुप ज्ञान, अवतारों की लीला के गुझ रहस्य, इस कालमाया के ब्रह्माँड और योगमाया की हकीकतों का साफ–साफ ब्यौरा दिया गया है। कालमाया के बड़े खेल में हो रहे विविध प्रकार के छोटे खेलों की हकीकत दर्शाकर इसमें धर्म और आध्यात्म के नाम विश्व समाज में प्रर्वतमान बाह्याडम्बरों पर प्रकाश, धार्मिक रुढ़िवादिता, जड़ कर्मकांड की दीवार और सांसारिक बन्धनों की जंजाल में मनुष्य का फँसना कैसे होता है यह समझाया गया है। निराकार की सीमा में बंधे साधूजनों की अटकलयुक्त वाणी में संसार का भटकाव, महन्त और धर्माचार्यों का माया के जटिल बन्धनों में फंसे रहना, ज्ञानीजनों का अपने ज्ञान के अहंकार में भटके रहना, प्रेमी जनों की मस्ती, सत्य और असत्य में होने वाले अन्तर का चित्रण करके सत्य को झूठ कहलाने की प्रणाली, आदि पर प्रकाश डाला गया है। संसार में जो चर्मदृष्टि का चलन है, उस पर प्रकाश डाल कर मनुष्य में छिपी ब्राह्मण और चाण्डाल वृत्तियों के दर्शन कराए गए हैं। देखा देखी ही चींटियों की हार की तरह लोग बिना

सोच समझ के झूठी धार्मिकता के भ्रम में अनमोल जीवन कैसे गँवा देते हैं। संसार की इस उल्ट चाल का इसमें चित्रण है।

कलश वाणी की यह सब बातें वर्तमान सुन्दरसाथ समाज जीवन में भी उतनी ही लागू होती हैं जितनी अन्य धर्म या समाज के लिए। इस तरह, इस ग्रन्थ में मौलिक संवेदना और सांस्कृतिक चेतना के दर्शन होते हैं, जो आत्म–जाग्रति यात्रा का आवश्यक अंग है।

इसके साथ साथ इसमें आत्म–जागृति के मार्ग पर पारब्रह्म धनी और उनकी मेहेर की सर्वोपरिता की पेहेचान, उनकी जुदायगी के ऐहेसास से रुह आतम के दिल में पैदा होने वाले विरह और तड़पन है। विरह की अभिव्यक्ति ही प्रेम पंथ की नींव है, जिससे रूह को इश्क की लज्ज़त मिल पाती है। विरह के बाद ही धनी की कृपा से आतम अपने निज–स्वरुप से प्रकाशित होती है। तब वह संशय एवं पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर 'कलश' की भांति चमक उठती है।

इस ग्रन्थ के प्रमुख विषय इस प्रकार हैंः 'तारतम अवतरण प्रसंग, ब्रह्मात्माओं की पेहेचान, विरह की हकीकत, इश्क की महिमा का गायन, हांसी की हकीकत, माया खेल के विविध मोहरों का परिचय, 'खेल में खेल' नामक प्रकरण में धार्मिक बाह्याडम्बरों पर प्रकाश, वैराट और वेद का कोहेड़ा शीर्षक प्रकरणों में संसार की उलट चाल, चर्मदृष्टि का चलन, सत्य को झूठ कहलाने की प्रणाली पर प्रकाश, अवतारों का वर्णन, ब्रह्मॉड का वर्णन, योगमाया का स्वरूप, श्री इन्द्रावती जी की 'तारतम के अवतार', 'महामति', और 'प्राणनाथजी' के रुप में पेहेचान, बुद्ध निष्कलंक अवतार का स्वष्टीकरण, पारब्रह्म अक्षरातीत की दया की महिमा, और जागनी की प्रक्रिया का परिचय दिया गया है। जागनी के प्रकरण में 'तारतम के तारतम' का श्री इन्द्रावती जी से विस्तार होना दर्शाया गया है।

कलश (गु.) में तारतम अवतरण प्रसंग एवं माया खेल का परिचय, खेल में खेल, पंथ पैंडो की खैंचा खैंच, विराट का कोहेड़ा, वेद का कोहेड़ा, अवतारों का रहस्य, गोकुल लीला और योगमाया के विषय सम्बन्धित प्रकरण हैं। कलश (गु.) के इन प्रकरणों के पुनरावर्तन के उपरान्त, कलश (हि.) के अधिकाँश प्रकरण आत्मा के विरह प्रलाप की पुकार से भरे पड़े हुए है। विरह की यह अभिव्यक्ति अपनी

पराकाष्ठा को छू लेती है, जिससे आत्म के अन्दर में इश्क की लज्ज़त स्वतः ही आनी शुरू हो जाती है। इसमें विरह की व्याख्या, विरह किसका और कौन करता है, विरह क्यों और कैसे करना होता है या कैसे हो जाता हैं, विरहिन की क्रियाएँ और प्रतिक्रियाएँ, एवं विरह के बाद की रुह की स्थिति कैसी होती है, इन सभी बातों का प्रत्यक्ष चित्र खड़ा हो जाता है।

विविध बातों को समझने के लिए इस में बहुत सारे रुपकों (riddles) का प्रयोग किया गया है, जो आत्म–खोजी के दिल में बड़े ही चुभने वाले हैं। जैसे किः यदि खरगोश के सिर पर सींग हो सकते हैं, बांझ स्त्री को पुत्र हो सकता है और आसमान में फूल खिल सकते हैं तभी इस संसार का वास्तविक आस्तित्व माना जा सकता है। हाथी बन के चलो लेकिन सुई के नाके में से निकल जाने की क्षमता भी रखो, विरह की बलशाली आंधी की ताकत के सामने अतना बड़ा ब्रह्माँड भी टिक नहीं पाता, वेद कहते हैं कि विराट उल्टा है, उसका मूल आकाश में और फल और डालियां पाताल में अदृष्ट हैं। विरहिन की चाल पतंगे जैसी और तड़प जल से बिछुड़ी मछली जैसी होती है। सुन्दरसाथ जी! इन सब बातों का असल रस तो कलश वाणी को पढ़ कर ही लिया जा सकता है।

कलश (हि.) और सनंध वाणी के अवतरण सम्बन्ध में यह बीतक संदर्भ ध्यान रखने योग्य हैः दिल्ली में मुल्ला की मुलाकात के दरम्यान कुरान की बातें सुनने के बाद गोर्वधन भाई और लालदास जी के बीच विचारों में अन्तर आ गया था। गोर्वधन भाई का आश्चर्यजनक बर्ताव देख कर लालदास जी ने श्री जी से कहा कि ''हे धनी! हमारा ईमान तो चटाई तक ही सीमित है। आप हम सब पर इतना ज्यादा भरोसा मत करिए।'' श्री जी को जब उन दोनों से वास्तविकता का पता चला तो उन्हें बहुत ही दुःख हुआ, और जागनी का काम छोड़कर सबको अलग अलग स्थानों पर भेज दिया और आप स्वयं अनूपशहर चले गए। यहाँ उनका स्वास्थ भी खराब हो गया था। इस समय श्री कुलजम सरुप की 'सनंध' वाणी का और उसके बाद 'कलश' (हि.) का अवतरण हुआ।

इन दोनों सुन्दरसाथ जी के इस बीतक प्रसंग में से तीन प्रमुख बातें निखर आती हैं, जो वर्तमान में अत्यन्त बोध गम्य हैः

1 एक अक्षरातीत पारब्रह्म के स्वरूप की पेहेचान हो जाने पर भी हिन्दु के तन में होने से और इस्लाम के कट्टर एवं शरीयत प्रधान स्वरूप को लेकर, उनके अनुयायीओं से प्रमाणिक वार्तालाप कर पाने का डर, जो गोवर्धन भाई की वार्ता में स्पष्ट नजर आता है।

2 सिर्फ हिन्दु सांस्कृतिक सीमाओं में रह कर अक्षरातीत धामधनी के प्रिय–पात्र बने रहने की सुन्दरसाथ जी की मर्यादिक भावना, जो भी गोवर्धन भाई के वर्तन में स्पष्ट नजर आती है।

3 धर्म, संस्कृति, प्रदेश और ज्ञाति भेद के बन्धनों से परे होकर, सभी धर्मों के साथ मुक्त वार्तालाप करने के धनी के आदेश को सिर पर चढ़ा कर, पक्के ईमान से धामधनी की प्रेम–सेवा में पूर्णतः पारदर्शक रह कर जुट जाने की शुद्धत्तम भावना, जो लालदास जी के पात्र में नजर आती है।

सुन्दरसाथ जी की प्रथम दो विडम्बनाओं से व्यथित श्री जी अनूप शहर में पूर्णतः विरह रस में डूब कर और जागनी सेवा में ही वास्तविक शान्ति है, यह निश्चित कर लेते हैं। फिर सनंध वाणी में यह स्पष्ट कर देते हैं कि बुद्धनिष्कलंक ही ईमाम मेंहदी हैं, और ब्रह्ममुनि ही मोमिन हैं। आने वाले सुन्दरसाथ जी के हर तरह के भ्रम निवारण हेतु सनंध वाणी की इन्हीं बातों को कलश हि. में फिर से दोहराया गया है। साथ साथ वेद, अवतारों, बृज, रास और जागनी लीला के गुह्यतम रहस्यों का भी उद्घाटन करते हैं।

इस तरह श्री जी हम सुन्दरसाथ जी को एक तरफ तो इश्क प्रेम से भीगे निजानन्दी धर्म पालन में मस्त रहना सिखाते हैं, तो दूसरी तरफ वैविध्यता पूर्ण विश्व समाज के साथ व्यवहार में विवेक बुद्धि का प्रयोग करते हुए वार्तालाप जारी रखने की प्रेरणा देते हैं।

Shri Kuljam Swaroop

The Holy Kuljam Swaroop (1715- 1748 Vikram Samvat) is the word-form (Vangmay swaroop) of Parbrahmn Aksharateet, who is the ultimate embodiment of Truth, Consciousness and Bliss (Sachidanand). Because these Divine Words have directly emanated from the lips of Parbrahmn, it is also called '**Shri Mukh Wani**'. This Holy Wani is not the work of a poet, a pluralistic saint, mahatma, rishi, or an avataar. Rather, it is the work of Lord Aksharateet's graceful tongue, which has manifested in the Knowledge (खुदाई ईलम) form in this Jaagni Brahmaand. This same tongue normally releases only the pure Ishak in Paramdham. It is regarded as the principle sacred book of Shri Nijanand Sampradaya.

Because it is filled with the Aavesh power of Aksharateet, it is eternal and alike Him in Knowledge form. Therefore, it is called '**Swasam Veda**.' It is regarded as an idol in the Divine (Noori) Knowledge-form - not just a sacred scripture for the sundersaath devotees. The knowledge and wisdom contained therin is called Taartam Knowledge, which is treasured in 18,758 chopais (a verse with four parts) in 527 chapters and 17 sub-parts or volumes.

Taartam and Nijanand

In Sanskrit, literally, 'tar' means to rescue, and 'tam' means darkness of the highest degree. Thus, the word 'Taartam' means the knowledge that is capable of rescuing the jiva drowning in the ocean of ignorance (moha maaya), and bestowing him eternity by freeing from the cycle of birth and re-birth. When one realizes the glory of the Swaroop, Leela and Dhaam of the

Parbrahmn in all its totality, he can be said to have received '**Taartam**.' The Holy Wani is the tree that has originated from the six-versed Seed Taartam, which is offered as a mantra during the initiation ceremony. Thus, Taartam Knowledge shines one's ultimately eternal blissful nature, which it calls '**Nijanand**.' Literally, in Sanskrit, the word 'Nij' means 'of Self', and 'anand' means 'bliss'.

The Holy Wani is also regarded as a Godess or **Brahmn Vidya Devi**' because it (1) frees all worldly jivas of their sufferings caused by remaining trapped in the cycle of birth and re-birth, and (2) enables the Brahmn Srishti Atmans to reclaim their Paramdham by reminding them of their true ultimate identity.

Mahaamati and Buddha-Niskalanka Avataar

This Brahmn Vidya embodies the *five* divine aspects of the Parbrahmn, which qualifies it as being spotless or Nish-kalanka. The one with all the five powers is entitled as '**Mahaamati**.' Literally, 'maha' means great in every respect, and 'mati' means buddhi or intellect, or wisdom to be more precise. *Mahaamati* is the one bestowed with Aksharateet's spotless (*Nish-kalanka*) divine wisdom (jagrut-nij-buddhi), bliss (anand), brilliance (noor taartam), command (hukum), and inspirational power (josh-aavesh).

It is the divine gift of that **Vijaya-bhi-nand Buddha-Niskalanka Avataar** or Akhrul Jama Imama Mehendi Saheb or Messiah, for whose arrival the entire world has been eagerly waiting. This has come true in this arrival and through the Kuljamiya (all-inclusive, comprehensive) Work of Lord Shri Prannathji. Thus, on one hand, Kuljam Swaroop is a Divine Symphony of

Ishak-E-Hakiki and Ishak-E-Marfat, and a beautiful necklace made from invaluable jewels of esoteric spiritual knowledge of the diverse world scriptures on the other.

Kuljam Swaroop: The Only God-Given Name

'**Kuljam Swaroop**' is the one and only name that has been given by the Lord Aksharateet Himself, according to the Holy Bitak Saheb: *54/87,* "*Mein dei Kuljam tumko…*". Literally, 'Kul' means complete, total, and 'jam' means depository. In other words, it is a complete source of divine love and wisdom. The Arebic meaning of Kuljam is 'ocean,' which reflects its completeness in all respects. Other commonly used names such as Taartam Sagar, Nijanand Sagar, Taartam Wani, or Shri Prannath Vachanamrut simply reflect someone's personal outlook.

Since Kuljam reveals the ultimate divine form, pastime and abode of One God, the word '**Swaroop**' is appropriately attached to its name. No one is greater than the Parbrahmn; and because His Lotusfeet is present in this Wani, the devotee sundersathjis call it '**Shri Kuljam Swaroop Saheb**.'

The First Compilation of the Holy Wani

The **Holy Wani descended** over the period of about 33 years. First, it began to flow from Paramdham when Shriji was in Habsa (jail) in the city of Jamnagar (Guj.) in 1659 AD (Samvat 1715), and continued until 1692 AD Samvat 1748 when Shriji was in the city of Panna (M.P.). The first **compilation** of all the seventeen volumes of the Holy Wani of 18,758 verses (chaupais) was completed over a three-year period from 1692-1694

AD in Shriji's presence and under the leadership of Paramhamsa sundersaath Shri Keshavdasji. **No changes** of any kind were made during the compilation process and almost all of the current versions are pretty much the same. Any book with more or less than these 18,758 chopais does not qualify as Kuljam Swaroop. While various teachings are repeated several times throughout the Holy Kuljam Swaroop, every repetition is regarded as necessary in the Sampradaya tradition. There is not an extra word, letter or vowel in the entire Kuljam Swaroop. The fourteen volumes (three volumes in Gujarati language were later revealed in Hindi) of the Holy Wani are regarded as the **fourteen organs of the Divine Body of the Parbrahmn.**

List all Granths here:

The Holy Wani was **first consecrated** as an object of worship after Shriji left his mortal coil and went into Samadhi state in Samvat 1751. Being the most complete and the only source for realizing God's Swaroop, Leela and Dhaam for the sundersaath devotees, it is the **object of worship in the knowledge-form** in place of any idol or godly image.

Universal Principles

The following key fundamental universal principles of the Holy Wani are geared to realize the full potential of our human existence. The Holy Wani proclaims that (1) the opportunity for eternal liberation is only available in this human life. मानखें देह अखण्ड फल पाईए; (2) every life on this creation shall receive eternal peace and happiness through the Divine Wisdom. सुख शीतल करुँ संसार। and (3) true spiritual Awakening is like lighting one lamp with another of equal power. सब साथ करुँ आपसा, तो मैं जागी प्रमाण।

The following are the most important fundamental universal principles of the Holy Wani:

1. God is one and only one. पारब्रह्म तो पूर्ण एक है।
2. God, Allah and Brahma all represent the different names of one ultimate reality. सोई खुदा सोई ब्रह्म।
3. God is Love and Love is God. प्रेम ब्रह्म दोऊ एक हैं।
4. The scriptures of the East (Vedas) and the scriptures of the West (Katebs) speak the same ultimate Truth; Conflict are rooted solely in externalities. जो कछू कहया वेद[18] ने, सोई कहया कतेब[19]।
5. The path of exclusive, selfness and unparalled Love is the fastest and the sure path to God-realization. पंथ होए कोट कलप , प्रेम पहुँचावे मिने पलक।

The Five Main Subject Categories

While the Holy Wani is not compiled or organized by subjects, it may be divided into **five main subject categories** on a very broad scale:

1. Basic teachings for the Souls आत्म–बोधक ज्ञान, mainly found in Shri Raas and Prakaash Granths.
2. Knowledge concerning Brahmn and Parbrahmn ब्रह्म–बोधक ज्ञान, mainly found in Khatruti and Kalash Granths.
3. Critical Knowledge concerning Shahstras, Puranas and Vedanta शास्त्रीय, पौराणिक तथा वेदान्त तत्व समीक्षात्मक ज्ञान, mainly found in Kalasha and Kirantan Granths.
4. Knowledge concerning the divine glory and Leela of Parbrahmn ब्रह्मैश्चर्य लीला एवं ब्रह्मधाम विज्ञान, mainly

[18] Eastern Holy Books such as the Vedas and the Upanishadas
[19] Western Holy Books such as Qur'an, Bible, Toret and Jamboor

found in Khilwat, Parikarma, Sagar, Singaar and Sindhi granths.

5. Knowledge concerning the contemporary religious harmony and spiritual unity, mainly found in Sanandh, Khulasa, Marfat Sagar and Khulasa Granths.

Kuljam Swaroop: For Entire Humanity

The Holy Wani is mainly spoken in *Hindustani*, which was the prevalent **language**, in addition to Gujarati, Sindhi, Persian, and Arabic. However, the entire Wani was transcribed, and is presently available in the Devnagari script. In addition to the use of Hindu scriptural terminologies, the Holy KS and the Holy Bitak Saheb, also contains numerous references and the use of non-Hindu scriptural terminologies, including literature form major Abrahamic Faiths, including Islam. This scriptural style often has led many outsiders and even a large population of the followers to misconstrue the Nijanand Sampradaya as a non-Hindu or a hybrid of the two cultures, or even as a cut-and-paste religion!

Some people have erroneously attempted to misrepresent the Holy KS by attributing the use of the mixed-culture religious and spiritual terminologies in it to a political tactic of Shri Prannathji. This is primarily due to their narrow thinking, selfish motives and with a fear of resistance from the mainstream Hindu society. But, the rality is that **the Holy Wani addresses the entire humanity** and it does not address people as Hindu, Muslim, Christian, Jews….and so on. Rather it classifies them into three categories (Jiva, ishwari and Brahmn Srishti) based on their qualities associated (by

knowledge) with the three higher realms (Kaalmaya, Yogmaaya and Paramdham).

In the eyes of the Holy Wani, the Brahmnsrishti souls are the **true Hindus or true Muslims** or Momins. Because the Darshan of Parbrahmn Aksharateet is their real food and drink. They know friendship with Shri Rajji only. To remain untouched by Maaya while living in its midst is their prayer (कलमा). Remembrance (चितवन, जिक्र) of the Divine Form (noori swaroop) of One God is their true obeisance (निमाज). To remain aware of one's maaya-born blemishes such as lust, anger, greed, ego, jelosy is their fasting (रोज़ा). All these rituals are so deeply internalized in her daily life that such a soul celebrates holidays (रमज़ान) on a daily basis. The Holy Wani declares that a true Hindu or a true Muslim can never hurt others for any worldly reasons.

The Inspirer and the Teller: Lord Prannath

There prevails a lot of ignorance regarding the source of the Holy Wani. Parbrahmn Lord Shri Prannathji Himself is **the inspirer and the teller of the Holy Wani**. Upon study, one can find different names such as Mehraj, Indrawati, Mahaamati and Prannath are used for the speaker of the Holy Wani. However, they are all just the different names of the same person exhibiting a different personality or spiritual status. For instance, Indrawati is the name of the Soul of Paramdham experiencing the worldly drama within the person of Meheraj Thakur (1618–1694 AD).

Prannath is not any person's name. It is the name used to address the highest Lord Aksharateet, the Beloved of the Brahmnsrishti Souls. In essence, Prannath is the Beloved Lord 'Dhani' of Mahamti. Prannath name is

used in conjunction with the different Leelas of Aksharateet Lord in the persons of Shri Krishnaji, Shri Devchandraji and Shri Meherajji. However, due to the most glorious Jaagni Leela through the person of Meherajji, Aksharateet Lord has made Himself known publically as 'Prannath.'

Thus, when seen from worldly personality point of view, the speaker is Meheraj Thakur. When seen as a Brahmnsrishti Soul, the speaker is Indrawati. When seen with all the five divine powers of Aksharateet, the speaker is Mahaamati. However, essentially, the real speaker is Aksharateet Shri Prannath Himself. All others are just His mouthpieces, exactly as if one person is speaking from a microphone, and the voice is coming out from different loud speakers.

The Holy Wani declares **Prannathji or Shri Ji as Aksharateet Supreme Brahmn** more than sixty times.[20] From the first volume 'Shri Raas' to the last, the 'Kayamat Nama', Prannathji has never been identified as a saint or a devotee of Lord Shri Krishna. In fact, Prannath and Aksharateet have been shown as one in numerous chopais. In Bitak Saheb, the book of historical account of Sri Nijanand Sampradaya, Prannathji is addressed as Aksharateet Shri Rajji 226 times, as Hakk 22 times, and as Dhani 28 times. About twelve contemporary sundersaath devotees, including one Muslim Kazi, have also directly addressed Meherajji as Aksharateet Shri Prannathji in the Holy Bitak Saheb.

Nijnaam

[20] Refer to books: '*Aksharateet Kaun?*' and '*Padho, socho aur samzoh*' published by Shri Nijanand Ashram, Ratanpuri.

'Nij' means my own, original, mool. 'Naam' means real identity or pehechaan related to Swaroop, Leela and Dhaam. Thus, essentially, 'Nijnaam' means the Mool Swaroop or Marfat Swaroop. The status of the Marfat Swaroop is defined as Anaadi and Aksharateet. The name 'Shri Krishna Ji' explains the Marfat Swaroop's Leelas in Brij and Raas. The name 'Shri ji Sahebji' explains the Marfat Swaroop's Jaagni Leela, which is inclusive of the essence of the Leelas of Brij, Raas, Dhani Shri Devchandraji and Paramdham.

The superiority and the beauty of Shri ji Sahebji's glory lies in the disclosure of the Marfat Swaroop and all His leelas through Taartam Knowledge, which was never available any time before this. The height of this Kuljamic awareness was not realized during Shri Krishnaji's Brij and Raas Leelas as they were played in the states of full sleep and half-awakened (*poori nind and aadhi nind*) respectievely. The Gopies didn't know anything about Paramdham.

Due to the reference of '**Nijnam Shri Krishna ji**' in the Taartam mantra, there is a widespread mis-belief that the name of the Aksharateet Parbrahmn is Shri Krishna. This can be easily clarified by the proper study of the Holy Wani, which is the fruiting tree grown out of the Seed Taartam.

According to the Wani, Lord Vishnu chose to take birth through the womb of Devki in Mathura. Thereafter, the Goloki power entered the newborn baby, who will be later named as Krishna. Devki's husband Vasudevji brought the baby to Nandbaba's residence in Gokul by crossing the Jamunaji River. Here, upon arriving in Gokul, the Aavesh power of Aksharateet Parbrahmn and the Atman of Akshar Brahmn entered the baby. After

that, the Parbrahmn's Leela continued for eleven years and fifty-two days.

To show His official glory (साहिबी) and miracle of His Love (इश्क) to His Souls, and to allow Akshar Brahmn to experience the Leela of Bliss in Paramdham, the Lord Aksharateet Shri Rajji[21] came in the garb of Shri Krishnaji in Brij and Raas. Again, He came in this Jaagni creation: first, in the garb of Prophet Muhammad who brought Qur'an, second, as Shri Nijanand Swami Dhani Shri Devchandraji and third, as Shri Meherajji. In other words, now, in this last period of Jaagni, the same Aksharateet, who played in Brij and Raas leela with His Aavesh power, has come to the knowledge of the world as Shri Prannathji and Shriji Sahebji.

Briefly, the ultimate goal of the Holy Wani is to connect the Souls with the Divine Swaroop of Aksharateet by explaining His Leelas in the domains of perishable Kaalmaya and the eternal Yogmaaya.

Religious holy books and spiritual writings of many saints sing the glory of **unparalleled love** for God. However, only Kuljam Swaroop is empowered to reveal the ultimate science (मारफतिय विज्ञान) of the 'Oneness of the Ultimate Reality' and the manifestations of the 'Ultimate One' as truth, consciousness and bliss reality (हकीकत का ज्ञान). Thus, by reading, listening, digesting and

[21] **Shri Rajji** means the most glorious, beautiful, fortunous, enriching Lord who is above all, self-luminous, all-powerful, king, and the best of all, in all the three worlds – the Kaalmaya, the Yogmaaya and the Paramdham (Bhagvad Gomandal kosh, Gondal 1954). 'Pran' is the life essence, which is the dearest to all. Prannath implies the the Owner of one's life, one's soul.

living by the Holy Wani, the seeker can attain the ultimate goal of self-realization through God-realization.

Suddha Saakar Swaroop

The Holy Wani is unique because it leads to realization of the ultimate *noori* ***Suddha Saakar*** **Swaroop** *(the purest* divine form*). This Swaroop* is beyond the Kalmayic dream-domains of all the forms (saakar) and the formless (nirakaar), which is subject to time and space. It argues: "while the 'forms' are subject to creation and dissolution, 'formless' cannot create or offer Bliss and Joy. Therefore, He is to be found beyond both, and beyond the eternal Akshar Brahmn (*Aksharat partah parah* – the Upanishad).

Without Taartam Knowledge, exactly like the believers of the Vedas, the believers of Qur'an and Prophet Muhammad also regard Allah as formless or without any divine 'noori' body. They fail to imagine that this 'noor' or 'ultimately transcendental' can assume all kinds of forms, including those, which we see in this physical world. Therefore, the Holy Wani clearly states that the description of Allah in Qur'an, as a person, whom the Prophet met in Me'raj *(Deedar,* sighting) must not be regarded as materialistic. No material vision can grasp him. It was the soul of Prophet Muhammad (Akshar aatam) alone (not the physical body of the Prophet) who had an exclusive honor to speak direct to Allah. The Wani speaks of 'two thin curtains', which the Qur'an describes as 'a distance of two bows length or (even) closer'. This length signifies the 70 years period between Shri Shyamaji swaroop Dhani Shri Devchandraji and Shri Ji Sahebji. The Holy Wani reveals the Noori form of Allah, His Souls and His Abode by unfolding the

secret meaning of the term 'Alif-Laam-Mim' as Truth (Sat)-Bliss (Anand) and Consciousness (Chid).

God is Love and Love is God.

Prem Brahmn dou eak hei: **God is Love and Love is God**. The Souls in human forms are expressions of His Love (Ishak). Such Souls are always soaked in the ocean of His divine Love (Ishak) and love their Lord like a virtuous and chaste wife, i.e., practice the ***Pati-vrata dharma***. According to the Holy Wani, the path of exclusive, selfless and unparalled, Love (*Ananya Prem Laxna*) is the only sure way: *Panth hovey kot kalap, prem pohonchavey miney palak.* In other words: "There may exist billions of paths to realize God, but the Path of Unparalled Love or Prem enables one to attain God realization within one moment." A True *Dharma* or Religion awakens deep love and respect for all, and brings freedom from birth and rebirth for everyone. *Prem khol devey sab dwar*. It is this Love and wifely-devotion that allows the Souls'a journey on the the highway राज–मार्ग to Paramdham.

Spiritual awakening (जागनी या आत्म–जाग्रति) means resolution of **eternal querries** such as: Who am I? Where have I come from? What is this phenomenal world? Who created it and how? What is my purpose here? What is beyond death? What are Maaya, Ishwar and Brahmn? How they all are related? What does the terms Aatman, Brahmn, and Parbrahmn mean? What is the way out of this Ocean of Ignorance?

One World Religion

The Holy Wani establishes the foundation for **spiritual and religious convergence** by forming a divine necklace from the scattered messages concerning *One God*[22] in the diverse world scriptures. It regards the scriptures of the East and the West as the ultimate witnesses in realizing this Truth. Principally, it asserts that the conclusive essence of the Vedas of the East and the wisdoms of all Prophets of the West is contained in Srimad Bhagvatam and the holy Qur'an respectively. With this assertion, the Holy wani then invites the seeker to explore the eternal domain of Aksharateet Paramdham. In essence, it offers an unshakable foundation for **One World Religion** that must be based on eight universal principles of spirituality: truth, beauty or transparency, harmony, peace, love, wisdom, intimate relationship, and gracefulness. It does not call for one labeled 'organized religion;' rather it calls for a qualitatively unified and harmonious humanity that is focused on One God, who is the source of *the eight divine oceans*.

Uniqueness of the Divine Wisom

The Scope and the Uniqueness of the Divine Wisom is in itself awakening. The term **Nijanand** is used in conjunction with Supreme Heaven Paramdham, which is beyond Vaikuntha, Sunya, Nirakaar and even Goloka in the eternal Yogmaaya of the Akshar Brahmn[23]. While one may describe his experiences of Vaikuntha, Sunya, Nirakaar, Christ or Krishna as supreme or equivalent of Nijanand, the truly ultimate Nijanand lies beyond the highest understood 'Krishna and Christ Consciousness.'

---

[22] *Naam saron jude dharey, jude jude bhekh anek | Jin koi zagdo aap mein dhani sabon ka eak || KS*

[23] *Kshar Akshar ke Paar hai, Piya Aksharateet Adhar |*
Bina Sanmandh na Payiye, jo Kotin karo Achaar || KS

The Taartam Knowledge allows a seeker to cross the barriers of sects, cultures, religions, and… isms. One may find all the worldly happiness by living a good and virtuous life; one may practice any path to self-realization and may believe God with thousands of different names and forms; but the true *Nijanand* lies:

- In the divine lotus feet of the Supreme Brahmn Aksharateet, who is beyond both, this phenomenal creation of Kshar Purusha (Lord Adi Narayana), and the eternal Yogmaaya of Akshar Brahmn.
- Beyond the eternal Brij and Raas Leela of Lord Shri Krishna in the eternal Goloka—the ultimate of Vaishnavism.
- In visualizing spiritual oneness among Shri Krishna, Moses, Prophet Muhammad, and Jesus Christ.
- In realizing that the long-awaited Kalki or Buddha Niskalank Avataar of Hindus, the Last Imam Mehndi of Muslims, the Second Christ of Christians, and the Messiah of the Jews are all the same.
- In realizing the fact that the Supreme God is nameless. No worldly label, including the name 'Shri Krishna,' can touch His true Divine Form.

The Work of Buddha-Nishkalanka Avataar

The coming of the **Vijayabhinand Buddha-Nishkalanka Avataar** of the Shashtras, the Messaih of the Toret, the Christ of the Bible and the Imam Mehndi of the Qur'an has already occurred in the person of Shri Meherajji – simply because of the spotless and universal nature of the Holy Wani. There remains no need or possibility for the coming of any of them in any other way. This becomes clear by understanding the **three distinct purposes** served by the Holy Wani for all in

this world. Accordingly, the Jiva Srishti souls shall attain freedom from the cycle of birth and re-birth. The Ishwari Srishti souls shall attain knowledge about Aksharateet Paramdham, and the Brahmn Srishti souls shall attain the eternal happiness or Nijanand in Paramdham.

Moreover, the Holy Wani reveals the four secrets of the Paramdham, which were never disclosed before. These are: (1) Khilwat, the blissful pastime of the Paramdham (2) Vahedat, the oneness (Eak Dili) among the Supreme Lord, Shri Shyamaji and the Souls; (3) Hakikat, the Swaroop (divine form), Leela (sports) and Dhaam (Abode) of the Supreme Lord; and (4) Marfat, the ultimate essence concerning Aksharateet Parbrahmn.

The Process of Spiritual Awakening:

Jaagni Prakriya

According to the Holy Wani, disciplined practice is essential to the spiritual life; yet spiritual attainment is not the result of one's sole efforts. The experience of oneness with Aksharateet primarily comes through His **Grace** or **Meher**. See the Jaagni Prakriya chart.

Accordingly, Grace is all that we human souls have available at all times, and Eternal Bliss or Nijanand is all that we humans ultimately seek. Grace brings the experience of glory, beauty, harmony, peace, love, wisdom, and the joy of divine intimacy. Thus, Grace is the principle driver on our spiritual journey.

The three Determinants of the Jaagni Process:

Meher, Hukum and Nisbat

The three primary determinants of the process of Self-Realization are God's Grace *(Meher)*, God's Will (*Hukum*)

and the soul's Eternal Relationship (*Nisbat*). Grace determines the scope of work of God's Will (Hukum). His Will, through Taartam Knowledge, determines our speech (Kaul, belief, committment), action (Feil, prem-seva) and state of being (Haal, experience of joy, spiritual fulfillment). However, the work of His Will is also dependent upon the Soul's Nisbat, which ultimately determines the nature of the work of Grace and her actions.[24] The Nisbat (ankur) is primarily of three types: Jiva, Ishwari and Brahmn. God's Grace and His Will has an impact upon each one differently.

As the seeker learns to practice the Taartam Knowledge, he journeys through different stages of spiritual awakening. He strives to align his speech and thoughts, actions and overall state of being one with the Taartam Knowledge. First, the seed of **faith** (Emaan) is nurtured through Wani Manthan, i.e., regular study of the Holy Kuljam Swaroop. Next, the faith takes on to the next higher level when one engages himself in selfless services (**Seva**) through body, mind and soul. As the faith evolves, one gets aggressively involved in the Chitwani (meditation) of the God's Swaroop, Leela and Dhaam. An intense pang of separation from the Lord is experienced.

Jaagni in Kaul, Jaagni in Feil and Jaagni in Haal

As one begins to discover the Soul's identity, his **ego** (mein khudi) slowly begins to dissolve. The process of killing this false (worldly) ego continues without any interruption until one's last breath. As more and more of one's ego is dissolved, his speech (***kaul***), actions (***feil***)

[24] *Karni maafak kripa, kripa maafak karni | Eah dou maafak ankur ke, kei krupa jaat na gini || KS*

and thoughts (***haal***) progress towards added harmony, when he practices an unflinching Faith (***Imaan***) in the Divine Wisdom (***Ilam***) by absorbing its inner meanings and by reflecting it in the form of selfless Love and Service (*Prem-Seva*). A true faith (Imaan) is expressed through Seva-–Selfless Service and through the practice of Prem—Selfless Love. This further aligns the seeker's speech (Kaul), action (Feil) and state of being (Haal). As the process continues, the Kaul, the Feil and the Haal approaches full alignment or harmony.

Our par-atman is seated in the lotus feet of Shri Raj Shyamaji. However, the surta or the attention of the par-atman is in this worldly dream. In other words, the surta (atman) of our par-atman is attached to the jiva and the physical body in this worldly dream.

Essentially, being aware of the promises made by our par-atman to Shri Rajji is what Kaul means. Realization of the Jaagni process through the Holy Wani essentially means that our Kaul are Kuljamically accuarate. The first step in the Jaagni process is to align the kaul of our surta, jiva and the body with the kaul of the par-atman.

For our kaul to become the kaul of par-atman, our atman, jiva and our guna, anga, indriya of the body must unite as one team. They must turn towards Shri Raj Shyamaji to produce selfless and loving actions, which are qualified by the Holy Wani. Such actions are the true Kuljamic Feil. Feil means actions (करनी या कर्म), and there is no action superior to the performance of prem-seva. When our Kaul translates into Feil, it eventually produces the state of eternal bliss or Nijanand (निजानन्द). This is called Haal(हाल) in the Holy Wani.

Today, it is imperative that each sundersaathji, including a leader, a preacher or a trustee of an organization, dedicate their individual efforts to realize these Kuljamic kaul, feil and haal. Without these sincere efforts, one can never climb the ladder of par-atman's Jaagni.

Again, waking in Kuljamic Kaul means coming to the realization that the Holy Wani (Taartam Knowledge) is the ultimate guide for every life situation that I may encounter. On the other hand, waking in Kuljamic Feil means dedicating ourself in the performance of prem-seva for sundersaathji and the entire humanity. Only such experiements of prem-seva translate in eternal joy or चितवनमयी मनःस्थिति या state of being or Kuljamic Haal.

Thus, on a daily basis, as we commit ourselves to Kuljamic Kaul and Feil, we experience the joyful glimpses of Shri Rajji's grace, His Love, His Ishak. More and more of these experiences are encountered as we live our worldly life with an awareness of a true Brahmnsrishti. Thus, Jaagni is an ongoing life-long process through which we all must pass with humbleness and love. Only then, one can enjoy the full spectrum of multi-colored and ever-evolving Jaagni Leela.

Jaagni means Life Change

In conclusion, the essence of Taartam is Jaagni Vichaar, i.e., thoughts geared towards spiritual awakening. However, Jaagni process does not stop on the plane of thoughts. These thoughts must translate into reality by the performance of Feil of prem-seva. The listening of Wani Charcha (discourses) or sharing it among others is

of no use if it does not lead to others' or one's own life change.

As one's sense of ultimate realization (**pehechaan**) is awakened greatly, his virtues (guna) or vices (avguna) are diverted to support the Soul's highest cause of the attainment of the Eternal Bliss (**Nijanand**). Every moment of his life, the seeker meditates upon the Lord's Grace and favors with the highest humility, appreciation of the Lord's favors and repentation for one's own lackings. In such a state of Total Surrender, the soul's Nisbat (*angna bhav*) is awakened.

Alignment of the seeker's Kaul and Feil results in the Haal, in which the soul begins to experience intense experience of separation (***Viraha***) from the Lord. This Viraha eventually manifests as God's Inspirational Power (*Josh*) and the release of fragrance of Pure Love (*Ishak*). This produces the perfect condition for the Meeting with the Lord and the experience of Ultimate Joy for the Self, i.e., *Nijanand*.

For the heart that is soaked with His Josh and Ishak, the doors to the Abode of Aksharateet are always open. Such is the journey of the Soul, which ultimately brings us Nijanand – our Eternal Bliss.

Now the soul receives the Lord's Grace in its most complete form as she journeys through the Seven Oceans – from Noor Sagar to Rus Sagar. In a way, these seven oceans represent seven stages of spiritual awakening. Now, the soul receives her Lord, who enables her to reach in the Mool Milawa, her ultimate destination.

Who is Seeking Whom?

In ordinary sense, *seeker* is the soul (atman) and the *sought* is the Supreme Soul (Par-atman). However, the Lord says, "O my soul! Due to our most intimate and inseparable divine relationship; I have reversed the world tradition. Infact, now I have become your seeker for all of you (souls)! *Ashik ulat huve masuk*... |

Dear sundersaathji! The Holy Wani is like a fathomless ocean. Just dive into it and Shri Rajji shall enlighten the Kuljamic path to Spiritual Awakening in His supremely divine lotus-feet. Pranam Ji.

जागनीः कलश ग्रंथ का केन्द्रिय विषय

प्यारे सुन्दरसाथ जी! सम्पूर्ण श्री कुलजम सरुप साहिब तारतम रुपि बीज से फलित वृक्ष के समान है। तार अर्थात्, तारने वाला + तम अर्थात् अन्धेरा, अज्ञान। आवागमन का बन्धन ही अन्धेरा है। पारब्रह्म के स्वरुप, धाम और लीला की पेहेचान ही तारतम है। तारतम ज्ञान स्व–कल्याण का निज–आनन्द धर्म प्रकाशित करने वाला एवं मोह से उत्पन्न अज्ञान रुपी अन्धकार से परम विज्ञानमयी आनन्द रुपि चैतन्य प्रकाश की ओर ले जाने वाला है।

साथ जी! इस तारतम का सार है 'जागनी विचार'। 'जागनी विचार' करके ही निज घर पहुँचा जा सकता है। *तारतम को जागनी भयो सार*। और इस 'नूर बिलंद' अर्थात् परमधाम से अवतरित, कलश (तौरेत) वाणी में 'जागनी' फल का निरुपण किया गया है। इसलिए कलश वाणी का सार ग्रहण करने के लिए हम सर्व प्रथम जागनी के कुछ अधारभूत पहलों का परिचय कर लें यह आवश्यक है।

जागनी से तात्पर्य है आत्म–जाग्रति। अपने मूल–स्वरुप की और अपने मूल धनी की पेहेचान होना और उसकी याद में मग्न रहना, अथॉत, फरामोशी का हटना ही जागनी है। *एही अपनी जागनी, जो याद आवें निज सुख*। बिना यथॉथ पेहेचान के और बिना उस धनी की याद की पीड़ा दिल में पैदा हुए आत्म अपने मूलस्वरुप को प्राप्त नहीं हो सकती। आत्म पेहेचान के बाद तन, मन और जीव से धनी

की प्रेम सेवा में कुर्बान हो जाना ही जागनी के वृक्ष का फलिभूत होना है।

बिना पेहेचान सेवा का भाव पैदा नहीं होता और बिना भाव के सेवा नहीं होती। और, बिना प्रेम सेवा के लाभ लिए सुन्दरसाथ ब्रह्मात्माओं का इस जागनी ब्रह्माँड में आना भी निरर्थक है। क्योंकि परमधाम में ''मेरा अपना इश्क ज्यादा है,'' ऐसा कर के दिखाने वाली सेवा नहीं है। इश्क–रब्द में किए गए कौल, कि ''हमारा इश्क बड़ा है, और हम आपको कभी भी भूल नहीं सकते'' की परिपूर्ति बिना प्रेम–सेवा में समर्पित हुए, अर्थात् ईमान को प्रेम–सेवा द्वारा व्यक्त किए, नहीं होती। इसलिए यह परम आवश्यक है कि सुन्दरसाथ जी जागनी की प्रक्रिया को अपने हृदय में ग्रहण करें।

वर्तमान ब्रह्माँड और समय जागनी का है। इसमें मनुष्य सृष्टि में तीन सृष्टियाँ उपस्थित हैं – जीव, ईश्वरी, और ब्रह्म। जागनी के प्रकरण में एवं श्री कुलजम सरुप में जगह–जगह पर इन तीनों की जागनी की बात की गई है। जीवसृष्टि वैकुण्ठ से, ईश्वरीसृष्टि अक्षर से और ब्रह्मसृष्टि परमधाम अक्षरातीत से सम्बन्धित हैं। लेकिन जीव और ईश्वरी का अपने मूल धाम में कोई शुद्ध साकार स्वरुप नहीं है, जैसा ब्रह्मसृष्टि का अपने परमधाम में है।

श्री प्राणनाथ जी की श्री मुख वाणी श्री कुलजम सरुप में वर्णित जागनी के कईं आयाम या पहलू (dimensions) हैं। तारतम ज्ञान की महिमा यही है कि उससे जिन जीवों को इससे पहले कभी भी अखण्ड मुक्ति (बहिश्त) नहीं मिली थी, वह मिलेगी। अक्षर ब्रह्म को भी अक्षरातीत परमधाम की अन्त–रंग आनन्द लीला का ज्ञान हो जाने से उनके आनन्द में भी बड़ी वृद्धि होगी। इस प्रकार अक्षर ब्रह्म की जागनी होगी। जागनी का सबसे महत्वपूर्ण आयाम परआत्म की सुरता का अपने निज–स्वरुप और निज सुख में जाग्रत हो जाना है।

प्रश्न यह हो सकता है कि, आखिर जागनी करता कौन है? तो सुन्दरसाथ जी! यदि कोई जाग्रत है, तो वह केवल अक्षरातीत सच्चिदानन्द पारब्रह्म ही हैं। क्योंकि सम्पूर्ण जीवसृष्टि, उसके मालिक त्रिदेवा, इन तीनों को पैदा करने वाले आदि नारायण, अक्षर ब्रह्म स्वयं, अक्षरातीत की आनन्द अंग श्री श्यामा जी और ब्रह्मसृष्टियाँ– ये सभी विविध तरह से फरामोशी में हैं। अपने मूलस्वरुप की विस्मृति होने की दृष्टि से देखें तो ये सभी नींद में हैं। *जागत है एक खाविंद।* सोता सोते को नहीं जगा सकता। कीचड़ से कपड़ा साफ नहीं हो सकता। पत्तों की नांव से नदिया पार नहीं हो सकती। सार यहीं है कि धनी जी स्वयं अपने आवेश को किसी ना किसी तन पर बिठा कर जागनी कराते हैं।

परमधाम में नींद का बिल्कुल प्रवेश नहीं है और फरामोशी को ही नींद करके कहा है। आत्माएँ जाग्रत तो हैं, पर बेहोशी या बेसुधी में हैं। *हम जहाँ होते है, वहाँ चित्त नहीं होने का नाम ही फरामोशी है।* पारब्रह्म के द्वारा कही गइँ इस कुलजम सरूप की अद्वैत की वाणी के प्रकाश से निजस्वरुप परआत्म की फरामोशी एक एक करके हटेगी। जैसे जैसे हमारी नजर से खेल दूर होता जाएगा, वैसे वैसे परमधाम हमें नजदीक नजर आता जाएगा। फिर जब सब आत्माएँ एक साथ जग जायेंगी, तब अक्षर की जागनी होगी

फिर जब सब आत्माएँ एक साथ जग जायेंगी, तब अक्षर की जागनी होगी। यह माया खेल का स्वप्न अक्षर के दिल में ही चल रहा है। इसलिए कहा है कि रुहों के दिल में ही श्री राज जी और सम्पूर्ण परमधाम है। अक्षर का दिल ही पर्दा है, जिसको जाग्रत–निज बुद्धि के ईलम ने हटा दिया है।

जागनी का बड़ा कुलजमीय चित्र हमारे अन्तःस्करण में अंकित होवे इसके लिए हमें इन हकीकतों का और लीलाओं का ज्ञान होना आवश्यक है।

1 क्षर, अक्षर, और अक्षरातीत क पेहेचान।
2 परमधाम में होने वाली इश्क की लीला का ज्ञान।
3 इश्क–रब्द में हुए धनी और रुहों के बीच के वार्तालाप का ज्ञान।
4 ब्रज, रास और अरब की लीलाओं का ज्ञान।
5 धनी श्री देवचन्द्र जी की लीला का ज्ञान।
6 श्री जी साहिब जी की जागनी लीला का ज्ञान।
7 वर्तमान सपने में ईलम और वाणी से होने वाली जागनी की प्रक्रिया का ज्ञान।
8 अक्षर को मिलने वाले सुख का एवं पंच वासनाओं, आदि नारायण, त्रिदेव और सम्पूर्ण संसार के जीवों को मिलने वाली अखण्डता का ज्ञान।
9 परमधाम में होने वाली परआत्म की जागनी के स्वरुप का ज्ञान।

जागनी के तीन आयाम – कौल, फैल और हालः प्यारे साथ जी! वाणी का ईलम या ज्ञान सिर्फ एक साधन है, और हमें तो उस साधन से परमधाम का विवेक 'महामति' लेकर साध्य श्री राज जी तक पहुँचना है, इसलिए, इन सभी ज्ञान की बातों को समझ लेने के बाद सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि अब इस समय हमें क्या कैसे करना हैः

साथ जी! वर्तमान सपने में, जहाँ हम आज हमारी सुरता से खड़े हैं, वहाँ ईलम वाणी से होने वाली जागनी की प्रक्रिया का ज्ञान होने को हमारे 'कौल' सीधे होना कहा है। इसके बाद उसे अपने जीवन की करनी (फैल) में उतार करके ही निजानन्द (हाल) में जाना सम्भव है। इसलिए आज हमें यही उद्यम करना है। इसको किए बिना अन्तिम सीढ़ी, जो परआत्म की जागनी की है, वहाँ पहुँचने का प्रश्न ही नहीं उठता।

श्री मुखवाणी स्पष्ट रूपसे यह दशॉती है कि जागनी कौल, फैल और हाल – इन तीनों स्तरों पर हो यह आवश्यक है। कौल का अर्थ होता है कहनी या speech, जो हमारे ज्ञान पर निर्भर करती है। दूसरे शब्दों में कहें तो हमारी कहनी को कुलजमीय (श्री कुलजम वाणी के अनुरूप) बनाने के लिए, उसे सीधा करने के लिए, ज्ञान भी कुलजमीय रुप में ग्रहण होवे यह आवश्यक है। कुलजमीय शब्द से

तात्पर्य है–श्री कुलजम सरूप की वाणी के अनुरूप। श्री मुख वाणी का ईलम समझ लेना और उसको अपने जीवन के सर्वोपरी मार्गदर्शक के रुप में स्वीकार करना यह हमारा कौल के स्तर पर जागना हुआ।

जागनी का दूसरा आयाम है फैल में आना। फैल का अर्थ होता है करनी, कर्म या actions। कौल, जो कुलजम वाणी के अनुकूल होता है, वही कुलजमीय फैल में परिणमित होता है। वाणी की दिव्यता, गहराईयां और विशालता को ह्रदय में बसा कर अपने आप को प्रेम सेवा धर्म पालन में झोंक देना यह हमारा फैल के स्तर पर जागना हुआ।

'हाल' का अर्थ होता है चितवनमयी मनःस्थिति या state of being, जिसमें सुरता हर पल मूल स्वरुप से जूडी रहती है। इस हाल की अवस्था में होने वाले कौल और फैल भी धनी और धाम की महिमा के अनुकूल ही होते है। हाल की इस स्थिति में रूह को इश्क की लज्ज़त मिलती है।

सुन्दरसाथ की जीवन यात्रा जब इन तीनों आयामों में से दिन–प्रतिदिन आगे बढ़ती रहती है, तब हमारी जागनी पूर्णता के रंगों को छूने लगती है। ऐसा नहीं है कि जागनी एक बार हो गई सो हो गई। जागनी की प्रक्रिया तो जीवन की अन्तिम सांसो तक चलती ही रहती है। यह कभी भी नहीं रुकती। जागनी तो निरन्तर ही नए–नए रंग बदलती रहती है।

हमारे ईलम रुपी कौल का प्रेम–सेवा और चितवन रुपी फैल में, और प्रेम–सेवा रुपी फैल का इश्क रुपी हाल में हरदम परिवर्तित होते रहने का नाम ही जागनी है। इस तरह से जागनी तो एक ऐसी सर्वांगी प्रक्रिया है, जिसमें से हमारी आत्म, जीव, जीव का अन्तःकरण, सभी गुण और अवगुण एवं नश्वर देह यह सभी परस्पर सहयोगी बन जाते हैं।

इन सभी बातों को समझ लेने पर यह तो स्पष्ट हो ही जाता है कि जागनी केवल वैचारिक धरातल पर नहीं होती। बिना जीवन परिवर्तन के सिर्फ वाणी की गहरी चर्चा जीवन भर सुनने या सुनाये करने से तो हमारी भीतरी जागनी की प्रक्रिया का खोखलापन ही प्रकाशित होता है।

जागनी लीला सर्वाधिक महिमापूर्णः श्री कलश ग्रन्थ के तीसवें जागनी के प्रकरण में जागनी लीला सर्वाधिक महिमापूर्ण इसलिए दर्शायी गई है क्योंकि इसमें ब्रज, रास, धनी श्री देवचन्द्र जी, और परमधाम की इन चारों लीलाओं का सुख मिल सकता है। इस प्रकरण में जागनी के विषय को दो प्रमुख प्रश्नों के उत्तर के रुप में बाँटा जा सकता हैः कः– जागनी किसके द्वारा और कैसे कैसे होनी है इसकी विधि, और खः– जागनी की प्रक्रिया शुरु होने पर आत्म के जीवन में क्या परिवर्तन आता है इसका विश्लेषण।

जागनी किसके द्वारा और कैसे कैसे होनी है? जागनी करने वाले तो खुद अक्षरातीत सच्चिदानन्द पारब्रह्म ही हैं, जो परमधाम की आत्म श्री इन्द्रावती जी के अन्दर विराजमान हुए। अब जिस तरह से सब आत्माओं की जागनी करने का श्री इन्द्रावती जी का संकल्प ही उसकी खुद की जागनी का प्रमाण है, ठीक वैसा ही संकल्प लेकर हरेक सुन्दरसाथ को अपने कौल, फैल और हाल कुलजमीय बनाते हुए अपनी जागनी यात्रा आगे बढ़ानी है। यही हमारी जागनी का प्रमाण है।

प्यारे सुन्दरसाथ जी! धनी जी ने 'जागनी' के प्रकरण में *जागनी की विधि* की खास खास बातें इस प्रकार दशॉयी है, जो गौर करने योग्य है।ः

- धनी ने बड़ी युक्तिपूर्वक, बिना दुःख दिए, प्यार भरी ठण्डी नज़र से, आवेश देकर, ज्ञान से समझा कर, शास्त्रों के प्रमाणों द्वारा आत्म–साक्षी दिलाकर जागनी करने की विधि दर्शायी है।
- सभी परआत्म स्वरुप एक साथ मिल करके ही खेल देख रहे हैं, और एक साथ मिल कर ही जाग्रत होंगे–खेल एक और बातें अलग–अलग करेंगे।

- बिना धनी के आवेश के हमारे संशयों और अटकलों का समापन नहीं होता एवं हमारे इस तन के अंगों में प्रेम भी पैदा नहीं होता। लेकिन सर्वांगी जागनी का काम तो इससे भी भारी है। इसलिए जागनी कार्य में आवेश और तारतम इन दोनों के सहयोग की आवश्यकता रहती है।
- इस समय तारतम ही सभी बातों का सार है, क्योंकि इसमें मूलस्वरुप के चित्त की बातें कईं रुप में उपलब्ध हैं। इस में श्री राज जी और श्री सुन्दरसाथ के मूल स्वरुप की पेहेचान का प्रकाश है। यह श्री मुख वाणी–धनी के आवेश का स्वरुप है, जिसे सुनते ही रुह के अंग में आवेश भर जाता है। इस वाणी को पढ़कर जिसे आवेश नहीं आता है, यातो वह परमधाम की आत्म ही नहीं है, या फिर उसने दिल देकर वाणी सुनी ही नहीं है। बिना आवेश के किसी भी तन से जागनी हो भी नहीं सकती।
- धनी अपने विविध प्रकार के अखण्ड सुख– जैसे कि आवेश, निस्बत, तारतम, जाग्रत एवं निजबुद्धि देकर रूहों की जागनी करते हैं।
- जहाँ पर तारतम और जाग्रत एवं निजबुद्धि होती है, वहाँ पर आवेश आए बिना नहीं रहता और ऐसी रुह के साथ धनी जी का हुक्म और उनकी मेहेर भी हाजिर हो ही जाते हैं। श्री इन्द्रावती जी के साथ ठीक ऐसी ही हुआ है।
- इसलिए यह जरुरी है कि हरेक रुह सुन्दरसाथ भी अपने जीवन को श्री इन्द्रावती जी के कौल, फैल, और हाल में ढाले। श्री मुखवाणी को कौल, फैल और हाल में लाकर ही रुह श्री इन्द्रावती जी की पंचशक्तियों युक्त उच्चतम भावनाओं में मिल जा सकती हैं। यही हमारे इस मार्गदर्शक (mentor) श्री इन्द्रावती जी की संगति का लाभ है।
- श्री इन्द्रावती जी साक्षात स्वरुप श्री राज जी के तारतम का अवतार है। धनी जी ने श्री इन्द्रावती जी को अपना नाम, दावा, हुज्जत और भेख देकर अपना धनीपना साबित कर दिखाया। क्योंकि श्री इन्द्रावती जी ने सब सुन्दरसाथ को अपने जैसा सुख प्रदान करने का वचन दिया है, हमें भी धनी की धणवट का सुख

मिलेगा। इसी बात की पूर्ति करने के लिए धनी ने बड़ी मेहर करके उनके उदर से दो अखण्ड फल पैदा किये – एक जाग्रत निज–बुद्धि और दूसरा नूर–तारतम। उन्होंने यह दोनों फल आज हमारे लिए उपलब्ध रखें हैं।

- श्री इन्द्रावती जी के संग से हर एक रुह आत्मा को, आत्माओं के संग से जीवों को, इस तरह से सारे संसार को अखण्ड मुक्ति के सुख मिलेंगे।
- आगे चलकर इस अखण्ड वाणी का बड़ा विस्तार होगा। इससे निराकार के पार के पार के अखण्ड आनन्दमयी सुखों की महिमा प्रकाशित हो जाएगी। इस तरह सारा ब्रह्माँड ;वैराटद्ध महामति जी के बस में आ जाएगा।
- जिस तरह से स्वप्न में हम लोगों को आपस में लड़कर मर रहे देखते हैं, तब हमें उसका उतना दुःख नहीं होता। लेकिन जैसे ही स्वप्न में हम यह देखते हैं कि कोई हमें भी मार रहा है, तो हम तुरन्त ही चौंक उठते हैं। स्वप्न में मार तो पड़ रही है हमारे स्वप्न के तन को, लेकिन चौंक उठता है हमारा असल तन! बस, ऐसे ही तारतम वाणी की मार से आत्मा का मूल परआत्म तन चौंक उठेगा। इस संसार रुपि स्वप्न का समय इतना भी नहीं है जितनी देर एक तीर को एक पत्ते को छेद कर दूसरे में जाते हुए लगती है। अरे! इतने से समय के अन्दर तो चौदह लोकों के अनगिनत स्वप्निल ब्रह्माँड पैदा हो जाते हैं।
- अपनी परआत्म में सब एक साथ मिलकर जागने से पहले सभी आत्माओं को 'तारतम के तारतम' का अर्थात्, निजबुद्धि के ईलम का, ज्ञान हो जाएगा। यह परमधाम पच्चीस पक्षों में होने वाली वाहेदत और खिलवत की लीला को प्रकाशित करने वाला निज–बुद्धि युक्त विज्ञान है। । इसका विस्तार श्री इन्द्रावती जी के अंग से हुआ है, जो श्री कुलजम स्वरुप के खिलवत, परिकरमा, सागर, और सिनगार ग्रन्थों में छिपा हुआ है। सम्पूर्ण श्री कुलजम स्वरुप की वाणी 'अनेक विध का तारतम' है जो छः चौपाईयों वाले व्यष्टि तारतम का ही समष्टि स्वरुप हैं। साथ जी! इस तरह, हम और तुम इस संसार में जाहिर होकर, एक

साथ मिलकर अपने निज घर चलेंगे और अपने मूल मिलावे में अपने धनी के चरणों में जाग्रत होंगें।

- 'तारतम का तारतम' हिरदे में बैठ जाने से तात्पर्य यह है कि श्री राज जी के हकीकत और मारफत स्वरुप के विज्ञान का ज्ञान हो जाना, एवं निज धाम, स्वरुप और लीला का प्रत्यक्ष हो जाना। ऐसा होने पर रूहों के दिल में जागनी लीला का सम्पूर्ण चित्र ग्रहन हो जाता है और उन्हें श्री जी की जागनी लीला सर्वाधिक महिमापूर्ण होने की बात का संपूॅण ज्ञान हो जाता है।
- साथ जी! जागनी लीला की आखिर में अक्षर ब्रह्म की पंच वासनाओं की जागनी होने पर अक्षर ब्रह्म भी अपने धाम में जाग्रत हो जायेंगे। जागनी की ज्योति के बेहिसाब नूरी प्रकाश से संसार रुपि स्वप्न उड़ जाएगा। सम्पूर्ण क्षर ब्रह्माँड अक्षर में एक रस होकर अखण्ड होगा। तब हमारे दर्शन के लिए सब कोई दौड़ता हुआ आएगा।

रुह आत्म में जागनी की प्रक्रिया की शुरुआत के निशानः रुह आत्म में जागनी की प्रक्रिया शुरु होने पर उसके जीवन में हर पल परिवर्तन आता रहता है। किसी रूह के अन्दर जागनी की प्रक्रिया की शुरुआत होने पर उसके कौल, फैल और हाल में जो बदलाव आता है, उन विविध निशानों को 'जागनी' के प्रकरण में इस प्रकार दशॉये गये हैं।

- जागनी के पथ पर चलने वाली रुह जैसे जैसे धनी के आवेश स्वरुप वाणी सुनती जाती है, उसके अंगों में आवेश भी भरता जाता है।
- उसको जगत के दुःखों की क्षणभंगुरता का ज्ञान होने पर धनी का आवेश मिलता है। तब उसके माया के विकार दिन प्रतिदिन दूर होते जाते हैं और वह माया के दुःखों से अलिप्त होने लगती है।

- अखण्ड सुखों की यादों में उसका धाम का स्वाभिमान जाग्रत हो जाता है। उसकी आत्म पेहेचान दृढ़ होती जाती है और इसका एहसास होने पर उसका धनी के वचनों पर ईमान भी बढ़ता जाता है। उसे इस बात का ईमान हो जाता है कि अपनी डोर सिर्फ धनी जी के हाथों में है, और वह हमारे दुःखों का बोझ अपने पर उठा लेते हैं।
- उसका अंग प्रत्यंग में अखण्ड प्रेम का रस पैदा होने लगता है। उसके अंगों में से छलकने वाले प्रेम को वह हर पल प्रेम–सेवा में परिवर्तित करती रहती है, और ऐसा करके वह धनी के और भी ज्यादा प्रेम के पात्र बनी रहती है।
- जिस तरह निंद्रा में होने वाले सपने में जाग्रत–अवस्था की सुध नहीं होती, उसी तरह जाग्रत अवस्था में सपने का अस्तित्व नहीं रह जाता। ऐसी जाग्रत रुह फिर माया में रहते हुए भी माया से दूर होती है।
- अक्षरातीत परमधाम में कालमाया की तरह किसी भी चीज का नया बनने का और पुराना होने का क्रम या प्रक्रिया नहीं है। इस बात के ज्ञान से उसके कालमाया के बन्धन टूटने लगते हैं। उसे धनी की मेहर की महिमा समझ में आ जाती है। अंततः यदि कोई जान बूझ कर भी अपने अन्तर–चक्षु नहीं खोलेगा, तो भी धनी की कृपा के आधिक्य से उसे इसकी पेहेचान होकर ही रहेगी।

विरहः जागनी प्रक्रिया का आवश्यक अंग

कलश वाणी में विरह को आत्मा की जागनी के मनोरथ पूर्ण कराने वाला दर्शाया है। अतः विरह जागनी प्रक्रिया का आवश्यक अंग है। इसलिए कलश वाणी के प्रकाश में इसके बारे में संक्षिप्त सार समझ लेंगे।

विरह किसे कहते हैं, किसके लिये, कौन, क्यों करता है? जब किसी से जुदाईगी होने का ज्ञान होता है, और जब वह बात उसकी समझ (awareness) में आ जाती है, तब उस व्यक्ति का अपने निकट या सन्मुख न होने का, और उससे हृदयपूर्वक वार्तालाप न कर पाने का दुःख होता है, यही विरह है।

श्री कुलजम स्वरुप साहिब में आत्मा विरहिन है, और जिसका विरह किया गया है वह अक्षरातीत पारब्रह्म 'श्री राज जी' ही हैं। आत्मा अपने मूल परआत्म स्वरुप में परमधाम मूल मिलावे में युगल स्वरुप श्री राजश्यामा जी के चरणकमल में बैठी हैं। उनकी नजर हमेशां श्री राज जी और श्री श्यामा जी, जो उनके आनन्द के स्त्रोत हैं, उनसे कभी भी जुदा नहीं होती। लेकिन, क्योंकि श्री राज जी ने ही जुदाईगी का खेल दिखाने का दिल में लिया है, उन्होंने हमारी नजर अपने इॅश्क देने वाले स्वरुप से हटाकर अक्षरब्रह्म, जो उनके सतअंग है, उन की ओर फेर दी है। इसलिए, श्री राज जी के सन्मुख बैठी होने पर भी, रुहें उन को देख नहीं पा रही, और अक्षर द्वारा बनाए हुए माया खेल को बड़ी दिलचश्पी से देख रही हैं। अब धनी ही की कृपा से रुह को वाणी का ज्ञान मिलने से, उसकी सुरता वापिस अपने मूल स्वरुप में उठने के लिए तड़प रही हैं। अपने धनी के दर्शन की एवं उनसे मीठी प्यार भरी बातें करने की रुह की इस तड़पन को ही विरह कहते हैं।

जो अपने प्रियतम से जुदा ही नहीं हुई हो, उसे विरह हो ही नहीं सकता। जिसे धनी जी द्वारा दिखाए जा रहे जुदाईगी के खेल का ईलम हो गया हो, और जिसके दिल में मूलमिलावा चुभ गया हो, उस आत्मा के दिल में विरह पैदा हुए बिना नहीं रहता।

विरह कैसे हो जाता है? विरह करना नहीं पड़ता, प्रियतम की पेहेचान हो जाने पर होना शुरु हो जाता है। धनी की मेहर हो, धाम की निस्बत हो, रुह को जगाने का धनी का हुकम हो, रुह को धनी का बेशक ईलम मिलना शुरु हो गया हो, उसे अपने सतगुरु स्वरुप की पेहेचान हो गई हो, निज स्वरूप संबंधी सभी बातों की आत्म–साक्षी मिल गई हो, उसके वाणी वचन (कौल, speech) कुलजमीय हो रहे हों, उसकी करनी (फैल, actions) और रहनी (हाल, state of being) भी वैसी हो रही हो, तब ऐसी पेहेचान की स्थिति में, रुह आत्म–निरिक्षण कर पाती है। और तब वह अपनी गल्तियों का पश्चाताप और धनी की मेहरबानियों का एकरार कर लेती है। ऐसी रुह अपना कृतज्ञता भाव व्यक्त करते हुए, अपना मायावी अस्तित्व मिटाकर पूर्णतः धनी के चरणों में समर्पित हो जाती है। तब विरह उसके शुद्ध रुप में प्रगट होने लगता है।

एक बार प्रगटी हुई विरह की चिंगारी तभी बुझ सकती हैं, यदि आत्मा को अपना वाणी रुपि खुराक मिलना बन्द हो जाए। वाणी मंथन, रहनी और चितवनी से उसके विरह की लौ सदैव बढ़ती ही जाती है। आत्मा के कौल, फैल और हाल एक रुप होते जाते हैं, फिर उसे धनी के जोश और उनके इश्क की लज्ज़त भी मिलती जाती है। फिर वह रुह चैन से बैठ नहीं सकती, और अपने आप को प्रेम–सेवा में झोंक देती है। फिर वैसा करने में आने वाली बाधाओं को देखकर उनको पार करके आगे निकल जाती है। ऐसा करने का बल उसे विरह में से ही मिलता रहता है। इस तरह, विरह रुह को बलवान बनाता है।

विरह के लक्षण कौन से होते हैं? विरह प्रेमी को होता है, भक्तों को नहीं। भक्त तो संतोष मानकर मन को मना लेते हैं, लेकिन विरह में तामस या उग्रता (agressiveness) एक सद्‌गुण बन कर चमकता है। रूह के दिल में विरह जागनी का ऐसा जबरदस्त दर्द पैदा कर देता है कि फिर वह धनी के जागनी कार्यों में असहयोगियों की कोइॅ परवाह नहीं करती। ऐसी विरहिन कभी भी अपना दृष्टिकोण निराशावादी नहीं बना लेती। वह पूर्णतः समझती है कि जागनी का कार्य पहाड़ जैसा बड़ा होता है, और उसके लिए हिम्मत चाहिए, कायर का काम नहीं है।

विरह प्रेमी को शान्ति से बैठने नहीं देता। उसके लिए आराम हराम हो जाता है। विरहिन संसार के ज्ञानियों के ज्ञान से भटक नहीं जाती, और धार्मिक रुढ़िवादिता के बन्धनों को तोड़ देती है। वह दुनियावी लोभ लालच के चिकनेपन में फिसलती नहीं है और उसे निन्दा सता नहीं सकती। वह तो बस अपने धनी की मेहर की पाखर ओढ़ कर, इश्क और ईलम के घंट बजाते हुए, बेफिक्र हाथी की चाल चलती जाती है। साथ साथ वह अपने आप को इतना छोटा करके चलती है कि सुई के नाके में से भी आसानी से बाहर निकल जाती है। अर्थात्, वह अपनी मैं खुदी को मिटाकर जीवन जीती है।

विरह से विरहिन कमजोर नहीं, बल्कि महाबली होती है। इसलिए उसके रास्ते में कोई भी बाधा नहीं आ सकती। उसका ईमान उसके आस पास के वातावरण में आने वाले परिवर्तन पर निर्भर नहीं करता। वह बैरी माया से स्वतंत्र और धनी के प्यार की डोर से बंधी होती है। उसे सिर्फ अपने धनी जी के वचन ही भाते हैं इसलिए एक वोहि है, जो उनके वचनों की इशारतों को समझ पाती है, और धनी से अपनी निस्बत होने का पक्का दावा कर सकती है।

विरहिन अपने सिर को श्रीफल और अपने शरीर को लकड़ी मान कर विरह की अग्नि में अपने आपको जला कर भस्म कर लेती है। उसे भौतिक सुख अग्नि समान लगते हैं। सच्चा विरह छिपे रोग की तरह विरहिन के तन में लगातार फैलता ही रहता है, जिससे वह सोते, जागते, स्वप्न में पिया पिया ही करती रहती है। उसके ऐसे हाल का प्रभाव इतना जबरदस्त पडता है कि उसके संपर्क मात्र से

काले पत्थर भी ढिग ढिग हो जाते हैं, अथॉत कठोर से कठोर दिल भी पीघल जाते है।

विरह की फलश्रुति क्या होती है? आत्मा में विरह का प्रकाश होने पर क्या होता है? धनी का मिलन और उनसे लीला विहार का आनन्द ही विरह की फलश्रुति है। विरह का प्रकाश होने पर आत्मा को यह ऐहेसास हो जाता है कि श्री राज जी की मेहेर ने सब तरह से उजाला कर दिया है। पार के पार के दरवाजे खोलकर उन्होंने ही हमें अपना घर दिखाया है। खुद ही आकर मुझे अपना आवेश दिया है और वोही हर पल मेरे पर नई से नई मेहेर करते रहते हैं। विरह रस से प्रकाशित आत्मा सब को ऐसी पेहेचान करवाती है कि इस संसार में बन्दगी और विरह करने वाले तो बहुत सारे हैं, लेकिन जो सुख धनी ने जगाकर हमें दिए हैं, वे तो उनको सपने में भी नहीं मिलते।

ऐसी पेहेचान हो जाने पर स्वयं धनी ही अपनी पाँचो शक्तियों से आत्मा को नवाज़ते हैं। उसे उनकी कही सब बातों की आत्म–साक्षी मिल जाती है, बुद्धि की सब अटकलें समाप्त हो जाती हैं, आत्म–पेहेचान और मूल सनमंध का उसका दावा सार्थक हो जाता है। फिर धनी अपना हुकम देकर उससे जागनी की सेवा करवाते हैं। फिर उसी के माध्यम से वे सुन्दरसाथ जी के हृदय में विरह प्रकट करने का तरीका समझाते हैं। ऐसी आत्मा चौदह लोकों के संसार को एक सूत्र में बाँधने में एवं संसार के प्राणी मात्र को सुख पहुँचाने में सक्षम होती है।

Pranam…Pranam Ji

Pranam means:
"I prostrate with deep reverence in the lotus feet of
One God
And salute your divinity
with all my mind, speech and actions."

Unlike *Namasté,* Pranam must be performed in the feet of the other person - not just with two hands together in a prayer posture. This greeting is universal, non-sectarian (no specific deity's name attached) and reflects the values of the ancient Indian culture. This is the only most commonly used greeting used by all great characters appearing in Hindu scriptures such as Vedas, Upanishadas and epics such as Ramayana and Maha Bharata.

The devotees who practice Nijanand Sampradaya are called Sundersaath or Nijanandis. They greet each other by saying Pranam or Pranam Ji, the later being a more respectful way of greeting in North India.

With the Kuljamic point of view, *Pranam* engenders eight-fold miracles or enlightenment:

1. Glory through true knowledge of Para Vidya.
2. Beauty through purity / transperency of heart.
3. Harmony through peace and love-centered thoughts, intentions and actions
4. Peace through meditation and Viraha
5. Love through selfless expressions
6. Wisdom through awakened and self-intellect
7. Intimacy through divine relationship, and
8. Gracefulness through forgiving.

Pranam…Pranam Ji

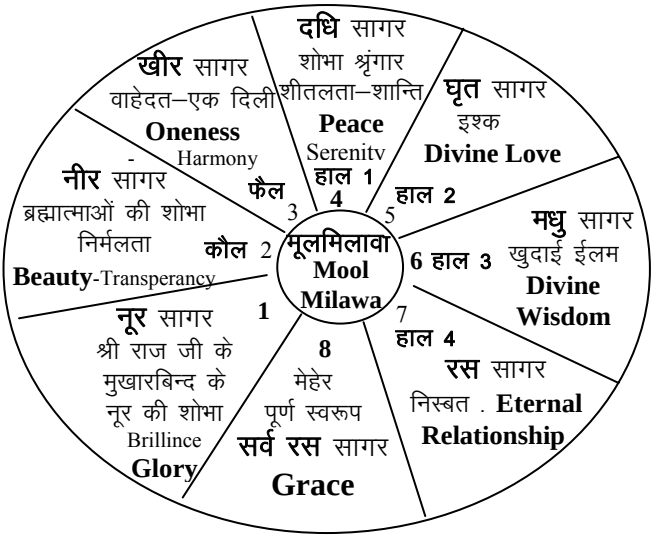

कहाँ क्या पढ़ें? प्रकरण क्रम से

कर्मकांड	कर्मकांडी वृत्तियाँ–माया का स्वरूप	15
	कर्मकांडी धर्म पालन–हांसी	60
कालमाया	ब्रह्मसृष्टि के आधिन	51
कवि लोग	झूठ में ही सच दिखा रहे हैं	39
खेती	आतम की	23
किसान	धनीजी सर्वश्रेष्ठ किसान	23
जनक राजा	विदेही के ज्ञान की सीमा	8
जागनी	जीव और आतम के सहयोग से	22
जीव–आतम	के सहयोग से धनी मिलन सम्भव	22
	तीन सृष्टि को तीन तरह के सुख	35
	जीव निराकार, आत्मा शुद्ध साकार	47
	आत्मा की पेहेचान	70
	आत्माओं के संग से जीवों को लाभ	72
खेल जीवन	में आत्म पेहेचान करके प्रेम सेवा करो	37
खेल–महा	संसार में धार्मिकता के भ्रमित रूप	38
चांडाल कौन ब्राह्मण कौन		43

तारतम नूर 50
तारतम का तारतम 74
तीर्थंकर भी माया से मुक्त नहीं 38
देखा देखी की चाल 40
देव भी माया से मुक्त नहीं 38
धर्म स्थानों के अहंकार प्रदर्शन 36, 38
धर्मिकता – झूठी 38
धर्मों में झूठ का व्यापार 39
धारणाएँ – कच्ची से वाद विवाद 41
धुंध 42, 48
नौतनपुरी की महिमा 35
निराकार साकार मोहतत्व की पहुँच निराकार तक 3
माया ही. निराकार और माया ही साकार 5
पारब्रह्म निराकार नहीं 44
जीव असत्य निराकार 47
निराकार का आधार हांसी की बात 60
रूह देखें जीव – आतम
वाद–विवाद कच्ची धारणाओं से 41
पंडित–संस्कृत 45
वेद–वैराट दो धुंध 42, 48
वेद–पंडित–संस्कृत–वाद विवाद 45
वेद–वैराट के ज्ञान की सीमा निराकार 46
विरह जागनी करने वाला, बलवान बनने वाला 17
मछली की तड़प 18
पतंगे का आत्म सर्मपण 19
विरहिन की डोर धनी के हाथ 20
का प्रकाश 20
वैराट का उल्टा चलन, मृगजल प्रपंच 44
वेद के ज्ञान की सीमा निराकार 46
वाणी का प्रकाश प्रेम सेवा में समर्पित जीवन 27
वाणी वाणी प्रचार प्रसार धीरे धीरे 30
ज्ञान के लेन देन में हाँसी 59
में तारतम का तारतम 74
निराकार के पार की वाणी से वैराट बस होगा 79
वाणी का विस्तार होगा 80
निराकार के पार की वाणी से वैराट बस होगा 80
वेद वैराट के ज्ञान की सीमा निराकार 46
पेहेचान का समय अब 28
प्रेम प्रेमीजनों की पेहेचान 11, 31
प्रेम का कठिन मार्ग 12
प्रेम मार्ग के अवरोध 13

प्रेम सेवा – वाणी के प्रकाश से 27
विरहिन की पिया पिया की रट 14
प्रेम में रंग जाने के लिए इन्द्रावती जी की संगति आवश्यक 73
पंडित–वेद–संस्कृत–वाद विवाद 45
ब्रज–रास लीला रहस्य 50, 51, 52, 53, 81
बेहदी का समाचार भागवत 48
शास्त्रों के रहस्य को जानने वाले 10
ब्राह्मण–चाण्डाल 43
बुद्धनिष्कलंक अवतार 49
बुद्धि जागृत–निज 49, 50, 51, 52
भागवत– श्रीमद् धुंध, गेहदी का समाचार 48
भरतखण्ड 35
माया से पैदा होने वानी भ्रमणा 2
के ही रूपः साकार और निराकार 5
सबके दिलों से माया हटाना सबसे बड़ी सेवा 29
मृगजल प्रपंच 44
एक धनी के सिवा सब माया 33
रूह माया की नहीं है 34
मोह क्या है 3
कैसे छूटे? 4
मूलप्रश्न 1
मृगजल प्रपंच–वैराट 44
योगमाया ब्रह्मसृष्टि के आधिन 51
की पेहेचान जाग्रत–निज बुद्धि से 52
रहनी रूह की 31
प्रेमीजनों की पेहेचान 11
रूह की बन्दगी 25
पर धनी की दया का प्रभाव 56
रूह की पेहेचान 70
रूह की बन्दगी सिर्फ धनी के लिए, अनन्य 25
साधूजन की ज्ञान की सीमा 6
की वाणी को जानने वाले बेहदी 10
शास्त्र की वाणी को जानने वाले बेहदी 10
सेवा सबके दिलों से माया को हटाना सेवा है 29
संस्कृत व्याकरण की पंडिताई 7
भाषा के नाम वाद विवाद 45
सृष्टि तीन तरह की, तीन सुख 35
हाँसी आलस्य छोड़ हुकम सिर चढ़ाओ 32
रूह माया की नहीं है, पेहेचान करो 34
मन के घुमाव से हाँसी 58
ज्ञान के लेन देन में हाँसी 59

निराकार को आधार मानने में हाँसी 60
कर्मकांडी धर्म पालन में हाँसी 60
हुकम से विरह पैदा होना, फिर जागनी होना 24
को सिर चढ़ाओ, आलस्य छोड़ो, हांसी से बचो 32
का जागनी में सहयोग 84
ज्ञानीजनों की अटकलें 9
आवेश रास लीला का सूत्रधार 53
आवेश के हट जाने से अर्न्तध्यान लीला 53
आवेश की प्राप्ति से जागनी 64, 67
आतम, आत्मा पहले सुख सैयों को, पीछे संसार 26
देखें जीव– आतम, रूह
अगुए गुरूजन के अहंकार का प्रदर्शन 36
अर्जी अर्जी ही एक ऐसी बात है, जो हमारे हाथों में 16
अवतार विष्णु के अवतार 49, 69
बुद्धनिष्कलंक अवतार 49
अवतार भी माया से मुक्त नहीं 38
अर्न्तध्यान लीला आवेश के हट जाने से 53
ईमान ईमान में ही वास्तविक शान्ति 14
विरहिन का ईमान बाहरी परिवर्तन से स्वतन्त्र 17
मन के उल्टे घुमाव से ईमान का डिग जाना हांसी 58
ईमान से दुःख सुख जैसे लगना 66
इश्क की महिमा 21

शब्द सूचि

रुढ़िवादिताए *13ए 32ए 49*
धर्मए *12ए 13ए 16ए 24ए 43ए 65ए 71ए 74ए 77ए 96ए 97*
खेलए *13ए 14ए 19ए 25ए 30ए 31ए 39ए 43ए 63ए 69ए 70ए 71ए 72ए 73ए 80ए 87ए 89ए 90ए 95ए 96ए 102ए 103ए 110ए 112ए 114ए 116ए 120*
क्षरए *23ए 28ए 116ए 120*
शुकदेवए *12*
अंकूरए *59ए 67ए 118*
इश्कए *19ए 21ए 23ए 24ए 31ए 32ए 52ए 56ए 66ए 101ए 117*
इन्द्रावतीए *12ए 14ए 25ए 26ए 27ए 56ए 58ए 61ए 67ए 81ए 99ए 105ए 106ए 108ए 109ए 110ए 115*
ईश्वरीसृष्टिए *21ए 68*
ईमानए *15ए 19ए 21ए 29ए 32ए 48ए 50ए 53ए 65ए 94ए 101ए 102*
ईलमए *23ए 24ए 27ए 31ए 32ए 101ए 105*
बहिश्तए *21ए 121*
बुद्ध निष्कलंकए *14*
ब्रह्मसृष्टिए *21ए 22ए 62ए 65ए 68ए 80ए 86ए 90ए 93ए 98*
ब्राह्मणए *13ए 77*
ब्रजए *23ए 25ए 58ए 85ए 86ए 90ए 98ए 110ए 115ए 116ए 117*
कृपाए *14ए 29ए 30ए 52ए 109ए 110*
कबीरए *116*
कर्मकांडए *13ए 49ए 51*
कौलए *21ए 23ए 24ए 25ए 26ए 28ए 31ए 52*
केवलब्रह्मए *85ए 115*
कलशए *12ए 13ए 14ए 15ए 19ए 20ए 37ए 58*
महामतिए *14ए 56ए 62ए 84ए 109*
महाविष्णुए *116*
महादेव जीए *116*
*मोह*ए *40ए 41ए 43ए 51ए 68ए 73ए 76ए 94ए 97ए 101ए 116*
मुक्तिए *21ए 27ए 81ए 108ए 119*
मेहरए *26ए 27ए 29ए 31ए 32ए 39ए 48ए 93ए 109ए 118ए 119*
मूसा पैगम्बरए *12ए 16*
मूल मिलावाए 28ए 30ए 90ए 120
निज बुधए *42ए 59ए 115ए 118*
खिलवतए *27ए 109*
विकारए *28ए 84*
विरहिनए *14ए 15ए 30ए 32ए 52ए 53ए 54ए 55ए 56*
विरहए *14ए 15ए 19ए 30ए 31ए 32ए 33ए 50ए 52ए 53ए 54ए 55ए 56ए 57ए 60ए 61ए 65ए 89*
विराटए *14ए 15ए 19ए 75ए 76ए 78ए 97*
निंद्राए *29ए 107*
निराकारए *27ए 40ए 41ए 42ए 43ए 45ए 51ए 55ए 65ए 73ए 75ए 78ए 79ए 80ए 83ए 96ए 97ए 105ए 107ए 109ए 113ए 116*
*हकीकत*ए *13ए 14ए 28ए 54ए 58ए 59ए 66ए 69ए 72ए 86ए 93ए 97ए 99ए 103ए 109ए 112ए 118ए 119*
हांसीए *14ए 66ए 67ए 94ए 95ए 96ए 97*
हाथीए *32ए 48*
हालए *23ए 24ए 25ए 26ए 31ए 32ए 52*
हुकमए 31ए 33ए 40ए 41ए 52ए 60ए 61ए 109ए 110ए 118ए 119
भवसागरए *45ए 51ए 73ए 84ए 96*
पंचवासनाए *86*
परमधामए *12ए 20ए 21ए 23ए 25ए 29ए 30ए 40ए 46ए 55ए 58ए 59ए 66ए 73ए 87ए 88ए 89ए 90ए 94ए 98ए 99ए 100ए 101ए 102ए 103ए 104ए 106ए 107ए 109ए 110ए 111ए 115ए 117ए 118ए 119ए 120*
परआतमए *30ए 46ए 104*
परआत्मए *21ए 23ए 25ए 27ए 111*
पातालए *15ए 80ए 97ए 116*
*पेहेचान*ए *13ए 14ए 20ए 21ए 26ए 28ए 29ए 31ए 33ए 45ए 46ए 47ए 51ए 55ए 56ए 62ए 70ए 73ए 79ए 82ए 88ए 101ए 102ए 106ए 110*
प्राणनाथजीए *14*
प्रेमए 14ए 21ए 24ए 26ए 29ए 31ए 47ए 48ए 52ए 59ए 62ए 70ए 74ए 101ए 104ए 106ए 108
प्रेम–सेवाए *21*
श्री देवचन्द्र जीए *23ए 25ए 98ए 110*
श्री जीए *15ए 23ए 28ए 41ए 98*
श्रीमद्भागवतए *116*
रासए *12ए 19ए 23ए 25ए 85ए 86ए 87ए 88ए 89ए 90ए 93ए 98ए 110ए 115ए 117ए 120*
राजए *12ए 26ए 28ए 30ए 33ए 48ए 50ए 52ए 55ए 63ए 82ए 88ए 89ए 106ए 109ए 119*
संसारए *13ए 14ए 23ए 27ए 32ए 33ए 39ए 41ए 42ए 43ए 44ए 45ए 46ए 47ए 61ए 63ए 65ए 66ए 68ए 71ए 72ए 73ए 74ए 78ए 80ए 83ए 86ए 90ए 91ए 93ए 99ए 100ए 101ए 104ए 112ए 113ए 116ए 119ए 120ए 121*
सच्चिदानन्दए *22ए 25*
सपनाए *58ए 112*
स्वप्नए *27ए 28ए 32ए 50ए 79ए 80ए 107ए 110ए 111ए 112ए 120*
सुखए *20ए 21ए 23ए 25ए 26ए 27ए 32ए 33ए 56ए 59ए 60ए 61ए 62ए 63ए 66ए 68ए 76ए 86ए 87ए 90ए 93ए 96ए 98ए 99ए 100ए 101ए 102ए 103ए 104ए 105ए 109ए 110ए 120*
सुखपालए *101*
सुईए *32*
सुरताए *21ए 23ए 24ए 30ए 58ए 65ए 68ए 103ए 104*
सतगुरुए *31*
सेवाए *19ए 21ए 24ए 29ए 31ए 33ए 52ए 54ए 62ए 63ए 64ए 65ए 106*
सनंधए *12ए 13ए 15ए 20ए 98*
सनकादिकए *82ए 116*
दुःखए *15ए 25ए 27ए 30ए 56ए 61ए 66ए 67ए 76ए 90ए 99ए 100ए 101ए 102ए 103ए 111*
सुंदरबाईए *118*
वाहेदतए *27ए 109*
चर्मदृष्टिए *13ए 14*
चरणकमलए *30*
चाण्डालए *13ए 77*
फरामोशीए *22ए 110ए 116ए 120*
*फैल*ए *23ए 24ए 25ए 26ए 28ए 31ए 52ए 62ए 121*
*तारतम*ए *12ए 14ए 20ए 21ए 26ए 27ए 28ए 55ए 71ए 83ए 85ए 86ए 88ए 90ए 91ए 93ए 97ए 98ए 104ए 105ए 106ए 108ए 109ए 111ए 115ए 116ए 118ए 119ए 121*
तारतम का तारतमए *27ए 109*
जीवए *21ए 24ए 39ए 40ए 51ए 57ए 58ए 63ए 66ए 71ए 80ए 81ए 90ए 93ए 107ए 108ए 111*
जीवसृष्टिए *21ए 22ए 68ए 107*
जागनीए *20ए 23ए 24*
जोशए *31ए 52ए 105ए 118ए 119*
नूर–तारतमए *117*
अक्षरए *21ए 22ए 23ए 28ए 30ए 40ए 65ए 68ए 86ए 89ए 90ए 109ए 112ए 114ए 115ए 116ए 118ए 119ए 120ए 121*
अक्षरब्रह्मए *30ए 83ए 88ए 90ए 116*
अक्षरातीतए *14ए 21ए 22ए 23ए 25ए 29ए 56ए 61ए 66ए 74ए 84ए 89ए 107*
अहंकारए *13ए 48ए 49ए 71ए 75ए 83ए 93ए 96ए 97*
आवेशए *22ए 25ए 26ए 28ए 33ए 55ए 60ए 87ए 88ए 89ए 92ए 93ए 100ए 104ए 105ए 106ए 109ए 113*
आत्म–साक्षीए *25ए 31ए 33ए 101*
आत्माए *27ए 30ए 31ए 33ए 52ए 53ए 54ए 55ए 57ए 60ए 61ए 62ए 80ए 81ए 87ए 93ए 106ए 108ए 111ए 119*

गोर्वधनए *15*
लालदासए *15*